राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य और उनकी वैचारिक यात्रा के आयाम : एक आलोचनात्मक अध्ययन

RAHUL SANKRITYAYAN KA ATMAKATHA SAHITYA AUR UNAKI VAICHARIK YATRA KE AYAM : EK ALOCHANATMAK ADHYAYAN

(ENG VERSION : AUTOBIOGRAPHICAL WRITINGS OF RAHUL SANKRITYAYAN AND DIMENSIONS OF HIS IDEOLOGICAL DEVELOPMENT : A CRITICAL STUDY)

असम विश्वविद्यालय, सिलचर के हिन्दी विभाग द्वारा

पी–एच. डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध

शोधछात्र

सुनील कुमार पाठक

<u>Ph. D/ Hindi /575 /2007 dt.11/10/2007</u>

Forwarded

2.8.12

Head,
Department of Hindi,
Assam University, Silchar-788011

हिन्दी विभाग

रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय भाषाएँ एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय

असम विश्वविद्यालय, सिलचर–788011, भारत

शोध–प्रबंध जमा करने का वर्ष: 2012

REF
891.43
PAT

UNIVERSITY LIBRARY

TH 1404
12.01.2015

हिन्दी विभाग
रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय भाषाएँ एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय
असम विश्वविद्यालय,सिलचर
(एक्ट X111,1989 के अन्तर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय
सिलचर–788011, असम, भारत)

दिनांक 30.7.12

प्रमाण–पत्र

*प्रमाणित किया जाता है कि सुनील कुमार पाठक (पंजीयन संख्या Ph.D/Hindi/575/2007dt. 11/10/2007) द्वारा पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत '**राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य और उनकी वैचारिक यात्रा के आयाम : एक आलोचनात्मक अध्ययन**' शीर्षक शोध–प्रबंध उनके वास्तविक शोध कार्य का परिणाम है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य संस्था में किसी भी उपाधि हेतु जमा नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने असम विश्वविद्यालय द्वारा अपेक्षित सभी औपचारिकताओं का अनुपालन किया है। मैं उपर्युक्त शोध–प्रबंध को असम विश्वविद्यालय, सिलचर की शोधोपाधि के लिए मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किये जाने की संस्तुति करता हूँ।*

शोध निर्देशक
30.7.12
(डॉ0 सत्यपाल सिंह चौहान)
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
असम विश्वविद्यालय,सिलचर–788011

हिन्दी विभाग
रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय भाषाएँ एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय
असम विश्वविद्यालय, सिलचर
(एक्ट X111,1989 के अन्तर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय
सिलचर–788011, असम, भारत)

दिनांक 30.7.2012

घोषणा–पत्र

*मैं सुनील कुमार पाठक (पंजीयन संख्या Ph.D/Hindi/575/2007dt. 11/10/2007) घोषणा करता हूँ कि ' **राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य और उनकी वैचारिक यात्रा के आयाम : एक आलोचनात्मक अध्ययन**' शीर्षक शोध मेरे शोध कार्य का परिणाम है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस शोध–प्रबंध को मेरे अथवा अन्य किसी के द्वारा किसी विश्वविद्यालय अथवा संस्था में किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।*

यह शोध–प्रबंध असम विश्वविद्यालय, सिलचर में पी–एच० डी०(हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध छात्र
सुनील कुमार पाठक
(सुनील कुमार पाठक)
हिन्दी विभाग
असम विश्वविद्यालय, सिलचर

स्थान : असम विश्वविद्यालय, सिलचर

दिनांक :

आभार

प्रस्तुत शोध अध्ययन मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस शोध अध्ययन के आलोक में जीवन के वास्तविक रूप से मैं परिचित हुआ। सर्वप्रथम मैं असम विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिसने इस विषय पर शोध करने की अनुमति प्रदान की। अपने आदरणीय शोधनिर्देशक प्रो0 सत्यपाल सिंह चौहान के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी प्रेरणा से यह शोध प्रबन्ध अपना रूप ले सका। हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 कृष्ण मोहन झा, प्रो0 विश्वनाथ प्रसादजी, श्री प्रभात कुमार मिश्रा, डॉ आकाश वर्मा, श्री शीतांशु कुमार और डॉ0 वेदपर्णा जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सहायता और प्रोत्साहन से शोधकार्य को पूरा करने का संबल मिला। असम विश्वविद्यालय के माननीय प्रति उप कुलपति प्रो0 जी0 डी0 शर्माजी को कोटि कोटि नमन करता हूँ, जिन्होंने मुझे शोधकार्य करने के लिए प्रेरित ही नहीं किया बल्कि समय समय पर शोध की प्रगति पर चर्चा भी करते रहे। शोध निर्देशन की दिशा में हृदय से आभारी हूँ भ्राता तुल्य राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रो0 कृष्ण मुरारी पाण्डेयजी का जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकालकर समय–समय पर मेरी मदद की। कछाड़ महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री शंकर शर्मा जी के इस शोधकार्य में सहयोग का सदैव अभारी रहूँगा। मैं उन सभी विद्वानों, लेखकों एवं आलोचकों का आभारी हूँ जिनकी रचनाओं और पुस्तकों ने राहुलजी के वैचारिक विकास के अध्ययन में मेरी मदद की।

धर्मपत्नी श्रीमती संतोषी कुमारी पाठक का सहयोग सदैव जीवन में चिरस्मरणीय रहेगा जो हमसे चार साल दूर रहकर दूरभाष द्वारा हमें सदैव प्रोत्साहित करती रही। पिता श्री जयमंगल पाठकजी और स्वर्गीय माता शिवकुमारी देवीजी के चरणों मैं सदैव नतमस्तक रहूँगा, जिनका यह उपदेश कि 'प्रयत्न करो सफलता मिलेगी' की प्रेरणा से शोधकार्य पूरा किया। छोटे भाई चन्द्रमणि ने परिवार का आर्थिक बोझ अपने कंधे पर उठाकर शोधकार्य करने की हमें उन्मुक्तता प्रदान की, उनका यह योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। अपने स्नेहिल पुत्र–पुत्री , अभिषेक सोनम रश्मि, तन्वी और छोटू को शुभाशंसाएँ देता हूँ जिन्होंने मेरे शोधकार्य में किसी प्रकार का विघ्न नहीं उत्पन्न किया। बाल्यकाल से लेकर अब तक के अपने सभी मित्रों, बन्धु–बांधवों, आदरणीय रिश्तेदारों का आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर शोधकार्य की प्रगति में हमारी मदद की। आज इस शोध कार्य को पूरा कर मुझे अतिप्रसन्नता हो रही है, परन्तु यह शोध प्रबन्ध कितना सार्थक और उपयोगी है, इसका निर्णय पाठक बन्धु ही कर सकते हैं।

सुनील कुमार पाठक

अनुक्रमणिका

भूमिका I-VI

प्रथम अध्याय :

हिन्दी में आत्मकथा लेखन और राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य 1–33

अ) आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा साहित्य

स) आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का प्रारम्भिक जीवन एवं परिवेश

द्वितीय अध्याय :

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के दार्शनिक विचारों का विकास 34–95

अ) वैरागी राहुल सांकृत्यायन

ब) आर्यसमाजी चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

स) बौद्धचिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

द) मार्क्सवादी चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

तृतीय अध्याय :

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के राजनीतिक विचारों का विकास 96–145

अ) राहुल सांकृत्यायन की वैज्ञानिक दृष्टि एवं मार्क्सवाद

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा किसान आन्दोलन का नेतृत्व एवं विचार

स) राष्ट्रीय आन्दोलन में राहुल सांकृत्यायन की सहभागिता एवं विचार

चतुर्थ अध्याय :

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विकास 146–203

अ) हिन्दी साहित्य विषयक राहुल सांकृत्यायन के विचार

ब) भाषा विवाद और राहुल सांकृत्यायन

स) एशिया संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

द) यूरोप संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

पंचम् अध्याय :

राहुल सांकृत्यायन के वैचारिक आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन 204–235

अ) दार्शनिक विचारों का अध्ययन

ब) राजनीतिक विचारों का अध्ययन

स) साहित्यिक,सांस्कृतिक विचारों का अध्ययन

षष्ठ अध्याय :

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का 'व्यक्ति' चिंतन 236–259

उपसंहार 260–287

आधार ग्रंथ एवं सहायक संदर्भ–ग्रंथ सूची : 288–293

भूमिका

भूमिका

राहुल सांकृत्यायन के वैविध्यपूर्ण एवं घुमक्कड़ जीवन से परिचय इंटरमीडियट में हुआ, जब मैंने राहुलजी की लोकप्रिय पुस्तक ' बोल्गा से गंगा ' को अपने पाठ्य विषय के अन्तर्गत पढ़ा था। उस समय मैं एक नये व्यक्ति के व्यक्तित्व और उनकी वैचारिक तेजस्विता से परिचित हुआ। उस समय इस महान व्यक्ति से प्रभावित होकर उनके द्वारा लिखित 'मानव समाज ' 'तुम्हारी क्षय' 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' को पढ़कर मैं सच्चाई से अवगत हुआ। राहुलजी मेरे ऊपर उस समय इतना छाये रहे कि मैंने अपने गाँव में उनके द्वारा लिखित नाटक ' मेहरारून की दुरदसा ' को सरस्वती पूजा के अवसर पर अपने सहपाठियों के सहयोग से रंगमंच पर प्रस्तुत किया। मेरे मन में इस व्यक्ति की वैचारिक साधना के आयामों को जानने की ललक बनी रही। इस अव्यक्त जिज्ञासा ने ही प्रस्तुत शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

राहुल सांकृत्यायन बीसवीं सदी के ऐसे विलक्षण पुरूष है जो अपने जीवन और चिन्तन दोनों ही क्षेत्रों में आजीवन सक्रिय यायावर बने रहे। सत्य की खोज के प्रति तीव्र आग्रह, अदम्य साहस और विद्रोह–भावना, गहरी संवेदनशीलता, देश प्रेम, अनवरत अध्यवसाय, अनुभव की व्यापकता, मानव जीवन और लोक की सूक्ष्म पहचान, पुरातत्व, इतिहास, दर्शन और राजनीति के प्रति विशेष अभिरूचि और इन सबसे उत्पन्न विश्वदृष्टि ने उन्हें ऐसा रूप दिया जो चिंतक, दार्शनिक, इतिहासकार, स्वतंत्रता सेनानी, प्राध्यापक, साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, भाषाविशेषज्ञ आदि सभी कुछ एक साथ है। उनके व्यक्तित्व के ये सभी गुण एक दूसरे से अभिन्नरूप से परस्पर संबद्ध है। राहुलजी का जीवन और उनका विशाल कृतित्व इसका प्रमाण है। राहुलजी

ने एक ओर दर्शन, इतिहास, राजनीतिक चिंतन, समाज विज्ञान, भूगोल, देश–दर्शन, भाषा–व्याकरण आदि से संबंधित अनेक ग्रन्थ लिखे वहीं दूसरी ओर उन्होंने विपुल मात्रा में सृजनात्मक साहित्य की रचना की जिसके अंतर्गत उनकी आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, उपन्यास, निबंध, नाटक, यात्रा वृतान्त आदि प्रमुख हैं। उल्लेखनीय है कि राहुलजी के सृजनात्मक साहित्य में भी उनका अनुभव, चिंतन व वैचारिक दृष्टि व्यापक है। प्रस्तुत शोध–अध्ययन राहुलजी के आत्मकथा साहित्य पर केन्द्रित है।

राहुलजी ने अपनी आत्मकथा ' मेरी जीवन यात्रा ' शीर्षक से लिखी है, जो पाँच भागों में प्रकाशित है। स्पष्ट है कि यह जीवनी न होकर जीवन यात्रा है। उनकी यह जीवन यात्रा वैष्णव केदार के साम्यवादी राहुल सांकृत्यायन बनने की यात्रा है। निश्चित रूप से राहुलजी के वैचारिक विकास को समझने में उनके आत्मकथा–साहित्य का विशेष महत्व है। इन आत्मकथाओं में राहुलजी का बचपन, किशोरावस्था, पढ़ाई–लिखाई, वैराग्य की स्थिति, आर्यसमाज की दीक्षा, उन्मुक्त यायावर जीवन, बौद्ध भिक्षुक जीवन, राजनैतिक आंदोलन, रूस प्रवास का विवरण, साहित्य–लेखन, परिभाषा–निर्माण का कार्य तथा विश्वकोश संपादन आदि का समावेश है। राहुलजी के जीवन में यह बदलाव कैसे आया? क्या थी राहुलजी की सोच और उनका जीवन? वे हालात क्या थे जो उन्हें सनातनी से साम्यवादी और जुझारू राजनेता बना गये? किस प्रकार उनकी यह वैचारिक यात्रा पूरी होती है? शोध विषय की यह समस्या हमारे लिए अत्यन्त गम्भीर थी। यही प्रस्तुत शोध का लक्ष्य है। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता और महत्व असंदिग्ध है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आधारभूत सामग्री और अन्य सहायक सामग्री के साथ राहुलजी के ऊपर किये गए शोध कार्य व प्रकाशित ग्रन्थ शोध कार्य के लिए अतिमहत्वपूर्ण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख हैं–'महापंड़ित राहुल समग्र मूल्यांकन' (लेखक वीरेन्द्र सिंह,पंचशील प्रकाशन,1995), राहुल सांकृत्यायन (लेखक, कन्हैया सिंह, अतुल प्रकाशन, कानपुर,1994), 'राहुल सांकृत्यायन : सृजन और संघर्ष (लेखक, उर्मिलेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1994) महापंडित राहुल सांकृत्यायनः जीवन और कृतित्व (लेखक, गुणाकर मुले, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली,1993),'राहुल चिंतन'(लेखक गुणाकर मुले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1994),' राहुलजी का जीवनी यात्रा साहित्य (लेखिका, जनक दुलारी सहगल, चिल्ड्रन बुक सोसायटी, मेहरोली, नई दिल्ली,1973), महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया, (लेखक, डॉ.अभिजीत भट्टाचार्या, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, 2005)। इसके साथ ही कई साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं यथा 'आजकल', 'वसुधा', 'आलोचना', 'सम्मेलन', 'साम्य', विशेषकर अभिनव कदम (भाग 1, भाग–2) के राहुलजी पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित किए हैं। ये सभी ग्रन्थ विभिन्न दृष्टिकोणों से राहुलजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन करते हैं। परन्तु मैंने यह पाया कि राहुलजी के वैचारिक विकास का व्यापक अध्ययन एवं मूल्यांकन उपेक्षित ही रहा है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध में विश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकनपरक पद्धति को अपनाते हुए राहुल सांकृत्यायन के आत्मकथा साहित्य को केन्द्र में रखते हुए, उनकी वैचारिक यात्रा के

विभिन्न आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन राहुलजी के वैचारिक विकास को गत्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हुए पाठकों में नवीन दृष्टि एवं चेतना का विकास करेगा। राहुलजी के विचार एवं उनकी आस्था समय के अनुसार बदलती रही। सत्य के अन्वेषण में अपने जीवन का प्रयोगशाला की तरह उपयोग करते हुए एक मत एवं आस्था से गुजरते हुए दूसरे मत एवं आस्था को उन्होंने स्वीकार किया और अंततः उनका अंतिम पड़ाव साम्यवाद पर जाकर हुआ। इसके पीछे शायद बुद्ध का यह वचन कि ' बेड़े की तरह पार उतरने के लिए मैंने विचारों को स्वीकार किया, न कि सिर पर उठाये–उठाये फिरने के लिए ' की मुख्य भूमिका रही। इस महत्वपूर्ण उपदेश ने उनकी जीवन यात्रा एवं विचार यात्रा को न केवल प्रभावित किया अपितु उनका पथ प्रदर्शन भी किया। राहुलजी ने अथक परिश्रम कर अकेले ही विश्व को अपने पैरों से नापते हुए, संसार को काफी नजदीक से देखा, परखा और अनुभव किया। जीवन के इन्हीं अनुभवों ने राहुलजी को एक संश्लिष्ट अंतर्दृष्टि प्रदान की। इसी संश्लिष्ट अंतर्दृष्टि ने उनके व्यक्तित्व एवं विचारधाराओं को परिपक्वता प्रदान की। जिसके परिणाम स्वरूप राहुलजी की वैचारिक यात्रा में न तो संकीर्णता आयी और न ही मदाधंता पनपी। प्रस्तुत शोध कार्य में मौलिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए वैचारिक यात्रा के विभिन्न पहलुओं का विवेचन एवं विश्लेषण क्रमबधता के साथ किया गया है साथ ही तद्‌जनित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गये हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रथम अध्याय **'हिन्दी में आत्मकथा लेखन और राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य'** शीर्षक से है। इस अध्याय के अन्तर्गत आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा, राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा

साहित्य और आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के प्रारम्भिक जीवन एवं परिवेश पर प्रकाश डाला गया है। शोध प्रबन्ध का दूसरा अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के दार्शनिक विचारों का विकास'** शीर्षक से है। राहुलजी के वैचारिक विकास के प्रमुखतः चार मोड़ है :वैरागी साधु ,आर्यसमाजी, बौद्ध और मार्क्सवादी। इन मोड़ों से होकर गुजरते हुए उनके दार्शनिक विचारों का विशलेषण इस अध्याय में किया गया है। प्रस्तुत शोध का तीसरा अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के राजनीतिक विचारों का विकास '** शीर्षक से है। इस शीर्षक के अन्तर्गत राहुलजी की वैज्ञानिक दृष्टि और मार्क्सवाद, किसान आन्दोलन तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में सहभागिता पर प्रकाश डाला गया है। शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विकास'** शीर्षक से है। इस शीर्षक के अन्तर्गत राहुलजी के हिन्दी साहित्य एवं भाषा विषयक विवाद, एशिया और यूरोप संबंधी वैचारिक विकास का गहनता से अध्ययन किया गया है। शोध प्रबन्ध का पाँचवा अध्याय **'राहुल सांकृत्यायन के वैचारिक आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन'** शीर्षक से है, जिसमें राहुलजी के दार्शनिक विचारों, राजनीतिक विचारों और साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारों का अध्ययन आलोचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का छठवाँ अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का व्यक्ति चिंतन'** शीर्षक से है। जिसमें राहुलजी ने अपने बारे में एवं अपने साथ बिताये हुए व्यक्तियों के बारे में जो विचार प्रस्तुत किये हैं उन्हें इस अध्याय के अन्तर्गत समीक्षात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। अंत में उपसंहार के अन्तर्गत शोध प्रबंध का निष्कर्ष प्रस्तुत है। अब तक राहुलजी पर हुए शोधकार्यो की भित्ति आम तौर पर उनका कथा साहित्य,

उपन्यास हैं पर इस शोधकार्य में राहुलजी की जीवन–यात्रा का आधार रखते हुए उनके वैचारिक विकास के समस्त पहलुओं पर समीक्षात्मक रूप से प्रकाश डाला गया है।

अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि असम विश्वविद्यालय, सिलचर के हिन्दी विभाग में पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध '**राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य और उनकी वैचारिक यात्रा के आयाम : एक आलोचनात्मक अध्ययन**' राहुलजी के वैचारिक विकास को समझने में सहायक सिद्ध होगा साथ ही यह शोध अध्ययन पाठकों में वैज्ञानिक दृष्टि व समझ का विकास करने में सफल सिद्ध होगा।

प्रथम अध्याय

हिन्दी में आत्मकथा लेखन और राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य

अ) आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा साहित्य

स) आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का जीवन एवं परिवेश

अ) आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा–

आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें आत्म कथाकार अपने जीवन के एक–एक वृतांत को वातावरण, परिस्थितियों के साथ ही साथ सामाजिक परिवेश से जोड़कर लिखता है। जीवन का हर पक्ष सही हो या गलत, उपयोगी हो या अनुपयोगी, सार्थक हो या निरर्थक आदि का लेखा–जोखा रूप आत्मकथा द्वारा प्रस्तुत करता है। राहुलजी आत्मकथा के सम्बन्ध में लिखते है–"आत्मकथा या आत्मचरित जीवनी साहित्य का विकासशील अंग है। यही एक ऐसा माध्यम है जिसमें आत्मकथाकार अपने विषय में एवं अपने व्यक्तिगत अनुभवों के सम्बन्ध में कहता है।"1 इस प्रकार आत्मकथा ऐसी विधा है, जिसमें व्यक्ति विशेष का जीवन चरित जीवन वृत से जुड़े विविध प्रसंग बुने गये होते हैं।

आत्मकथा, आत्म संस्मरण ,पत्र व डायरी से अलग है। 'आत्म संस्मरण में जहाँ स्वजीवन की चुनी हुई स्मृतियों के लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जाता है, वहीं आत्मकथा में लेखक अपने जीवन का विस्तृत लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि आत्मकथा समग्र जीवन का प्रबंधात्मक प्रकाशन है। आत्मकथा में क्रमबद्धता के कारण जीवन और समय प्रवहमान और गत्यात्मक होते हैं, ठहरे हुए नहीं रहते। इसमें निजी जीवन की अनेकानेक खट्टी–मीठी स्मृतियाँ तथा जीवन में आए व्यक्तियों के आचरण विचार एवं चरित्र को जोड़कर चलते हैं। आत्मकथा आत्मपरक या स्वपरक विद्या है, जिसमें वातावरण, देशकाल, प्राकृतिक स्वरूप अपने पूरे प्रभाव के साथ सक्रिय रहता है। कैसे लेखक का व्यक्तित्व बना वह किन–किन परिस्थितियों के बीच से गुजर कर, कहाँ–कहाँ होता हुआ कहाँ तक पहुँचा है,

आत्मकथा में इसी परिधि पर जीवन चित्र बनता है। इसीलिए साहित्य में जो विधाएँ 'जीवन की आलोचना की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती हैं , उनमें आत्मकथा का स्थान सर्वोपरि है। इस तरह आत्मकथा आत्मपरक जीवनी विधा है न कि परपरक जीवनी विधा।'

आधुनिक गद्य साहित्य की अन्य विधाओं की तरह आत्मकथा लेखन की मूल प्रेरणा पाश्चात्य साहित्य ही रहा। अतः'आत्मकथा' का परिभाषित, प्रमाणित स्वरूप समझने के लिए पाश्चात्य साहित्य में पारिभाषित स्वरुप का अवलोकन करना उपयोगी होगा। विभिन्न विदानों ने आत्मकथा की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है–

कैंसेल ने आत्मकथा का परिभाषा देते हुए लिखा है–"आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का विवरण है, जो स्वयं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें जीवनी के अन्य प्रकारों से सत्य का अधिकतम समावेश होना चाहिए।"

पाश्च्यात् विद्वान शित्येक के शब्दों में–"आत्मकथा मूलतः लेखक के जीवन का सातत्यपूर्ण विवरण होता है, जिसमें मुख्य बल आत्मनिरीक्षण और अपने जीवन की सार्थकता पर वाह्य परिवेश में प्रस्तुत किया जाता है।"

'मार्डन एनसाइक्लोपीडिया' के अनुसार––"आत्मकथा व्यक्ति के निजी जीवन का लगातार प्रस्तुत किया गया विवरण है। यह लेखक के जीवन तथा जीवन यात्रा का वास्तविक एहसास होती है और उसके वैयक्तिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विश्वासों को प्रस्तुत करती है। इस प्रकार वह व्यक्तिलक्षी भी होती है और वस्तुलक्षी भी"

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार--"आत्मकथा व्यक्ति के जीये हुए जीवन का ब्यौरा है, जो स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है और आत्मकथा का मूल सिद्धान्त आत्म विश्लेषण होना चाहिए।"

पाश्चात्य विद्वानों के उपरान्त हिन्दी समीक्षकों एवं हिन्दी कोशों के आधार पर आत्मकथा की परिभाषा दी गई है। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार--"आत्मकथा लेखक के अपने जीवन से सम्बद्ध वर्णन है। आत्मकथा के द्वारा अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्व दिखलाया जाना सम्भव है।"

मानविकी परिभाषिक कोश के अनुसार-"अपने आंतरिक जीवन के ब्यौरेवार वर्णन आत्मकथा हैं"

बृहद हिन्दी कोश के अनुसार -"आत्मकथा शब्द को ' आत्मन् ' और 'कथा ' का सामासिक रुप बताते हुए आत्मकथा को अपने जीवन की कहानी बताया गया है।" 2

विभिन्न परिभाषाओं के अवलोकन करने के पाश्चात्य आत्मकथा में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं-

1-आत्मकथा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत का ब्यौरा हैं।

2-इसमें जीवन के अन्तर्द्वन्द्व एवं वाह्य द्वन्द्व का रुप व्यक्त होते हैं।

3-यह स्वयं द्वारा लिखित सटीक इतिहास है।

4-इसके इर्द-गिर्द स्वयं लेखक घूमता है।

5–यह व्यक्तिलक्षी और वस्तुलक्षी दोनों होता है।

6–सत्य और यथार्थ इसकी कसौटी होते हैं।

7–लेखक मुख्य होता है और वातावरण, परिवेश गौण होता है।

आत्मकथा की रचना का आधार––

आत्मकथा स्वरचित ग्रंथ होता है। उसमें आत्मविश्लेषण, आत्ममूल्यांकन, अपने जीवन को सार्थकता पर विचार करने की लालसा, आत्ममंथन तथा अपने युग के सापेक्ष अपने जीवन की स्थिति की प्रधानता होती है। समय, स्थान ,वातावरण ,परिवेश के बीच 'स्व ' को रखकर अपने आपको जाँचने, विकसित होने ओर उद्‌घाटित करने की भावना 'आत्मकथा 'की रचना में प्रभावशाली भूमिका निभाती है। अतः 'आत्मकथा ' की रचना प्रक्रिया का यह प्रथम चरण इसी भावना में निहित है। स्मृति आत्मकथा का दूसरा आधार है। मूलतः आत्मकथा में लेखक अपनी स्मृतियों के सहारे अपने अतीत में लौटता है और वर्तमान के सहारे आगे बढ़ता है कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मकथा अतीत वर्तमान का स्वरुप होता हैं। अतः लेखक को चाहिए कि वह अपने जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को प्रखर स्मृति के आधार पर पुनर्जीवित करे, डायरी व संस्मरण इसमें सहायक होते हैं। आत्मकथाकार अपनी प्रवृति, व्यक्तित्व और उदेश्य को ध्यान में रखकर इन स्मृतियों को क्रम देता है, कभीकभार लेखक बहुत सारी बातें भूल जाता है या उसे उजागर करना चाहता है, ऐसी स्थिति में आत्मकथा आत्मकथा न होकर संस्मरण बन जाती है। साथ ही साथ कई बार लेखक ऐसी बातों को छोड़ देना चाहता है, जिनसे अपने अथवा दूसरों के चरित्र पर आँच आने का भय हो। वह लज्जा के कारण भी ऐसा करता है। जिससे 'आत्मकथा' की

विश्वसनीयता खतरे में पड़ सकती है। आत्मकथा लेखक को यह वाणी–'सत्यं वद, प्रिय वद'को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। कहने का अर्थ यह है कि आत्मकथा–लेखक सजग होकर जीवन अनुभवों को भावात्मक रूप प्रस्तुत करता है। आत्मकथा स्मृति और कल्पना की कला के रुप में व्याख्यायिक होने लगी है। मगर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि आत्मकथा और कथा साहित्य एक चीज है। कथा साहित्य काल्पनिक ओर साधारण चरित्रों की कहानी कहते हैं, जबकि आत्मकथा सदा यथार्थ और महत्वपूर्ण व्यक्तियों का जीवन चरित्र होती है। इसलिए कथा साहित्य की अपेक्षा आत्मकथा को अधिक ऐतिहासिक और विश्वसनीय माना जाता है। स्मृतियाँ के बाद घटनाएँ और प्रसंग भी आत्मकथा का आधार है। प्रसंगों या घटनाओं की प्रस्तुति में वातावरण सृष्टि का ध्यान रखना होता है। अतः वातावरण, सृष्टि, आत्मकथा लेखन का तीसरा चरण है। आत्मकथा का अंतिम चरण है–प्रस्तुति अर्थात् प्रस्तुत करने की भाषा–शैली। आत्मकथा की सफलता उसके विन्यास अथवा प्रस्तुति पर भी निर्भर करती है। लेखक अपने जीवन की घटनाओं, परिस्थितियों को शुरु से अंत तक अपनी आत्मकथा में अभिव्यक्त करता है। लेखक को अपने भाव को जीवन्त भाषा और लोक व्यवहृत भाषा में ही प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे उसके व्यक्तित्व का भाषा कौशल भाषा संस्कार एवं भाषा ज्ञान का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़े।

इस तरह आत्मकथा लेखन की प्रवृत्ति हिन्दी साहित्य में प्राचीन काल से देखने को मिलती है पर आत्मकथा का वास्तविक स्वरुप आधुनिक काल के साहित्य में देखने को मिलता है। आधुनिक काल में असंख्य लेखकों ने अपनी–अपनी आत्मकथा लिखी है, जो सटीक और प्रमाणिक हैं। आत्मकथा की रचना प्रक्रिया पर डॉ0 भगवत शरण

भारद्वाज का यह कथन दृष्टव्य है–"आत्मकथा का भीतरी ढ़ाँचा कथाकार के व्यक्तित्व और युग की आकांक्षा की व्यंजना से निर्मित होता है। कथाकार का व्यक्तित्व विकसित होता है, अन्तर्द्वन्द्व एवं वाह्य संघर्षो के दोहरे दबाव से। कथाकार का अन्तः तीव्रता और प्रकृति में उतना ही विशिष्ट अंतर्द्वन्द्व वस्तुतः एक अग्नि है, जिसमें तपकर व्यक्तित्व का स्वर्ण निखरता है। अंतर्द्वन्द्व कथाकार के भीतर मूल्यगत संकट से उत्पन्न होता है , विपरीतता के बीच एक चयन करने को, अनिश्चय में से निश्चय में आने की अपरिहार्य विवशता उसे जन्म देती है। यह योगी के मनोजय से भिन्न नहीं। आंतरिक उथल–पुथल या मानस विप्लव उसके अस्तित्व को प्राणवत्ता, सत्ता की जीवन्तता का परिचायक है। इसमें उसे निश्चय ही अपने भीतर के प्रलोभनों, सुविधाओं और यथास्थिति से लोहा लेना पड़ता है।"3 इन सारी प्रक्रिया के बीच से छन कर 'आत्मकथा' आकार पाती है। लेखक सत्य का उद्घाटन किस सीमा तक किस रूप में करता है यह उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।

आत्मकथा का वर्गीकरण–

आत्मकथा के वर्गीकरण का आधार विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है।

क– आत्मकथा लेखक के व्यक्तित्व के आधार पर –

1–धार्मिकवृत प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ

2–राजनीतिकवृत प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ

3–कथाकार के जीवन की आत्मकथाएँ

ख – विषय की प्रकृति के आधार पर–

1–ऐतिहासिक 2–राजनीतिक 3–धार्मिक 4–सामाजिक 5–सांस्कृतिक 6–मनोवैज्ञानिक 7–वैज्ञानिक

ग– प्रयोजन के आधार पर–

1–आत्माभिव्यक्ति मूलक

2–आत्मस्वीकृत मूलक

3–आत्मप्रशंसात्मक मूलक

4–उपदेशात्मक मूलक

घ– अवस्था के आधार पर–

1–समग्र जीवन सम्बन्धी

2–जीवन के कालखण्ड से सम्बन्धित

ड़0– तत्व के आधार पर–

1–चरित्र प्रधान आत्मकथा

2–कथानक प्रधान आत्मकथा

3–परिवेश प्रधान आत्मकथा

4–जीवन दर्शन प्रधान आत्मकथा

5–शैली प्रधान आत्मकथा

च– विवेच्यकाल के आधार पर–

1–राजनैतिक क्षेत्र के आत्मकथा लेखक

2–सामाजिक क्षेत्र के आत्मकथा लेखक

3–साहित्यिक क्षेत्र के आत्मकथा लेखक

वैज्ञानिक दृष्टि से विवेच्यकाल का आधार सटीक बताया गया है। किसी भी देश या साहित्य की प्रेरणा का मूल स्त्रोत महापुरूष होते हैं। ऐसे महापुरूषों ने अपनी जीवनी तथा दूसरे महापुरुषों की जीवनी लिखने में अपनी अभिरूचि दिखाई। ऐसे लेखक राजनैतिक क्षेत्र के आत्मकथा लेखक में आए। महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णन के नाम उल्लेखनीय हैं।

दूसरे वर्ग के लेखकों में भवानी दयाल सन्यासी, सत्यानंद परिव्राजक तथा वियोगी हरि आते है। इन आत्मलेखकों ने सामाजिक रूप–रेखा को आधार बनाकर अपनी आत्मकथा की रचना की है। सामाजिक क्षेत्र में इनकी सेवाएँ महत्वपूर्ण समझी जाती हैं। इन लेखकों द्वारा लिखित आत्मकथा 'प्रवासी की आत्मकथा,' ,'स्वतंत्रता की खोज में' 'वीर सतसई' है।

साहित्यिक क्षेत्र के आत्मकथा लेखकों में बाबू श्यामसुन्दर दास, सियारामशरण गुप्त ,राहुल सांकृत्यायन, यशपाल एवं शांतिप्रिय द्विवेदी प्रमुख हैं, जिन्होंने आत्मकथा लेखन द्वारा साहित्य क्षेत्र को समृद्ध किया।

हिन्दी में आत्मकथा लेखन की परम्परा–

हिन्दी में आत्मकथा लेखन अन्य विधाओं की तुलना में बहुत ही कम लिखा गया है और जो लिखा भी गया है वह इतना सशक्त नहीं है। इसका मुख्य कारण अतिशय विनम्रता और अहमन्यता है, इन दो विरोधी भावों से जीवनीपरक साहित्य का विकास प्रभावित हुआ है। इस संदर्भ में डॉ0 भगवान शरण भारद्वाज का यह कथन विचारणीय है--"हिन्दी के साहित्यकार के मन में कहीं न कहीं यह धारणा अवश्य बद्धमूल रही है कि जीवनी साहित्य का सर्जन द्वितीय श्रेणी का कार्य है। इस मनोवैज्ञानिक आशंका ने हमारी साहित्य को दूर तक प्रभावित किया है। ऐसा समझा जाता है कि दूसरे को महत्व देना ओर उसके जीवन की चर्चा में डूबना साहित्यकार के 'अहम्' के लिए अनुकूल, सुपाच्य और सुग्राह्य नहीं। स्वयं को समर्थ, मौलिक और नितान्त अप्रभावित दिखाने के लिए यह वांछनीय समझा जाता रहा है कि साहित्यकार किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति आस्था और श्रद्धा रखने का अपराध न करे। इस ग्रंथि से पीड़ित होने के कारण ही कदाचित् उसकी लेखनी बेझिझक होकर जीवनी साहित्य के दिशा में नहीं बढ़ती। आत्मकथा लेखन के अवसर पर एक अन्य जातीय संस्कार में हमारे सर्जन की लेखनी को कुण्ठित, जड़ीभूत और अवरूद्ध किया है। इस विश्व प्रपंच में हम जैसे व्यक्ति का अस्तित्व कितना नगणय है। 'पानी केरा बुदबुदा, इस मानुष की जात ' की बात कबीरदास कह गए हैं और 'कीन्हें प्राकृत जन गुण गाना, सिर गिरा लागि पाछिताना 'की चेतावनी विश्वकवि तुलसीदास भी दे चुंके हैं। अपने आपको कम से कम उजागर करने, अपने सम्बन्ध में काफी कृपणता बरतने और लोकदृष्टि से हमेशा ओझल बने रहने की हमारी मानसिकता ने हमारे जीवनी साहित्य के प्राणतत्व को सोख लिया।"4

हिन्दी में आत्मकथा लेखन की परम्परा बहुत पुरानी नहीं है। इसका विकास पाश्चात्य साहित्य का आधार लेकर आधुनिक काल में ही हुआ है। आधुनिक काल के पहले अपवाद स्वरूप केवल एक ही आत्मकथा मिलती है, वह है बनारसी दास जैन की ' अर्द्धकथा' 'जिसका रचना काल 1641 ई0 है। इसमें लेखक ने अपने जन्मकाल संवत् 1643 से लेकर 1689 का जीवन वृतांत को पद्यशैली में प्रस्तुत किया है। इसमें लेखक ने अपने जीवन के सुख–दुःख तथा दुराचरण के परिणास्वरूप उत्पन्न कुष्ठ रोग का वर्णन, सत्य की कसौटी पर रखकर काव्यबद्ध किया है। यह आत्मकथा पद्यशैली में है, फिर भी यह हिन्दी की पहली ' आत्मकथा ' मानी जाती है। इसके सम्बन्ध में डॉ0 रामचंद्र तिवारी का दावा है कि "कदाचित् समस्त आधुनिक आर्यभाषा साहित्य में इससे पूर्व की आत्मकथा नहीं है।"5

आधुनिक काल में आत्मकथा लेखन का प्रचलन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हुआ। उन्होंने 1876 ई0 में 'आपबीती कुछ जग बीती' आत्मकथा लिखी जिसका आरंभिक अंश 'प्रथम खेल 'शीर्षक से प्रकाशित हुआ। जिसमें अपने परिवार तथा अपने जीवन का परिचय दिया है किन्तु यह रचना दो तीन पृष्ट से आगे नहीं बढ़ सकी। परन्तु इस रचना ने लेखको में आत्मकथा लिखने का जोश भरा, जिससे प्रभावित होकर श्री अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र और श्रीधर पाठक ने अपनी–अपनी आत्मकथाएँ लिखीं। स्वामी दयानन्द कृत 'आत्मचरित', सत्यानंद अग्निहोत्री लिखित 'मुझमें देव जीवन का विकास', भाई परमानंद लिखित' कल्याण मार्ग का पथिक ' ,रामविलास शुक्ल लिखित 'मैं क्रांतिकारी कैसे बना?', भवानी दयाल सन्यासी लिखित 'प्रवासी की कहानी' प्रमुख हैं। धीरे–धीरे आत्मकथा लिखने की गति

में विकास हुआ। हिन्दी में अनेक उच्चकोटि की अन्य भाषाओं में लिखित आत्मकथाओं के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। इसमें महात्मागाँधी की आत्मकथा, नेहरू की 'मेरी कहानी' कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी के 'आधे रास्ते' आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी में आत्मकथा लिखने की प्रवृति को प्रोत्साहन देने में प्रेमचंदजी द्वारा प्रकाशित 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक का विशेष हाथ है। जिससे प्रभावित होकर 20वीं शताब्दी में अनेक महत्वपूर्ण आत्मकथाएँ हिन्दी में प्रकाशित हुईं। डा0 श्याम सुंन्दर दास की 'मेरी आत्मकहानी' सन्1941 ई. में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा हिन्दी की पहली प्रसिद्ध आत्मकथा कही जा सकती है। यह आत्मकथा हिन्दी भाषा और साहित्य के एक पूरे युग को प्रतिफलित करती है। उसके बाद अनेकानेक आत्मकथाएँ प्रकाशित हुईं। डा0 राजेन्द्र प्रसाद रचित 'आत्मकथा'–1947ई0, जिसमें देश की आजादी के विषय पर लिखी गई थी। गुलाब राय द्वारा लिखित 'मेरी असफलताएँ' 1941ई0 जो व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' 1946ई0 में प्रकाशित हुई, यह हिन्दी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण निधि है, जिसमें लेखक अपने जीवन के एक एक पल को साहित्य के ढाँचे में ढ़ालकर, ज्ञान बिखेरता है। आकार–प्रकार की दृष्टि से यह आत्मकथा अत्यन्त विस्तृत है जो पाँच खंडों में प्रकाशित है। गणेश प्रसाद पर्णी की ''मेरी जीवन गाथा'1949ई0, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की 'स्वतंत्रता की खोज में '1981ई0, भवानी दयाल सन्यासी की आत्मकथा 'प्रवासी की आत्मकथा'1947ई0 ,देवेन्द्र सत्यार्थी की 'चाँद सूरज के चरित' 1953ई0, निराला कृत 'कुली माठ' 1939ई0, श्रीमति जानकी देवी बजाज की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' 1956ई0, सेठ गोविन्ददास का

'आत्मनिरीक्षण 1958ई0, पाण्डेय वेचन शर्मा उग्र की 'अपनी खबर' 1960ई0 में प्रकाशित हुआ।

हिन्दी के वर्तमान लेखकों में आचार्य चतुरसेन शास्त्री की 'मेरी आत्म कहानी' डा0 भवनेश्वर प्रसाद मिश्र की 'जीवन के चार अध्याय', श्रीपरमालाल पन्नालाल बख्शी की 'मेरी अपनी कथा', डॉ0 हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित आत्मकथा जो चार भागों में प्रकाशित है। बच्चनजी ने इस आत्मकथा में अपने जीवन के उतार चढ़ाव के साथ ही साथ पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन को बहुत ही बखूबी ढ़ँग से प्रस्तुत किया है। इस तरह आत्मकथा लेखकों में बच्चनजी का नाम भी अग्रिम पंक्ति में आता है। कालक्रम के अनुसार हिन्दी साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों के साथ फिल्मकलाकार ने भी अनेक आत्मकथाएँ लिखी। अमृत प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट ', श्रीराम शर्मा की 'मेरी अपनी राम कहानी', बलराज साहनी की 'यादों के झरोंखें से' , उर्मिला देवी की 'कारागार' हंसराम रहबर की 'मेरे सात जन्म' अभी हाल ही में चन्द्रकिरण सोनरक्षा द्वारा लिखित आत्मकथा 'पींजरे की मैना ', कन्हैयालाल द्वारा लिखित 'मैं था औरा मेरा आकाश' ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम द्वारा लिखित 'अग्नि की उड़ान' प्रकाशित हुई है।

स्पष्ट है कि आत्मकथा में आत्म कथाकार अपने जीवन के एक–एक वृतांत को वातावरण, परिस्थितियों के साथ ही साथ सामाजिक परिवेश से जोड़कर लिखता है। आत्मकथा, आत्म संस्मरण ,पत्र व डायरी से अलग है। आत्म संस्मरण में जहाँ स्वजीवन की चुनी हुई स्मृतियों के लेखा–जोखा को प्रस्तुत किया जाता है, वहीं आत्मकथा में लेखक अपने जीवन का विस्तृत लेखा–जोखा को प्रस्तुत करता है।

वर्तमान में आत्मकथा गद्य विधाओं में कहानी ,नाटक, उपन्यास से पीछे नहीं है और अपनी वैशिष्ट्य को बनाये रखते हुए निरन्तर विकासोन्मुख है।

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा साहित्य–

राहुल सांकृत्यायन के लेखन काल के समय आत्मकथा लिखने की एक खासी परम्परा विकसित हो चुकी थी, जो प्रयोजन विषयशैली की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण है। राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा' आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय कृति है, जो पाँच खण्डों में संकलित है। इसमें लेखक ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों का विवरण बहुत ही कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। राहुलजी की जीवन कथा एक पर्यटक की कथा होने के कारण मनोरंजक ,हृदयग्राही, शिक्षाप्रद, रोमांचकारी तथा उत्साहभरी जीवन यात्रा है। यह यात्रा एक सामान्य व्यक्ति की नहीं है बल्कि एक यायावर ,बहुभाषाविद् ,धर्म दर्शन, संस्कृतिमर्मज्ञ, इतिहासकार, पुरातत्ववेता, संधर्षशील, विद्रोही, राजनीतिज्ञ, बौद्ध–भिक्षु की यात्रा है। राहुलजी की आत्मकथा साहित्य पढ़ने से पाठक सारे गुणों से अवगत हो जाएगे। राहुलजी के जीवन के हर मोड़ पर वाजिंदा की शेर "सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ, जिंदगानी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ" हमेशा उत्साह भरता रहा , तभी तो ग्रामीण परिवेश में जन्मे हुए बालक ने अर्धवयस्कता में ही विश्व की आधी यात्राएँ कर ली। राहुलजी ने अपनी जीवन यात्रा में यथार्थ का सदैव ध्यान रखते हुए स्मृतियों तथा डायरी के सहारे बाल्यकाल के जीवन को निष्कपट भाव से अपनी जीवन यात्रा में लिखा है।

राहुलजी की ' मेरी जीवन यात्रा 'आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में अपने आप में अद्वितीय है। इसमें लेखक के बाल्यकाल जीवन से लेकर मृत्युपर्यन्त तक का ब्यौरा समाहित है। इसमें जीवन यात्रा के साथ–साथ वास्तविक यात्रावृत भी समाविष्ट है। लंका ,नेपाल ,तिब्बत ,इंग्लैण्ड़ ,यूरोप ,रुस ,ईरान ,हिमालय के उत्तरी क्षेत्र के साथ ही साथ लेखक ने उन देशो के राजनैतिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की रूपरेखा अपनी आत्मकथा में लिखी है। इस आत्मकथा से राहुलजी के व्यक्तिगत जीवन के साथ ही साथ हमें तत्कालीन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के बारे में भी विस्तृत जानकारी मिलती है। इस विस्तृत आत्मकथा में राहुलजी की मानवीय दृष्टि ,उनकी संवेदनशीलता उनकी देशभक्ति और विश्व–दृष्टि के साथ ही साथ वैचारिक परिवर्तन देखने को मिलता है। राहुलजी का आत्मान्वेषण और आत्म–परीक्षण, उनमें स्वाध्याय और चिन्तन तथा उससे निकलने वाले बहुमूल्य निष्कर्ष, उनकी स्पष्टवादिता ,उनके जीवन के अन्तर्विरोध, सभी कुछ उभर कर सामने आये हैं। यही नहीं इसमें भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अनेक संदर्भ तथा किसानों मजदूरों के लिए किये गये संघर्ष की प्रेरक गाथा भी है जो किसी भी बुद्धिजीवी के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकती है। राहुलजी की जीवन यात्रा अनेक तथ्यों से भरी है। इसमें डायरी, संस्मरण आदि अन्य विधायें भी समाविष्ट है, इसलिए लेखक के बहुस्तरीय जीवन के कई रंग यहाँ एक साथ देखे जा सकते हैं। इस प्रकार राहुलजी की जीवन–यात्रा एक दर्पण की तरह है, जिसमें राहुलजी के बाल्यकाल से लेकर 1986 तक के व्यक्तित्व के आयामों का प्रतिबिम्ब झलकता है। इस संबंध में स्वयं लेखक का कथन है–"मैंने अपनी जीवनी न लिखकर जीवन यात्रा लिखी है, यह क्यों? अपनी लेखनी द्वारा मैंने इस जगत की भिन्न भिन्न गतियों और विचित्रताओं को अंकित करने की कोशिश की है, जिसका

अनुभव हमारी तीसरी पीढ़ी मुश्किल से करेगी।" 6 सब मिलाकर देखा जाय तो राहुलजी की पाँच खंडों में समाप्त होने वाली यह जीवन यात्रा हिन्दी साहित्य की एक अनुपम उपलब्धि है। यह खेद की बात है कि इसके पाँचवा खण्ड़ में 1951 से 1956 तक की धटनाएँ मात्र चर्चा तक ही सीमित है। इसके बाद लेखक ने स्वयं अपनी जीवन यात्रा नहीं लिखी कारण जो भी रहें हो। लेखक की जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए, उनकी पत्नी कमला सांकृत्यायन ने जीवन यात्रा का छठवाँ भाग लिखा। कमला जी ने 10 अप्रैल1956 से मृत्यु तक जीवनी, डायरी और पत्रों के आधार पर अपनी लेखनी से उसे लिपिबद्ध किया है। कमलाजी के शब्दों में –"इस कालखण्ड का विवरण लिखकर उनकी अपूर्ण जीवन यात्रा को पूरा कर मैंने अपने उस दायित्व को ही निभाया है, जो पंडितजी मुझे सौप गये थे। इसे प्रस्तुत करने में पंडितजी की स्मृति मेरा सम्बल और उनके वाक्य मेरी प्रेरणा स्त्रोत रहें हैं। जाने अनजाने कुछ अन्य लोगों ने भी मुझे समय समय पर इसके लिए प्रेरित किया, उन सबके प्रति मैं अभारी हूँ।" 7 इस प्रकार ' मेरी जीवन यात्रा ' लेखक के कृतित्व और व्यक्तित्व का जन्मकाल से लेकर मृत्युपर्यन्त तक का सारगर्भ लेखा–जोखा है। लेखक का यह आत्मचरित एक यायावर का आत्मचरित है और इसीलिए " मेरी जीवन यात्रा " में जीवनी मात्र नहीं है अपितु जीवन के साथ–साथ एक विराट अनुभव यात्रा भी है। जीवनीकार केवल अपनी कथा प्रस्तुत करने तक ही सीमित नहीं है, वे बाहरी विश्व की विचित्रताओं और विभिन्नताओं को भी अंकित करते चलते हैं।

राहुलजी ने अपने आत्मकथा को इस प्रकार से लिखा कि वह उनके जीवन का इतिहास बन गया जो आत्मकथा की कसौटी है। 'मेरी जीवन यात्रा 'भाग–1, भाग–2,

में अपने जीवन का इतिहास स्मृतियों के रूप में ही प्रस्तुत किया है। साथ ही उसके लिए समय–समय पर लिखे गए स्वयं के नोट्स 109 पन्नें डायरियों का भी प्रयोग किया गया है। मेरी जीवन यात्रा के बाल्य 1893–1909 तक, तारुण्य1910–1914ई0 तक , नवप्रकाश 1915–1922 तक, राजनीति प्रवेश 1921–1927 तक, पर्यटन 1927–1934ई0 तक के जीवन का नोट्स , डायरी के साथ ही साथ स्मृति का आधार बनाकर लिखा गया। 8

राहुलजी मूलतः एक विचारक, चिन्तक और इतिहास की परतों में अपनी पारदर्शी दृष्टि से झाँकने वाले अनुसंधिनित्सु थे। अपनी जीवन यात्रा में उन्होंने विश्व के भूगोल को अपने पैरों से नापा और अतीत को धरती के अन्तःस्थल में सुरक्षित साक्ष्यों से व्याख्यायित किया तथा भाषाओं की शब्द यात्रा तक छानकर निकालने का अथक प्रयास किया। इतिहास के गहराई को जानने के लिए उन्होंने हिमालय के एक–एक कोने, केदार, बदरी, यमुनोत्री, गंगोत्री के साथ ही साथ उन्होंने तिब्बत के दुर्गम स्थलों की यात्राएँ कीं। राहुलजी के शब्दों में–"अब हमें सबसे विकट डांडे थोड़ला पार करना था। डांडे तिब्बत में सबसे खतरे की जगह है। सोलह सत्रह हजार फीट की ऊचाई होने के कारण उनकी दोनों तरफ मीलों तक कोई गाँव–गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता"9 राहुलजी अपनी जीवन यात्रा में बितायें हुए हर जगहों के इतिहास भूगोल के साथ ही साथ भाषा को भी अपने जीवन यात्रा से जोड़ कर आगे बढ़ते गए। इन्होंने लंका ,यूरोप ,इंग्लैण्ड, तिब्बत, नेपाल, जापान, सोवियत रुस की भूमि पर पाँव रखते हुए वहाँ के इतिहास को देखा, समझा तथा उन्होंने भावी पीढ़ी के लिए

इतिहास को खड़ा किया। वर्तमान के इतिहास में उन्होंने अपनी सशक्त भागीदारी अंकित की और भविष्य के इतिहास का पुरोवाक 'बाईसवीं सदी ' जैसी कृतियों में भी लिख दिया । इसलिए राहुलजी के यात्रा साहित्य को इतिहास की संवेदना कहा जाता है, जो कार्य इतिहास के माध्यम से आचार्य वासुदेव शरण अग्रवाल ने किया, वही कार्य राहुल ने साहित्य के माध्यम से किया।

प्रत्येक लेखक कुछ न कुछ वैचारिक आग्रही और दुराग्रही होता है। राहुलजी का विचार समय के अनुसार बदलते हुए क्रम में हैं–वैष्णव, शैव, आर्यसमाजी, बौद्ध उसके पश्चात् मार्क्सवादी। राहुलजी अपने बदलते हुए विचार को 'मेरी जीवन यात्रा 'में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–"महेशपुर में रहते ही वक्त अखबारों से रूसी क्रांति की खबरों ने मेरे उपर एक नया प्रभाव जमाना शुरू किया। इन खबरों से मालूम होता था कि वहाँ गरीबों–मजदूरों, किसानों की भी एक पार्टी है, जो गरीबों के हक के लिए लड़ रही है, वह भोग और श्रम के समान विभाजन का प्रचार करती है। मुझे ये ख्याल अखबारों के बहुत से अंकों को पढ़ते हुए सिर्फ बीजरुप में मालूम हुए। मैंने उस वक्त तक हिन्दी औा उर्दू में साम्यवाद पर कोई पुस्तक पढ़ी नहीं शायद वह मौजूद भी न थी। किसी जानकार से इस बारे में वार्तालाप भी नहीं किया जा सकता था, तो भी भोग–श्रम–साम्य का सिद्धान्त बहुत जल्दी ही मेरे स्वभाव का अंग बन गया।"10 इस प्रकार उनके विचार कालक्रम के अनुसार बदलते हुए रूप में दिखाई देते हैं। भंदन्त आनन्द कौसल्यायन के शब्दों में –"राहुलजी को समझने के लिए यह आवश्यकता है कि उनके जन्म भर के विचारों को संगति मिलाने का प्रयास न किया जाए। उन्होंने जब जो कुछ सोंचा, जब जो कुछ माना, वही लिखा, निर्भय होकर

लिखा, उन्हें किसी भी प्रकार का लोभ लालच उनकी मान्यताओं से विमुख न कर सका"

सफल आत्मकथा लेखन के लिए आत्मनिरीक्षण, विश्लेषण सत्य और यथार्थ का होना भी आवश्यक है। ये सभी तत्व राहुलजी की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा 'में देखने को मिलते हैं। 'आत्मा' की अभ्व्यिक्ति ईमानदारी की अपेक्षा रखती है, एवं आत्मनिरीक्षण और आत्मविश्लेषण की भी। राहुलजी ने अपनी आत्मकथा में अपनी जीवन यात्रा का वर्णन करते हुए यथावसर प्रतिक्रियाएँ भी व्यक्त करते हैं। "मेरी जीवन यात्रा" के प्रथम खण्ड के प्राक्कथन में राहुलजी लिखते हैं–'मेरी जीवन यात्रा' मैंने क्यों लिखी? मैं बराबर इसे महसूस करता रहा कि ऐसे ही रास्ते से गुजरे हुए दूसरे मुसाफिर यदि अपनी जीवन यात्रा को लिख गए होते, तो मेरा बहुत लाभ हुआ होता ज्ञान के ख्याल में ही नहीं समय के परिणाम में भी। मैं मानता हूँ कि दो जीवन यात्राएँ बिल्कुल एक सी नहीं हो सकती, तो भी इसमें संदेह नहीं कि सभी जीवनों को उसी आंतरिक और बाह्य विश्व की तरंगों से तैरना पड़ता है।"11 आत्मकथा में निजी जीवन का सत्य सुसम्बद्ध ढंग से इस प्रकार दिया जाता है कि उसे स्मृतियों के आधार पर पुनः सृजित जीवन के रूप में पाठकों तक पहुँचाया जा सके। इसी अर्थ में आत्मकथा जीवन की कलात्मक आकृति है। राहुलजी ने 'मेरी जीवन यात्रा' में अपनी जीवन का इतिहास समृतियों के रुप में प्रस्तुत किया है। बचपन से लेकर 1934ई0 तक की यात्रा को लेखक ने अपनी स्मृति से कागज पर उतारा है। राहुलजी के शब्दों में–"इन दो महीनों में मैंने 1893ई0 से 1934 ई0 तक की यात्रा को अपनी स्मृति से कागज पर उतारा।"12 अपनी जीवन यात्रा में राहुलजी यथार्थ और सत्यता

की पगडन्डी पर अन्त तक चलते रहे यथार्थ, सत्य को व्यक्त करने में उन्हें थोड़ा भी हिचकिचाहट महसूस नहीं हुई। अपनी जीवन यात्रा के प्रथम भाग में ही अपने गुण–दोषों को वर्णन निर्भिकता पूर्वक किया है। घर से भागकर कलकत्त जाना, पैसा चुराने के साथ ही साथ प्रथम विवाह के सम्बंध में स्पष्ट विचार, पत्नी के प्रति शंका दृष्टि और परित्याग, साधु–संतों के साथ गंजा पीना, प्रेम सम्बन्धी विचार के साथ''''''''''। इस संदर्भ में बाबू गुलाब राय लिखते हैं कि ''जीवनी लेखक अपने चरित्र नायक के अन्तर बाह्य स्वरूप का चित्रण कलात्मक ढंग से करता है। इस चित्रण में वह अनुपात और शालीनता का पूर्ण ध्यान रखता हुआ सहृदयता, स्वतंत्रता और निष्पक्षता के साथ–साथ अपने चरित्र नायक के गुण–दोषमय सजीव व्यक्तित्व का एक आकर्षक शैली में उद्‌धाटन करता है।''13

आत्मकथा साहित्य का केन्द्र व्यक्ति विशेष होता है। उस व्यक्ति विशेष के कार्यकलाप उस केन्द्र को वाह्य परिधि का निर्धारण करते हैं। इस वृत में व्यक्ति और उसका भाव लोक स्पन्दित रहता है। यह विधा व्यक्ति विशेष के जीवन की घटनाओं की गणना मात्र न होकर कलात्मक प्रतिफलन है। इसीलिए माना जाता है कि 'आत्मकथा'का भवन अनुभूति और साक्षात्कृत सत्यों के आधारशिला पर अवस्थित रहता है। राहुलजी की 'मेरी जीवन यात्रा' इसका प्रमाण है। लेखक ने अपने जीवन के एक एक पल को सत्यता के सूत्र में पिरोंया है। इसमें तनिक भी कल्पना नहीं दिखाई देती है, उन्होंने अपनी अनुभूति को सत्य के धरातल पर रखकर अभिव्यक्त किया है। राहुलजी अपनी अनुभूति के साथ प्रकृत्ति के स्वरुप का भी यथावत वर्णन किया है। उन्होंने अपने जीवन के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के गुण–दोष का भी

ASSAM UNIVERSITY LIBRARY
TH 1404
12 01 2015

वर्णन किया है जो उनकी जीवन–यात्रा के सहयोगी, सहपाठी, मार्गदर्शक और शिक्षक हैं।

इस प्रकार राहुलजी की 'मेरी जीवन यात्रा ' में आत्मकथा की हर विधा को अपने अन्दर समाहित किया हुआ है। राहुलजी अपनी आत्मकथा में सत्य, यथार्थ, परिवेश, आत्मविशलेषण, आत्मनिरीक्षण, और अपने जीवन के व्यौरे को एक साथ जोड़कर उन्हें 'मेरी जीवनयात्रा' में पिरोया है। यह आत्मकथा अन्य लेखकों की तरह आत्मकथा नहीं है बल्कि यह आत्मकथा का सिरमौर है। डॉ0 नामवर सिंह का यह कथन इस संदर्भ में द्रष्टव्य है कि–"मेरी जीवन यात्रा का सबसे बड़ा आकषर्ण है कनैला के केदारनाथ पांड़े का महापंड़ित राहुल सांकृत्यायन में रूपान्तरण। जीवन की यह यात्रा अन्य यात्राओं से कितनी लम्बी है! कितनी दुर्गम! कितनी साहसिक! कितनी रोमांचक! और कितनी सार्थक!"14

स) आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का जीवन एवं परिवेश–

1. राहुल सांकृत्यायन का प्रारम्भिक जीवन–:

राहुल सांकृत्यायन का जीवन हमारे लिए एक आदर्श है, जो सत्य, न्याय तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों में धीर और साहस के साथ चलने की प्रेरणा देता है। राहुलजी का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। उनका जन्म 9 अप्रैल,1893 दिन रविवार को ननिहाल 'पन्दहा" गाँव में हुआ था।15 राहुलजी का पैतृक गाँव कनैला' था, जो उतरप्रदेश के आजमगढ़ जिले में स्थित है। अपने पिता गोवर्धन पाण्डे एवं माता कुलवंती देवी के वे ज्येष्ट पुत्र थे। उनके अन्य तीन भाई–श्यामलाल पाण्डे, रामधारी पाण्डे एवं श्रीनाथ पाण्डे थे तथा एक बहन थी, जिसका नाम रामप्यारी था।'

16 राहुलजी का बचपन नाना–नानी के साथ पन्दहा में बीता। नाना रामशरण पाठक पल्टनिहा सिपाही थे। उन्हीं के कड़े अनुशासन में राहुलजी का विकास हुआ। रामशरण पाठक को एक ही संतान थी, वह थी कुलवंती जो राहुलजी की माँ थी। नाती पर नाना–नानी का भरपूर वात्सल्य था। राहुलजी लिखते हैं–''होश संभालते ही माँ को 'माँ' कहते सुन मैं भी उन्हें बराबर माँ कहता''''''''''मैं बराबर नानी के पास सोया करता था। दूध छोड़ने के बाद ही से माँ से मैं अलग कर लिया गया था और वस्तुतः नानी में मेरा जितना स्नेह था ,उतना माँ में नहीं। जीवन के आरम्भिक पाँच वर्षो में नानी ने मेरा पोषण ही नहीं, निर्माण भी किया।''17

रामशरण पाठकजी तीन भाइयों में मझले थे। पाठकजी के पिता के पास खेती के अतिरिक्त काफी गायें–भैंसें थी, जिसे पाठकजी चराते थे। ग्यारह वर्ष की अवस्था में पाठकजी का विवाह हो गया। खाना–पीना ,गायें चराने के अतिरिक्त पाठकजी को कुस्ती का शौक था। एक दिन पाठकजी घर छोड़ नौकरी की तलाश में हैदराबाद पहुँच गये। अंग्रेजी पलटन के कर्नल ने पाठकजी के कुश्ती देख अपने यहाँ नौकरी में भर्ती कर लिया और काफी इनाम भी दिया।18 पाठकजी के सिपाही संस्कृति का असर राहुलजी पर विशेष रूप से पड़ा। राहुलजी लिखते है–'पाठकजी अपने जीवन की यात्राओं की बातें अपनी धर्मपत्नी को रात में सुनाया करते थे। उस वक्त बगल में बैठा या गोद में लेटा सात–आठ का उनका नाती उन बातों को सुनता और आश्चर्य करता। कामठी, धुलिया, नासिक, अमरावती यद्यपि उस बच्चे को शब्द मालूम होते थे, किन्तु उन्होंने पीछे भूगोल और नक्शा पढ़ने में बड़ी दिलचस्पी पैदा की।19

राहुलजी को कड़ा अनुशासन, वक्त पावंदी, सफाई की शिक्षा अपने नाना से मिली, जिसे वे अपने जीवन में आचल की गाँठ के तरह बाँध कर रखे।

राहुलजी का बचपन नानी के गोद में बीता था। राहुलजी अपनी नानी के विषय में लिखते हैं– " नानी मझोले डील की साधारण स्वस्थ्य स्त्री थी। उनके बाल बहुत से सफेद थे, किन्तु दाँत आखिर तक नहीं टूटे। उनकी बात को नाना बहुत मानते थे और घर के कारोबार में नानी का एक छत्र राज्य था। वह गप–शप में बहुत कम रहती। घर के छोटे बड़े काम के सिवा, गाने–बजाने या मेला–तमाशा देखने में उनकी रुचि न थी। दो घंटे रात ही वह जग उठती और अपने दो तीन पेटेंट भजनों को बिना सुंर–ताल के भक्तिभावना से गाती। 20 राहुलजी के व्यक्तित्व पर नानी की अन्तर्मुखी प्रकृति, समय का सदुपयोग, सहज व्यक्तित्व, ईश्वर में आस्था आदि का प्रभाव पड़ा। अपने नानी के कोमल स्वभाव के बारे में राहुलजी लिखते हैं–"उनका दिल अत्यन्त कोमल था।''''वैसे पाठक के घर से कुते बिल्लियों का बिल्कुल संबंध न था, किन्तु एक बार एक कुतिया ने आकर बाहर के घर के एक कोने में बच्चे जन्म दिए। फिर क्या था? पठकाईन ने समझा–इस प्रसूता की परिचर्या का सारा भार उन्हीं पर है। कुतिया को प्रसूता की तरह खाना मिलने लगा।''''आदमी जन हित–पाहुना ही नहीं, रात के टिकनेवाले भिखमँगे भी उनकी तारीफ किया करते थे। अतिथियों को खिलाने–पिलाने में उनको बड़ा आनन्द आता था।" 21

नाना–नानी के संस्कार के साथ पितृ परिवार के संस्कार का छाप भी राहुलजी के जीवन पर पड़ा है। मातृकुल से राहुलजी को बाल्य काल में 'फौजी रौब, धुमक्कड़ी, दयाभाव, मिला तो पितृकुल से इन्हें ठेठ देहाती जीवन से जुड़े मानवीय संस्कार

प्राप्त हुए। राहुलजी का परिवार 'सांकृत्य' ब्राहम्ण थे, जो सरयूपारीण 'मलाँव पाण्डे' शाखा के उतरपुरुष के रुप में जाने जाते थे। सांकृत्य गोत्र होने के कारण ही बौद्ध भिक्षुक बनने के बाद इनका नाम राहुल सांकृत्यायन रखा गया।22 राहुलजी के पिता गोबर्धन पाण्डे कनैला में पुजारी के नाम से जाने जाते थे। राहुलजी अपने पिताजी के बारे में लिखते हैं–"पिता गोवर्धन पाण्डे को दस–बारह वर्ष की आयु में जाकर मुझे जानने का मौका मिला। साल में सप्ताह–डेढ़ सप्ताह के लिए पन्दहा से कनैला जाने पर ,मैं उन्हें दूर से देख भर लेता था।''''''''''''पूजा के कड़े नियमों के कारण गाँववाले उन्हें 'पुजारी' कहते थे।''''''''वे बड़े प्रतिभाशाली थे। उन्हें सिर्फ एक महीने किसी भूले–भटके मुंशी से क–ख सिखने का मौका मिला था, किन्तु न जाने कैसे उन्होंने रामायण ही नहीं, भिन्न, गुणा, भाग, सूद और पैमाइश के हिसाब को भी सीख डाला था।"23 इस प्रतिभा और यथाशीध्र सीखने की ललक और संस्कार का असर राहुलजी में संचारित हुआ, जिसके परिणाम स्वरुप केदारनाथ पाण्डे से महापंडित राहुल सांकृत्यायन बने। राहुलजी का बाल्य जीवन नानी, के साथ बीता, जिसके कारण उन्हें माँ का दुलार, प्यार कम मिला था। अपनी माँ का स्मृति को याद करते हुए राहुलजी लिखते हैं–"माँ शरीर के आकार प्रकार में अपने पिता से सादृश्य रखती थी। वैसा ही लम्बा कद, वैसा ही ड्ढष्ट–पुष्ट शरीर, रंग गोरा, दो बार प्रसूत ज्वर की बीमारियाँ–जिनमें आखिरी के कारण ही उनकी मृत्यु हुई–को छोड़कर उनका शरीर स्वस्थ्य रहता था। उनके स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने का साक्षात् अवसर नहीं मिला था। अपनी माँ की तरह वह झगड़े–झंझट से दूर रहती थी, यह तो इसी से सिद्ध है कि सारे गाँव में सबसे अधिक रुखी और कड़े मिजाज की सास रखने पर भी उनके साथ झगड़ा होते नहीं देखा गया।"24

राहुलजी को मामा–मामियों में सबसे अधिक रामदिन मामा और उनकी पत्नी से स्नेह था। छोटी मामी के प्यार के कारण उनके मन में वह कोमलता रच–बस गयी थी, जिससे वे कभी कट्टरपंथी नहीं बन सके। विरोधी के प्रति उनके मन में उपजी कटुता कभी स्थायी भाव नहीं बन सकी। छोटी मामी के विषय में राहुलजी लिखते है–"इस मामी में असाधारण कोमलता थी। वह सुन्दर थी। स्वच्छ थी और शीघ्र बात समझने वाली थी और भाँजे को खुश करने के लिए मीठी–मीठी बातें करना जानती थी।"25 इस तरह राहुलजी का बचपन दो परिवारों के सौहाद्रपूर्ण वातावरण में बीता। जहाँ पर प्यार –दुलार, सुख–दुःख, आनन्द–हर्ष, शोक के साथ जीवन के अनेक अनुभव सीखे। अतः मध्यवर्गीय परिवार द्वारा संवेदना सम्पन्न पारिवारिक माहौल मिलने के कारण राहुलजी में वह आधारभूत तत्व प्राप्त हुआ, जो उनके भीतर के मौलिक सोच को उजागर करने में सक्षम रहा।

2. प्रारम्भिक शिक्षा एवं परिवेश

राहुलजी की शिक्षा का आरम्भ खेंल–खेल से शुरू हुआ। बरसात के मौसम में राहुलजी अपने दोस्तो के साथ खेल रहे थे। राहुलजी का कोई साथी उनसे धक्का खाकर गड्ढ़े में गिर पड़ा। राहुलजी के नाना को लगा कि ऐसी उसने जानबुझकर शरारत किया है। फौजी नाना, नानी से सलाह लेकर मुझे 'रानी का सराय' मदरसा में दाखिला करा दिए।26 इस तरह राहुलजी का अक्षरारम्भ सर्वप्रथम यहीं से हुआ। राहुलजी को कुछ दिनों के बाद मदरसा जाना बन्द हो गया, क्योकि पढ़ाने वाले वहाँ कोई अध्यापक नहीं थे। पुनः1899 ई0 में फिर राहुलजी का दाखिला रानी की सराय में कराया गया। यहाँ दाखिला लेने से पहले अपने पैतृक गाँव से कुछ दूर बडौरा

स्कूल में राहुलजी ने हिन्दी में क, ख अक्षर सीखे। बडौरा स्कूल की कुछ दिनों की स्मृति को राहुलजी व्यक्त करते हैं––"बडौरा में शायद एकाध ही मास मैं पढ़ पाया। कौन अध्यापक थे, उनकी सूरत तक का मुझे स्मरण नहीं। इतना याद है कि वर्ण परिचय की जो पुस्तक हमारे साथियों के हाथ में थी, वह खड्गविलास प्रेस की छपी, खड़ी सरस्वती की तस्वीरवाली थी।"27 रानी की सराय स्कूल के नये अध्यापक द्वारिकाप्रसादजी थे। वह मारते –पीटते नहीं थे। जबकि उस समय का सर्वमान्य शिक्षा सिद्धान्त था 'छड़ी बिना विद्या नहीं आती।' उस साल 'जुज बे' पास करने की बात ही क्या होती, हाँ अगले साल मैं और दलसिंगार दोनों 'बे' पास हुए। 28 द्वारिकासिंह के बाद राहुलजी को पत्तरसिंह ने पढ़ाना शुरु किये। पन्दहा में हैजा फैलने के कारण राहुलजी को पढ़ाई छोड़ कनैला आ जाना पड़ा। राहुलजी के फूफा महादेव पंडित संस्कृत के जाने माने विद्वान थे। वह अपने साथ राहुलजी को कनैला से बछवल लेते गए। वही राहुलजी को अपने फूफा से संस्कृत सीखने का मौका मिला। संस्कृत पठन–पाठन के अनुभव के बारे में राहुलजी लिखते हैं–"फूफा महादेव पंडित संस्कृत व्याकरण के प्रौढ़ विद्वान थे। उन्होंने महाभाष्यान्त व्याकरण पढ़ा था और पढ़े ग्रंथ बहुत कंठस्थ थे। वे वही अपने द्वार पर विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाया करते। ज्यादातर विद्यार्थी सारस्वत चन्द्रिका ,मुहूर्तचिंतामणि के होते थे किन्तु कितने ही 'सिद्धान्तकौमुदी' भी पढ़ते थे। सप्ताह बीतते–बीतते फूफा ने मुझे भी सारस्वत पढ़ाना शुरु कर दिया। 'नत्वा सरस्वती देवी ' और आगे का पन्ना भी मैंने कंठस्थ कर डाला। स्मरणशक्ति मेरी बहुत तीव्र थी, फूफा चाहते थे कि मैं भी संस्कृत पढ़ूँ। मैं सोचता हूँ काश ! मैं फूफा के यहाँ पढ़ने को छोड़ दिया जाता। संस्कृत खुब पढ़ता।" 29 राहुलजी के बचपन की पढ़ाई के दिनों में, अनेकों अड़चने आती रही।

पर हर अड़चनों से जुझते हुए कक्षा दो पास कर दर्जा तीन में दाखिल हुए। इसी साल पाठ्यपुस्तकों में राहुलजी को बाजिन्दा का शेर पढ़ने को मिला। वही से राहुलजी अच्छे अंको के साथ प्राइमरी पास कर निजामाबाद के मिडल स्कूल में भर्ती हुए। 1906–1909ई0 तक मिडिल स्कूल में पढ़ते समय राहुलजी प्रथानुसारी अध्ययन के प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे। क्योंकि इस प्रणाली से उसकी गुणवता का स्फुरण एवं उसका प्रकाश सम्यक रुप से नहीं हो सका। जिसके कारण राहुलजी के मन में एक कड़वाहट पनपने लगा और यही कड़वाहट पढ़ने से अलग हटाकर दूसरे तरफ मोड़ दिया। वह मोड़ है–वैराग्य, सन्यास और पर्यटन'''''' । राहुलजी की औपचारिक शिक्षा सिर्फ मिडिल तक हुई। 30 उसके बाद राहुलजी की शिक्षा अनौपचारिक रुप से अयोध्या, मोतिराम के बाग, आगरा, लाहौर और श्रीलंका में हुई। इस तरह सत्तर साल के जीवन में विधिवत अध्ययन का काल नगणय है। राहुलजी का महापांडित्य, उनके जीवनभर के एक एक क्षण के स्वाध्याय, कठोर परिश्रम और ज्ञान की कभी न मिटने वाली भूख द्वारा अर्जित किया गया है।

राहुलजी का बचपन का परिवेश गाँव के खेत खलियान, धूल मिट्टी, विश्वास, शिष्टाचार के साथ भयंकर प्रभाव डालने वाले अकाल, हैजा, प्लेग के बीच बीता। गाँवों में फैले अंधविश्वास, भूत–प्रेत, देवी–देवता, ऊँच–नीच, छुआछूत आदि सबकुछ किसी न किसी तरह राहुलजी के बाल्यकाल से जुड़े रहे। गाँवों में छूआछूत का असर कितना प्रवल था। इस पर राहुलजी लिखते हैं–" उसी अकाल या उसके बाद के साल की बात है, हमारे अंधेरे घर के एक कोने में कॉसे की कई थालियाँ पड़ी थी। मैंने उसे छू दिया। माँ या बुआ गुस्सा हुई और मेरा हाथ धुलवाया। मालूम हुआ

अकाल में अपनी थालियाँ को किसी चमार ने कुछ सेर अनाज के लिए गिरवी रखा था।" 31 राहुलजी का जन्म पन्दहा में हुआ था, जो एक छोटा–सा गाँव है। गाँव का जीवन जमीन से जुड़ा होता है, जहाँ अशिक्षा, अंधविश्वास होते हुए भी मानवीय करुणा एवं उदारता के साथ भाई–भाई का नाता भी दिखाई देता है। गाँव में उत्सव त्यौहार जो समय समय पर मनाये जाते है उस सांस्कृतिक परिवेश के प्रभाव में राहुलजी के अंग–अंग जुड़ा रहा। राहुलजी लिखते हैं–"सावन में गाँव में कई जगह वृक्षों पर झुले पड़ते थे, जिनपर रात को गाँव की बहुएं तथा दूसरी तरुण कन्याएं झुला झुलती, कजरी गाती। हम लड़कों के झुले दिनभर चलते रहते।"32 इसी प्रकार गोधन के त्यौहार पर गाँव की बहु बेटियों का बढ़ःचढ़कर भाग लेना तथा दीवाली के दूसरे दिन पिड़िया लगाने की परम्परा आदि लोकाचार त्यौहार का गहरा प्रभाव राहुलजी के जीवन पर पड़ा जिसने राहुलजी को अपनी माटी और अपने लोगों से जोड़कर रखा। अपने जीवन की इन मधुर स्मृतियों को याद करते हुए राहुलजी लिखते हैं–"पिड़िया अगोरने वाली सभी तरुण स्त्रियाँ होती। उनके साथ उनके छोटे बच्चे भी रहते। कोदो की पुआल जमीन पर बिछा रहता, जिस पर कोई लम्बा चौड़ा बिछौना होता। सिरहाने सिंदुर से टीकी छोटी छोटी गोबर की पिड़ियाँ दीवार पर चिपकी रहतीं। एक छोटा–सा तेल का दिया जलता। आधी आधी रात तक माँ ओर उसकी सखियाँ गीत गाती। हम लड़कों को उनके गीतों से कोई खास प्रेम न था, हाँ गुड़ के मीठे ठकुये हमें बहुत प्रिय थे, जिन्हें खाते–खाते हम सो जाते। उन गीतों में से किन्ही का आरम्भ माँ की ओर से होता था, इसका भी मुझे पता नहीं।"33

अतः राहुलजी का बचपन दो गाँवों में बीता, दोनों गाँवों के परिवेश का प्रभाव राहुलजी में दिखाई देता है। पन्दहा में जहाँ नानी–नाना का अपार वात्सल्य और साथ ही साथ उनके उपर कड़ी नजर, तथा अनुशासन, पग–पग पर पाबंदी थी तो दूसरे तरफ कनैला में पूर्ण आजादी के साथ खेलना–कूदना। खेल में हापड़, गिल्ली–डंडा, दोलापाती के साथ चिका शामिल था। इस तरह राहुलजी के जीवन में इन दोनों परिवेशों का प्रभाव कही न कही जरूर दिखाई देता है। राहुलजी इस संदर्भ में लिखते हैं–"पन्दहा में जितना ही मैं पिंजड़े में बन्द रहता, कनैला में मैं उतना ही आजाद। सबेरे से पहर भर रात तक मैं खेल में मशगूल रहता, घर सिर्फ खाने के लिए आता।'''''पन्दहा का साल भर का अंकुश दौड़–धूप के लिए अयोग्य किये रहता, फिर यहाँ कौन–सा पौरूष दिखलाता।"34 राहुलजी को इसी परिवेश में अनेकों ऐसे साथी मिले जो राहुलजी के जीवन से सदैव जुड़े रहें। राहुलजी के साथियों में दलसिंगार, बिरजू, मग्घू आदि थे। इन्ही साथियों के साथ राहुलजी रानी की सराय पाठशाला में पढ़ें। गाँवों में भूत–प्रेत, टोना–टोटका आदि पर विश्वास लोगों में ज्यादा रहता है, राहुलजी को भी बचपन में इन बातों पर विश्वास था। राहुलजी अपने बचपन के इस स्मृति को याद करते हुए लिखा है–"पगडंडीवाला रास्ता जंगल के भूतहे पोखरे के पास से गुजरता था। इस निर्जन तालाब पर दिन–दोपहर को भूत नाचा करते और अकेले दुकेले सयाने भी उधर से गुजरने की हिम्मत न करते थे। सबेरे के वक्त उधर गायों और चरवाहों के रहने के कारण हमें भी हिम्मत रहती ,किन्तु शाम को किस बिरते पर उधर से गुजरते ? जब मैं नानी के साथ उधर से जाता तो, पास पहुँचने पर वह बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ' जै ठैयाँ भुइयाँ के बाबा साहेब ! जहाँ रहै बाल गोपाल को नीके बनाये राखा' कहकर प्रार्थना करती। हम भी

'बाबा साहेब' को मना लिया करते, लेकिन दिल को पूरा भरोसा न होता वैसे सड़क के रास्ते पर भी 'ठूँठे' पीपर के बाबा साहेब थे, किन्तु एक तो सड़क थी, दूसरे 'बाबा' अकेले थे और हम दो। हम लोगों ने यह भी सोच रखा था, कि यदि 'बाबा' प्रकट हुए तो झट मामा कह बैठेंगे, फिर 'बाबा' भांजे पर हाथ छोड़ने का साहस थोड़े ही करेंगे ?" 35

इस तरह राहुलजी का बचपन ग्रामीण जीवन के सीमित दायरों के बीच सादगी और समान्य वातावरण के बीच बीता। पिछड़ा इलाका होने के कारण रूढ़िवादी होना स्वभाविक था परन्तु राहुलजी इसके विपरीत निकले। राहुलजी को इसी परिवेश में मानवीय करूणा एवं उदारता मिली जो राहुलजी में अन्तकाल तक देखने को मिलती है। इस सीमित जीवनचर्या में राहुलजी को 'महापंड़ित' तक पहुँचना संभव नहीं था। हाँ, वह इस परिवेश में एक कुशल किसान तथा थोड़ा बहुत लिख पढ़ पाते। परन्तु राहुलजी ने अपनी सूझ–बूझ से अपना रास्ता स्वयं निर्मित किया जो सभी के लिए एक आदर्श है।

निष्कर्षतः आत्मकथा लेखन हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल की उपज है। हिन्दी साहित्य में इस विधा को स्थान देने के लिए हिन्दी साहित्यकारों ने पाश्चात्य साहित्य का अनुकरण कर अपने जीवन की तस्वीर को साहित्य से जोड़ा। धीरे धीरे इस विधा से सभी के सभी साहित्यकार जुड़ रहे हैं, क्योकि आत्मकथा की रचना से उनके जीवन के हर पहलू समाज के पटल पर अपनी छाप छोड़ता है। आत्मकथा लेखन एक ऐसी कला है जिसमें आत्मकथाकार के हर चरित्र से सभी के सभी वाकिफ हो जाते है। आत्मकथा साहित्य का केन्द्र व्यक्ति विशेष होता है। उस व्यक्ति विशेष के

कार्यकलाप उस केन्द्र को वाह्य परिधि का निर्धारण करते हैं। इस वृत में व्यक्ति और उसका भाव लोक स्पन्दित रहता है। यह विधा व्यक्ति विशेष के जीवन की घटनाओं का गणना मात्र न होकर कलात्मक प्रतिफलन है। इसीलिए माना जाता है कि 'आत्मकथा' का भवन अनुभूति और साक्षात्कृत सत्यों के आधारशिला पर अवस्थित रहता है। राहुलजी की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' इसका प्रमाण है। राहुलजी ने अपने जीवन के एक एक पल को सत्यता के सूत्र में पिरोंया है। इनके आत्मकथा में तनिक भी कल्पना नहीं दिखाई देती है, उन्होंने अपनी अनुभूति को सत्यता के धरातल पर रखकर अभिव्यक्त किया है। राहुलजी ने अपनी अनुभूति के साथ प्रकृति के स्वरुप को भी अपनी आत्मकथा में यथावत वर्णन किया है। उन्होंने अपने जीवन के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के गुण–दोष का भी वर्णन किया है जो उनकी जीवन यात्रा के सहयोगी, सहपाठी, मार्गदर्शक और शिक्षक हैं। राहुलजी 'मेरी जीवन यात्रा' में आत्मकथा की हर विधा को अपने अन्दर समाहित किये हुए हैं। राहुलजी ने अपनी आत्मकथा में सत्य, यथार्थ, परिवेश, आत्मविशलेषण, आत्मनिरीक्षण, और अपने जीवन के व्यौरा को एक साथ जोड़कर उन्हें 'मेरी जीवनयात्रा' में पिरोया है। इस तरह राहुलजी की आत्मकथा उनके जीवन के इतिहास है। हिन्दी आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में राहुलजी की आत्मकथा को रीढ़ की हड्डी कहा जाए तो गलत नहीं होगा। यह आत्मकथा अन्य लेखकों की तरह आत्मकथा नहीं है बल्कि यह आत्मकथा का सिरमौर है।

सन्दर्भ सूची :–

1–राहुल सांकृत्यायन, राहुल वाड्ग्मय, भाग–1, पृ0 सं0 17,

2–डॉ0 हरिमोहन, ' साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार ' वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 245

3– डॉ0 भगवतशरण भारद्वाज,'हिन्दी जीवनी साहित्य:सिद्धान्त और अध्ययन', इलाहाबाद ,पृ0 सं0 65

4– डॉ0 भगवतशरण भारद्वाज,'हिन्दी जीवनी साहित्य:सिद्धान्त और अध्ययन', इलाहाबाद ,पृ0 सं0 6–7

5– डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, 'हिन्दी गद्य साहित्य',,विश्व विद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,तृतीय सं01992,पृ0सं0289

6–राहुल सांकृत्यायन 'मेरी जीवन यात्रा,भाग–1 की भूमिका

7–राहुल सांकृत्यायन, राहुल वाड्मय, भाग1, पृ0सं026

8–वही, प्राक्कथन,

9–राहुल सांकृत्यायन 'मेरी जीवन यात्रा, भाग2, पृ0सं045

10–वही ,भाग–1 पृ0सं0 271

11–वही, भाग–1 का प्राक्कथन

12–राहुल वाड्मय,भाग–1 का प्राक्कथन

13–बाबू गुलाब राय, 'काव्य का रूप' पृ0 सं0 257

14–राहुल सांकृत्यायन, राहुल वाड्मय खण्ड–1 पृ0सं011

15–राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवन यात्रा–भाग 1, पृ0 सं0 33

16–वही ,पृ0 सं0 339

17–वही, पृ0 सं0 33–34

18–वही ,पृ0 सं0 33–34

19–विष्णुचन्द्र शर्मा, समय साम्यवादी ,भाग 1,संवाद प्रकाशन, मेरठ, पृ0 सं0 35

20–राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा' ,भाग 1, पृ0 सं0 33

21–वही पृ0 सं0 33–34

22–वही पृ0 सं0 329–334

23–वही पृ0 सं0 34

24–वही पृ0 सं0 34

25– वही ,पृ0 सं0 347

26–राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग 1,पृ0 सं0 36

27–वही 37

28–वही 39

29–वही 45

30–वही 72

31–वही 35

32–वही 39,

33–वही 35

34–वही 42

35–वही 39

द्वितीय अध्याय

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के दार्शनिक विचारों का विकास

अ) वैरागी राहुल सांकृत्यायन

ब) आर्यसमाजी चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

स) बौद्ध चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

द) मार्क्सवादी चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन

अ) वैरागी राहुल सांकृत्यायन–

जब इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण पदार्थो में से आसक्ति और समस्त कामनाओं का पूर्णतया नाश हो जाता है, तो ऐसी मनःदशा वैराग्य कहलाती है। राहुलजी अपने जीवन में अनेक मोड़ों से गुजरे। इन मोड़ों में जो पहला मोड़ है, वह है उनका वैरागी जीवन। वैराग्य के प्रति आकर्षण उनकी पारिवारिक पृष्टभूमि की उपज थी। वे बचपन में पिता गोवर्धन पांडे को नित्य पूजन–अचर्न, सन्ध्या करते हुए देखते थे, जिसका काफी असर उनके जीवन पर पड़ा और यह संस्कार राहुलजी के तन–मन में बस गया। इसने उनको वैराग्य के प्रति आकर्षित किया। राहुलजी का वैरागी बनने का एक और कारण है–वह है कम उम्र में माता–पिता द्वारा विवाह करा देना। राहुलजी ने लिखा है–"11वर्ष की अबोध अवस्था में मेरी जिन्दगी को बेचने का घरवालों का अधिकार नहीं, यह उत्तर उस वक्त भी मैं अपने बुजुर्गो को दिया करता, जो कि ब्याह के प्रति अपना कर्तव्य मुझे समझाते। मेरा उस वक्त का ज्ञान बहुत परिमित था, तो भी मैं इसे घर और समाजवालों का अन्याय समझता था, और उसे बर्दाश्त करने के लिए तैयार न था।"1 राहुलजी के मन में इसी से शुरु होता है ,वैराग्य के प्रति आकर्षण। उस समय राहुलजी की देहाती और कस्वाई जिंदगी का द्वंद्व पीछे छूट रहा था, मन की व्याकुलता भी बढ़ रही थी, कुछ छूटने और कुछ जुड़ने से चित्त में एक अजीब तरह का अवसाद भी महसूस करने लगा था। विस्तृत ज्ञान की प्यास उसे बहुश्रुत, बहुचित् और बहुदर्शी पुरुषों का साक्षात् करा रही थी।"2 राहुलजी के हृदय में पर्यटन की सतत् उपस्थित लालसा के साथ मन में उठे घर और समाज के प्रति विद्रोह ने उनके चित्त को और अशांत कर दिया। इस आग में घी काम किया कनैला के पास रहने वाले परमहंस बाबा की यात्रावृतान्त परक वाणी। राहुलजी रोज परमहंस

बाबा की कुटिया पर जाते थे, वहाँ उन्होंने साधु–संतो के सतसंगति में रहकर वैराग्य के विषय में अनेकों जानकारियाँ हासिल की। इसका प्रभाव भी उनके जीवन और कर्मो पर पड़ा। राहुलजी ने लिखा है–" परमहंस बाबा तो मुझे क्या किसी को उपदेश दिया नहीं करते थे ,महादेव पंड़ित जैसे विद्वान भी जाते तो शायद उपनिषद् का कोई वाक्य उनके मुँह से निकल आया, नही तो जो ही बात जबान पर आई, बच्चों की तरह दुहराते गये। 2

परमहंस बाबा के शिष्य हरिकरणदास ने राहुलजी को ज्ञान का उपदेश देना शुरू किया। हरिकरणदास के पास बैठकर ' विचारसागर, विचारचंद्रोदय, अष्टावक्रगीता (हिन्दी टीका) जैसे ग्रंथों को राहुलजी ने पढ़ा। बाबा के शिष्य हरिकरणदास ने राहुलजी के कान में वेदान्त के कई एक मंत्र दिये। यहीं पर विराग की पाठशाला का पहला पाठ राहुलजी ने सीखा। धीरे–धीरे राहुलजी की आँखों का पट्टर खुलने लगा, 'एकश्लोकेन वक्ष्यामि, यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः। ब्रम्ह सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रम्हैव नापरः।'3 जैसे श्लोक राहुलजी को कंठस्थ हो गये, इतना ही नहीं राहुलजी को वेदांत की हिन्दी पुस्तकें समाप्त होते यह श्लोक भी याद हो गया––

"तावद् गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिन यथा,

न गर्जति महाशक्तिर्यावंद् वेदान्तकेसरी " 4।

इस तरह सनातनी संस्कार तथा जीवन दर्शन का प्रभाव धीरे–धीरे राहुलजी के दैनिक आचरण में दिखने लगा। उस दिन के बाद राहुलजी संध्या सीख ली, दिन में तीन बार नहाकर संध्या करते। कुश की आसनी बराबर साथ रहती। सिर्फ एक वक्त सो भी अपने हाथ का बनाकर भोजन करता। धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने या परमहंस बाबा

के दर्शन तथा हरिकरण बाबा के सत्संग में समय बीतता। हँसी मजाक की तो बात क्या? किसी से बातचीत करना भी राहुलजी को पसंद न था।5 यह आचार–व्यवहार राहुलजी को गृहत्याग की तरफ मोड़ने लगा।

हरिकरण बाबा दो तीन साल पहले बदरीनाथ हो आए थे। वे राहुलजी को बदरीनाथ के यात्रा प्रसंग सुनाते, जिसके परिणाम स्वरूप राहुलजी के मन में वैराग्य और अरण्यवास की बात जोर पकड़ने लगी। राहुलजी अपने हृदय में उठते इस भाव को बतलाने के लिए बचपन के साथी योगेश से मिलने के लिए बछवल चल पड़े। बछवल में अपने फूफा के घर नहीं, बल्कि कालीदास की कुटिया पर ,वही रात में योगेश को बुलाकर मिले। राहुलजी इस संबंध में लिखते है कि,"मैंने दोनों जनों से अपना संकल्प प्रकट किया । दोनों ने प्रोत्साहन दिया। इसके पूर्व पहली दो उड़ानों के पीछे पैसें के पंख थे। इस बार मेरा संबल वैराग्य तथा श्लोक का यह अंश था––"का चिंता मम् जीवने यदि हरिर्विश्वम्भरो गीयते ।"6 पानी के लिए केदार के पास कोई बर्तन नहीं था, कालीदास ने राहुलजी को अपना सुन्दर लौकी का छोट्टा–सा कमंडल दे दिया। फिर क्या? सबेरे अँधेरा रहते ही राहुलजी चल पड़े अपने लक्ष्य के तरफ जहाँ उन्हें शांति और ब्रह्म का दर्शन हो सके।

क) राहुल की उत्तराखण्ड की यात्रा और विचार–

राहुलजी के जीवन का यह समय वैराग्य और परिव्राजन के साथ–साथ पठन–पाठन और संस्कृत अध्ययन की ओर बढ़ती हुई इच्छा का समय है। पारम्परिक सन्यास–जीवन बिताने के लिए राहुलजी के भीतर इच्छाएँ जोर पकड़ने लगी थी। इससे प्रभावित होकर पैदल ही अयोध्या होते हरिद्वार जाने के लिए चल पड़ें।

राहुलजी उस समय के मन में उठते विचार को प्रकट करते हुए लिखते हैं कि ––'मेरा इरादा तुरन्त साधु बनने का न था, और न तुरन्त योग में लग जाना ही चाहता था। मैंने तै किया था, पहिले संस्कृत और वेदान्त के ग्रंथों को खूब पढ़ूँगा, उसके बाद सन्यासी हो जाऊँगा।'7।

वैराग्य का भूत राहुलजी पर इस तरह छाया रहा कि वे कुछ और सुनने को तैयार नहीं थे। उस समय न पिता का ख्याल रहता और न कूल मयार्दा का ध्यान। रास्ते में कैसे रहूँगा? क्या खाऊँगा?'''' सिर्फ़ मन में था वैराग्य। राहुलजी इस बात को स्वयं स्वीकार करते हुए लिखते हैं– '' रास्ते चलते–चलते सिर पर आ पहुँची रात और अपरिचित स्थान का चित्र नजरों के सामने खिंचने लगा, दिन भर की भूख, और भय ने मेरे मन को धमकाने शुरू कर दिया–'बे–पैसे–कौड़ी, बेगाने देश में इस तरह पैदल घूमना हँसी ठट्टे की बात नहीं है, वैराग्य ने कुछ कहना चाहा, किन्तु उसे यह कहकर दबा दिया–फिर क्यों नहीं हवा–पानी पीकर रहे, क्यों गूलरों पर ढ़ेले फेकें ? मन ने ठंडा दिल से समझाया, मितिहारी यहीं कहीं पास में है, चले चलो, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है।'8 मितिहारी गाँव में राहुलजी के सगे चाचा की ससुराल थी, लोक लाज के कारण राहुलजी अपना कमंडल पास के पोखरे में छिपाकर मामा के घर चल पड़े। थोड़ी देर घुमक्कड़ राहुलजी को घर का आनंद मिला। दूसरे दिन रामनवमी का दिन था, रामनवमी के दिन बिताकर राहुलजी मामा से विदा लेकर आगे बढ़े।

अपनी इस यात्रा क्रम में राहुलजी ने वैराग्य के बीच मित्र संवाद के सूत्र को सीख लिया। रास्ते में जो भी मिलता राहुलजी उसको अपना संगी बनाते हुए आगे बढ़ते

जाते थे। वे मुरादाबाद पहुँचे, जहाँ कलकता के परिचित पाठकजी से भेट हुई। पाठकजी राहुलजी की वेश–भूषा देखकर आश्चर्य में पड़ गये। पाठकजी से वर्तालाप होने के बाद राहुलजी को उसी नगर के एक सेठ के पास ले गए, जिसे ज्ञान–वैराग्य की बीमारी लगी हुई थी। वहाँ राहुलजी ने वैराग्य की तैयारी का रिहर्सल ध्यान से देखा। राहुलजी लिखते है–'सेठ की बैठक में खस की टट्टिया लगी थी। अब आठ मूर्तियों और हों तो वैरागियों की जमात घर छोड़े। मैं उकताने लगा दसवाली स्कीम मुझे फीकी नजर आने लगी। ज्ञान–वेदांत से सेठ कोसों दूर था। सेठ के छोटे भाई और माँ ने राहुलजी के सामने प्रस्ताव रखा–"आप यहाँ से हरिद्वार चले जाए"9 राहुलजी को सेठ और पाठकजी से बचने का बहाना मिल गया। एक लुटिया और हरिद्वार तक का टिकट लेकर राहुलजी वहाँ से निकल पड़े।

राहुलजी में सनातनी जीवन शैली और वैराग्य के प्रति आस्था धीरे–धीरे काफी गहरी होती जा रही थी। वैराग्य और सनातनी जीवन धारा को समझने के लिए शास्त्रज्ञान जरूरी है। शास्त्रों में गहराई का रास्ता संस्कृत के अध्ययन से सुगम हो जाता है। इस बात को राहुलजी अपने मन में गाँठ की तरह बाँधकर हरिद्वार आए थे। उनका आने का मतलब सिर्फ तीर्थ और तपस्या करना नहीं बल्कि संस्कृत पढ़ने की लालसा भी थी। एकाध जगह लोगों से पढ़ने और पंडित के बारे में पूछा। शिक्षक के रूप में पंडित मिले विष्णुदत्तजी। पंडितजी अपना काम कराना ही सिर्फ जानते थे। राहुलजी पंडितजी के व्यवहार और वर्ताव पर अपनी मनःस्थिति व्यक्त करते हुए लिखते हैं–'उनको संस्कृत से कोई वास्ता न था, 'वतार्क' को छपवाकर प्रेसवालों से कुछ रुपया और साथ ही तीर्थ पर आये भक्तों पर अपनी विद्वता की धाक जमाना उनका

काम था। रसोईया रो रहा था–छै महीने हो गये, एक पैसे तनख्वाह नहीं दी। खाना खिलाने की यह हालत थी, कि उनकी आठ नो वर्ष की लड़की ही छोटी होने से पेट–भर खाने को पाती हो तो हो। जिस स्थिति में बेवकूफ बनाकर वह रखना चाहते थे, वह मुझे सहय् नहीं थी।'10 हरिद्वार में राहुलजी को ज्ञान कुछ नहीं मिला, मिले आवारापन के तजुर्बे। कई यथार्थ चरित्र उसने देखे। अपनी सफलता पर राहुलजी फूला नहीं समा रहे थे। दूसरे दिन अपने बाल सखा योगेश को 'गद्यकाव्य' में एक पोस्टकार्ड लिखा। आनंदातिरेक में लिखे पत्र में कवित्व आ ही जाता, यह राहुलजी जानने लगा था। दिहाती स्कूल में उलट कर अर्थ निकालने की सांकेतिक शैली राहुलजी ने सीखी थी। खत उसी शैली में लिखा था।11 इस तरह के व्यवहार के कारण राहुलजी पंडितजी से विदा लेकर हृषिकेश पहुँचे। हृषिकेश में जाकर कालीकमलीवाले की धर्मशाला में ठहरे । वही से केदारनाथ, बदरीनाथ की यात्रा की ओर आगे बढ़े।

इन यात्राओं में राहुलजी की जीवनधारा भारतीय साधु समाज के नियमानुसार चलती रही। इस दौरान जीवन और जगत से विमुखता राहुलजी के मस्तिष्क और आत्मा पर छा गई। साधु और वैरागियों की संगत ने उन्हें अंधविश्वासों और रुढ़ियों का कटु आलोचक बना दिया। ऋषिकेष, टेहरी, धरासू, गंगोत्री, यमुनोत्री होते हुए केदारनाथ पहुँचे। एक अच्छी धर्मशाला पास में थी, जिसमें कोई नेपाली रानी ठहरी हुई थी। लोग भिक्षा माँगने जा रहे थे, साधु राहुलजी भी किस्मत–आजमाईश में शामिल हो गये , राहुलजी को इस तरह माँगना बहुत ही बुरा लगा। राहुलजी लिखते है–'जीवन में दीनता के साथ भिक्षा माँगने का यही मेरा आदिम और अंतिम प्रयास रहा'12

केदारनाथ में ही बालसखा योगेश से राहुलजी को भेट हो गई और दोनों दोस्त केदारनाथ से बदरीनाथ के लिए चल दिए। रास्ते में पैंर के अंगूठे जितनी मोटी काली काली जोंके देखकर राहुलजी को वर्गो में बँटे समाज में शोषण के प्रतीक के रूप में यह जोंके याद रही। बाद में राहुलजी इसी का आधार लेकर "तुम्हारी जोकों की क्षय" नामक रचना लिखी।13 इसी दौरान साधुओं के विभिन्न सम्प्रदायों से राहुलजी मिले। इन साधुओं के करीब आने पर उन्हें साधु–जीवन के बारे में बहुत सारी बातें जानने को मिली। नागा, आलेखिया, गरीबदासी, नानकपंथी, गोरखपंथी, उदासीन, दशनामीआदि विभिन्न सम्प्रदायों के साधुओं के आचार व्यवहार, कार्यकलाप को देखकर राहुलजी के मन में एक बदलाव आया। उन्होंने इन सम्प्रदायों में छिपे हुए नकली संतों को प्रत्यक्ष देखा। राहुलजी लिखते है–'अब इधर मैं संतों को बहुत नजदीक से देख रहा था और उनके धुआँधार चिलमों में अभी भी मैं शामिल न हुआ था, उन्हें ब्रह्मवेदान्त की चर्चा में लीन भी मैं नहीं देखता था, तो भी मुझे उनसे घृणा और उदासीनता नहीं हुई। यह बात नहीं कि वेदांत और वैराग्य को मैं भूल गया था, जान पड़ता है, उनका बेफिक्री का स्वच्छदजीवन, उनकी एक तल पर आपस में मिल बैठने की भेदभावशून्य चाल, उनकी खाने खर्च में उदारता, उनकी मार्ग के कष्टों को आवाहन करने की बेकरारी और उनकी कल से बेफिक्री इतनी ठोस चीजें थीं, जिनके कारण तस्वीर के दूसरे रुख पर मेरा ध्यान ही नहीं जाता था'।14 राहुलजी ने इस यात्रा क्रम में असंख्य धार्मिक पुस्तकों के साथ शिवपुराण को भी पढ़ा।

ख) वैराग्य का प्रथम कालखण्ड मोतीराम का बाग

राहुलजी की वैराग्य के प्रति आस्था काफी गहरी हो चुकी थी। लेकिन वैराग्य है क्या? इसे जानने के लिए शास्त्र का ज्ञान होना अपरिहार्य है। इसलिए उतराखंड की यात्रा की पर वहाँ किसी प्रकार का ज्ञान नहीं मिला। वहाँ से लौटकर राहुलजी वाराणसी ब्रम्हचारी मंगनीराम के आश्रम में संस्कृत पढने के लिए पहुँचे। वहाँ अध्ययन और मनन करते हुए राहुलजी अपने समय का उपयोग सदा करते रहे। वह वैष्णवों और शैवों के खंड़न–मंड़न के ग्रंथों की खोज भी कर रहे थे और एकांतरत होने के अनुरूप संस्कृत भाषा का ज्ञान भी स्वयं बढ़ा रहे थे। चक्रपाणि ब्रम्हचारी का आचारी स्वभाव, शिवलिंगों का पूजन–अर्चन, भस्म–त्रिपुंड धारण, रुद्राक्ष की मालाओं का पहनना आदि सभी बातों का राहुलजी पर काफी प्रभाव पड़ा। ब्रम्हचारी के सम्पर्क में आने से पहले राहुलजी का झुकाव वेदान्त और सन्यास के प्रति तो था ही, ऊपर से शैव–तीर्थ के रूप में विख्यात काशी में आकर सनातनी चेतना के कर्मकांड और आचार–संहिता में आकषर्ण के साथ शंकर मत एवं शिव पूजन की तरफ उनका मन आकृष्ट होता चला गया। अब अठारह साल के राहुलजी वैष्णव मत के विरोधी और कट्टर शिवभक्त बन गये थे। उस समय से राहुलजी के गले में 32 मणियों का बड़ा रुद्राक्ष का कंठा रहता और शिव का भस्म–त्रिपुंड़ रात को ही सो जाने पर मिटता। रुद्राष्टाध्यायी के बहुत से अध्याय और महिम्न्स्तोत्र पारायण करते ही करते उन्हें याद हो गये थे। हर सोमवार को नियम से विश्वनाथ का दर्शन करने जाते।'15 राहुलजी के भीतर का सनातनी पक्ष आनुष्ठानिक बातों की तरफ झुक रहा था। 1911 में 'दत्तात्रेय–पादुका' के स्वामी पूर्णानन्द के संसर्ग में आने से राहुलजी को धीरे–धीरे

तंत्र–मंत्र की ओर आकर्षण बढ़ा। शक्ति की सिद्धि की सारी विधियों का पूर्णरुपेण पालन किया, जब जगदम्बा के दर्शन नहीं हुए तो अपने को अभागा समझकर आत्महत्या का प्रयास किया। बाल बाल बच गए। प्राणों की बाजी लगाकर राहुलजी ने जो मंत्र साधना सीखी थी वह एक पुरानी शिक्षा क्षेत्र के संस्करण था। राहुलजी को इस अनुष्ठान में सफलता नही मिलने से उनके विचार में बदलाव आया। 'सनातनी राहुल' के कालखंड का यह पक्ष सबसे अधिक धार्मिक उन्मादता से ओतप्रोत था। सनातनी आस्था के प्रति अटूट विश्वास राहुलजी में थोड़ा कम हुआ। स्वयं राहुलजी ने लिखा है–'अब मुझमें कुछ परिवर्तन था। यह तो नहीं कह सकता था कि मंत्र–तंत्र, देवी देवता पर मेरा विश्वास उठ गया, उसकी संभावना कहाँ थी? जबकि मेरे आसपास के विद्वान–मूर्ख सब उस विश्वास को बढ़ाने में सहायक थे, हाँ, अब फिर वैसे तजुर्बो के लिए मैं तैयार न था। धार्मिक वायुमंडल में उड़ने के साथ ठोस पृथ्वी पर भी पैर रखना चाहिए। इधर भी मेरा ध्यान गया।'16 राहुलजी ने इसे अपने जीवन में गाँठ की तरह बाँध लिया ओर आगे चलकर मानव समाज, दर्शन दिग्दर्शन, विश्व की रुपरेखा, वैज्ञानिक भौतिकवाद जैसे अमूल्य पुस्तकों की रचना की।

ग) वैराग्य का द्वितीय कालखण्ड परसामठ एवं तिरुमिशी प्रवास

सनातनी राहुल का जीवन 1912 ई0 तक एक नवीन मोड़ ले लेता है। शैव–दर्शन से पूरी तरह प्रभावित वेदान्त और शंकर की रट लगानेवाले, भस्म–त्रिपुंड रुद्राक्ष धारण करने वाले को अगर सम्पूर्ण विपरीत साम्प्रदायिक धरातल–वैष्णव दीक्षा लेने और वैष्णव साधु बनने को कहा जाए तो यह नितांत असम्भव लगता है। परन्तु राहुल के

जीवन में कुछ ऐसे संयोग हुए–जिससे उनके जैसे वैष्णवों को तुच्छ समझनेवाले कट्टर शैव–भक्त को बिल्कुल विपरीत सम्प्रदाय में विशिष्टाद्वैतवादी आचारी रामायत् वैष्णव का स्वरुप ग्रहण करना पड़ा। इस वैचारिक परिवर्तन के बाद अब वे केदारनाथ पाण्डे नहीं रह गए थे–उनका नया नाम रामउदारदास पड़ गया था।

परसा मठ के महंत लछुमनदास अदालती कार्य के लिए काशी आए हुए थे। राहुलजी को मुकदमें की कागज पढ़ने के लिए महंतजी ने बुलाया। राहुलजी ने मुकदमें का कागज पढ़ने के साथ ही साथ अपना अदालती तजुर्बा भी दिया। फैसला न केवल महंतजी के पक्ष में गया था, बल्कि फैसला पढ़कर सुनानेवाले उन्नीस् वर्ष के राहुलजी में उन्हें अपने मठ का उत्तराधिकारी नजर आने लगे। परसा मठ के महंत के बार–बार के आग्रह को राहुलजी कैसे ठुकराते? अतः रामकुमार दास जी के कहने पर राहुलजी ने परसा जाने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। राहुलजी दिसम्बर 1912ई0 में परसा मठ के वैरागी वैष्णव महंत के शिष्य बनकर पहुँचे। राहुल के सनातनी पक्ष का यह अध्याय वैष्णव साधुजीवन के आचार–विचारों से ओतप्रोत था। मठ के भावी महंत के रुप में राहुलजी वहाँ पहुँचे थे, अतः जहाँ तक त्याग तपस्या का या वैष्णव साधना की कठोरता का सवाल है, वह वहाँ लेशमात्र भी नहीं था। महंत–पद की सारी सुख–सुविधाएँ राहुलजी को वहाँ प्राप्त हो रही थी। दीक्षा विधि में कंठी और' रां रामाय नमः' मंत्र दिया गया तथा बाहुमूलों में शंखचक्र की तत्व मुद्रा दागी गई। नया नाम मिला–रामउदारदास। 17 सनातनी वैष्णव व्यक्तित्व के अन्तर्गत राहुलजी ने सधुआई जीवन प्रणाली की शाकाहारी शब्द–प्रयोग–विधि को यहाँ सीखा। राहुलजी इस संबंध में कहते है––"मठ में मेरे आराम का पूरा ध्यान दिया जाता था। मैं वहाँ

वैरागी, तपस्वी साधु नहीं था, बल्कि एक सुकुमार राजकुमार था, जिसके नहलाने धुलाने, पैर दबाने, तेल लगाने के लिए नौकर था। महंतजी का स्नेह बढ़ता ही गया। उन्होंने अपने सम्प्रदाय के बहुत से चाल–व्यवहारों को सिखलाना शुरू किया–पाखाने के वक्त शिर से हाथ लगाकर नहीं बैठना चाहिए। वहाँ से लौटते वक्त दाहिने हाथ से लोटा नहीं पकडना चाहिए। मिट्टी से हाथ धोते वक्त पहिले वायें हाथ में पाँच बार मिट्टी लगाकर धोना चाहिए, फिर पाँच बार दाहिने हाथ को और तब पाँच बार दोनों हाथों को '''''''''आदि आदि। वही केदार को यह महावाक्य सुनने में आया–'बारह बरस रहे साधु की टोली। तब पावे एक टुटही बोली।'18 राहुलजी सन्यासी जीवन से जुड़ने के बाद भी अपना ध्यान पढ़ने से दूसरी ओर नहीं ले जाना चाहते थे। वे लिखते है–'मैं अपनी पढ़ाई पर नजर ड़ालने लगा, तो वहाँ मेरे आसपास और दिनचर्या में उसका कोई स्थान न था। खैर मैं 'सरस्वती' और 'डॉन' का ग्रहक बन गया। इंडियन प्रेस की छपी कुछ हिन्दी की पुस्तकें तथा कितने ही संस्कृत के काव्य–नाटक मँगाये।19

परसा मठ के कार्य हेतु महन्तजी फिर बनारस गये। उनकी अनुपस्थिति में एक दिन राहुलजी के पिताजी और फूफा परसा आ धमके। पिताजी को देखते ही राहुलजी भागने लगे। आगे– आगे राहुलजी पीछे से उनके पिता गोबर्धन पाण्डे। समहुता में ट्रेन आने में देर थी। राहुलजी वहाँ से पैदल ही छपरा चल पड़े। अभी राहुलजी को सरोसामानी सैर का इरादा नहीं था क्योकि उनके पास रूपया नहीं था। घर और मठ में राहुलजी अनुभव कर चुके थे–'रुपया कितनी भयंकर, कितना जहरीला नाग है। आदमी की बात, उसकी इज्जत और शान सब रुपयों के बिना नगण्य है।'20 अतः

राहुलजी ने अपने पिताजी के साथ जाने का निश्चय कर लिया। गाँव आने पर राहुलजी का मन धर्म और वैराग्य के अन्तर्द्वद्व से जकड़ा रहा। एक दिन घर छोड़ परसा के लिए फिर चल दिए। इस बार धर्म और वैराग्य की खोज में परसा नहीं आये थे ,वे वहाँ आये थे, शास्त्र और संसार के विषय में विस्तृत ज्ञान के सुभीते के खयाल से। राहुलजी इस संबंध में लिखते हैं—'परसा में एक दिन एक पंड़ितजी से मेरी बहस होने लगी, अद्वैत वेदान्त का पक्ष ले मैं बोल रहा था। गुरुजी को वेदान्त के सूक्ष्म सिद्धान्तों से क्या मतलब! तो भी वह यह जानते थे कि अद्वैत वेदान्त शंकराचार्य की चीज है, इसीलिए मुझसे कहा—यह हमारे सम्प्रदाय का सिद्धान्त नहीं है। मुझे यह भी एक नई—सी बात मालूम हुई, क्योकि मैं रामानंद के शिष्य कबीर तथा रामानन्दीय तुलसीदास को अद्वैत वेदान्त का प्रेमी मानता था।'21 परसा मठ में रह रहे साधुओं के ज्ञान, उनकी जीवन शैली और दिनचर्या को राहुलजी ने बहुत ही नजदीक से देखा और यह हमेशा राहुलजी को खटकता रहा कि—'साधुओं में पढ़ने लिखने का अभाव है और उसके लिए प्रोत्साहन भी नहीं दिया जाता है। वहाँ चाहिए थे ऐसे साधु, जिनके पास कम से कम दिमागी समपत्ति हो। जो बर्तन मल सके, झाडू दे सके ,खाना बना सकें, हजारों छोटे—मोटे शालिग्रामों को नहला कर उन पर थोड़ी—थोड़ी चन्दन और एक एक तुलसी का पत्ता डाल सकें, राम लक्ष्मण—सीता, या राधा गोपाल की मूर्तियों के समय समय पर नया कपड़ा बदल सकें, आरती दिखला सके तथा सबेरे झाल—ढ़ोलक लेकर वे सुर ताल के भजन गा सकें, और रात को दूकान से छुट्‌टी पाकर आये बनिया भगतों के साथ मिलकर रामायण के संगायन के नाम पर खूब गला फाड़ सकें। गप्पे उड़ाना बस यही वहाँ के साधुओं की दिनचर्या थी—वहीं क्यों दूसरे वैरागी मठ भी इससे बेहतर हालत में नहीं थे।'22 परसा में रहते

हुए वैरागी महंत लछुमनदास अपने शिष्य सेवकों को वैष्णव–तीर्थ–पर्यटन एवं सम्प्रदाय समबन्धी जानकारी देते थे। गुरुजी से सुने मद्रास और बंबई प्रान्तों के तीर्थो और वैरागी स्थानों की कहानी राहुलजी के जीवन में रंग ला रही थी। इसके साथ ही साथ राहुलजी को परसा मठ की दिनचर्या, साधुओं का कार्यकलाप, सनातनी जीवन–शैली रास नहीं आई तो दूसरे तरफ वजिंदा की शेर ने उन्हें वहाँ से निकलने के लिए विवश कर दिया। जुलाई1913ई0 को परसा से राहुलजी दक्षिण भारत के ओर चल पड़े। रात में एकमा पहुँचे। दो–एक संस्कृत की पुस्तकें, दो धोतियॉ, गमछा और बिछौने के लिए आलवान का एक पल्ला पास था। एकमा से हाजीपुर का टिकट खरीदा। आठ आने में पीतल का एक बंगाली लोटा खरीदा, वजिंदा का यह मंत्र गुनगुनाये––"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ?जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ।":राहुलजी वहाँ से हाजीपुर, आसनसोल, आद्रा और खड्गपुर होते हुए जगन्नाथ पुरी पहुँचे। ट्रेन में राह के साथी एक वकील मिल गये। जगन्नाथ मंदिर के ऊपर स्थित अश्लील मूर्तियों को देखकर राहुलजी को अति दुःख हुआ। वे अपना विचार प्रगट करते हुए लिखते है–"सताईस वर्ष पहिले उस वक्त पुरी के किस किस हिस्से को मैंने किस रुप में देखा,यह तो पूरा मुझे याद नहीं। जगन्नाथ के मन्दिर के उपर की अश्लील मूर्तियॉ तो हम दोनों को नापसंद आई।जगन्नाथ के दर्शन में बदरीनारायण की भॉति ही मुझे कोई विशेष प्रभावोत्पादक बात नहीं मालूम हुई"23 राहुलजी वहाँ से मद्रास गये। उस क्षेत्र के स्त्रियों की तेज रंग की चारखानेवाली साडियॉ तथा नंगे शिर ने राहुलजी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया,–जहाँ परदा के लिए कितनी बेपरवाही है।24 रेल से सैर करना ओर वकील साहब का टिकट खरीदकर अपनी यात्रा को आनंदप्रद बनाना–राहुलजी को मानसिक

परवशता यानी मुहब्बत का बंधन लग रहा था।अभी उसमें उसे तोड़ने की हिम्मत नहीं आई थी। टिकट सैदापार का था पर टिकटचैकर ने बताया यह ट्रेन वहाँ नहीं रूकती। राहुलजी को वहाँ वकील साहब की मानसिक परवशता को तोड़ने का अवसर मिल गया। मद्रास में जगह–जगह 'छत्रम्' की बात जो राहुलजी ने सुनी थी, वह सत्य थी। राहुलजी रात को एक छत्रम् में ठहरे, अगले दिन तिरुमले के लिए चल पड़े। तिरुमले में स्नान और देवदर्शन के बाद राहुलजी को लगा–पहले पढ़ना चाहिए, बाद में धूमना। राहुलजी को वही पर भेंट हुई वृंदावन के महान श्रीभागवताचार्य श्रीरंगम्जी से , वे न्याय के भारी विद्वान थे। राहुलजी को उन्होंने न्याय शास्त्र पढ़ाना शुरू किया। यहाँ फिर से वासुदेव मंत्र एवं बाहूमूलों में शंख, चंद्र की तप्तमुद्रा आंकी गई। राहुलजी ने लिखा है–"परसा–सी यहाँ निर्दयता से नहीं आंकी गई। पठन–पूजन के अलावा तेल इमली जैसे एक फल की पिसी लेई बदन पर मलने से छूट जाता। यहाँ के दार्शनिक ब्राम्हणों के लिए सुई का सिला कपड़ा वर्जित था।"26 राहुलजी को बनारस के पंडितों से यहाँ के पंडित स्वच्छ लगे। हर द्वार पर भिन्न– भिन्न ढंग के पुरे हुए चौक, तथा ताजे गोबर से धुली भूमि राहुलजी को सुंदर लगी। राहुलजी ने वहाँ एक अंतःविरोध भी देखा कि शास्त्रीय, धार्मिक परंपरा के कारण दक्षिण के ब्राम्हणों में विचारों की संकीर्णता तथा सामाजिक विषमता भी अक्षुण्ण है।

अगहन का महीना था। हरिनारायणाचारी ने राहुलजी से तिन्नानूर के महोत्सव का जिक्र चलाया। राहुलजी का घुमक्कड़ी दिल महोत्सव का जिक्र सुनते ही बेचैन हो उठा। हरिप्रपन्नजी से आज्ञा लेकर तिरूपति के लिए चल पड़े। दक्षिण भारत की

यात्रा शुरु हुई। इस यात्रा के दौरान ही राहुलजी ने तमिल भाषा सीख ली। इसी दौरान उनके जीवन में दो विचार आये–आचारी और वैरागी। राहुलजी ने इन विचारों में से वैरागी जीवन को अपनाया। तिरूपति में वैरागी संस्थान के मूल मठ में ठहरे। बालाजी का दर्शन के बाद आगे की यात्रा आरम्भ किये। चिंगलपट, पक्षीतीर्थ होते हुए कांचीपुर, श्रीरंग, मदुरा और रामेश्वरम् पहुँचे। उतर भारत और दक्षिण भारत के मंदिरो के बनावट पर राहुलजी लिखते है–'रामेश्वर के मन्दिर की विशाल शालाएँ, छत से ढँकी परिक्रमाओं को देखने से मालूम होता था, कि मन्दिरों के बनाने में उत्तर भारत दक्षिण भारत से कितना पिछड़ा हुआ है–यदि हम मुस्लमानों के शासन काल में टूटे मन्दिरों की गिनती न करें।'27 देश देखना हो, तो पैदल चलो–इस सिद्धान्त का 21 वर्षीय राहुलजी पूरा कायल हो चुके थे। रेल की यात्रा के बिना इतना देखना उसके लिए संभव नहीं था। गुजरात में अधिकतर साधुओं का सम्बन्ध कुलीन विधवाओं से होता रहा है, पर राहुलजी वैरागी संतति–प्रवाह कायम रखने में सहायक रहे। एक विडंबना राहुलजी को फिर से नहीं विस्मृत हुई, जब संत बीती यात्रा के वर्णन और नई यात्राओं की योजना बनाने लगते तो राहुलजी का हृदय खुद से कहता–"हिमालय के देवदारुओं और हिमाच्छादित श्वेत शिखरों ने मेरे हृदय को हर लिया है'जब नर्वदा आदि के प्राकृतिक सौदर्य और समुद्र की साहसिक यात्रा का सवाल आया, तो मैं हिमालय का नाम लिया करता।"28 राहुलजी का सम्बन्ध परसा मठ से लगातार बना रहा, जब पैसा घटता, तब पैसा वहाँ से मँगा लेते। इसलिए यात्रा के दौरान राहुलजी को किसी प्रकार का आर्थिक संकट कभी भी नहीं हुआ। साधु रामउदार आचारियों के आचार–व्यवहार से असंतुष्ट थे। जिसके कारण वह फिर बालाजी नहीं गये। राहुलजी ने अब अपना रुख द्वारिका के रास्ते में आनेवाली तीर्थों

और दर्शनीय स्थान की ओर किया। उन्होंने विजयनगर, वागलकोट, पूना–बंबई, नासिक उज्जैन और अहमदावाद की यात्रा की। इस तरह रामउदार दक्षिण और पश्चिम भारत के तीर्थो की यात्रा करके परसा होते हुए अयोध्या पहुँचे। अयोध्या में सखी सम्प्रदाय वालों की अप्राकृतिक जीवन–चर्या को निकट से देखा तथा उस सम्प्रदाय पर घोर कटाक्ष करते हुए राहुलजी ने लिखा हैं–'सखी मत के सभी कर्णधारों के बारे में नहीं कह सकता ,किन्तु अधिकांश तो इस रामभक्ति की आड़ में अपने स्थानों को अस्वाभाविक व्यभिचार का अड्‌ड़ा बनाये हुए थे।'29 राहुलजी को आश्चर्य हुआ कि गृहस्थों में कितने ही इस रहस्य को जानते है फिर भी क्यों उनकी ख्याति बढ़ाने में लगे हुए हैं।

राहुलजी ने सनातनी जीवन'प्रणाली' को इस यात्रा के दौरान बहुत करीब से देखा। मंत्रसाधना की विफलता और क्रमागत बढ़ते स्वाध्याय से उत्पन्न यर्थाथवादी अन्तर्दृष्टि राहुलजी में अन्वेषण, पर्यटन एवं ज्ञानार्जन की मूलभूत बेचैनी पैदा कर दी। इस कालखंड के दौरान उत्पन्न वैचारिकता में जाति–पॅात संबन्धी कट्‌टरता, साम्प्रदायिक संकीर्णता, साधु–संतो के चाल चलन को बहुत निकट से देखते रहे, वही बाद में उच्चतर 'मानव–कल्याण' के पथ पर राहुल को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध हुए।

इस तरह राहुलजी के वैरागी जीवन में जो वैचारिक बदलाव के आसार दिखाई देते हैं, वे राहुलजी की अपनी मानसिक उपज का प्रतिफल है। कालक्रम के अनुसार राहुलजी का विचार अलग अलग रूप में दृष्टिगोचर होता है। वैराग्य के प्रति आकर्षण के पीछे कम उम्र में माता–पिता द्वारा विवाह करा देना है, जो राहुलजी को समाज, घर वालों के प्रति विद्रोही बना दिया। जिसके परिणाम स्वरूप राहुलजी का

मन घर, समाज, भाई बन्धुओं के प्रति बिरागी हो जाता है। वे संसार को नश्वर समझने लगे और मन की शांति के लिए उचित रास्ता का तलाश करने लगे। उन दिनों के बाद राहुलजी परमहंस बाबा के सतसंगति में अपना समय बिताने लगे। यहीं राहुलजी को वैराग्य के मूल मंत्रों की जानकारी हुई। राहुलजी ने यह भी सीखा कि बिना ज्ञान के ईश्वर तक पहुँचा नहीं जा सकता। उन्होंने वही से अपने घर ,समाज से नाता तोड़ नित्य संध्या तथा साधुवी जीवन में अपने आपको रंग लिया और ज्ञान प्राप्ति हेतु हरिद्वार पहुँचे। इसी क्रम में राहुलजी ने साधु–जीवन का एक मूल मंत्र सीखा, मित्र संबाद का तथा वे एक जगह वैराग्य का रिहर्लस भी देखा जो राहुलजी को रास नहीं आया। हरिद्वार में राहुलजी को ज्ञान कुछ भी नहीं मिला, खिन्न होकर आगे बढ़ते गए। रास्ते में अनेकों संतो, साधुओं और वैरागियों से परिचय हुआ। राहुलजी ने सभी के विचार आचरण को देखा, पर स्वीकार उन्हीं आचरणों को किया जो उन्हें रास आये । राहुलजी के मन में ज्ञान प्राप्ति हेतु ललक बढ़ती जा रहा थी अतः राहुलजी ज्ञान प्राप्ति के लिए बनारस आ पहुँचे। चक्रपाणि ब्रम्हचारीजी ज्ञान के पाठ पढ़ाने लगे। यही राहुलजी के मन दो विचारों का प्रादुर्भाव हुआ–एक वैष्णव जीवन, दूसरा शैवमत। शैवमत से प्रभावित होकर शैवसाधना में लग गये पर सफलता नहीं मिली। देखा जाता है कि राहुलजी यही से अंधविश्वास, पाखण्ड के धोर विरोधी हुए और सत्य, यथार्थ से अपने जीवन को जोड़कर आगे बढ़े। राहुलजी की तार्किक क्षमता, कुशाग्र बुद्धि का प्रमाण उस समय दिखाई देता है जब उन्होंने परसा मठ के महंतजी को जमीन के कागजात के विषय में समझाया। महंतजी ने राहुलजी की कुशाग्र बुद्धि को देखकर अपने मठ के महंत बनाने की बात स्वीकार की। राहुलजी के जीवन में एक फिर यहाँ बदलाव दिखाई देता है। वह अब शैव साधना से हटकर

वैष्णव जीवन के आचरण को स्वीकार कर परसा मठ आ गए। परसा मठ में साधुओं के क्रिया कलाप के साथ वहाँ के रीति रीवाज को देखा, उससे राहुलजी को वैष्णव जीवन के सच्ची तस्वीर मालूम हुई। राहुलजी को यहाँ की जीवनशैली पसंद नहीं आई और कुछ दिनों तक रहकर अपने मन की भूख मिटाने के लिए दक्षिण भारत की ओर चल पड़े। दक्षिण भारत के अनेको तीर्थस्थलों को देखा तथा वहीं पर आचारियों के जीवन शैली से परिचित भी हुए जो राहुलजी को पसंद नहीं था। यहाँ राहुलजी का विचार सत्य और आचरण से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। इस तरह राहुलजी के वैचारिक बदलाव के पीछे सामाजिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों का हाथ रहा है। इस कालखंड के दौरान उत्पन्न वैचारिकता में जाति–पाँत संबन्धी कट्टरता, साम्प्रदायिक संकीर्णता, साधु–संतो के चाल चलन को बहुत निकट से देखा। इस जीवन के अनुभव राहुल को आर्यसमाज के पथ पर ले जाने में सहायक हुए।

ब) आर्यसमाजी चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन–

राहुलजी एक ऐसे पथिक थे जिसका पथ समय और विचार के अनुरुप बदलता रहा। उन्होंने एक सिद्धान्त और दर्शन को कभी भी अपने जीवन में स्वीकार नहीं किया बल्कि जब जहाँ, जैसी जरूरत हुई तथा जहाँ सत्य दिखाई दिया उसे ही अपने जीवन में स्वीकार किया। वैष्णव धर्म के रीति–रिवाज, बाह्याडम्बर तथा उस धर्म में फैली हुई भ्रान्तियों को राहुलजी ने जब समझा तो उनका विचार इस धर्म से डगमगाने लगा। सत्य की खोज में राहुलजी 1914 में अयोंध्या के लिए चल पड़ें थे। उस समय भारत में सनातनी हिन्दूधर्म के साथ–साथ स्वामी दयानंद सरस्वती प्रवर्तित

आर्यसमाज का काफी बोलबाला था। आर्यसमाजी प्रवक्ता जोर शोर से मूर्तिपूजा, श्राद्ध, बहुदेववाद, पुराणों पर श्रद्धा आदि सनातनी सिद्धान्तों का खंडन करते थे। अयोध्या में तीन महीने राहुलजी एक वैरागी साधु की तरह रहे तथा सखीमत वालों की अप्राकृतिक जीवन–चर्या को निकट से देखा। वहाँ पर स्थित देवकली के मंदिर में बकरे की बलि एवं अन्य कर्मकाण्डों को देखा तो उन्हें यहाँ के जीवन से अरुचि उत्पन्न हुई । एक तरफ बकरे की बली देने वाले पण्ड़े तो दूसरी तरफ इसका विरोध करने वाले वैष्णव, इस द्वंद्व ने राहुलजी के मन में एक मानसिक क्रांति उत्पन्न कर दी। वैचारिक मुक्ति के लिए राहुल का यह पहला प्रयोग है। राहुलजी के शब्दों में–"आँख मूंद कर हमें समय की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें मानसिक दासता की बेड़ी की एक एक कड़ी को बेदर्दी के साथ तोड़कर फेंकने के लिए तैयार होनी चाहिए, बाहरी क्रांति से कही ज्यादा जरुरत मानसिक क्रांति की है।"30 अब राहुलजी आर्यसमाज के प्रति आकर्षित हुए। आर्यसमाज के प्रति आकर्षण राहुलजी का पहली बार आगरा में बढ़ा जब उन्होंने स्वामी दयानंद का 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ा। अब सत्यार्थप्रकाश उनके के लिए 'मिथ्यार्थप्रकाश' नहीं रहा' 31 अपनी उन दिनों की वैचारिक परिवर्तन के बारे में राहुलजी लिखते हैं– "मेरी मनोवृति में अंतर आ गया था । आर्यसमाज के अतिरिक्त अखबारों द्वारा बाह्यजगत की हवा भी मुझे लग रही थी । मैं अपने अंतःस्थल में एक संकीर्ण गड़हिया से निकलकर विशाल जलाशय में जाने की मूकवेदना को अनुभव कर रहा था, यद्यपि अब भी मुझे यह नहीं मालूम था, कि वह जलाशय किस दिशा में है, कैसे है?"32 इतना ही नहीं राहुलजी के मन को स्वामी हंसस्वरुप, पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र के छपे हुए व्याख्यानों ने भी उन्हें आर्यसमाज की ओर खींचा।

उस समय आर्यसमाज का बोलबाल जोरों पर था। उसके प्रहार से हिन्दूओं-के प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय तंग आये हुए थे। आर्यसमाजी मूर्तिपूजा, श्राद्ध, अनेकदेवतावाद, पुराणोपरिश्राद्ध आदि सिद्धान्तों का बहुत जोर से खंडन कर रहे थे। यह खंडन अखबारों और पुस्तकों ही में नहीं छपता था, खुद अयोध्या में भी फैजावाद के महाशय केदारनाथ धूम मचाये हुए थे।33 उस समय आर्यसमाज के व्याख्यानों को राहुलजी ज्यादा सुनते रहे, और उनकी खंडन–मंडन की पुस्तकें पढ़ी। राहुलजी के शब्दों में–"एक समय था, जब मैं वैष्णव रहते हुए भी शंकराचार्य के वेदान्त का जबर्दस्त भक्त थां, किन्तु अब मैं पक्का आर्यसमाजी था ;सिर्फ ऊपर ऊपर की बातों में ही नहीं, दर्शन में भी आर्यसमाज द्वैतवाद के सामने वेदान्त के अद्वैतवाद को बिलकुल कमजोर समझता था। 34

क) आर्यधर्म के अध्येता, चिंतक और प्रचारक राहुलजी–

पढ़ने की ललक से भरपूर राहुलजी ने सन् 1915 में आगरा के आर्य मुसाफिर विद्यालय में दाखिला लिया। उस दिन के बाद राहुलजी की सनातनी जीवन शैली पीछे छूट गई। राहुलजी के भीतर अब न शैव विचार था और न साधुवी संस्कार। विद्यालय प्रबंधक ने राहुलजी को इस शर्त पर भर्ती किया कि पढ़ने के पश्चात् अपना सारा समय आर्यसमाज के प्रचार में लगायेंगे, जिसे राहुलजी ने सहर्ष स्वीकार किया ही नहीं बल्कि अपनाया भी। इससे यह प्रमाणित होता है कि मुक्त जीवन ओर पठन–पाठन के साथ समाज कल्याण की इच्छा भी उनमें कितनी अधिक थी। राहुलजी के शब्दों में–"मैंने उनसे विद्यालय में भर्ती कर लेने की दरख्वास्त की। उन्होंने पढ़ाई के बारे में पूछा। उर्दू मिडिल, काफी संस्कृत और जरा–जरा अंग्रेजी भी,

भर्ती के लिए काफी योग्यता थी। पढ़कर तुम अपना समय आर्यसमाज के प्रचार में लगाओगे?–'अवश्य यदि आप मुझे उसके योग्य बना देगे।'35 यहाँ रह कर राहुलजी ने अरबी, आर्यसमाज के सिद्धान्त और शास्त्रार्थ करने तथा भाषण देने की विधियाँ सीखी और वे पक्के आर्यसमाजी बन गए।36 सन् 1915 से 1922 तक राहुलजी आर्यसमाज का प्रचार करते रहे। उस समय राहुलजी में प्रगतिशील तत्व देखने को मिलता है। आर्यसमाज ने न सिर्फ राहुलजी को वैचारिक मुक्तता की जमीन प्रदान की, बल्कि उसकी तार्किक अन्तर्दृष्टि और भीतरी प्रतिभा के सम्यक विकास का स्वस्थ वातावरण प्रदान किया। जैसे कि, जाति–पाति का विरोध, देवी–देवताओं से छुटकारा आदि। वे उस दिन के बाद एक ईश्वर की वन्दना करने लगे। राहुलजी इस काल को अपने जीवन के नये प्रकाश का काल खण्ड कहते है।37 अपने व्यक्तित्व पर आर्यसमाज के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए राहुलजी लिखते हैं–'यहाँ आर्यसमाज में अपनी बुद्धि को ज्यादा स्वच्छन्द, ज्यादा अनुकूल परिस्थियों में पा रहा था। जाति–पात का खंडन आर्यसमाजी एक हद तक ही करना चाहते थे, किन्तु मैं उसको असह्य बीमारी समझता था।38 युक्प्रान्त के आर्यसमाजियों में वर्णव्यवस्था को लेकर उस वक्त दो दल हो गये थे ,एक दल –ब्राह्मणपार्टी–वर्णव्यवस्था को गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार बतलाते भी, स्वभाव पर बहुत जोर देकर 'पनाले को वहीं' रखना चाहता था, दूसरा दल पुरानी मर्यादा का अतिक्रमण कर, ब्राह्मणों को नीचे दबाते हुए अछूतों को आगे बढ़ाने पर जोर दिए। मैं सारे आर्यसमाजी मात्र की रोटी–बेटी के पक्ष में था, और स्वामी सर्वदानन्द की खरी–खरी बातों को बहुत पसन्द करता था । 39 आगरा में राहुलजी का मुलाकात भाई महेशप्रसाद से हुई जो स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं बल्कि अच्छे लेखक भी थे। मौलवी महेशप्रसाद ने अपने

विचारों से राहुलजी में समाज कल्याण, राजनीति और देशभक्ति का संदेश कूट–कूट कर भरा। राहुलजी के शब्दों में–'आगरा में भाई साहब के सम्पर्क में आने पर मालूम हुआ, जैसे आदमी अँधेरी कोठरी से निकालकर सूरज की रोशनी में रख दिया जावे, जैसे दम घुटती काली कोठरी से निकाल शीतल मन्द सुगन्ध–वायु परिचालित बाग में ला रखा जाये। अब मुझे मालूम होने लगा, दुनियाँ में ऐसे भी काम है, जिनके लिए जीवन की आवश्यकता है, ऐसे भी आदर्श है, जिनके लिए मत्यु मधुरतम वस्तु है।40 महेशप्रसाद और पंडित लक्ष्मीधर वाजपेयी के विचारों ने विद्यार्थी राहुलजी में लिखने की प्रेरणा भरी। 1915 के अंत में आर्यसमाज के खुले वातावरण में राहुलजी की साहित्यिक प्रतिभा निखर उठी और प्रथम लेख मेरठ के हिन्दी मासिक 'भास्कर 'के दो अंकों में छपा, इस संदर्भ में वे लिखते है–'अपने लेख को पहिले–पहिल छपा देखकर तरुण लेखक को कितनी प्रसन्नता होती है,उसे अनुभवी ही बतला सकते है।' 41 यहाँ रहकर राहुलजी पूरी तरह सनातनी परम्परा से हट चुके थे, अब वह शैव न थे, न आचारी साधु। अब वह प्रचारक जीवन अपनाकर समाज का उद्धार तथा स्वामी दयानंद के विचार को जन–जन तक पहँचाना उनका लक्ष्य रह गया था। वे आर्यसमाज के विचार को स्पष्ट तथा अन्य धर्मों पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि– ''दुनियाँ का सबसे पुराना धर्म–सारे धर्मो का आदि स्त्रोत–आज भी अपने सिद्धान्तों में कितना मजबूत है। उसमें एक ईश्वर छोड़ किसी दूसरे की पूजा नहीं है। बहुदेववाद वेद विरुद्ध है,श्राद्ध ब्रहम्णपोपों के पेट पालने की चाल है। अवतार अजन्मा ईश्वर का नहीं होता। पुनर्जन्म और कर्म का सिद्धान्त हमारे धर्म को सारे धर्मो से श्रेष्ट सिद्ध करता है। वर्ण–व्यवस्था जन्म से नहीं, रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का दूसरा नाम है। तीर्थ, मूर्ति–पूजा आदि सभी पोपलीलाएँ है। बात बात में हमारे

सामने ईसाई मिशनरियों के धर्म प्रचार के लिए किये गये स्वार्थत्याग ओर साहस की मिसाल पेश की जाती थी, और उससे भी ज्यादा, जापान–चीन–तिब्बत–मध्यएशिया के दुरुह रास्तों से शताब्दियों पूर्व बौद्धभिक्षुओं की यात्राओं का उदाहरण पेश किया जाता था। हम अपने को दयानन्द के भिक्षु ओर अपने विद्यालय को एक छोटी सी नालान्दा–यद्यपि बहुत त्रुटिपूर्ण–समझते थे।42 और इतना ही नहीं 'वेद के ईश्वरीय होने में किसी की आपति को में सहन करने के लिए तैयार नहीं था। वेद में रेल, तार, विमान की बातें मुझे सच्ची मालूम होती''''''''''। आर्यसमाजी को अपने लिए अपने को हिन्दू कहना, मैं शर्म की बात समझता था।''''''विज्ञान के साथ कुछ झूठे विज्ञान भी संसार में खोटे सिक्कों की भॉति चल रहे हैं, ऐसे ही झूठे विज्ञान में डार्विन के विकासवाद को भी समझता था।'43 स्पष्ट है कि अब राहुलजी सनातनी परम्परा से लगभग पूरी तरह हट चुक थे और अब प्रचारक जीवन अपनाना, समाजोद्धार करना उनका मुख्य लक्ष्य रह गया था। राहुलजी को आगरा से बाहर फतेहगढ़, जसवन्तनगर, फीरोजाबाद जैसे स्थानों में भी व्याख्यान और संस्कार कराने के लिए भेजा जाता था। जबलपुर में हिन्दू मुस्लिम शास्त्रार्थ होने वाली थी मुसल्मानों की तरफ से मौलाना सनाउल्लाह शास्त्रार्थ करनेवाले थे। उनकी मदद के लिए मौलाना अबूतुराब, मौलाना कासिम बनारसी तथा दूसरे सज्जन भी आये थे। आर्यसमाज की तरफ से डा0लक्ष्मीदत और पंडित धर्मवीर बोलनेवाले थे। राहुलजी के लिए यह पहिला मौका था किसी आर्यसमाजी–मुस्लिम शास्त्रार्थ देखने का। 44 उस दिन के शास्त्रार्थ पर टिप्पणी करते हुए राहुलजी लिखते हैं–'शास्त्रार्थ का प्रभाव सभी जनता पर एक सा कैसे पड़ता, जब कि उनकी सहानुभूतियाँ पहिले ही से बँटी हुई थी। तो भी अपने धर्म की विज्ञानानुमोदित बनाने के लिए आर्यसमाज बहुत से पुराने

मिथ्या विश्वासों को छोड़े हुए था; स्वामीदयानंद ने उन्हीं सिद्धान्तों को मान्य रहने दिया था, जिन्हें वह अपने सामयिकों के कथनानुसार विज्ञानसम्मत समझते थे। एक तरफ अपनी खुराफातों के अधिकांश की होली जलाकर एक आदमी आया हो ,और दूसरी ओर तेरह सौ वर्षो की अधिकांश लचर बातों को काफिर होने के डर से न छोड़ने के लिए मजबूर व्यक्ति हो, दोनों में कौन सा अच्छी तरह लोहा ले सकेगा, यह स्पष्ट ही है। 45 स्पष्ट है कि रूढ़िवादी विचारों से राहुलजी डटकर लोहा लेते थे।

राहुलजी राष्ट्रीयता ओर धर्म को अलग नहीं समझते थे। धर्म से राहुलजी का मतलब आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के मान्य वैदिक धर्म से था। बाकी धर्मो–ईसाई, इस्लाम, यहूदी, बौद्ध ही नहीं हिन्दू धर्म के अनेक सम्प्रदायों को भी राहुलजी झूठे धर्म तथा वेद विज्ञान के प्रकाश में शीघ्र ही लुप्त हो जाने वाला धर्म समझते थे। इतना ही नहीं वे आर्यसमाज को सार्वभौम धर्म समझते थे, और विश्वास रखते थे कि अपनी सचाईयों के कारण यह भी विज्ञान की तरह एक दिन सारे संसार के समझदार और साधारण व्यक्तियों का धर्म हो जाएगा ।46। राहुलजी आर्यसमाज के गर्मदलीय विचारों के जबरदस्त सर्मथक थे। वे वेद को उस समय ईश्वरीयवाणी मानते थे और इस बात पर किसी की भी आपति को वे कदापि सहन करने को तैयार न थे। वेद में वर्णित हर बात उन्हें सच्ची मालूम होती थी। उनके अनुसार आर्य धर्म, हिन्दू धर्म से उतना ही दूर है, जितना कि ईसाई से इस्लाम धर्म। उनका मानना था कि भारत पर आर्य धर्म का विशेष अधिकार है एवं भारत की उन्नति और स्वतंत्रता आर्य धर्म तथा एक जातीयता की स्थापना से ही हो सकती है। 47

1916ई में तरुण राहुल लाहौर पहुँचे। लाहौर उस समय आर्यो का गढ़ था। वहाँ राहुल भागवदत्त जी से मिले । पढ़ने की लगन तथा आर्यसमाज के प्रचार हेतु उनके द्वारा संचालित अनुसंधानालय में भारत और यूरोप की भिन्न भिन्न भाषाओं में प्रकाशित इतिहास, भूगोल की अनेकों पुस्तकों को पढ़ा तथा उस महान विद्वान के नजदीक रहकर बहुत कुछ सीखा।48 एक दिन स्वामी दयानन्द के विचारों पर अपार श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनकी वाणी को राहुलजी ब्रह्म वाणी समझने लगे। भागवदत्त जी ने राहुल को समझाया कि–"ऐसा नहीं कहना चाहिए, क्या आपने सब बातों को सच की कसौटी पर कस लिया?"49 इस कथन ने राहुलजी को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की और उनके जीवन पर दूरगामी प्रभाव डाला। राहुलजी ने अध्ययन करने के पश्चात् आर्य समाज के प्रचार हेतु लखनऊ, कालपी, मुजफफरपुर, इटावा, जसवन्त नगर, बनारस, रायबरेली, अमेठी आदि नगरों का भ्रमण कर व्याख्यान दिया। आर्य समाजी होते हुए भी राहुलजी को आर्यसमाज की कुछ नीतियाँ पसंद नहीं थी। यथा संयम नियम के नाम पर जनता के मनोरंजन के हर तरीके पर कुठाराघात किया जा रहा था। फाग अश्लील है सो नहीं गाना चाहिए, नाचना असभ्यों और रंडियों का काम है, उसके पास तक नहीं फटकना चाहिए। किसी समय गाँवों की अधिकांश जातियाँ ,स्त्री–पुरुष दोनों ऐसे मौकों पर गाते–नाचते थे, किन्तु वे बाते अब विस्मृति के गर्भ में विलीन होती जा रही थी। 50 निश्चित रूप से राहुलजी समाज के संस्कृतिक पक्ष के समर्थक थे। उस समय राहुलजी में सच से लड़ने की क्षमता तथा सेवा त्याग की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए दिखाई देती है। धार्मिक बातों में 'विचार स्वातन्त्रय' के अभिमान के साथ आर्यसमाजिक संकीर्णता होते हुए भी सामाजिक सुधारों में राहुलजी का विचार सुधार की सीमा से बाहर जा रहे थे। 51

इस तरह करीब दस साल तक राहुलजी का जीवन वैचारिक और धार्मिक चिंतन की दृष्टि से एक साथ कई धाराओं में बहा। उस दौरान राहुलजी को एक साथ कई पार्ट अदा करने पड़े। पूर्वी उतर प्रदेश और बिहार में पहुँचते तो कंठीधारी वैरागी साधु दामोदर दास बन जाते थे। पंजाब और पश्चिम उतर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार का कार्य करते होते, तो'आर्यमुसाफिर' केदारनाथ बन जाते थे। अतः वैरागी साधु और आर्यसमाजी प्रचारक दोनों ही भूमिकाएँ साथ–साथ अदा की। राहुलजी के विचारों में स्थिरता कभी नहीं रही उनके विचार काल, स्थान और परिस्थिति वश परिवर्तित होते रहे। अब वे हर बात को सच्चाई की कसौटी पर कसना चाहते थे और तत्पश्चात उसे अपने आचरण में उतारने की चेष्टा करते थे परन्तु एक बात स्मरणीय है कि उन्होंने किसी भी अच्छे तत्व को प्राप्त करके छोड़ा नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारने की चेष्टा की। सनातन धर्म की रुढ़िवादिता एवं अंधविश्वास से तंग आकर उन्होंने आर्यसमाज को अपनाया। कालान्तर में आर्यसमाज के वैदिक सत्य के शाश्वत सत्य से उब कर एक नया पथ पकड़ा जो सत्य की खोज के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, वह है बौद्ध धर्म। इस तरह राहुलजी की वैचारिक जीवन यात्रा पुनः एक नई दिशा में आगे बढ़ी।

स) बौद्ध चिंतक के रूप में राहुल सांकृत्यायन–

बुद्ध के इस प्रख्यात वचन कि 'भिक्षुओं, मैं नौका की तरह धर्म का उपदेश करता हूँ। यह पार होने के लिए है, पकड़कर बैठने के लिए नहीं। जिसे हमने अधर्म मान लिया है, उसे तो छोड़ देना ही पड़ता है किन्तु जिसे हमने धर्म भी मान रखा था, और कालान्तर में हमें लगा कि वह धर्म भी अब त्याज्य है, तो उसे भी छोड़ देना

चाहिए।'52 राहुलजी के मन और विचार को झकझोर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप उनके वैचारिकता में बदलाव आया। इसी दौरान आर्य समाज के प्रचार एवं वैदिक मिशनरी स्थापना के लिए राहुलजी लखनउ पहुँचे। अतः सन् 1916 ई0 में राहुलजी में आर्यसमाजी आस्था से वैचारिक एवं प्रायोगिक स्तर पर विखंड़न तीव्र हो चुका था। उस समय लखनऊ में बौद्ध धर्म के अनुयायी बोधानन्दजी से भेट हुई। जिज्ञासु राहुलजी ने उनसे बौद्धधर्म के बारे में अनेकों बातें पूछीं और बोधानन्दजी ने बहुत ही सन्तुलित तरीके से उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। राहुलजी इस संदर्भ में लिखते हैं कि "उनसे मुख्य तौर पर ईश्वर, वेद आदि विषय के अतिरिक्त बौद्ध साहित्य, त्रिपिटक आदि के बारे में बातचीत हुई। ईश्वर का उन्होंने साफ शब्दों में निषेध नहीं किया। शायद वह पुरानी विचार–धारा पर धीरे–धीरे प्रहार करने के पक्षपाती थे। बौद्ध साहित्य में बंगला में छपी बुद्ध पुस्तकों तथा वंगीय बौद्धों की मासिक पत्रिका ' जगज्योति ' का पता दिया। पालि त्रिपिटक के पते के बारे में अनागरिक धर्मपाल से लिखा पढ़ी करने के लिए कहा। उस संक्षिप्त साक्षात्कार के वक्त यह नहीं पता लगता था कि मेरे जीवन के विकास में इस साक्षात्कार द्वारा ज्ञात बातें खास पार्ट अदा करने वाली हैं।"53 उस समय राहुलजी वेद, ईश्वर, आर्यसमाज, और स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे, अतः बोधानंदजी काफी सावधानी से राहुलजी को बौद्ध धर्म की प्रारम्भिक जानकारी दी, ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे शुरु में ही 'आर्य मुसाफिर' बिदक जाए। 54 आर्यसमाजी राहुलजी उस समय मन में बौद्ध धर्म के प्रति उठते अपने विचार को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–"आर्य समाज का प्रभाव रहने से सिद्धान्त में मैं द्वैतवादी हो रामानुज का समर्थक रहा। इसी दार्शनिक उहापोह में बौद्ध दर्शन के लिए अधिक जिज्ञासा उत्पन्न हो गयी, रामानुज और शंकर की ओर से

अन्ततः वर्णाश्रम धर्म का श्राद्ध करके दार्शनिक खंडन द्वारा ही बौद्धों का विरोध किया जाता था और दार्शनिक सिद्धान्तों में रामानुजीय शंकर को 'प्रच्छन्न' बौद्ध कहते थे फिर बौद्ध दर्शन क्या है? इधर ध्यान जाना जरुरी था और पूर्वपक्ष के तौर पर उद्धृत कुछ वाक्य से मेरी तृप्ति नहीं हो सकती थी।''55 बौद्ध धर्म को भलीभाँति जानने के लिए राहुलजी ने सतीशचन्द्र विधाभूषण के नागरी अक्षरों में छपे पाली व्याकरण को मँगवाया। उन्होंने श्रीलंका से भी कुछ पाली ग्रन्थों को मँगाया और इस प्रकार बौद्ध धर्म एवं दर्शन के बारे में अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने हेतु बौद्ध साहित्य का स्वाध्याय शुरु किया । यह वह समय था जबकि राहुलजी एक ओर तो आर्य अमाज के मिशनरी तैयार करने में लगे हुए थे, तो दूसरी ओर बौद्ध साहित्य का अध्ययन भी कर रहे थे। धीरे–धीरे बौद्ध धर्म का प्रभाव उन पर बढ़ता जा रहा था और सन् 1920 ई0 में तो उन्होंने बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थानों की यात्रा करने का निश्चिय किया। 56 इस यात्रा के दौरान उठते अपने विचार के संबंध में स्वयं राहुलजी बताते हैं –''कई सालों से जमा होते भावों ने बुद्ध के प्रति मेरे दिल में परम श्रद्धा उत्पन्न कर दी थी। उधर उनकी जीवनियों के पढ़ने से बुद्ध के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों के दर्शन के लिए उत्सुकता बढ़ी थी, अब के तै किया उन्हें देखने का।''57 राहुलजी सर्वप्रथम बौद्ध स्थल सारनाथ गए, उस वक्त पुराने ध्वंस अशोक स्तम्भ ही वहाँ की मुख्य दर्शनीय चीजें थी। महावोधि सभा में गए और अपने मन में न जाने क्या क्या सोचते हुए छपरा होते हुए परसा मठ में भी गए। वहाँ के व्यवस्था को देखकर राहुलजी को अति खेद हुआ, पर वहाँ रुके नहीं और गौतम बुद्ध के निवार्ण स्थल देखने के लिए कुशीनगर पहुँचे। राहुलजी कहते है–''उस भूमि के भीतर प्रविष्ट होत वक्त मेरा हदय ढाई हजार वर्ष पहिले के उस महान भारतीय की ओर खिंचा

हुआ था, जिसने अपनी जन्मभूमि का नाम संसार–भर में फैला दिया, और संसार के एक तृतीयांश के मनुष्यों के लिए भारत को पुण्यभूमि बना दिया।''58 कुशीनगर में बुद्ध की सोई हुई विशाल मूर्ति को देखकर राहुलजी अपने आप को रोक नहीं पाये और अपने मन में उठते विचार को प्रगट करते हुए लिखा है –''बुद्ध की विशाल सोई हुई मूर्ति को पूजने से मेरे शिर, हदय और हाथों को आर्यसमाजी विचार भी नहीं रोक सके। मैंने व्याख्या कर दी–मैं ईश्वर की मूर्ति की तो पूजा नहीं कर रहा ह हूँ, यह एक ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित करनी है।''59 कुशिनगर के बाद राहुलजी कसया, देवरिया, गोरखपुर से भगवानपुर होते हुए लुम्बिनी पहुँचे। लुम्बिनी में एक छोटा सा मन्दिर देखे, जिसके आँगन में बकरा, मुर्गी की बलि के खून का रंग लगा हुआ था। मन्दिर के भीतर की मूर्ति अस्पष्ट थी। पशु–बली देखकर राहुलजी के दिल पर बहुत बडा धक्का लगा। इस जीव हत्या को देखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा है कि–'जीव दया पर इतना जोर देनेवाले गौतम बुद्ध के जन्म स्थान पर यह पशु–बलि, रुधिर–रक्त प्रांगण'60 इसके बाद पिपरहवा गये वहाँ ब्राह्मी लिपि के अभिलेख को देखा और कहा कि ''शाक्यों ने अपने वंश के श्रेष्ट पुरुष बुद्ध की धातुओं के हड्डियों के ऊपर यहाँ कोई स्मृति चिन्ह बनाया थां। जिसके अभिलेख को भारत की ब्राह्मी लिपि का सबसे पुरातन नमूना होने का सौभागय प्राप्त है। यह बात स्थान देखने से नहीं झलकती थी।''61 इसी यात्रा के दौरान कपिलवस्तु, तौलिहवा, नरकटियागंज तथा लौरिया–नन्दनगढ़ गये। तौलिहवा के आसपास के मठों में योग–भोग का संग्रह देखे। यहाँ के तौर तरीके पर आक्षेप करते हुए राहुलजी अपना विचार व्यक्त करते हुये लिखे है कि–''योगियों को योगिनियों के साथ रहने की इजाजत देकर वहाँ का समाज, साधुओं को कई खतरों से बचा लेता है, यदि उसमें

कहीं सन्तति निग्रह भी शामिल होता, तो सोने में सुगन्ध, मठ में कच्चों–बच्चों के बढ़ने से उसका महत्त्व नष्ट हो जाता है।62 अनुभवी राहुल चले तो थे बौद्ध पुनीत स्थानों को देखने किन्तु नवाजिन्दा जब सीधे रास्ते पर चलने दे तब न। अतः नन्दनगढ़ से रक्सौल, जनकपुर, धनुषा और अन्य तराई इलाका का भ्रमण करते हुए बसाढ़ होते हुए नालंदा पहुँचे। वहाँ पंडित हीरानन्द शास्त्री ने राहुलजी को खुदाई से निकाली हुई चीजें दिखाई। एक दो दिन बाद राहुलजी राजगीर होते हुए बोधगया पहुँचे, जहाँ बौद्ध मठ के एक तरुण साधु ने उन्हें पहाड़ों एवं अनेक दर्शनीय स्थलों को दिखलाया। बुद्ध के प्रति अपार श्रद्धा व्यक्त करते हुए राहुलजी लिखते हैं कि–" बुद्ध के प्रति मेरी भक्ति दयानन्द से भी बढ़कर थी, हाँ उस वक्त मैं यह समझने की भी गलती कर रहा था कि बुद्ध दयानन्द ही की भाँति वैदिक धर्म प्रचारक ईश्वर विश्वासी ऋषि थे।'63 इस यात्रा के पश्चात् राहुलजी बौद्ध धर्म के अति करीब आ गये। राहुलजी वेदांत और मीमांसा के अध्ययन हेतु तिरुमिशी चले गए। वहाँ से लौटने के बाद कुछ दिन राजनीति क्रियाकलाप में लगे रहे। इसी दौरान बोधगया मंदिर विवाद जोरो पर थी जिसमें राहुलजी सूझबूझ के साथ भाग लिया। राहुलजी की स्पष्ट राय थी कि "मंदिर बौद्धों को सुपुर्द कर देना चाहिए, जो स्थान ढ़ाई हजार वर्षो से दुनियाँ के बौद्धों के लिए परम पुनीत है, जिसके प्रति उनका उससे भी अधिक सम्मान है, जितना कि ईसाई–यहूदियों का योरोशिलम से, मुसलमान का मक्का से, आज वह स्थान ऐसे सम्प्रदाय के महंत के हाथ में है जो बड़े अभिमान पूर्वक कहता है–हमारे आचार्य शंकराचार्य ने बौद्धों को भारत से निकाल भगाया।"64 इस अथक परिश्रम के बाद भी वे बोधगया मंदिर का प्रबंध बौद्धों को दिलाने में असफल रहे। सन् 1923 ई0 में राहुलजी ने नेपाल की यात्रा की और काठमांडो तथा

आसपास के बौद्ध स्मारकों को देखा, फिर 1926ई0 में लेह–लदाख की यात्रा पर गये। आर्यसमाजी आस्था का वैचारिक एवं प्रायोगिक स्तर पर विखंडन सन् 1926 से राहुल में तीव्रगति से हो चुका था। छपरा में राजनीतिक शिथिलता के कारण राहुल की सामाजिक स्तर पर सक्रियता कम हो चुकी थी। धीरे–धीरे बढ़ती हुई आस्था के विखंडनजनित बेचैनी एवं नवीन आस्था के मानवीय अन्वेषण की छटपटाहट, राहुल की समग्र चेतना को झकझोर रही थी। इस बीच समय–समय पर बौद्ध भिक्षुओं का संस्पर्श पाकर एवं लखाद, लेह व तिब्बत–सीमांत तक की यात्रा करने के बाद, बौद्ध दर्शन के गहन अध्ययन एवं बौद्ध जीवनधारा को और करीब से देखने के लिए राहुल उन्मुख हो चले थे। सारनाथ के भिक्षु श्रीनिवास से राहुल को श्रीलंका के विद्यालंकार बिहार में संस्कृत अध्यापक के रिक्त पद की खबर मिली। आर्यसमाजी प्रचारक से परिवर्तित होकर राहुलजी ने धोती, कुर्ता, चादर का 'विनीत वेष'धारण कर 16 मई 1927ई0 को श्रीलंका के केलनिया के विद्यालंकार विहार के लिए रवाना हुए।65 वहाँ राहुलजी कों 'जंबूद्वीपीय ब्राम्हण पंडित' के रुप में अत्यन्त आत्मीयता के साथ स्वागत किया गया। उस विहार के प्रधान महास्थविर का व्यवहार राहुलजी को काफी आत्मीयता पूर्ण लगा। अध्यापक राहुलजी ने वहाँ देखा कि विहार के प्ररम्भिक श्रेणी से ऊपर के प्रायः सभी विद्यार्थी और सारे अध्यापक संस्कृत पढ़ते थे। संस्कृत सीखने का वहाँ का तरीका उत्तर भारत के पंडितों का–सा पुराना था। शुरू ही से व्याकरण रटाने की प्रवृति थी। 66 राहुलजी ने इस तरीके में बदलाव लाकर ऐसे तरीके से पाठ देना शुरू किया, जिससे थोड़ा भी परिश्रम और समय लगाने पर विद्यार्थी को अपनी सफलता के प्रति आत्मविश्वास बढ़े। इसके लिए राहुलजी ने पाँच पुस्तकें लिखी, जिनमें चार भाषा और व्याकरण से संबंध रखती थी, और पाँचवीं छंद–अलंकार

की सम्मिलित पुस्तक थी। 67 राहुलजी ने देखा कि वहाँ के भिक्षुओं की पढ़ाई की गति बहुत मंद है। वे समझते थे, जल्दी क्या है? सारा जीवन तो पढ़ने के लिए है। राहुलजी इस व्यवहार से दुःखी थे क्योंकि भिक्षुक समय का पूरा उपयोग नहीं ले रहे थे। वहाँ राहुलजी ने एक चीज और नोट की कि वहाँ के अध्यापक, विद्यार्थियों की चेष्टाएँ ज्यादा संयमित थी, व्यवहार अधिक सुसंस्कृत, वेशभूषा बहुत परिष्कृत, घर और उसके स्थान स्वच्छ तथा बाकायदगी के साथ रखे हुए थे।68 राहुलजी का श्रीलंका में 19 माह का समय गम्भीर अध्ययन–अध्यापन में बीता। और इस बीच जीवनचर्या, लोकाचार, लोकव्यवहार, बौद्धिक अनुसंधान एवं साधनात्मक दृष्टिकोणों से उन्होंने बौद्ध धर्म को देखने की कोशिश की। राहुलजी की चेतना बुद्धिप्रधान होने के कारण बौद्ध चेतना को वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि से परखने का कार्य शुरु किया। साथ ही उन्होंने वैचारिक मुक्तता एवं आस्था की खोज में गंभीर अध्ययन का सिलसिला शुरू किया। अपने इस अध्ययन के बारे में लिखते है कि "बौद्ध धर्मग्रंथ पढ़ने के लिए पालि भाषा के प्रति अपनी रुचि लगाई। पालि संस्कृत के अत्यन्त सन्निकट होने के कारण काफी आसान थी। राहुलजी ने 'सुतपिटक' से अध्ययन प्रारम्भ किया। नायक महास्थविर, आचार्य प्रज्ञासागर, आचार्य देवानन्द, आचार्य प्रज्ञालोक हर रोज एक दो घंटे अध्ययन कराते फिर भी उन्हें तृप्ति न होती। पाली त्रिपिटक में बुद्ध कालीन भारत के समाज, राजनीति, इतिहास एवं भूगोल का बहुत काफी मसाला था। उन्होंने मेरी ऐतिहासिक भूख को बहुत तेज कर दिया था।'69 राहुलजी ने वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि सम्पन्न अध्ययन के साथ पारम्परिक तत्वों के पीछे जो उदार मानवतावादी एवं यथार्थ चिंतन प्रवाहित था उसे भी पकड़ना चाहा। अन्वेषण की तीव्रता और द्वन्द्वात्मक वैचारिक अन्तर्दृष्टि के कारण राहुलजी को राख में छिपे अंगारों, या पत्थरों में छिपे रत्नों की तरह बौद्धधर्म

के अन्तर्गत, अनीश्वरवाद, भौतिकवाद, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, प्रतीत्य–समुत्पाद का संधान मिला। राहुलजी इस दौरान हुए मानसिक उहापोह की स्थिति से गुजरने एवं उबरने की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते है –"एक तरफ आरम्भिक दिनों में मेरे मन की यह दशा थी, दूसरी तरफ पढ़ाते वक्त 'ईश्वर' शब्द का अर्थ विद्यार्थियों को समझाने में बहुत कठिनाई अनुभव करने लगा। अब मेरे आर्यसामाजिक और जन्मजात सारे विचार छूट रहे थे। अन्त में, इस सृष्टि का कर्ता भी है, सिर्फ इस पर मेरा विश्वास रह गया था। मैं समझता था, ईश्वर का ख्याल मनुष्य में नैसर्गिक है और यहाँ मैंने अपने समझदार विद्यार्थियों को देखा, कि वे उससे बिलकुल कोरे थे। प्रकृति के विकास, उसकी दैनिक घटनाओं के लिए जहाँ मैं ईश्वर की आवश्यकता अनुभव करता था, वहाँ ये लोग उसे स्वाभाविक कहकर छुट्टी पा लेते थे। बौद्ध धर्म नास्तिक है, अनिश्वरवादी है--इसे मैंने संस्कृत ग्रन्थों में पढ़ा था। किन्तु अब तक मुझे यह नहीं मालूम था, कि मुझे बुद्ध और ईश्वर से एक को चुनने की चुनौती दी जाएगी। मैंने पहिले–पहिल कोशिश की, ईश्वर और बुद्ध दोनों को साथ ले चलने की, किन्तु उस पर पग–पग पर आपतियाँ पड़ने लगी। दो–तीन महीने के भीतर ही मुझे यह प्रयत्न बेकार मालूम होने लगा। शाम के वक्त मैं एक घंटे केलनियाँ से तलेमन्नार आनेवाली रेलवे लाईन पर घूमने जाता। मैं अकेला घूमना चाहता, और अक्सर अकेला रहता। उस वक्त मेरा अन्तर्द्वन्द्व इतना तीव्र होता, कि बाज वक्त डर लगता, कही आगे–पीछे से आनेवाली ट्रेन को देखना न भूल जाऊँ। सौभागय से लाईन दुहरी थी और ट्रेन को सामने रखकर मैं टहलता था। ईश्वर और बुद्ध साथ नहीं रह सकते, यह साफ हो गया, ओर यह भी स्पष्ट मालूम होने लगा, कि ईश्वर सिर्फ काल्पनिक चीज है, बुद्ध यथार्थवक्ता है। तब कई हफतों तक हृदय में एक दूसरी बेचैनी पैदा हुई। मालूम

होता था, चिरकाल से चला आता एक भारी अवलम्बन लुप्त हो रहा है। किन्तु मैंने हमेशा बुद्धि को अपना पथप्रदर्शक बनाया था।–और कुछ समय बाद उन काल्पनिक भ्रान्तियों और भीतियों का ख्याल आने से अपने भोलेपन पर हँसी आने लगी।''70 इस प्रकार राहुलजी ने परम्परागत संस्कारों एवं आर्यसमाजी आस्था से मुक्ति प्राप्त की।

श्रीलंका में अपना अधिकांश समय त्रिपिटक के अध्ययन मनन करने में दिया, जिसके लिए विद्यालंकार विहार ने उन्हें 3 सितम्बर 1928 ई0 को 'त्रिपिटकाचार्य' की उपाधि प्रदान की।71 राहुलजी केवल इससे संतुष्ट नहीं हुए बल्कि वे बौद्ध साहित्य के अध्ययन के द्वारा बौद्ध दर्शन की जानकारी हासिल करना चाहते थे। इसके लिए राहुलजी फ्रांसीसी भाषा सीखी और तुरंत उसका उपयोग करते हुए, फ्रांसीसी अनुवाद से अभिधर्मकोश के खण्डित अंशों को पूरा किया और उस पर सरल सुबोध संस्कृत में 'नालंदिका' 72 नामक अपनी टीका लिखी। यह टीका राहुलजी द्वारा लिखित प्रथम बौद्ध ग्रंथ है। इतना ही नहीं बौद्ध धर्म एवं बौद्ध स्मारक से संबंधित अनेक लेख 'सरस्वती', विश्वामित्र, मिलाप आदि पत्रिकाओं में लिखे। यही लेख बाद में 'लंका'73 नामक पुस्तक बन गई जो राहुलजी की द्वितीय बौद्ध पुस्तक थी।

अधिकांश बौद्ध ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है जो ग्रंथ भारत से लुप्त हो गयी थी। राहुलजी को जानकारी मिल गई थी कि बौद्ध धर्म के बहुत से संस्कृत ग्रंथ तिब्बती अनुवाद में मौजूद है, इसलिए श्रीलंका में रहते ही उन्होंने तिब्बत जाने का निश्चय कर लिया। बताते है:''मैंने अब तक तै कर लिया था कि लंका से एक बार तिब्बत जाना जरूरी है, क्योकि वहाँ गए बिना बौद्ध दर्शन की शिक्षा और भारत के बौद्ध धर्म के इतिहास की जिज्ञासा पूरी नहीं हो सकती। मैं यह भी जानता था कि तिब्बत में मैं

छिपकर ही जा सकता हूँ, और इसमें मेरा भिक्षु का बनना बाधक होगा, इसलिए मैं इच्छा रहते भी अभी भिक्षु नहीं बनना चाहता था।74 इस तरह राहुलजी बौद्ध भिक्षु बनने से पहले तिब्बत जाकर बौद्ध ग्रन्थों का खोज एवं अध्ययन करना चाहते थे। इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए 1928ई0 में भारत आकर तिब्बत चल पड़े।

स्पष्ट है कि विद्यालंकार विहार में अपने अठारह–उन्नीस माह के उस प्रथम निवासकाल में राहुल ने घोर परिश्रम किया, यहाँ तक कि वे अपने मिनटों तक का हिसाब देने का दावा करते थे। इस यात्रा से राहुलजी में बौद्ध धर्म के प्रति अटूट विश्वास तथा बौद्ध ग्रंथों को पढ़ने जानने, और लेखन की इच्छा बढ़ी। इतना ही नहीं उन्होंने पारम्परिक आर्य समाजी धरातल को छोड़, आस्तिक संस्कार का विसर्जन कर बौद्धमत के मुक्त वैचारिक धरातल पर अपना कदम रखा। इस रूपातरण के बाद पहले की हर संस्कार और विचार राहुलजी के लिए अर्थहीन हो गया और वे नये विचारों से जुड़ गये।

क) तिब्बत की यात्रायें एवं बौद्ध साहित्य की खोज और विचार–

जिस समय राहुलजी ने तिब्बत के लिए प्रस्थान किया, उस समय नेपाल–तिब्बत युद्ध के कारण वहाँ जाना सम्भव नहीं हुआ। राहुलजी करीब एक साल तक ल्हासा और आसपास के कई बौद्ध विहारों की यात्राएँ करके भारत लौट आए। मगर खाली हाथ नहीं लौटे, इक्कीस खच्चरों पर तंजूर–कंजूर महाग्रंथों के अलावा बहुत सा तिब्बती साहित्य, कई तिब्बत चित्रपट, पुरातात्विक महत्व की अन्य कई चीजें और एक संस्कृत तालपत्र पोथी लादकर लाए।75 यह साहित्य तिब्बती बौद्ध साहित्य को जानने के लिए अपना स्थान रखता है।

राहुलजी भारत और तिब्बत की प्राचीन परम्परा की कड़ी को फिर से जोड़ना चाहते थे। तिब्बत के प्रति राहुल के इस आकर्षण का कारण उनके गहन अध्ययन से प्रसूत वे छिन्न धाराएँ थी, जो भारत एवं तिब्बत के आपसी संबंध के बारे में संकेतमात्र कर मौन हो चुकी थी। तिब्बत और भारत के बीच ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में आदान प्रदान होता रहा है। भारतीय विद्वान तिब्बत जाते रहे और तिब्बती पंडित भारत आते रहे। संस्कृत शास्त्रों का अनुवाद और ऐसी ही कई दुर्लभ सामग्री इस सांस्कृतिक आदान–प्रदान के दौरान अपने मूल रूप में तिब्बत में रह गए। उनकी यात्रा का मूल लक्ष्य दसवीं, ग्यारहवीं एवं बारहवीं शताब्दी में भारत से तिब्बत लिए जा चुके संस्कृत तालपत्रों की पोथियों को पुनरुद्धार कर लाना था। इनमें भी विशेष रुप से असंग, वसुबन्धु, दिङ्नाग और धर्मकीर्ति की मूल दार्शनिक कृतियों का अन्वेषण उनका अन्यतम मूल लक्ष्य था।76 राहुलजी नेपाल से होकर तिब्बत जाना चाहते थे। वह नेपाल में अज्ञातवास के रूप में कई दिन तक रहे। एक अंधेरी कोठरी में रहते हुए तिब्बत भाषा की शिक्षा, किताबों से प्राप्त की। अपने समस्त संस्कारों का त्याग कर तिब्बत तक पहुँचने के लिए तिब्बतियों की त्वचा का रंग लाने के लिए मैल जमाना शुरु किया, हजामत छोड़ दी, नहाना छोड़ दिया और इस प्रकार अत्यन्त ही कठोर जीवन पद्धति को अपना ''''''मंगोल भिक्षु 'सुमति प्रज्ञ' के साथ 'ल्हासा' पहुँचे।77 राहुलजी की पहली तिब्बत यात्रा की उपलब्धियों में से, प्राचीन'सम्–ये' बौद्ध बिहार की एक यात्रा थी। यहाँ प्रख्यात बौद्ध आचार्य शान्तरक्षित का देहावशेष सुरक्षित था। आगे महापंडित राहुल ने 1934, 1936 और1938 ई0 में तिब्बत की तीन और यात्राएँ की। इस दौरान मुख्य रूप से बौद्ध ग्रंथें की खोज और उनके संपादन–अनुवाद का कार्य किया। वहाँ के मठों से दर्जनों तालपोथियों को अपने साथ लाए और बाकी

कईयों के फोटो उतार कर लाए। यह सारी ग्रंथराशि पटना संग्रहालय और बिहार रिसर्च सोसायटी में आज भी रखी हुई है। राहुलजी ने चौथी बार तिब्बत की यात्रा मई 1938ई0 में की। इस चौथी यात्रा में उन्हें बिहार और तिब्बत, दोनों ही सरकारों से सुविधाएँ प्राप्त हुई। तिब्बत सरकार ने सभी पुराने पुस्तकालय में लगी अपनी मुहरों को तोड़कर चीजों के दिखलाने की आज्ञा दे दी थी।78 सत्ताईस मई को राहुलजी शलूविहार पहुँचे। यहाँ उन्हें एक काफी महतवपूर्ण पोथी मिली, जिसमें प्रसिद्ध नैयायिक ज्ञानश्री के लिखे 12 ग्रंथ थे। 'योगाचार भूमि' के खण्डित अध्याय भी प्राप्त हुए। राहुलजी तिब्बतवासियों के स्वभाव के बारे में लिखे है कि–''तिब्बत के लोग न जंगली हैं न सभ्य! पानी पीने की भाँति झूठ बोलने में अभ्यस्त हैं। बड़े से छोटे तक यही बात है, किन्तु यही बात तिब्बत जातिक–अम्दो खम्बा और लदाखियों के बारे में नहीं कही जा सकती। कृतज्ञता और मरौवत का इनमें अभाव है।''79 राहुलजी की यात्रा आगे बढ़ी, वह रही–डोर, नरयड् साक्या होते हुए पुनः भारत लौट आये। बौद्ध साहित्य की समृद्धि हेतु राहुलजी द्वारा किए गए प्रयासों पर दृष्टि डालें तो डॉ0 सिल्वा लेवी का उपर्युक्त कथन पुर्णतः सत्य प्रतीत होता है। राहुलजी का तिब्बती अनुसंधान बौद्ध धर्म के लिए तो उपयोगी रहा ही साथ ही उनके अन्दर ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण के विकास में भी सहायक सिद्ध हुआ।

ख) बौद्ध विचारक के रूप में राहुलजी–

राहुलजी के दिचार और विश्वास लगातार बदलते रहे हैं। उनकी जीवन यात्रा ही उनकी विचार यात्रा हैं। राहुलजी की जीवन यात्रा के प्रमुख पड़ावों पर नजर ड़ाले तो एक पड़ाव बौद्ध चिंतक के रूप में है। महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों को

पढ़कर राहुलजी के चिन्तन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। बुद्ध का यह वचन कि "मेरे उपदेश धर्म को बेड़े के समान समझना, पार होने के लिए है सिर पर लाद कर ढ़ोने के लिए नहीं"80। इसे पढ़कर राहुलजी को प्रवज्या की सार्थकता का अहसास हुआ। उन्होंने यह भी समझा कि विचार जीवन में साधन हैं,साध्य नहीं। साथ ही उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि तथाकथित ईश्वर का अस्तित्व एवं बुद्ध दोनों का निर्वाह एक साथ नहीं हो सकता। यही से राहुलजी की एक नई यात्रा शुरू होती है। वे आत्मवादी से अनात्मवादी बनते है, वैष्णव व आर्यसमाज के रास्ते से हट कर बौद्ध में रूपांतरित होते हैं। राहुलजी ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है–'अब मेरे आर्य सामाजिक और जन्मजात विचार छूट गये थे, अन्त में इस सृष्टि का कर्ता भी है, सिर्फ इस पर मेरा विश्वास रह गया था। किन्तु अब तक मुझे यह नहीं मालूम था कि मुझे बुद्ध और ईश्वर में से एक को चुनने की चुनौती दी जायेगी। मैंने पहिले पहल कोशिश की ईश्वर और बुद्ध दोनों को एक साथ ले चलने की किन्तु उस पर पग–पग पर आपतियाँ पड़ने लगी। दो तीन महीने के भीतर ही मुझे यह प्रयत्न बेकार मालूम होने लगा। ईश्वर और बुद्ध साथ नहीं रह सकते ,यह साफ हो गया और यह भी स्पष्ट मालूम होने लगा कि ईश्वर सिर्फ काल्पनिक चीज है, बुद्ध यथार्थ वक्ता हैं।'81 इस सत्य का ज्ञान होते ही राहुलजी का बौद्ध दर्शन के प्रति लगाव बढ़ गया। बौद्ध दर्शन मूलतः भाववाद विरोधी दर्शन है। अगर भारतीय दर्शन के संदर्भ में वस्तुवादी एवं भाववादी दर्शन की ऐतिहासिकता को देखें तो विशुद्ध भाववादी दर्शन सिर्फ तीन ही हैं–योगाचार, माध्यमिक एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन। बाकी सभी दर्शनों में भाववाद के खंडन का पक्ष ही अधिक परिपुष्ट है।82 इसी आधर को मानते हुए देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय का कथन है कि 'बौद्ध दर्शन नामक कोई एकल मत नहीं है।

कुछ मूल आधारभूत'सत्य' के आधार पर चार अलग सम्प्रदायों द्वारा चार विभिन्न प्रस्थानों को सामने रखा गया है। सौत्रान्तिक और वैभाषिक दर्शन कतई भाववादी दर्शन नहीं है, बल्कि भाववादी विरोधी है। योगाचार विज्ञानवादी और माध्यमिक शून्यवादी ही विशुद्ध भाववाद के समथर्क हैं।'83 यें दोनों सम्प्रदाय ही महायान मत के साथ सम्पृक्त हैं। राहुल अद्वैत दर्शन के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। इसी के चलते बौद्ध दर्शन के अध्येता के रुप में उन्होंने अद्वैत–सिद्धान्त और शंकर वेदान्त को नवीन आलोक में सम्प्रेषित किया है। राहुल ने शंकर को प्रच्छन्न नहीं प्रकट बौद्ध कहा हैं। 'असंग'की 'योगाचार–भूमि' के प्रसंग में राहुलजी कहते हैं–"बौद्धों के विज्ञानवाद, क्षणिक विज्ञानवाद के शंकराचार्य और उनके दादा गुरु गौड़पाद कितने ऋणी हैं, यह हम बतलाने वाले हैं। वस्तुतः गौड़पाद की 'मांडुक्य–कारिका' "अलात शान्ति प्रकरण" प्रच्छन नहीं, प्रकट रूप में एक विज्ञानवादी बौद्ध ग्रन्थ हैं।"84 बौद्ध दर्शन ने राहुलजी को वह अन्तदृर्ष्टि दी जिसकी तालाश वे बचपन से ही कर रहे थे। बौद्ध दर्शन का परिचय ही राहुलजी को जीवन दर्शन, राजनीतिक धर्म की गहराई की ओर ले गया और इसी के अध्ययन के कम में वे तिब्बत, श्रीलंका और चीन की ओर गये। तिब्बत में सवा वर्ष रहकर बौद्ध ग्रंथों को पढ़ा और उसे अपने जीवन में उतारा। "ईश्वर को नहीं मानना, आत्मा को नित्य नहीं मानना, किसी अन्य को स्वतः प्रमाण नहीं मानना और जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक परिमित मानना।"85 इस सिद्धान्त ने राहुलजी को विशेष रूप से प्रभावित किया और एक एक वचन उनके एक–एक रोम में समा गया। बौद्ध दशर्न के गहरे अध्ययन से राहुलजी को यह रोशनी मिली कि मायावाद नियतिवाद और पूजा पाठ आधरित ईश्वरवाद अपनी सामाजिक उपयोगिता नष्ट कर चुके है और केवल बौद्ध दर्शन का 'प्रतीत्यसमुत्पाद' इनसे मुक्ति दिला सकता है।

इस तरह बौद्ध दर्शन को समझने के लिए 'प्रतीत्यसमुत्पाद 'की जानकारी जरुरी है। राहुलजी मज्झिम निकाय का उदाहरण देते हुए कहते हैं–प्रतीत्यसमुत्पाद बुद्ध के सारे दर्शन का आधार है, उनके दर्शन को समझने की कुंजी है, यह बात बुद्ध के इस बचन से मालूम होता है–''जो प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है,वह धर्म को देखता है, जो धर्म को देखता है, वह प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है।वह पाँच उपादान स्कंध प्रतीत्य समुत्पन्न है''86

राहुलजी ने बुद्ध के दर्शन में महत्वपूर्ण तत्वों को देखा व परखा तथा उन पर अपने विचार रखे। उनकी प्रगतिशीलता के साथ साथ उनकी सीमाओं को भी अनुरेखित किया। यथा बौद्ध धर्म के क्षणिकवाद के अनुसार सभी वस्तुए क्षणिक हैं, क्षण क्षण परिवर्तनशील हैं केवल ऊपर ऊपर नहीं, बल्कि जड–मूल से विनाशशील है। बुद्ध विश्व की हरवस्तु को विनाशशील, क्षणभंगुर बतलाया है। जबकि वेदान्ती या ब्म्हवादी अद्वैती वाह्य विश्व के भीतर एक नित्य कूटस्थ व्रह्म तत्व को मानते है। भौतिक जगत उनके लिए माया मात्र है। बुद्ध के क्षणिकवाद के दर्शन से राहुलजी सहमत थे, पर उनकी टिप्पणी थी कि इस क्षणिकवाद को उन्होंने समाज की आर्थिक व्यवस्था पर लागू नहीं किया था। 87

बुद्ध का प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त बहुत ही क्रान्तिकारी दर्शन है। कारण कार्य के प्रतीत्य समुत्पाद एक के अतीत होने के बाद दूसरे कार्य का उत्पादन होता है। यद्यपि कार्य–कारण को बुद्ध अविच्छिन्न सन्तति नहीं मानते थे, पर उन्होंने यह भी माना है कि'' अस्मिन् सति इदं भवति''88 राहुलजी इस सम्बन्ध में कहते हैं कि–''इस क्रांन्तिकारी दर्शन ने अपने भीतर से उन तत्वों 'धर्म ' को हटाया नहीं था, जो समाज

की प्रगति को रोकने का काम देते है। पुनर्जन्म को यद्यपि बुद्ध ने नित्य आत्मा का एक शरीर से दूसरे शरीर में आवागमन के रूप में मानने से इन्कार किया था तो भी दूसरे रूप में परलोक और पुनर्जन्म को माना था, जैसे इस शरीर में जीवन विच्छिन्न प्रवाह के रूप में एक तरह की एकता स्थापित किये हुए है उसी तरह वह शरीरान्त में भी जारी रहेगा। पुनर्जन्म के दार्शनिक पहलू को और मजबूत करते हुए पुनर्जन्म का पुनर्जन्म प्रतिसन्धि के रूप में किया अर्थात् नाश और उत्पति की संधि से जुड़कर जैसे जीवन प्रवाह इस शरीर में चल रहा है उसी तरह उसकी प्रतिसन्धि एक शरीर से अगले शरीर में होती है। अविकारी ठोस आत्मा में पहले के संस्कारों को रखने का स्थान नहीं था, किन्तु क्षणपरिवर्तनशील तरल विज्ञान जीवन में उसके वासना या संस्कार के रूप में अपना अंग बनकर चलने में कोई दिक्कत न थी। क्षणिकता सृष्टि की व्याख्या के लिए पर्याप्त थी। किन्तु ईश्वर का काम संसार में व्यवस्था, समाज में व्यवस्था कायम करना भी है। इसके लिए बुद्ध ने कार्य के सिद्धान्त को मजबूत किया। आवागमन ,धनी–निर्धन का भेद उसी कर्म के कारण है ,जिसके कर्ता कभी तुम खुद थे, यद्यपि आज वह कर्म तुम्हारे लिए हाथ से निकला तीर है।'89 इसी संदर्भ में पुनः कहते है–''बुद्ध के प्रतीत्य–समुत्पाद को देखने पर ,जहाँ तत्काल प्रभुवर्ग भयभीत हो उठता, वहाँ प्रतिसंधि और कर्म का सिद्धान्त उन्हें विल्कुल निश्चित कर देता था। यही वजह थी ,जो कि बुद्ध के झण्डे के नीचे हम बड़े–बड़े राजाओं, सम्राटों, सेठ साहूकारों को आते देखते है और भारत से बाहर लंका, चीन, जापान, तिब्बत में तो उनके धर्म को फैलाने में राजा सबसे पहले आगे बढ़े। वे समझते थे कि यह धर्म सामाजिक विद्रोह के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति को स्थापित रखने के लिए बहुत सहायक साबित होगा।''90

बुद्ध के 'अनात्मवाद' सिद्धान्त ने राहुलजी को सबसे अधिक प्रभावित किया, जिसमें एक तरफ यह बात है कि आत्मा नित्य न होकर अनित्य है, दूसरी तरफ यह भी कि मन को अनित्य मानते हुये भी मन की संतति को अनित्य नहीं मानते। अर्थात् प्रवाह का होना नित्य है। बाकी सब अनित्य है नदी में सब कुछ बदल रहा है लेकिन प्रवाह नहीं। इस सम्बन्ध में आनंदजी राहुलजी के बारे में लिखते हैं " जिस समय राहुलजी मज्झिम निकाय का अनुवाद उपस्थित किया, उस समय तक वह अनात्मवादी अनीश्वरवादी होने के साथ साथ कट्टर पुनर्जन्मवादी थे। उनके द्वारा मज्झिम निकाय की भूमिका इस बात की सबसे बडी गवाही है।"91 यही क्षणिक अनात्मवाद आगे चलकर नागार्जुन, असंग, वसुबंधु, दिङ्नाथ और धर्मकीर्ति में अपनी तरह से मिलता है।

आरम्भ में ही राहुलजी गौतम बुद्ध के मूल सिद्धांतों की बात करते इसके चार सिद्धान्त बतलाते है, पहला ईश्वर को न मानना। दूसरा आत्मा को नित्य न मानना। तीसरा किसी भी ग्रंथ को स्वतः प्रमाण न मानना। चौथा जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक परिमित न मानना। इसमें तीन भौतिकवाद के समान हैं जो बौद्ध धर्म को दुनियाँ के अन्य धर्मो से पृथक करते हैं। चौथा, भौतिकवाद से पृथक हैं क्योंकि इसमें जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक परिमित नहीं माना गया है इसके अनुसार हमारा यह शरीर पूर्वकालीन प्रवाह चिरकाल से चला आ रहा है और परकालीन प्रवाह चिरकाल तक रहेगा। यहाँ भी इसका प्रवाह चिरकालीन है, अन्ततः नहीं क्योंकि इसका आरम्भ तृष्णा से होता है और तृष्णा के क्षय के साथ यह प्रवाह भी बन्द हो जायेगा। यह बौद्ध दर्शन का आशवाद है, जो निकम्मे से निकम्मे आदमी को बेहतर दुनियाँ बनाने की

आशा दे देता है। इस तरह बुद्ध अनीश्वरवादी तो हैं लेकिन भौतिकवादी नहीं।92 राहुलजी बताते है कि बुद्ध का मध्यम मार्ग एक ऐसा दर्शन है जो आचार, दर्शन, सभी क्षेत्रों में एक सा लागू होता है। यदि बुद्ध ने जीवन के सम्बंध में अति में ना जाकर बीच का मार्ग पकड़ने के लिए कहा, तो दर्शन में भी उन्होंने मध्यमा प्रतिपद को ही स्वीकार किया। भौतिकवादी क्षणिकवाद का दर्शन भी यह स्वीकार करता है कि यद्यपि मूलभूत तत्व भौतिक रुप है, लेकिन क्षण –क्षण विनाश और परिर्वतन परस्पर विरोधी तत्वों के समागम से जो विकाश परस्पर प्रचलित होता है, यदि चेतना अपने कारण भौतिक तत्वों से विलक्षण हो, तो इसमें आश्चर्य करने की जरुरत नहीं। द्वन्द्ववादी भौतिकवाद चेतना को भूतों की उपज मानता हे किन्तु साथ ही चेतना को भूत नहीं मानता बौद्ध दर्शन यद्यपि अपने को भौतिकवादी धोषित करता है लेकिन साथ ही वह आत्मवादी भी नहीं धोषित करता। वह यहाँ पर भी मध्यमा प्रतिपद् का अनुकरण करता है। वह चेतना को आत्मा कहकर उसे लोकोक्तर नहीं बनाना चाहता है और साथ ही उसे केवल भैातिक मानने के लिए तैयार नहीं है''93।

निष्कर्षतः राहुलजी की जीवन यात्रा एक स्थान या एक विचार पर स्थिर रहने वाली नहीं थी। वे ऐसे प्रगतिशील विचार के थे, जो खूँटे से बंधकर नहीं रह सकते थे। स्पष्ट है कि बुद्ध के प्रति अपार श्रद्धा रखते हुए भी राहुलजी ने बौद्ध धर्म की कमियों को अपनी आँखों से देखा और धीरे–धीरे इस धर्म से भी मुँह मोड़ने लगे क्योकि वे बौद्धधर्म के प्रति अपने लगाव के भविष्य को वे जानते थे। इसलिये, जब अनागारिक धर्मपाल ने उन्हें धर्म प्रचारक बनाने के लिये उन पर दबाव डालने के लिए कई पत्र लिखे, तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया उस स्थिति का वर्णन करते

हुए उन्होंने अपनी 'जीवन–यात्रा' में लिखा है–"कोई समय था कि जब मैं धर्मप्रचारक बनने का तीव्र अनुरागी था,लेकिन अब अवस्था बिल्कुन बदल गयी थी।बौद्धधर्म के साथ भी मेरा कच्चे धागे का ही सम्बंध था।हॉ बुद्ध के प्रति मेरी श्रद्धा कभी कम नहीं हुई।"94 शीध्र ही मार्क्सवादी के रूप में राहुलजी को ऐसी विचारधारा मिली जिसमें उन्हें बौद्ध धर्म के अन्तर्विरोधों का समाधान मिलता है।

द) मार्क्सवादी चिन्तक के रूप में राहुल सांकृत्यायन–

राहुलजी वैचारिक स्तर पर सक्रिय साम्यवाद के धरातल तक आते–आते संस्कारी सनातनी प्रवाह, आर्यसामाजी वैदान्तिक दृष्टिकोण एवं बौद्ध चिन्तन प्रक्रिया के पड़ावों से गुजर चुके थे। हर एक पड़ाव के अन्तर्गत राहुल में ग्रहण विश्लेषण और वर्जन की त्रिमुखी क्रियाशीलता सक्रिय रही है। ग्रहण की प्रक्रिया में यर्थाथवाद एवं समाजपयोगिता को मदेनजर रखते हुए राहुल ग्रहण की गयी चेतना को आचरण की कसौटी पर कसकर उसके वस्तुसत्य की जाँच करते थे। वर्जन की प्रकिया में चेतना के सकारात्मक उपादानों को ग्रहण कर नकारात्मक उपादानों का वर्जन करते थे। राहुलजी मानसिक स्तर पर जिस साम्यवादी चेतना को अन्तःप्रवाहित धारा के रूप में बरकरार रखते हुए चले आ रहे थे, उसी साम्यवादी जीवन को सामाजिक सकियता एवं जनान्दोलन–मुखी परिवर्तनशीलता के धरातल पर देखना चाहते थे। उस समय बौद्ध दर्शन के सिद्धान्त और विचार पूर्ण रुप से राहुलजी के हृदय को तृप्त नहीं कर पा रही थी। प्रतीत्य–सपुत्पाद के सिद्धान्त, आत्मा–परमात्मा का सूक्ष्म विश्लेषण, पुनर्जन्म के बन्धनों और दुःख से मुक्ति की बातें तथा मध्यम् मार्ग के बन्धन, इन सब में राहुलजी उलझे रहे परन्तु शांति, समाज में समानता, राम राज्य की कल्पना ये

स्वपन कैसे पूरे हों? राहुलजी को यें बातें उनके हृदय को सदैव कुरेदता रहा। इन्हीं मन्थनों में उलझे राहुलजी के मन और बुद्धि पर 1917ई0 की रूसी क्रांति का प्रभाव पड़ा। राहुलजी उस समय महेशपुर में थे, जहाँ साम्यवाद से परिचित हुए थे। उस समय मन में उत्पन्न अपने विचारों के सम्बन्ध में लिखते हैं–'महेशपुर में रहते ही वक्त अखबारों से रूसी क्रांति की खबरों ने मेरे ऊपर एक नया प्रभाव जमाना शुरू किया।इन खबरों से मालूम होता था कि वहाँ गरीबों–मजदुरों, किसानों–की भी एक पार्टी है, जो गरीबों के हक के लिए लड़ रही है, वह भोग और श्रम के समान विभाजन का प्रचार करती है। मुझे ये ख्याल अखबारों के बहुत से अंकों को पढ़ते हुए सिर्फ बीज रूप में मालूम हुए। मैंने उस वक्त तक हिंन्दी और उर्दू में साम्यवाद पर कोई पुस्तक पढ़ी न थी, शायद वह मौजूद भी न थी। किसी जानकार से इस बारे में वार्तालाप भी नहीं किया जा सकता था, तो भी भोग–श्रम–साम्य का सिद्धांत बहुत जल्दी ही मेरे स्वभाव का अंग बन गया। मालूम होता है–कोई आदमी अनजान किसी ऐसी चीज की खोज में हो जिसकी आकृति और नाम को भी भूल गया हो और वह चीज एक दिन अकस्मात उसे मिल जावे। मैंने उस बीज को अपने आप सोचकर विकसित किया। आसपास के लोगों को मैं उसके गुणों को समझाता और साथ ही आर्यसामाजिक तथा साम्यवाद में समन्वय करने की कोशिश करता'95 राहुलजी का बौद्ध धर्म से साम्यवाद के तरफ झुकाव का दो कारण हैं। एक तो यह कि राहुल का बौद्धदर्शन के प्रति तात्विक अवधारणा, केवल बौद्ध दर्शन के गहन अध्ययन एवं तत्संबंधी पांडित्य के द्वारा ही निर्धारित नहीं था। उसके पीछे षड्दर्शन, शास्त्र, ईश्वरत्व के पंडित राहुल की सनातनी आस्था का खंडन भी एक कारण था। इस तरह राहुल का वैचारिक परिवर्तन, आस्था के विखंडन एवं उसका पुनर्निर्माण है।

राहुलजी तब की मनःस्थिति के बारे में बताते हैं–"1918 के प्रथम पाद तक छन छुनकर काफी खबरें रुसी मजदूरों क्रांति की मेरे कानों तक पहुँची थी। काल्पी में उर्दू–हिंदी–अंग्रेजी के अखबार मिल जाया करते थे, और तीन पंक्ति की रूस संबन्धी खबर भी मुझे काफी चिंतन का मसाला दे देती । मैंने उन उड़ती खबरों और जब तब समाचारों से सुन लिये साम्यवाद के विकृत आकार को अपनी समझ से सुलझाकर एक साम्यवादी जगत की कल्पना करने लगा। 1918 के आदिम महीनों में मैंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखनी चाही थी और उसका खाका बना लिया था, किन्तु विद्यालय बन्द करने के बाद वह खाका मेरी नोटबुक के साथ योगेश के पास रहा और पीछे गुम हो गया। उस पुस्तक को एक दूसरे ढंग से संस्कृत पद्यों में 1922 में मैंने लिखना चाहा, किन्तु वह भी कुछ सर्गो तक ही रह गई, और अन्त में वह काम 'बाईसवीं सदी' के नाम से 1923–24ई0 में हजारीबाग जेल में पूरा हुआ।'96, 1932ई0 में यूरोप यात्रा के दौरान राहुलजी ने इंग्लैण्ड एवं अन्य यूरोपीय देशों के जीवन का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। उस समय उनका अधिकांश समय मार्क्स, लेनिन और स्तालिन के ग्रन्थों के अध्ययन में व्यतीत होता था। इसके बाद वे तिब्बत, लदाख, जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान तथा सोवियत भूमी की यात्रा की। इन स्थलों की यात्रा एवं साम्यवादी विचारधारा ने राहुलजी के भविष्य की राजनीतिक दृष्टि को आमूल परिवर्तित कर दिया। राहुलजी लिखते है कि–'वस्तुतः अब मेरे और भौतिकवाद में इतना ही अंतर रह गया था कि मैं मरने के बाद भी जीवन–प्रवाह के जारी रहने पर विश्वास करता था।बौद्धों के बड़े प्रिय सिद्धान्त'निर्वाण'को तो मैं पहिले से ही दिए की तरह बुझाकर जीवन प्रवाह को सदा के लिए खतम हो जाने के सिवा और कुछ नहीं मानता था।'97 राहुलजी ने बुद्ध के 'अब्रम्हवादिता'एवं'अनीश्वरवादिता'

के सन्दर्भ में 'निर्वाण' को जाना था। बुद्ध वचन के आलोक में राहुल इस बात का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं " बुद्ध ने निर्वाण उस अवस्था को कहा है, जहाँ तृष्णा क्षीण हो गई, आस्त्रव, चितमल जहाँ नहीं रह जाते। इससे अधिक कहना बुद्ध के अ–व्याकृत प्रतिज्ञा की अवहेलना करनी होगी।"98 'निर्वाण'के तात्विक सत्य को जानने के बाद बौद्धदर्शन–मर्मज्ञ के रुप में साम्यवादी चेतना में उत्तरण के लिए राहुल के स्वतंत्र विचार बौद्धधर्म को साधक नहीं, बाधक मानने लगे थे ।

सन् 1935 के बाद भिक्षुक राहुल को पुनर्जन्मवाद में कोई आस्था नहीं रही। 'दर्शन–दिग्दर्शन' तथा 'बोल्गा से गंगा' की 'प्रवाहण' कहानी में राहुलजी ब्रम्हवाद और पुनर्जन्मवाद को सबसे भारी जाल बताये है और अपने को उसी समय बौद्ध धर्म से मुक्त कर लिया। सन् 1938 ई0 में राहुलजी ने जब भारतीय राजनीति में पुनः प्रवेश किया तो वे पूर्णतः साम्यवादी बन चुके थे। उसी समय छपरा जिले में होने वाले किसान आन्दोलन में जमींदारों का विरोध किया, जेल भी गये और अपने निःस्वार्थ संघर्ष के कारण वे किसानों के सच्चे नेता बन गये।'99 राहुलजी कुछ कारण बस कम्युनिस्ट पार्टी से कुछ दिनों के लिए अलग भी रहे परन्तु उनका मन सदैव साम्यवादी विचारों से धिरा रहा। राहुलजी इस संदर्भ में 1957 ई0 में अपनी पत्नी को समझाते हुए लिखते है–"तिब्बत का अनुसंधान और साम्यवाद की सेवा मेरे जीवन के सबसे बडे आदर्श रहे है। मैंने इनके लिए प्राणों की बाजी लगाने में आनाकानी नहीं की, उनसे विमुख होने की तो आशा ही नहीं हो सकती।"100 इस प्रकार राहुलजी ने अंत तक अपने जीवन को साम्यवाद से जोड़कर रखा। साम्यवादी चिन्तन पद्धित के साथ राहुलजी के अंतःसम्बन्ध की विवेचन करते हुए मधुरेश ने लिखा है–"आज लोगों

को यह थोड़ा अजीब–सा लग सकता है, लेकिन वस्तुस्थिति यही है कि वे मार्क्सवाद पढ़कर मार्क्सवादी नहीं बने थे। राहुल ने अपनी पहली राजनीतिक गिरफतारी के दौरान, सन्1922 में, हजारीबाग जेल में अपनी यूटोपिया 'बाईसवी सदी' की रचना शुरु की थी। आगे चलकर अपनी आत्मकथा में राहुल ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि तब तक उन्होंने कायदे से मार्क्सवाद का नाम तक नहीं सुना था। सोवियत संघ में जारशाही के पतन के बाद जो राजनीतिक सामाजिक परिवर्तन हो रहे थे। उन सबकी एक धुँधली–सी तस्वीर भारत में उभरने लगी थी–ब्रिटिश शासन के कड़े विरोध औरसेंसर के बावयूद। उसी सबसे प्रभावित होकर राहुल ने एक शोषणमुक्त, वर्गहीन, स मतावादी समाज का सपना देखते हुए अपनी यूटोपिया की स्थापना की।''''''''''भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना सन् 1925 में हुई और प्रगतिशील लेखक संध का गठन सन्1936 में, लेकिन राहुल सांकृत्यायन इन दोनों से पहले से मार्क्सवादी भी थे और प्रगतिवादी भी।''101 राहुलजी ने प्रगतिवादी दृष्टि से ही मानव सभ्यता के विकास की विवेचना की है। राहुलजी ने देखा कि वर्तमान समाज की तुलना में आदिम साम्यवादी युग कही बेहतर था , क्योकि आदिम युग में अन्याय और असमानता नहीं थी, अतः तेरा–मेरा का प्रश्न ही नहीं उठता था। उस समय 'करतल भिक्षा तरुतल वासः' का जमाना था। लोगों में संग्रह की प्रवृति नहीं थी, सभी मिलकर रहते थे, यूथ से अलग व्यक्ति के अस्तित्व का ख्याल भी नहीं थी। राहुलजी ने जनसतात्मक युग को मातृसतात्मक एवं पितृसतात्मक युग के बीच का संक्रमण काल माना है। उनके अनुसार–'जनसता का आरंभ बर्बर युग के साथ आरम्भ हुआ। अन्त में जब वह समृद्धि के शिखर पर पहुँची तो साथ ही पितृसता के रुप में बदलकर अपने गर्भ से उसने अपने बैरी पितृसता को पैदा कर नाश की ओर कदम बढ़ाया।8

सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ शनैः शनैः स्वार्थ भावना, अधिकार लोलुपता, आडम्बर, वर्गभेद आदि के कारण मानवीय स्वतंत्रता का अपहरण होता चला गया। जिसके कारण ही अधिनायक, जननायक, राज्य एवं साम्राज्यवाद की स्थापना हुई।102 इस प्रकार मानव विकास के इतिहास के पर्यवेक्षण ने राहुलजी को एक नवीन दृष्टि दी और जीवन तथा जगत के विशद् अनुभवों ने उनकी साम्यवादी दृष्टि को पुष्ट किया। साम्यवाद के प्रति गहरी आस्था प्रगट करते हुए अपनी पुस्तक 'रामराज्य और मार्क्सवाद' में राहुलजी लिखते है–"मार्क्सवाद किसी काल्पनिक स्वर्ग के सुख का प्रलोभन देकर जनता को भुलावे में डालना नहीं चाहता। वह इसी दुनियाँ को स्वर्ग बनाना चाहता है। उसका कहना है कि तुम्हारे सामने जो दुनियाँ है, वही स्वर्ग में परिणत की जा सकती है। सेठों और शोषकों तथा उनके समर्थक करपात्रियों ने दुनियाँ को नर्क बना रखा है। यदि रास्ते के ये कँाटे हटा दिए जाएँ, तो दुनिया के दुःखों को हटाने में देर नहीं हो सकती।103 मार्क्स के सिद्धान्त ने राहुलजी को इतना प्रभावित किया कि इंग्लैण्ड छोड़ने से पहले मार्क्स के समाधि पर फूल चढ़ाने और नमन करने के लिए गये। उन्होंने देखा कि 'जिस वर्ग की गुलामी को हटाने के लिए मार्क्स ने इतना काम किया, उसी का एक आदमी उस कब्रस्तिान का चौकिदार होते हुए भी मार्क्स की समाधि को नहीं जानता।''''''''''''''यही दुनियाँ के श्रमजीवियों का त्राता अपने जीवन के अन्त तक परिश्रम और दरिद्रता सहने के बाद अपनी स्त्री जैनी और नाती के साथ नीरव सो रहा है। मैंने बड़े भक्तिभाव से फूलों को समाधि पर चढ़ाया।'104 उस यूरोप–यात्रा में राहुलजी ने सोवियत रूस जाने के लिए बहुत कोशिश की मगर सफल नहीं हुए।

मार्क्स के दर्शन से प्रभावित होकर 1935 ई0 में राहुलजी ने रूस की यात्रा पर निकले,वहाँ की जनता की खुशहाली और वहाँ की समाजवादी व्यवस्था ने राहुलजी को विशेष रुप से प्रभावित किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि–" मानव जीवन को समृद्ध और आनंदित करने वाले संसाधनों पर प्रकृति नाम नहीं लिखती। सृजन–संहार ,ऋतु परिर्वतन के व्यापार में प्रकृति कोई मुनाफा नहीं करती है। सम्राटों और फकीरों को प्रकृति नहीं गढ़ती, प्रकृति के अवदानों पर हिंसाचार करते हुए उत्पादन के साधनों पर मुनाफाखोरों के लिए कब्जा किये हुए पूँजीवादी व्यवस्था जनता के दुःखों का सच्चा कारण है। वे आर्थिक गुलामी को सभी प्रकार की स्वतंत्रता का अवरोधक मानने लगे और पूँजीवादी व्यवस्था के धोर विरोधी हो गये। उन्हें लगने लगा कि साम्यवाद के रास्ते चलकर ही पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म किया जा सकता है और मानव समाज को उसके दुःखों से निजात दिलाया जा सकता है। इस रास्ते पर चलने के लिए मनुष्य को अपनी इच्छा शक्ति पर विश्वास होना चाहिए।"105 मार्क्स के विचारों से प्रभावित होकर राहुलजी ने 'साम्यवाद ही क्यों" 'रुस में पच्चीस मास' 'मध्य एशिया' 'सोवियत भूमि' 'चीन में क्या देखा' 'कार्ल मार्क्स' 'स्तालिन' 'लेनिन' 'माओत्से तुंग' आदि प्रमुख ग्रंथों को लिखा। साम्यवाद की व्याख्या करते हुए राहुलजी लिखते हैं–"साम्यवाद क्या चाहता है–शोषक और शोषित के भेद को मिटाकर उपज के साधन तथा उत्पादित वस्तुओं का स्वामी व्यक्ति को नहीं समाज को बनाना,सभी व्यक्तियों से योग्यतानुसार काम करवाना,जीवन के लिए जरुरी चीजों,यन्त्रों के उपयोग से मिलने वाले अवकाश और मानसिक विकास के अवसर को अपेक्षानुसार सभी को समान रुप से बाँटना।106 चीन का उदाहरण सामने रखते हुए राहुलजी ने लिखा है–'साम्यवाद ने चीन में कितनी शीध्रता से कायापलट की है, इसे

देखकर मुझे बार बार यही ख्याल आता था कि हमारे यहाँ भी उसकी आवश्यकता है'107 उसी समय राहुलजी ने अपने देश के लिए भी साम्यवादी व्यवस्था की काल्पनिक चित्र खींचा। भारत में व्याप्त निर्धनता, वर्ग भेद एवं किसानों व मजदूर–वर्ग के शोषण से राहुलजी काफी व्यथित थे। इसलिए उनकी सहानुभूति एवं संवेदना सदैव शोषितों, निर्धनों तथा अभावग्रस्त जनता के प्रति रही है और इसके विपरीत उन्हें शोषक वर्ग एवं पूँजीपति वर्ग के प्रति सदैव नफरत रही है।108 राहुलजी समाज में व्याप्त विषमता, वर्ग–भेद एवं दलित वर्ग की दयनीय स्थिति का मुख्य कारण शोषक वर्ग को मानते हुए पूर्ण व्यवस्था में एक नया परिवर्तन चाहते थे। इस समस्या के हल के बारे में राहुलजी लिखते है–''गरीबों की कमाई पर मोटे होने वालों का भारत में नामोंनिशान यदि न रहे,तभी हमारी समस्या हल हो सकती है।'109

राहुलजी मार्क्स के वैज्ञानिक भौतिकवादी सिद्धान्त से काफी प्रभावित हुए।मार्क्स ने प्राकृतिक जगत् को विकसित होते स्वरूप, परिवर्तन के निरन्तर घटना प्रवाह के रुप में स्वीकार किये है।110 इस विचार को स्वीकार करते हुए राहुलजी लिखते है–''वैज्ञानिक भौतिकवाद वह दर्शन है, जो कि बतलाता है–दुनिया में परिवर्तन होता है ओर कैसे वह परिवर्तन होता है। यही नहीं, उस परिवर्तन में मनुष्य होने के नाते हमें हिस्सा भी लेना चाहिए। हमारी आँखों के सामने दो प्रकार के भारी परिवर्तन घटित हो रहे है। एक परिवर्तन वह है जो कि साइंस अपने आविष्कारों से उपस्थित कर रहा है।–रेल तार, बिजली, हवाई जहाज, रेडियों, सिनेमा जिस तरह के परिवर्तन को उपस्थित कर रहे हैं, वह मनुष्य की अचिन्त्य क्षमता को बतला रहे है। दूसरा परिवर्तन मनुष्य के जग–परिवर्तन करने की शक्ति। मनुष्य जगत् के परिवर्तन करने

में जोर–शोर से लगा हुआ है। मनुष्य ने अपने सामाजिक प्रयत्न से मस्तिष्क को विकसित किया, साइंस को पैदा किया, अब उसकी सहायता से वह जग परिवर्तन को और तेजी से कर रहा है। तो भी इस परिवर्तन के साथ खुद समाज के परिवर्तन में गति अत्यन्त मंद रही है, लेकिन अब समझने लगा है, जग परिवर्तन करते हुए अपने तथा अपने समाज को अछूता रखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि दान को घर से शुरु करना चाहिए। इसीलिए यहाँ 'समाजवाद की जय' इसीलिए यहाँ 'साम्यवाद की जय' इसीलिए यहाँ 'पूँजीवाद की क्षय' करनी है।111 राहुलजी ने देखा कि मार्क्स–एन्गेल्स के वैज्ञानिक भौतिकवाद ने हेगेल के द्वन्द्वात्मकवाद को काल्पनिक विज्ञानवाद से मुक्त कर उसे और आगे बढ़ाया है। मार्क्स ने द्वन्द्ववाद की व्याख्या 15 से 16 सूत्रों में की है, जो मार्क्स के ज्ञान का सिद्धान्त है–इसके द्वारा ही वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इन सूत्रों का प्रभाव राहुलजी के जीवन पर पड़ा और वे पूर्णरुप से मार्क्सवादी बन गये। मार्च1940ई0से जुलाई1942 तक पूरे 29 मास, हजारीबाग जेल और देवली कैंप में रहकर 'विश्व की रुपरेखा' 'मानव समाज' 'दर्शन दिग्दर्शन' 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' 'वोल्गा से गंगा' 'सिंह सेनापति' 'आठ भोजपुरी नाटक' की रचना की जो उनकी साम्यवाद के प्रति निष्ठा का ज्वलंत सबूत है।112 राहुलजी अपने वैज्ञानिक अध्ययन को दो धरातल पर कसते हैं। एक, वह हिन्दी पाठकों की अभिरुचि, वर्गभेद, स्वभाव, दतचित स्कालर और हल्के फुल्के मनोरंजन का पाठ प्रक्रिया यानी पाठकों के सांस्कृतिक तल का ध्यान रखते हैं, दूसरा वह ज्ञान के हर क्षेत्र में –चाहे कोश कला हो, पुरातत्व के ग्रंथों का संपादन हो, स्थापत्य–कला में काल का निर्धारण हो, या भाषाओं की अलग सीमाएँ हो–प्रयोग की कसौटी पर उसे बार–बार कसते है।113

इस प्रकार राहुलजी मार्क्सवादी दर्शन के घनघोर समर्थक एवं साम्यवाद के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले महापुरुष बन गये। 1947 से लेकर राहुलजी की जीवन यात्रा 1963 तक एकमुखी ही बनी रही। इसी दौरान उन्होंने अपनी आँखों से रूस एवं चीन का कायाकल्प होते देखा था, अतः उन्होंने भारत के लिए भी साम्यवादी व्यवस्था को ही आदर्श व्यवस्था स्वीकार किया। राहुलजी का मानना था कि–'जब वर्गभेद रहित मानव समाज कायम हो जायेगा उस समय वर्तमान की कठिनाईया ही दूर नहीं हो जाएगी, बल्कि उसकी अनेक प्रकार की चिन्ताओं और अव्यवस्थाओं के दूर हो जाने से मानव जीवन अधिक शांतिमय, सुखमय और संतोषमय होगा'114 इस तरह राहुलजी की वैचारिक परिवर्तन का अन्तिम पड़ाव साम्यवाद है। इस लक्ष्य को प्राप्त कर अन्त तक अपना अध्ययन, लेखन, चिन्तन, पर्यटन आदि तमाम कार्य परिचालित करते रहे तथा जहाँ तक हो सका मानवीय सेवा से भी पीछे नहीं हटे। राहुलजी के जीवन में जो वैचारिक परिवर्तन के चार मुख्य पड़ाव दिखाई देता है–सनातनी, आर्यसमाजी, बौद्ध एवं साम्यवाद इसके पीछे राहुलजी का स्वयं का अनुभव और अध्यवसाय जनित तर्कबुद्धि है।

निष्कर्षतः राहुलजी के जीवन में जो वैचारिक बदलाव का आसार दिखाई देता है, वह स्वयं राहुलजी की मानसिक उपज है। राहुलजी के वैचारिक विकास के प्रमुखतः चार मोड़ है–वैरागी साधु, आर्यसमाजी, बौद्ध और मार्क्सवादी। इन मोड़ो से होकर गुजरते हुए ही उनके दार्शनिक विचारों का विकास हुआ। वैराग्य के प्रति आकर्षण के पीछे पिता, नानी का संस्कार, तथा पिता द्वारा कम उम्र में विवाह करा देना है। राहुलजी का मन इस वैवाहिक संस्कार से समाज के प्रति बिरागी हो गया। उन्होंने अपने मन

की शांति के लिए उत्तराखण्ड ,दक्षिण भारत के विभिन्न तीर्थ स्थलों की यात्रा की। उन्होंने सनातनी जीवन प्रणाली के कर्मकाण्डो की व्यर्थता तथा साधुओं, आचारियों के स्वभाव को बहुत करीब से देखा। राहुलजी में इस समय उत्पन्न यर्थाथवादी अन्तर्दृष्टि ने उनमें अन्वेषण, पर्यटन एवं ज्ञानार्जन के लिए बेचैनी पैदा कर दी और आर्यसमाज से जुड़ गये। आर्यसमाज ने राहुलजी को वैचारिक मुक्तता की जमीन ही नहीं प्रदान की, बल्कि राहुलजी में तार्किक अन्तर्दृष्टि का विकास का स्वस्थ्य वातावरण प्रदान किया। उस समय से राहुलजी हर बात को सच्चाई की कसौटी पर परखते और तब जाकर उसे अपने आचरण में ढ़ालते थे। राहुलजी ने इसमें भी अनेको कमियाँ देखी और सत्य की खोज के लिए एक नया पथ की तलाश थी। बुद्ध के इस उपदेश–' भिक्षुओं, मैं नौका की तरह धर्म का उपदेश करता हूँ। यह पार होने के लिए है, पकड़कर बैठने के लिए नहीं।' को पढ़कर राहुलजी को प्रवज्या की सार्थकता का ज्ञान से उनके वैचारिकता में भारी बदलाव आया और बौद्ध भिक्षुक बन गये। इस धर्म की सच्चाई से अवगत होने हेतु श्रीलंका, तिब्बत, भारत के विभिन्न स्थलों की महापरिक्रमा किये। उन्होंने इस यात्रा के बाद यह समझा कि ईश्वर सिर्फ काल्पनिक चीज है, बुद्ध यर्थाथ वक्ता है। प्रतीत्य–समुत्पाद के सिद्धान्त, आत्मा–परमात्मा का सूक्ष्म विश्लेषण, पुनर्जन्म के बन्धनों और दुःख से मुक्ति की बातें तथा मध्यम् मार्ग के बन्धन, इन सब में राहुलजी उलझे रहे परन्तु शांति, समाज में समानता, राहुलजी को यें बातें उनके हृदय को सदैव कुरेदती रहीं। राहुलजी ने इस दर्शन को समाज की कसौटी पर खारा नहीं पाया। उन्होंने पाया कि यह दर्शन पूँजपतियों का एक बड़ा एजेन्ट है और पुनर्जन्म एक बड़ा सा जाल है। इसी अन्तःद्वंद्व में राहुलजी को मार्क्सवाद की ध्वनि सुनायी पड़ी और मार्क्सवाद के पथ पर चल पड़े। वैचारिक स्तर

पर राहुलजी को मार्क्सवादी पड़ाव पर आकर ही वास्तविक सत्य का आभास हुआ। इस तरह राहुलजी के वैचारिक परिवर्तन के कई स्वरूप हमारे सामने आते हैं वैरागी, आर्यसमाजी प्रचारक, बौद्धभिक्षुक और मार्क्सवादी स्वरूप, इन तमाम रूपों में समग्र राहुल सांकृत्यायन रचे बसे हैं। इस दृष्टि से देखें तो राहुलजी एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक जीवन–पद्धति हैं, एक जीवन–दृष्टि हैं।

संदर्भ सूची–

1 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–45

2 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,79

3 वही

4 वही

5 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0सं0,79

6 वही, पृ0 सं0 81

7 विष्णुचंद्र शर्मा, 'सम्य साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ पृ सं0 53

8 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ सं082

9 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरा जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,85

10 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरा जीवन यात्रा',भाग–1, पृ सं0,86

11 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–55

12 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,95

13 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–66

14 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,94

15 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,110

16 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0,सं0,115

17 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,123

18 वही

19 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,125

20 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–86

21 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,133

22 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,1

23 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,137

24 वही, पृ0 सं0 138

25 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–98

26 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–100

27 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,149

28 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मुंबई,मेरठ, पृ0 सं0–103

29 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0,165

30 राहुल सांकत्यायन, दिमागी गुलामी,

31 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0,स0,170

32 वही, पृ0,स0,170।

33 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0172

34 वही, पृ0 सं0 181

35 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग 1, पृ0 सं0 173–74

36 गुणाकर मूले, 'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन, पृ0स0,72

37 'अभिनव कदम', भाग–1,अंक,16–17,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0।

38 राहुल सांकत्यायन,'दर्शन–दिग्दर्शन', पृ0स0 ,263

39 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0स0,178

40 वही, पृ0स0,176

41 वही, पृ0 सं0 177

42 वही,पृ0 सं0177

43 गुणाकर मूले–'स्वयंभू महापंडित' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0स0,63

44 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–,1, पृ0स0,179

45 वही, पृ0 सं0,180

46 वही, पृ0 सं0,183

47 वही, पृ0स0,183

48 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0स0,189

49 राहुल सांकृत्यायन, 'जिनका मैं कतज्ञ' इलाहाबाद,1957,पूर्वोक्त, पृ0स0,123

50 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0स0,185

51 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0स0,193

52 कौसल्यायन,भदंन्त आनन्द,'राहुलजी का बौद्ध साहित्य और दार्शनिक चिन्तन, 'राहुल सांकृत्यायनःव्यक्ति और वाड्मय में संकलित, पृ025

53 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0,194

54 बौद्ध धर्म के परम्परागत नियमों में आस्था रखने वाले परम्परानुरागी बौद्ध भिक्षुक स्थविर कहलाते है।देखिये,ए0 लाल वाशम,'अदभुत भारत' आगरा,1992 पृ0 सं0 220

55 राहुल सांकृत्यायन,'जिनका मैं कृतज्ञ' इलाहाबाद,1957,पृ0 सं0 126

56 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 245

57 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पूर्वोक्त पृ0 सं0229

58 वही

59 वही

60 वही

61 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0230

62 वही पृ0 सं0,233

63 वही पृ0 सं0,239

64 वही पृ0 सं0,269

65 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0,16

66 वही पृ0 सं0 17

67 वही पृ0 सं0 17

68 वही पृ0 सं0 18

69 वही पृ0 सं0 18

70 वही,पृ0 सं0 19

71 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0सं0 26

72 यह ग्रंथ नालंदिका काशी विधापीठ,वाराणसी से 1931 ई0 में प्रकाशित हुआ ।

73 यह ग्रंथ 'लंका' किताब महल प्रयाग से 1935 ई0 में प्रकाशित हुआ ।

'74 गुणाकर मूले 'राहुल चिंतन 'पृ0 सं0 84

75 गुणाकर मूले'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0,सं0,84

76 चट्टोपाध्याय,डा0 आलोक,'राहुल–इनसर्च आफ लोस्ट ट्रेजर्स आफ इंडिया'महापंड़ित राहुल सांकृत्यायन वर्थ सेंचुरी वों–बौद्ध धर्माकर सभा,कलकता,पृ040–42।

77 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 319

78 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग 2, पृ0 सं0 297

79 वही पृ0 सं0 299

80 वही पृ0 सं0 19

81 वही 19

82 चट्टोपाध्याय,देवी प्रसाद, 'भारतीय दर्शन भाववाद ओ भाववाद–खंडन':बॅगला निबन्ध, शारदीय'परिचय',बंगाब्द1368,पृष्ट187।

83 वही,पृष्ट,187

84 राहुल सांकृत्यायन,,'बौद्ध दर्शन,'किताब महल,इलाहाबाद, पृष्ट सं0 83–84

85 राहुल सांकृत्यायन,' बौद्ध दर्शन',पृ0 सं0 1

86 वही, पृ0 सं0 83–84

87 अंगुत्तर निकाय–31 । ।34

88 राहुल सांकृत्यायन,' दर्शन–दिग्दर्शन',किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 सं0 394

89 मंज्जिम निकाय–11 4 ।8 अनुवाद पृ0 सं0 188

90 राहुल सांकृत्यायन,' दर्शन–दिग्दर्शन',किताब महल इलाहाबाद,पृ0 सं0 415

91 चूलसच्चक–सुप्त म0 नि0 1 ।4 । 5,अनुवाद पृ0 सं0 138 ।

92 'राहुल–स्मृति', पृ0 सं0 299

93 'अभिनव कदम',भाग–2,अंक 18–19,पृ0 सं0 107

94 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–2, पृ0 सं0 299

95 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0203–204

96 राहुल सांकृत्यायन,' मेरा जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0208

97 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन',राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं098

98 राहुल सांकृत्यायन, 'बौद्ध दर्शन', किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 सं054

99 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0303–304

100 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं099

101 मधुरेश,' राहुल सांकृत्यायन और मार्क्सवाद' पृ0 सं0 91–101

102 राहुल सांकृत्यायन,'बोल्गा से गंगा' किताब घर,इलाहाबाद,पूर्वोक्त ,पृ0 सं0 281–282

103 राहुल सांकृत्यायन 'राम राज्य और मार्क्सवाद',पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, 1965,पृ0,सं098–99

104 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 106

105 'अभिनव कदम',भाग–2,प्रकाशक,साहित्य सांस्कृतिक संस्था मंथन,मउ उ0 प्र0,पृ0 सं0,201

106 राहुल सांकृत्यायन,'साम्यवाद ही क्यो', किताब घर इलाहाबाद,पृ0 सं0,67

107 राहुल सांकृत्यायन,'चीन में क्या देखा' दिल्ली, 1960 की भूमिका

108 राहुल सांकृत्यायन,''तुम्हारी क्षय' किताब घर इलाहाबाद,1959, पृ0338

109 राहुल सांकृत्यायन,'जीने के लिए'किताब घर इलाहावाद1959 ,पृ0601

110 टी,ए,जैक्सन, 'द लाजिक आफ मार्क्सिजम',पृ022

111 राहुल सांकृत्यायन,'वैज्ञानिक भौतिकवाद',लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,पृ0133

112 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन',राजकमल प्रकाशन,नई दिलली, पृ0104

113 विष्णुचंद्र शर्मा','समय साम्यवादी',भाग–2,संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0228

114 राहुल सांकृत्यायन,'साम्यवाद ही क्यों'किताबघर,इलाहाबाद,पुर्वोक्त,पृ0105–106

तृतीय अध्याय

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के राजनीतिक विचारों का विकास

अ) राहुल सांकृत्यायन की वैज्ञानिक दृष्टि एवं मार्क्सवाद

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा किसान आन्दोलन का नेतृत्व एवं विचार

स) राष्ट्रीय आन्दोलन में राहुल सांकृत्यायन की सहभागिता एवं विचार

अ) राहुल सांकृत्यायन की वैज्ञानिक दृष्टि एवं मार्क्सवाद–

राहुलजी का सृजन एवं चिंतन बहुआयामी है। इनके सृजन एवं चिन्तन का सूक्ष्मावलोकन करने पर पाया गया कि उन्होंने अपने सृजन की प्रत्येक विधा में वैज्ञानिक दृष्टि एवं प्रविधि पर विशेष बल दिया है। सबसे पहले यह स्पष्ट करना जरुरी है कि विज्ञान क्या है? विज्ञान दो शब्दों का योग है–वि + ज्ञान। वि का अर्थ विशेष और ज्ञान का अर्थ जानना अर्थात् विशेष प्रकार की जानकारी देना, जो प्रमाणिक ओर सत्य हो। राहुलजी ने 'विज्ञान' का अर्थ भारतीय दर्शन में प्राप्त ' विज्ञान ' शब्द के अर्थ में नहीं माना है। वे विज्ञान शब्द को आधुनिक साइंस के रुप में मानते हैं तभी तो दर्शन के क्षेत्र में भी राहुलजी प्रयोगाश्रित चिन्तन को ही अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि विज्ञान में प्रयोग, साक्ष्य तथा प्रेक्षण के आधार पर यथार्थ के भिन्न रूपों तथा सृजन की भिन्न विधाओं का अर्थ देते हैं। 1 राहुलजी नवजागरण काल की उपज हैं। राहुलजी ने राजनीति के धरातल पर जब कदम रखे उस समय अनेक प्रभावों के अलावा साइंस दृष्टि का प्रभाव भी उनकी सोच ओर चिंतन पर पड़ा। यह वह समय था जब विज्ञान या साईंस के अविष्कारों तथा विचारों का सिलसिला जारी था। इस समय के रोमांटिक आंदोलन में ,चाहे वह इंगलैण्ड का हो या छायावाद का दोनों में विज्ञान बोध का आयाम किसी न किसी रूप में प्राप्त होता हैं। राहुलजी'साइंस' को 'प्रयोग'से जोड़ते हुए, प्रयोग, निरीक्षण तथा साक्ष्य पर आधारित किसी 'वस्तु' की वस्तुवादी व्याख्या को महत्व देते हैं। इसी के साथ कार्य–कारण के सिद्धान्त को भी माने हैं। राहुलजी लिखते हैं– ''कार्य–कारण का नियम एक यांत्रिक नियम है जो ब्रह्माण्ड की यांत्रिक व्याख्या करता है। साइंस इस

कार्य–कारण नियम का पता लगाकर प्राकृतिक घटनाओं को आकस्मिकता से हटाकर नियम नियंत्रित साबित करता है और उन पर विश्वास कर साइंस की देन रेल, तार, हवाईजहाज को मनुष्य के उपयोग और उपभोग के लिए बनाता, चलाता है।'' 2 राहुलजी का विज्ञान के प्रति लगाव विद्यार्थी जीवन काल से ही देखने को मिलता है। वे गणित विषय के अच्छे विद्यार्थी थे। गणित में जहाँ दूसरे लड़कों की रूह काँपती थी, राहुलजी के लिए गणित वाएँ हाथ का खेल था। 3 गुणाकर मुले ने इस विषय पर अपना विचार देते हुए लिखा है कि–''यदि राहुलजी घुमक्कड़ी के चक्कर में नहीं फँसते, उनकी स्कूल कालेज की नियमित पढ़ाई जारी रहती तो वे गणित को ही अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाते। ऐसा नहीं हो सका इसका राहुलजी को संभवतः कुछ अफसोस भी रहा है।'4 राहुलजी को जीवन पर्यन्त गणित एवं गणितज्ञों के प्रति रूचि बनी रही। क्योकि गणित विज्ञान का मूल आधार है और राहुलजी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपने मूल आधार में परिपक्व था।'' 5 राजनीति के क्षेत्र में राहुलजी एक स्वतंत्रता सेनानी के साथ ही साथ एक साइंस अध्येयता के रूप में भी दिखाई देते हैं। उस समय राहुलजी के भीतर वैचारिक छटपटाहट जोरो पर थी। उनके भीतर वैज्ञानिक अतर्दृष्टि सम्पन्न अध्ययन के साथ मानवता एवं यथार्थवादी चिंतन प्रवाहित था। हजारीबाग जेल में राहुलजी ने विज्ञान के प्रति अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है–''मैंने जेल में बीजगणित ,सरल त्रिकोणमिति, क्वार्डिनेट ज्यमिति आदि का अध्ययन किया। पढ़ने के लिए कुछ पुस्तकें मगँवाई। उन पुस्तकों में एक पुस्तक 'स्फेरिकल ट्रिग्नोमेट्री' वाई टॉडहटर एम एफ आर एस की थी, जिसके प्रथम पृष्ट पर जेल अधिकारी ने अंग्रेजी में पास्ड लिखकर अपना हस्ताक्षर किया है।''''''''''''''हजारीबाग जेल के पहले की जिन्दगी के किन्हीं दो वर्षो में दत्तचित हो

पढ़ने लिखने में इतना व्यस्त नहीं रहा 'लिखने पढ़ने के अतिरिक्त कुछ फ्रेंच और अवेस्ता का भी मैंने अभ्यास किया। जिससे वैज्ञानिक दृष्टि और विस्तृत हुई। 6 राहुलजी ने जेल से बाहर निकलने के बाद सांइस की अनेक शाखाओं–भौतिकी, पुरातत्व, रसायन और ज्योतिष आदि का अध्ययन किये। यही नहीं राहुलजी ने भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा को पहचानकर उन्हें उच्च शिक्षा हेतु प्रोत्साहित किया। उनमें एक है गणितज्ञ पं. अवध उपाध्यायजी। जिन्हें विलायत जाने के लिए छात्रवृति भी मिली थी। मगर पं. अवध उपाध्याय ब्राह्मणों के छूआछूत और जात–पात की सारी बीमारियों से ग्रसित थे, इसलिए 'म्लेच्छों के देश'जाने के लिए राजी नहीं थे। जब राहुलजी को पता चला तो सीधे अवधजी के पास चिट्ठी लिखी–'''प्रतिभा को इस तरह से बरवाद करने से मर जाना अच्छा है 'चिट्ठी का असर हुआ वे विदेश जाने के लिए तैयार हुए। राहुलजी ने अवधजी की फ्रांस की यात्रा के लिए पैसे जुटाए। वहाँ से वे 'डाक्टर' की उपाधि लेकर लौटे।''7 यह प्रसंग राहुलजी के गणित एवं साइंस प्रेम को प्रदर्शित करता है

ज्योतिष विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है । राहुलजी ने पदार्थ की संरचना, परमाणु विखण्डन, सौरमण्डल की उत्पति, क्वांटम भौतिकी, सापेक्षवाद, विकासवाद तथा ताप गतिकीय सिद्धान्त आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढ़ंग से किया है। राहुलजी ने आधुनिक ज्योतिष सीखने के लिए गणित का अध्ययन किया। केवल अध्ययन ही नहीं, हिन्दी में लिखना भी शुरु किया। राहुलजी लिखते है–'''हजारीबाग जेल में आने पर मैंने सबसे पहले एक अंग्रेजी पुस्तक के आधार पर ज्योतिष पर बच्चों के लिए कहानी के रूप में एक छोटी–सी पुस्तक लिखी, जिसे, लक्ष्मी नारायण मिश्र अपने साथ लेते

गए, किन्तु वह पुस्तक मुझे फिर नहीं मिली। 'बाईसवी सदी' के बाद मैंने अपने समय को ज्योतिष के बड़े ग्रंथ और खगोल चित्र बनाने में लगाया। मैंने संस्कृत ज्योतिष के कई ग्रंथ मँगाये, और अंग्रेजी के भी। पारिभाषित शब्द कुछ पुराने लिये, कुछ नये बनाये और ग्रंथ लिखना शुरु किया। इसमें ग्रहगणित, नक्षत्र, नीहारिका, धूमकेतु आदि पर काफी लिखा, साथ में तीन बड़े-बड़े खगोल चित्र दिये। दो खगोल चित्रों में उत्तरी तथा दक्षिण गोलार्द्ध के नक्षत्र मण्डल के तारों के साथ दिखाया गया था और तीसरे खगोल चित्र के पटना के आक्षांश पर दिखाई देने वाले तारे थे। ऊपर के नक्षत्र मण्डलों में चालीस के आस पास के नाम संस्कृत से लिए गये थे। बहुत से नक्षत्र जो भारत के दक्षिणांत से भी नहीं दिखाई देते थे, उनका नाम वहाँ न मिलने से मैंने उनके नाम स्वयं निर्मित किए। अंग्रेजी में छोटे बड़े आकार वाले तारों के गिनने के अंक के अतिरिक्त यूनानी तथा दूसरे अक्षर काम में लिए जाते थे, पर मैंने उनकी जगह ब्राह्मी आदि अक्षरों का प्रयोग किया।"8 श्री गुणाकर मुले ने अपने निबन्ध-'विज्ञान के अध्येता राहुल' में उन गणित सम्बन्धी ज्योतिष ग्रन्थों की सूची दी है जिनका अध्ययन राहुलजी जेल में किया। जो इस प्रकार है-'ब्रम्हाण्ड का ब्रम्हस्फुट सिद्धान्त ,'भास्कराचार्य कृत 'सिद्धान्त शिरोमणि' तथा 'लीलावती, 'भास्कर कृत 'बीजगणित, 'बाराहमिहिर कृत 'वृहत्संहिता' तथा आर्यभट्ठ द्वितीय कृत 'महासिद्धान्त' आदि, इन ग्रंथों के अध्ययन के दौरान राहुलजी ने 281 संस्कृत पारिभाषित शब्दों की सूची बनाई थी जिनके आगे उन्होने समानार्थक अंग्रेजी शब्दों की सूची भी दी थी। 9 राहुलजी ने हजारीबाग जेल में 'विश्व की रुपरेखा' नामक पुस्तक लिखी, , जो उनके वैज्ञानिक अध्ययन को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक को उन्होंने सरल भाषा में लिखा है क्योकि उनका लक्ष्य ऐसी भाषा में लिखना था जो जनता को समझ

में आ सके। परिशिष्ट में पारिभाषित शब्दों की सूची भी है। जिसके निर्माण में राहुलजी की वैज्ञानिक दृष्टि देखने को मिलती है। राहुलजी लिखते हैं–'साइंस के पारिभाषिक शब्दों के चुनाव में मैंने कुछ स्वतंत्रता से काम लिया है, किन्तु जिन प्रतिशब्दों को मैंने यहाँ अंतिम बार चुना है, उन्हें कई बार प्रयोग की कसौटी पर उतारना पड़ा है, इसलिए अपने पर्यायवाची पश्चिमी शब्द के बहुत नजदीक भी है। इस पुस्तक में मैंने भारतीय वैज्ञानिकों तथा पाश्चात्य वैज्ञानिकों की वस्तुवादी तुलना कर दोनों के मध्य 'संवाद' की दशा को उजागर किया । हेराकुत्सु के साथ आर्यभट्ठ ,कोपरनिकस के साथ भास्कराचार्य और श्रीपति और सापेक्षवाद के साथ धर्मकीर्ति आदि के तुलनात्मक अध्ययन के साथ भारतीय गणित, ज्योतिष तथा अंकगणित आदि से विशद् चर्चा करते हैं। यह पुस्तक राहुलजी के विज्ञान के प्रति उनकी रागात्मक और बौद्धिक दृष्टि को स्पष्ट करती है।" 10 राहुलजी भौतिक जगत एवं मानव समाज के अध्ययन में भी विज्ञान सम्मत दृष्टि को अपनाते हैं। इस संदर्भ में स्वयं राहुलजी ने लिखा है–"मैं साइंस सम्मत भौतिकवाद या मार्क्सवाद पर हिन्दी में एक पुस्तक लिखना चाहता था।::::::हजारीबाग में 9 महीने और देवली कैप में 7 महीने–16 महीने के अध्ययन के बाद 30 जुलाई को मैंने पुस्तक लिखनी आरंभ की। पहिले मैं यही ख्याल करके लिख रहा था कि एक ही पुस्तक होगी। नाम भी वैज्ञानिक भौतिकवाद रखा था। लेकिन आगे बढ़ने पर मालूम हुआ, कि दो हजार पृष्टें की एक पुस्तक लिखना अच्छा नहीं। विषय अलग अलग होने से उन्हें अलग अलग पुस्तक का नाम दिया जा सकता है। इस तरह मैं दर्शन–दिग्दर्शन, मानव समाज ,वैज्ञानिक भौतिकवाद और विश्व की रुपरेखा लिखी।" 11 गुणाकर मुले ने ठीक लिखा है–" इन पुस्तकों कों व्यापक रूप से विज्ञान के ही ग्रंथ मानना चाहिए, क्योकि विज्ञान के

गंभीर अध्ययन के बिना न तो स्वयं राहुलजी इनका प्रणयन कर सकते थे, और न विज्ञान से अनभिज्ञ कोई पाठक इन्हें भलीभँति समझ ही सकता है।"12 इस तरह इन पुस्तकों में राहुलजी अपने विचारों को वैज्ञानिक आधार देकर स्पष्ट किया है।

राहुलजी ने सौरमण्डल की उत्पति और मानव विकास की भिन्न अवस्थाओं के क्रमिक इतिहास को वैज्ञानिक दृष्टि रखते हुए विकासवादी सिद्धान्त से स्पष्ट किया है। 'विश्व की रुपरेखा' में विश्व की उत्पति ,उसमें नक्षत्र, ग्रह की व्याख्या, पृथ्वी और पृथ्वी पर जीवोत्पति के विकास को 'बिग–बैंग' सिद्धान्त द्वारा स्पष्ट किया है। राहुलजी ने इस संदर्भ में लिखा है कि–"अरबों वर्ष पूर्व अपने ग्रहों उपग्रहों सहित सूर्य का एक ही गोलाकार हाइड्रोजन का तप्त पिंड था तथा सूर्य पिण्ड बहुत दूर तक फैला हुआ थां किसी समय दिक् के किसी दूरवाले मार्ग से एक विशाल तारा सूर्य की ओर अग्रसर होने लगा। जैसे–जैसे वह सूर्य के अधिक निकट आता गया ,वैसे–वैसे सूर्य के वाष्प समुद्र में ज्वार भाटे उठने लगे। यह ज्वार भाटा क्रमशः सूर्य की करोड़ो मील लम्बी पूँछ जैसा बन गया। जब वह तारा सूर्य से दूर जाने लगा,तब जिस प्रकार ज्वार के वेग से कितना ही फेन समुद्र से बाहर फेंक दिया जाता है, वैसे ही वाष्पमय सूर्य का यह अंश, अपने प्रधान सूर्य पिण्ड से अलग हो गया या फेका हुआ भाग कई खण्डों में सूर्य के चारों ओर घूमने लगा। यही सौरमंडल के ग्रह हुए। दो अरब वर्ष पूर्व उक्त प्रकार से पृथ्वी सूर्य पिण्ड से अलग हुई। वैसे ही किसी आकाशीय तारे के कारण धरती का एक भाग अलग होकर चन्द्रमा के रुप में परिणत हो गया।"''''' ''''पृथ्वी के शांत होने पर उसके चारों ओर मेधमण्डल मँडराने लगे। कभी कभी वर्षा भी होती थी, पर पृथ्वी की तप्त पपड़ी पर वर्षा की बूँदें विलीन हो

जाती है। बीच बीच में पृथ्वी थर्रा उठती थी और ऊपर की पपड़ी फूट फूट कर खण्डे तैयार करती थी। जब पृथ्वी का तापमान कुछ कम हुआ, तब वर्षा का जल उन गड्ढ़ों में ठहरने लगा। ये पपड़ी वाले पत्थर आज की स्तररहित चट्टाने हुई। जब पृथ्वी और शीतल हुई तथा समुद्र और ठण्डा हुआ, तब क्रमशः तापमान के उचित रूप में जीवों का उद्भव हुआ । जीवों के विकास की चार अवस्था सैंपियन्स, होमोइडरेक्टस तथा क्रोमैगनन आदि बानर जातियों और इन्हीं के समानांतर मानवनामधारी ।'' 13 मनुष्य की उत्पति तथा विकास का यह जो चित्र राहुलजी ने प्रस्तुत किया है वह पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर किया है। मानव विकास की अवस्था–मातृसता, पितृसता तथा जनयुग का क्रमित इतिहास 'द्वन्द्वात्मक' है और मूलतः भौतिकवादी है। इस क्रमित विकास को स्पष्ट करने में राहुलजी की दृष्टि 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' की रही है जो उनके ग्रंथ 'मानव समाज' में देखा जा सकता है। 14 इस तरह राहुलजी ने जीव की उत्पति को आधुनिक विज्ञान में चार्ल्स डार्विन का स्थान बहुत उच्चा माना है ,क्योकि डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त ने जैव और अजैव के आपसी रिश्ते को स्थापित किया और प्राणी विकास के क्रमिक स्वरूप को प्रकट किया। यह एक अद्वितीय खोज थी जिसके आलोक में समस्त विज्ञानों को एक नवीन दिशा मिली।15 राहुलजी ने पदार्थ की सरंचना, परमाणु विखण्डन, सौरमण्डल की उत्पति, क्वांटम भौतिकी, सापेक्षवाद, विकासवाद तथा ताप गतिकीय सिद्धान्त आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढ़ंग से किया है। उनका कथन है कि– ''बीसवी सदी में सापेक्षता सिद्धान्त, क्वांटम सिद्धान्त, विकासवाद तथा परमाणु की संरचना आदि साइंस के क्रांतिकारी सिद्धांतों ने ईश्वर धर्म, परमात्म तत्व तथा वस्तु अपने भीतर सभी को खतरा उत्पन्न कर दिया है।'16 एक अन्य स्थान पर राहुलजी

ने न्यूटन तथा हर्सल के विचार को रेखांकित किया है। उन्होंने लिखा है–'न्यूटन के सत्रहवी सदी के आविष्कार गुरुत्वाकर्षण और विश्व की यान्त्रिक व्याख्या ने आगे की दार्शनिक विचारधारा पर प्रभाव डाला है। अठारहवीं सदी में हर्सल ने न्यूटन के यान्त्रिक सिद्धान्त के अनुसार शनि की कक्षा से परे वरूण ग्रह तथा शनि के दो उपग्रहों की खोज की। इसके अतिरिक्त हर्सल ने एक दूसरे के गिर्द घूमने वाले 800 युग्म तारे खोज निकाले जिससे यह सिद्ध हो गया कि न्यूटन का यान्त्रिक सिद्धान्त सौर मण्डल के आगे भी लागू है।'17 आज भी इन सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिकों ने अपने अपने देश में पदार्थ की संरचना, परमाणु की व्याख्या करते हैं।

राहुलजी ने साइंस तथा दर्शन के सम्बन्ध को भौतिक तत्व के आधार पर स्वीकार किया है। उन्होंने अपने सूक्ष्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए विज्ञान तथा दर्शन के सम्बन्ध को काफी बोधगम्य ढंग से प्रस्तुत किया है। 'दर्शन–दिग्दर्शन' में वे लिखते हैं कि–" विज्ञानवाद या आत्मवाद से नीचे उतरकर वास्तविक जगत् में आते है तो क्या देखते है–––'भौतिक जगत्, प्राकृतिक जगत् 'मन' की उपज नहीं है, बल्कि 'मन' आत्मा भौतिक जगत् की उपज हैं। सृष्टि का सारा सिलसिला यह बतलाता है कि आरम्भ में परमाणु भौतिक तत्व था, जीव–अजीव के बीच वाइरस या वैक्टिरिया या फिर अनेक कोषीय जीव आए तथा इनसे आगे अस्थिहीन, अस्थिधारी तथा स्तनधारी जीवों का क्रमिक विकास हुआ। यह सारा विकास यह नहीं बतलाता कि आरम्भ में मन था उसने सोचा कि जगत् हो जाए और जगत् अस्तित्व में आ गया। सारा साइंस तथा भूगर्भशास्त्र एवं विकास सिद्धान्त हमें यहीं बतलाते हैं कि भौतिक तत्व प्राणी से पहले मौजूद थे, प्राणी बाद की परिस्थिति की उपज है। अतः

मन भौतिक तत्व की उपज है। इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि मन भौतिक तत्व मात्र है। भौतिक तत्व सदा बदल रहे है, जिससे परिस्थिति में गड़वड़ी, विरोध शुरू होता है, जिससे द्वन्द्वात्मक परिवर्तन गुणात्मक परिवर्तन होता है। गुणात्मक परिवर्तन हो जाने के बाद हम उसे वही चीज नहीं कह सकते ,क्योकि गुणात्मक परिवर्तन एक बिलकुल नई वस्तु हमारे सामने उपस्थित करता है। मन इसी तरह का भौतिक तत्वों से गुणात्मक परिवर्तन है। वह भौतिक तत्वों से पैदा हुआ है किन्तु भौतिक तत्व नहीं है।"18 राहुलजी ने अपने जीवन में अनेकों दर्शनों को अपनाया पर उन्हें वैज्ञानिक स्वरूप मार्क्स के दर्शन में दिखाई दिया। उंन्होंने मार्क्स के सिद्धान्त को वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा पाए है। मार्क्स के सिद्धान्त में तीन मुख्य बातें हैं–इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या, वर्ग–संधर्ष का सिद्धान्त और अतिरिक्त मूल्य का विचार। इन विचारों से राहुलजी काफी प्रभावित हुए क्योकि मार्क्स का समाजवाद विज्ञान की भॉति सिद्धान्त और प्रयोग के सम्मिश्रण पर आश्रित है इसीलिए इसे वैज्ञानिक समाजवाद भी कहा जाता है।' 20 मार्क्स के वैज्ञानिक भौतिकवाद अपने को साइंस के ऊपर नहीं समझता और न साइंसों से अलग है। वह सभी साइंसों–ज्योतिष, भौतिकशास्त्र, रसायन, प्राणिशास्त्र'''''के गवेषणीय विषय द्वन्द्वात्मक भूत को आँखों से ओझल न होने देने की कोशिश करता है। इसकी वर्तमान अवस्था में कितनी जरूरत है यह आप आसानी से समझ सकते हैं, जब कि जीन्स और एडिग्टन जैसे साइंसदानों को धर्म–दर्शन–राज तथा वर्तमान समाज व्यवस्था की चापलूसी करते हुए अपने पद के ठीकरों के मूल्य बेचते देखते हैं। वैज्ञानिक भौतिकवाद की आज आवश्यकता है, विचार क्षेत्र में इन प्रक्रियावादी विचारों से लोहा लेने के लिए वस्तुतः, वैज्ञानिक–भौतिकवाद विज्ञानों का अधिनायकत्व है, जो कि

कमकर अधिनायकत्व की भाँति नीचे से भिन्न भिन्न साइंसों से –शक्ति प्राप्त करता है और जैसे कि एंगेल्स ने अभी कहा, जैसे ही साइंस को आत्म चेतना आ जायेगी और नामधारी साइंसदानों की धाँधली तथा अनधिकार–चेष्टा खतम हो जायेगी ,वैसे ही यह अधिनायकत्व और विचार क्षेत्र की सरकार भी सूख मूर्झा–मुर्दा हो जायेगी, तथा जो काम वैज्ञानिक भौतिकवाद के रूप में असहज संगठित हुआ है, उसे खुद साइंस अपने आप करने लगेंगे, इस प्रकार राज्यहीन वर्गहीन चेतनावान कम्युनिष्ट समाजी जनता की भाँति अपने भीतर वह किसी आँलिवर, लाँज, जीन्स और एडिग्टन जैसे पुराना पोषक को नहीं पैदा होने देंगे।''21 आगे भी राहुलजी ने कहा है––'जिस तरह डार्विन ने प्राणि जगत के विकास के सिद्धानत का अविष्कार किया, उसी तरह मार्क्स ने मानव इतिहास के विकास के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया 22 अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के चलते राहुलजी को प्रमाणिकता, यथार्थवाद एवं सत्य के प्रति अटूट आस्था थी। उनके अनुसार एक प्रयोगशाला में एक वैज्ञानिक जो कोई नई खोज करता है, इसी को जब दूसरे वैज्ञानिक अपनी अपनी प्रयोगशाला में भी पाते है, तभी तो उसे वैज्ञानिक सत्य कहा जाता है।22 राहुलजी वैज्ञानिक अध्ययन को दो धरातल पर कसते है, एक वह हिन्दी पाठकों की अभिरुचि, वर्गभेद, स्वभाव, दतचित्त स्कालर और हलके–फूलके मनोरंजन की पाठप्रक्रिया यानी पाठकों के सांस्कृतिक तल का ध्यान रखते हैं, दूसरे वह ज्ञान के हर क्षेत्र में– चाहे कोश–कला हो, पुरातत्व के ग्रंथों का संपादन हो, स्थापत्य कला में काल का निर्धारण हो, या भाषाओं की अलग सीमाएँ हो–प्रयोग की कसौटी पर उसे बार–बार कसते हैं। इस तरह राहुलजी ने अपने ज्ञान का उपयोग नदी पार करने या दुनियँा को बदलने के उदेश्य से किया है। तभी तो तिब्बत की विकट यात्रा में प्राचीन तालपत्रों की खोज जिसे इंगलैण्ड,

जर्मनी, सोवियत संघ के गंभीर पंडित उसको देखने के लिए आते हैं और साथ मिलकर उसका अनुवाद संपादन करना चाहते हैं और राहुलजी उनके साथ मिलकर दुनियाँ को कुछ देना चाहते है।

राहुलजी की भाषा के प्रति भी वैज्ञानिक सोच है। एक भाषा दूसरी भाषा से कैसी जुड़ी हुई है ? इसे राहुलजी वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करके साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाये है। जापानी, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी में और कन्नड़, तमिल, तेलगू, बंगला, नेपाली और ब्रज अवधी, बुंदेलखण्डी, भोजपुरी क्षेत्रों में धूमते समय राहुलजी ने वाचन और लिखित परंपरा के शब्दों की यात्रा का वैज्ञानिक अध्ययन किया। एक शब्द कैसे दूसरी भाषा से यात्रा करते है, कैसे उसका मूल रूप रूस और भारत, यूरोप या दक्षिण पूर्व एशिया में बदलता रहा है।23 राहुलजी इन सभी भाषाओं को एकरूपता देने के लिए 'विज्ञान का इतिहास' नामक पुस्तक लिखना चाहते थे, इसके लिए उन्हें बहुत से विद्वानों ने प्रोत्साहित भी किया पर विपरीत परिस्थितियों के कारण, वह ऐसा नहीं कर सके।

इस प्रकार हम देखते है कि राहुलजी ने विज्ञान शब्द को आधुनिक साइंस के रूप में माना है और प्रयोगाश्रित चिन्तन को ही अधिक महत्व दिया है। इसी के साथ कार्य–कारण के सिद्धानत को भी स्वीकार किया है। इस वैज्ञानिक अध्ययन से उद्‌भूत अन्तर्दृष्टि ने उनके लेखन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित किया है। बिना किसी विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त किए अध्येता राहुलजी में इतने अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकसित होना अपने आप में एक अनूठी बात है। लेखन के साथ सामाजिक जीवन में भी वैज्ञानिक आधार लेकर समाज के ढ़ाँचे को बदलने का प्रयास

किया है। पदार्थ की सरंचना, परमाणु विखण्डन, सौरमण्डल की उत्पति, क्वांटम भौतिकी, सापेक्षवाद, विकासवाद तथा ताप गतिकीय सिद्धान्त आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढ़ंग से किया है। प्राचीन काल से चली आ रही फलित ज्योतिस को नकार कर प्रयोगाश्रित ज्योतिष को माना है साथ ही साथ राहुलजी ने पदार्थ की सरंचना, परमाणु विखण्डन, सौरमण्डल की उत्पति, क्वांटम भौतिकी, सापेक्षवाद, विकासवाद तथा ताप गतिकीय सिद्धान्त आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढ़ंग से किया है। इस संदर्भ में गुणाकर मुले ने लिखा है--'मैं नहीं जानता कि किसी विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक विषयों का विधिवत अध्ययन न कर पाने से' वैज्ञानिक' न हो सकने का राहुलजी को तनिक भी अफसोस रहा या नहीं। संभवतः यह सवाल ही गलत है। राहुलजी तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले वैज्ञानिक भौतिकवाद में गहन आस्था रखने वाले, लेखक व अन्वेषण में वैज्ञानिक विधि को महत्व देने वाले और वैज्ञानिक उपलब्धियों का सत्त ज्ञानार्जन करते रहने वाले अध्येता को वैज्ञानिक नही तो और क्या कहा जाये? 24 इस तरह राहुलजी ने जीवन के हर क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया है और सफल भी रहे।

ब) राहुल सांकृत्यायन द्वारा किसान आन्दोलन का नेतृत्व एवं विचार–

किसान आन्दोलन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण आन्दोलन हैं। इसकी शुरूआत सर्वप्रथम आंध्र प्रदेश से हुई। आन्ध्र प्रदेश में जमींदारों के जुल्म के विरुद्ध भूमि व्यवस्था विरोधी आन्दोलन आरम्भ हुआ और दूसरी तरफ यू0 पी0 और बिहार में किसान सभा ने जमींदारों के शोषण तथा बकाश्त भूमि के विरुद्ध आन्दोलन किया।

राहुल सांकृत्यायन के अथक प्रयासों से बिहार में इस आन्दोलन को एक जुझारू राजनीतिक तेवर मिला। इससे पूर्व आन्दोलन का स्वरूप आमतौर पर 'सुधारों और माँगों' तक सीमित था, लेकिन बकाश्त आन्दोलन ने एक नई धारा को जन्म दिया। सहजानंद ने अपनी पुस्तक ' मेरा जीवन संघर्ष ' में लिखा है–' बेशक जैसे मुँगेर के लिए कार्यानंद और गया के लिए यदुनंदन है उसी तरह छपरा के लिए राहुलजी है।'25 राहुलजी द्वारा चलाये गये किसान सत्याग्रह का स्थान भारत के इतिहास में उसी तरह जीवंत है जिस तरह सोवियत संध में मजदुर आन्दोलन का है। राहुलजी ने अपने बहुमूल्य जीवन का एक बड़ा हिस्सा सामंत–जमींदारों तथा साहुकारों के जुल्म के विरुद्ध किसान जागरण में व्यतीत किया है।

1927 से लेकर 1938 तक राहुलजी बौद्ध धर्म एवं तिब्बती संस्कृति के गंभीर अध्ययन–अध्यापन में लगे हुए थे परन्तु भीतर ही भीतर राजनैतिक सम्पृक्त्ता के लिए छटपटा रहे थे। चौथी तिब्बत यात्रा से कलकता लौटते ही पहले दिन 5 अक्टूबर 1938 ई0 को संवाददाताओं के सामने धोषणा करते हुए कहा कि ''मैं अब क्रियात्मक राजनीति में भाग लेने जा रहा हूँ। मैं पहले भी राजनीति में अपने हृदय की पीड़ा दूर करने आया था, गरीबी और अपमान को मैं भारी अभिशाप समझता था। असहयोग के समय भी मैं जिस स्वराज की कल्पना करता था, वह काले सेठ और बाबुओं का राज नहीं था, वह राज था किसानों और मजदूरों का, क्योंकि तभी गरीबी और अपमान से जनता मुक्त हो सकती थी। अब तो देश–विदेश देखने के बाद और भी पीड़ा का अनुभव करता था। मैंने भारत जैसी गरीबी कहीं नहीं देखी।''26 राहुलजी मार्क्सवाद से जुड़ने के बाद समझने लगे कि क्रांति करने वाले हाथ

हैं–यही मजदूर किसान, क्योकि उन्हीं को सारी यातनाएँ सहनी पड़ती है और उन्हीं के पास लड़ाई में हारने के लिए सम्पति नहीं है। लेकिन यह सब रहते हुए जब तक वह अपना मजबूत संगठन तैयार नहीं करते, तब तक क्रान्ति करने की शक्ति उनमें नहीं आ सकती। उनका संगठन भी तभी मजबूत हो सकता है, जबकि अपने रोज ब रोज के कष्टों को हटाने के लिए वह संघर्ष करें। उनके इस संघर्ष के संचालन के लिए कोई सेना संचालन मंडली होनी चाहिए। और मंड़ली ऐसी होनी चाहिए ,जिसके सदस्य दूरदर्शी हों, अन्तिम त्याग के लिए तैयार हो और जिनको कोई प्रलोभन अपनी ओर खींच न सके। 27 राहुलजी कलकत्ता में वामपंथी नेता सोमनाथ लहिड़ी से मिले और बिहार के किसानो की वास्तविक स्थिति से अवगत हुए। सोमनाथ लहिड़ी ने बताया कि अभी भी बिहार में कम्यूनिस्ट पार्टी नहीं हैं ,कम्यूनिस्ट वहाँ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के साथ मिलकर काम करती है। राहुलजी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से संतुष्ट नहीं थे, क्योकि मसानी उस पार्टी के सदस्य थे, जिसने सोवियत संध पर छीटाकशी की थी। इस संदर्भ में राहुलजी लिखते है––'जिस वक्त मैं शिगर्चे में था ,उस वक्त मुझे 'जनता' का कोई अंक मिला था, जिसमें मसानी का एक लेख था। लेख में सोवियत को बहुत बुरा भला कहा गया था। सोवियत मेरे लिए साम्यवाद का साकार रूप था, सोवियत की बुराई करके जो अपने को साम्यवादी या समाजवादी कहे, उसे मैं वंचक या बेवकूफ छोड़कर और कुछ नहीं समझ सकता था।'28 किसान आन्दोलन में कूदने से पहले राहुलजी कुछ दिनों तक किसानों के बीच रह कर उनके जीवन की वास्तविक स्थिति तथा उनके प्रति सरकार के रवैये से परिचित हुए। वे बिहार के अनेक गाँवों, महाराजगंज, अतरसन, एकमा, बरेजा, माँझी आदि में घूमकर किसानों के वास्तविक जीवन तथा राजनीतिक परिस्थितियों से वाकिफ हुए। राहुलजी

देखा कि–'सरकार भी महाजन एवं जमींदारों के न केवल साथ थी अपितु उन्हें कानूनी संरक्षण भी देती थी। गरीब किसान कर्ज के जाल में फँस कर कुर्की जब्ती और जमीन की बेदखली की पीड़ा झेलने के लिए मजबूर था। किसानों के कष्टों की कोई सीमा नहीं थी ,वह सरकार का राजस्व, जमींदारों को लगान एवं महाजनों को न केवल कर्ज बल्कि व्याज भी देता था। भूमि सम्बन्धी दस्तावेजों और हिसाब किताब की देखभाल के लिए यदपि पटवारी होते थे, तथापि वे जमींदारों एवं अंग्रेजी सरकार द्वारा नियुक्त होने के कारण उनका ही पक्ष लेते थे।' 29 वहाँ किसानों की तरह मजदूरों की स्थिति भी काफी दयनीय थी। राहुलजी डालमियानगर के मजदूरों की वास्तविक स्थिति के वयान करते हुए लिखते है–'सड़क के पास मेहतरों की झोपड़ियाँ थी झोपड़ियाँ भी कहना मुश्किल था, क्योकि चार हाथ लम्बी ओर तीन हाथ चौड़ी इन टटियों पर टींन, छप्पर या टाट की छोट्टी–छोट्टी छतें थी, बरसात का पानी शायद ही वह रोक सकती। फर्श भी बहुत नीचा था। मैंने एक स्त्री से पूछा –बरसात मे कहाँ रहती हो ? स्त्री ने कुछ अभिमान के साथ कहा––"खटियाँ पर बाबू" शायद उसकी पड़ोसिनों के पास खटियाँ भी न हो, इसलिए उसे खटियाँ का अभिमान था। बरसात में सचमुच ही वहाँ पानी भर जाता था, इसलिए खटियाँ बिना बैठने का ठाँव कहाँ था? यह धर्ममूर्ति देशभक्त सेठ के नगर के भंगी थे। जिन गरीबों की कमाई से करोड़ों का लाभ हो, उनकी यह हालत !"30 राहुलजी ने कई रूपों में बिहार के किसानों में उत्थान लाने की कोशिश की। 1939 में किसान सभा की लोकप्रियता में निर्णायक वृद्धि हुई। उस साल बिहार में प्रान्तीय किसान सम्मेलन 'ओईनी' में हुआ। कार्यानन्दजी उस सभा के सभापति थे। राहुलजी ने भी उस सभा में भाग लिया और अपना व्याख्यान छपरा की भाषा में दिया। 31 किसानों को शिक्षित करने और उनकी

चेतना का स्तर उन्नत करने के लिए उन्होंने सहज भाषा में कई पुस्तकें लिखीं। 'पंचायती खेती का एक प्रयास', 'कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं?', 'जीने के लिए' और 'भागों नहीं दुनियाँ को बदलों' जैसी गम्भीर चिन्तनशील पुस्तकें इसी क्रम में लिखी गईं। किसान कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और तरुण युवाओं को इन पुस्तकों से उचित मार्गदर्शन मिला।'32 राहुलजी विहार में कांग्रेसी नेताओं के कार्य एवं व्यवहार से खुश नहीं थे। वह लिखते है–'किसानों की 'जय' का नारा जिन लोगों ने लगाकर किसानों से वोट लिये, वही कांग्रेसी मंत्रिमंडल में पहुँचकर अब कोई बात करने से जमींदारों की तकलीफों पर लेंक्चर देने लगते हैं। मुझे यह सब सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। यह सब कांग्रेस सरकार के राज्य में उस जनता पर हो रहा था, जिसने कांग्रेस को इतना बड़ा किया! क्या वह कांग्रेस मंत्रीमंड़ल से यही आशा रखती थी?सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अभी हमारा देश अंग्रेज का गुलाम था। क्या कांग्रेसवाले नहीं जानते थे कि जिस गरीब जनता के ऊपर इतना बड़ा अत्याचार किया जा रहा है, उसी के बल पर उसे विदेशियों से लड़ना है। मुझे कांग्रेसी नेताओं से कभी ऐसी आशा नहीं थी।'33 राहुलजी ने किसानों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए समस्त छपरा जिले का दौरा किया और किसानों पर हो रहे जुल्मों को देखा। उन्होंने पाया कि जयजोरी, अमवारी, सीवान, सुल्तानगंज, मीरगंज प्रत्येक स्थान पर किसान जमींदारों के जुल्मों के शिकार हो रहे हैं। अमवारी के किसानों ने बतलाया–हमारे खेत छीन लिए गए हैं। राहुलजी ने सच्चाई जानने के लिए इधर–उधर दौड़ धूप की, कांग्रेस नेताओं के पास भी गए, पता चला कि लड़ाई का मुख्य कारण 'हरी बेगारी' है। हरी बेगारी क्या है? जब राहुलजी ने जाना तो उन्हें काफी दुःख हुआ और अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखते हैं–'सवाल यह है–खेत निकाल लेने पर एक

शिकमीदार पच्चासों परिवार कैसे जिएगें? अमवारी में पैदा हुए इन आदमियों को क्या जीनें का हक नहीं? जो इतने दिनों से उन खेतों पर गुजारा करते आ रहे थे? क्या उन्हें अब भूखों धुल चाट कर मर जाना चाहिए?।'34 सतयुग से चली आ रही इस 'हरी–बेगारी' प्रथा को मूल से उखाड़ फेकने के लिए राहुलजी ने गाँव गाँव में जाकर अपना भाषण दिया तथा इसकी शिकायत छपरा के जिलाधिकारी से की। कलेक्टर ने कहा कि 'हम तो कानून के बन्दे है, यदि किसानों के लिए कुछ करना है, तो कांग्रेस सरकार को करना चाहिए, तो भी मैं अमवारी के बारे में जानने की कोशिश करुँगा।'35 कार्यानन्द शर्मा ने राहुलजी को 'बड़हियाटाल' के किसानों की चरम दुर्दशा के बारे में बताया। राहुलजी वहाँ की स्थिति से अवगत होने हेतु 20 जनवरी को बड़हिया टाल पहुँचे। वहाँ के किसान को जमींदार के जुल्मों अत्याचार के विरुद्ध लड़ते हुए देखा और उन्होंने नोट किया –'भूखे थे तो भी अब उनके अंदर से डर निकल गया था। उनके उत्साह को देखकर मेरी तबीयत बहुत खुश हुई। मैंने कहा–क्रांति तुम्हारा स्वागत है। वहाँ की औरतें भी निडर होकर इस क्रांति में हाथ से हाथ मिलाकर साथ दे रही थी। वे मगही में गा रही थी–चलु चलु माता! जेहल के जबैयारे।'36 राहुलजी ने आसपास के गाँवों रयोड़ा, मीरगंज, हिलसा, कुआड़ी, सेमराबाजर, रामपुर का भी दौरा किया। इन तमाम स्थानों में सारी की सारी जनता राहुल का समर्थन कर रही थी। शोषित पीड़ित जनता के प्रति राहुल की असीम प्रतिबद्धता ने उन्हें जनता की आँखों की तारा बना दिया था। कार्यानन्द शर्मा एवं सहजानन्द सरस्वती को भी कदाचित् ऐसी लोकप्रियता न प्राप्त हुई होगी।'37 राहुलजी के इन सक्रिय प्रयासों के कारण किसानों में एक नवीन उत्साह एवं चेतना का संचार हुआ।

क) अमवारी सत्याग्रह और राहुलजी–

अमवारी सत्याग्रह राहुलजी का महत्वपूर्ण सत्याग्रह है, जिसके कारण वे किसान आन्दोलन के अग्रिम अभिनेता के रूप में जाने जाते हैं। 25 जनवरी से लेकर 23 फरवरी 1939ई0 तक छपरा प्रांत के अधिकांश गाँवों का दौरा किए और किसानों के हक के लिए नया दीप जलाए। अमवारी में किसानों का समर्थन एवं जमींदारों के जमींदारी को उखाड़ फेकने के लिए पीतवस्त्रधारी बौद्ध भिक्षुक राहुलजी अपने साथियों के साथ अमवारी पहुँचे। वहाँ पहुँचने के पहले ही राहुलजी को पता चल गया था कि जमींदार ने अपने दोनों हाथियों को उन्हें कुचलने के लिए तैयार कर रखा है साथ ही लठैत भी एकत्रित कर रखे है। मगर मृत्यु से भय खाना तो राहुलजी मरने से भी बदतर समझते थे। 38 राहुलजी के सभापतित्व में सैंकड़ों किसान अमवारी में जमा हो गए। राहुलजी ने तय किया कि दस–दस आदमियों के साथ एक एक नायक की कुल पाँच टोलियाँ बारी–बारी से सत्याग्रह के लिए जाय। सत्याग्रह था–एक किसान के खेत में ऊख काटना। जमींदार इस खेत को अपना कहता था। राहुलजी ने सत्याग्रह के पहली टोली का नेतृत्व स्वयं किया। खेत में पहुँचकर दो ऊख काटी, थानेदार ने मुझे गिरफतार कर लिया। मैंने सिर पीछे की ओर किया, देखा, जमींदार का हाथीवान कुरबान हाथी से उतरा। मैंने दूसरी ओर मुँह घुमाया, उसी वक्त खोपड़ी के बाई ओर जोर से लाठी लगी। मुझे कोई दर्द नहीं मालूम हुआ, हाँ, देखा कि सिर से खून बह रहा है। मुझे इस बात की खुँशी हुई कि किसानों के उस खेत को काटने में मेरे हाथ के हँसुए ने ही काम नहीं दिया, बल्कि सिर से निकले दो तोले खून में से कुछ बूँदें भी वहाँ जरुर पड़ी।'39 राहुलजी को पुलिस ने

पकड़ ली। राहुलजी रास्ते भर नारे लगाते रहे– 'इन्कलाब जिन्दाबाद, किसान राज कायम हो, मजदूर राज कायम हो, जमींदारी प्रथा का नाश हो, कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो। सीवान के नागरिकों के लिए यह बिल्कुल नयी चीज थी। यहीं नहीं कि वह राहुल बाबा को सिर फूटे डोरी में बँधे सड़क पर से जाते देख रहे थे, बल्कि वह यह भी ख्याल करते थे कि यह सब गाँधीबाबा के राज में हो रहा है।------शायद हफता भी न लगा होगा कि अमवारी के सत्याग्रह में मेरे सिर फूटने की खबर हरेक गाँव में पहुँच गई।'40 राहुलजी पर हमला भी कराया गया और गिरफतार भी उन्हीं को किया गया। हमलावर कुरवान को छोड़ दिया गया। राहुल के सिर पर लाठी पड़ने, बाँधकर सड़क पर से ले जाने की घटना ने चारों तरफ आग फैला दी। किसान एवं मजदूर वर्ग से लेकर शिक्षित समुदाय ने भी राहुल पर हुए अत्याचार का प्रचण्ड विरोध किया। राहुल पर हुए अत्याचार का विरोध करते हुए राजेन्द्र कालेज छपरा के प्रिंसिपल मनोरंजन ने साप्ताहिक 'जनता' में एक कविता लिखी–'राहुल का खून पुकार रहा'।41 यह कविता राहुलजी की क्रान्तिकारी जनान्दोलनमुखी चेतना की प्रतीक बनी हुई है। इस संदर्भ में कमला सांकृत्यायन की उक्ति है–"भारतीय किसान आन्दोलन के इतिहास में 24 फरवरी सन्1939 ई0 की घटना अमिट रुप से अंकित हुई है और यह ऐतिहासिक पंक्तियॉ–'राहुल के सिर से खून गिरे'इसका प्रमाण ईं।"42 राहुलजी का यह आन्दोलन जेल में भी सक्रिय रहा, जेल में किसानों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा था। राहुलजी ने इसका विरोध किया तथा किसान आन्दोलनकारियों को राजनीतिक कैदी का दर्जा दिलाने की माँग हेतु आन्दोलन प्रारम्भ किया। परन्तु कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने इस माँग को नहीं माना। इस रवैये पर राहुलजी ने लिखा है कि--"दुनियाँ आश्चर्य करेगी कि यह

किसान चोर डाकू नहीं थे, उन्होंने उसी तरह अपने हक के लिए लडाई की थी और जेल गए थे, जैसे कि कांग्रेस सत्याग्रही अंग्रेजी सरकार से लड़ने के लिए जेल जाते थे। उस वक्त जिन्होंने राजनीतिक बन्दियों के लिए विशेष सुविधा पर जोर दिया था, अब वही किसान सत्याग्रहियों को राजनीतिक बन्दी नहीं चोर डाकू मानने के लिए तैयार थे। इसमें आश्चर्य करने की जरुरत नहीं, मंत्री स्वयं जमींदार थे, किसान आन्दोलन से सवयं परेशान थे, वह भला अपने वर्ग शत्रुओं के साथ कैसे न्याय कर सकते थे?'43 इस आन्दोलन के दौरान राहुलजी ने तीन बार भूख हड़ताल की। अन्ततः प्रशासन की दृष्टि में कुछ नरमी आयी और उसने गिरफतार किसानों को कुछ मामूली सुविधायँ मुहैया करा दी।44 पन्द्रह अप्रैल 1939 ई0 को जेल के अन्दर ही राहुलजी पर मुकदमा चला।45 पुलिस के इंसपेक्टर–जनरल अलखकुमार सिन्हा के जिम्मे जाँच करने का आदेश दिया गया। पुलिस आफिसर अलखकुमार के चरित्र पर राहुलजी लिखते है–'अलखबाबू में विशेष योग्यता थी, इसे इन्कार करने की जरूजत नही, किन्तु साधारण तौर की योग्यता उनको इतने ऊँच्चे पद पर नहीं पहुँचा सकती थी। उनमें सबसे बडी योग्यता यह थी कि उन्होंने अपने शरीर और आत्मा को अंग्रेजों के हाथ में बेच डाला था फिर ऐसा आदमी जाँच करने आए,तो उससे क्या आशा हो सकती है?46 अंततः "दफा 143 और दफा 379 में छैः–छैं मास की कड़ी सजा हुई और बीस रुपया जुर्माना, न देने पर तीन मास की और सजा। मुझे तीसरी बार जेल की सजा हुई थी और सो भी चोरी के अपराध में! और सख्त सजा ! खूब!!"47 यह आन्दोलन कई दृष्टियों से बिहार के किसान आन्दोलन में अपना एक विशिष्ट महत्त्व रखता है। आन्दोलन जमीन जोतने वालों को जमीन पर मालिकाना हक दिलाने को लेकर शुरू हुआ और उसने धीरे–धीरे जुझारू स्वारूप ग्रहण कर लिया। इसके विरोध

में ब्रिटिश सरकार हुकूमत, जमींदार और कांग्रेस तीनों एक साथ खड़े हो गए। इस घटना पर स्वामी सहजानंद सरस्वती ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा है–"अमवारी की बात तो राहुल सांकृत्यायन के उपवास को लेकर काफी प्रसिद्ध हुई। वे दो बार जेल गए और प्रतिज्ञा के अनुसार उपवास किया। पहली बार तो सरकार किसान बंदियों को 'राज बन्दी' मानने को प्रायः तैयार हो गई थी। केवल 'राजवन्दी' की परिभाषा में उसे दिक्कत थी।वह भी करीब–करीब हल हो चुकी थी। राजबन्दियों के लिए न सिर्फ हमारे आठ–दस कर्मियों ने प्राणों की बाजी लगा दी,बल्कि हमारे प्रांत भर में घोर आन्दोलन किया। विरोध दिवस मनाया। अखिल भारतीय किसान सभा ने भी हमारा साथ दिया। मगर सरकार टस से मस नहीं हुई।48 राहुलजी ने सरकार के इस तरह के व्यवहार से अपने कदम पीछे नहीं खींचे बल्कि इस किसान आन्दोलन को और गति दी।

ख) छितौली सत्याग्रह और राहुलजी–

6 जून 1939 को राहुलजी छितौली पहुँचे और किसानों के हक की लडाई कें लिए फिर से मैदान में कूद पड़े। राहुलजी कहते हैं––'प्रदर्शन से छुट्टी मिली तो दूसरे दिन छितौली के किसान दौड़े दौड़े आए। मालूम हुआ कि जमींदार खेत जोतने नहीं दे रहा है।:''''''''''''''''''उसी दिन इब्राहीम, रामभजन, अखिलानंद के साथ छितौली रवाना हो गया। दूसरे दिन 9 बजे सत्याग्रही झोपड़ी में पहुँच गये। यहाँ के किसान बहुत गरीब थे, तो भी वह खाने के लिए तरद्दुद करने लगे। मैंने कहा–हम कोई ऐसी चीज नहीं खायेंगे, जिसे तुम रोज नहीं खाते। जाओ, जिसके घर में जो बना हुआ हो, उसी को थोड़ा–थोड़ा जमा करके लाओ''''''मैंने उसे रूचि से खाया। किन्तु

इसका यह मतलब नहीं था कि वह मनुष्य के 30 दिन खाने की चीजें थी। वह ऐसा भोजन था, जिसे भारत का ही गरीब खाकर धैर्य रख सकता है।49 तीन बजे के बाद उसी दिन राहुलजी अपने साथियों के साथ सभा स्थल पर पहुँचे। अशर्फी साहु के लठियाल जगह छेंककर खड़े थे और बहुत से लोग भाला तलवार लेकर खड़े हैं। ऐसा दृश्य देखकर राहुलजी ने अपनी ललकार भर–' हिजडो! क्यों खड़े हो, यदि कुछ भी तुममें ताकत हैं, तो अपनी तलवार और भाले को मेरे उपर चलाओ! मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।' सब वहाँ से चले गए।:::::::::::::::जमींदार को फिर हिम्मत नहीं हुई, कि किसानों से छेड़छाड़ शुरू करें। 50 जान की बाजी लगाते हुए राहुलजी ने किसान एवं दलित वर्ग के अधिकारों की रक्षा की। इस सत्याग्रह के फलस्वरूप राहुलजी पर मुकदमा चला। दफा 117 के तहत वे गिरफतार कर लिए गए और उनका सजा हो गई। इस बार किसान सत्याग्रह के लिए 17 दिन तक भूख हड़ताल की। उन्हीं के शब्दों में–"380 घंटे के उपवास के बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट के बँगले पर उस दिन अनार के रस से उपवास तोड़ा। दोपहर के बाद हजारीबाग के अस्पताल में पहुँच आए और मैं चार दिन वही रहा। इस भूख हडताल का असर यह हुआ कि बिहार के हर जिले में किसानों ने अपने खेतों को हाथ से न जाने देने का निश्चय कर लिया है, सिर्फ गया जिले में 50 से अधिक ग्रामों में सत्याग्रह छिड़ा हुआ है।"51 पटना में प्रांतीय किसान कौंसिल की बैठक हुई, उस उमय दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ा हुआ था। गोरी सरकार चुनचुन कर कम्युनिस्टों को गिरफतार कर रही थी, राहुलजी भी गिरफतार हुए फिर उन्हें हजारीबाग जेल में भेज दिया गया। अमवारी और जमजोरी के किसान इस बाढ़ में नहीं बहे। लोगों ने बहुतेरे कहा, लेकिन उन्होंने जबाब दिया–"राहुल बाबा का हुकुम ले आएँ, स्वामीजी का पत्र ले आएँ ,तब हम इस

लड़ाई में भाग लेगे। आस पास के साथियों से उन्हें मालूम हो गया था कि इस वक्त हमें ऐसा संघर्ष नहीं छेड़ना है, जिसमें किसानों—मजदूरों के जबर्दस्त दुश्मन जापान को किसी तरह की मदद मिले।''52 उस समय राहुलजी के पीछे साए की तरह खुफिया पुलिस लगी रहती थी। अपने साथियों के सुझाव पर करीब दो महीने तक राहुलजी अन्तर्ध्यान रहे। इस समय वे अपने पूर्वजों के गाँव मलाँव में जाकर कुछ दिन ठहरे और वहाँ के ग्रामिण जनजीवन से जुडकर लोक संस्कृति से संबंधित तमाम सारे तथ्यों को इकट्ठा किया।

ग) किसान सम्मेलन और राहुलजी—

राहुलजी अपने सिर पर संकट के बादल के बावयुद किसानों के समस्याओं और उसके समाधान के लिए पूँजीवादी—सामंतवादी वर्ग से लोहा लेते रहें। किसान एवं मजदूरों की प्रत्येक समस्या का समाधान उन्हें साम्यवादी प्रणाली में ही दिखाई देता था। वे लिखते हैं—'किसानों ने अपना भविष्य चुन लिया है। हजारों वर्ष से वे भाग्य और भगवान का ख्याल करके भूखें मरते आये। अब धनिकों और सत्ताधारियों, पूँजीपतियों और साम्राज्यवादियों के अन्यायपूर्ण कानून, यह नारकीय जीवन बिताने के लिए उन्हें मजबूर नहीं कर सकते। अपमान और लांछनाएँ, जेल और हथकड़ियाँ किसान कार्यकर्ताओं की हिम्मत को तोड़ नहीं सकती।'53, राहुलजी 1940ई में वसंतपुर के छोटे से गाँव बाला पहुँचे, वहाँ उन्होंने देखा कि 'तीन—तीन आदमियों के मरने पर भी न वे भयभीत थे, न उनका उत्साह कम हुआ था। वह समझने लगे कि रक्तबीज की तरह हमारा कोई उच्छेद नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी सांधिक शक्ति की थोड़ी—थोड़ी झलक देखी थी और उससे आत्मविश्वास बढ़ा था।'54, राहुलजी

1940 में प्रान्तीय किसान सभा के सभापति चुने गए। मोतिहारी में आयोजित किसान सम्मेलन राहुलजी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस सभा में स्वामी सहजानंद सरस्वती, आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण जैसे साम्यवादी आन्दोलन के पुरोधाओं ने भाषण दिया। राहुलजी ने 27फरवरी को अमरपुर के किसान सम्मेलन को सम्बोधित किया। 15 हजार जनता थी। जनता में जोश था और उससे भी अधिक प्रसन्नता मुझे इस बात से हुई, कि तरुण कार्यकर्ता बहुत काफी है।55 उसी साल राहुलजी आन्ध्रप्रदेश के पलाशा में होने वाले अखिल भारतीय किसान सभा के सभापति चुने गए। इधर पुलिस कार्यकर्ताओं को गिरफतार का रही थी। हर्षदेव गिरफतार हो चुके थे। राहुल अपने बारे में कहते हैं–:::::इस बात की सूचना थी कि मुझे भी अब तैयार रहना चाहिएं।............15 तारीख को अपने प्रयाग के दोस्तों से मिलने गया। डाक्टर बदरीप्रसाद ने पूछा–"फिर कब तक मुलाकात होगी?"मैंने कहा–"लड़ाई बाद".......... अँधेरा हो चला था। उसी वक्त पाँच–सात सादे कपड़ेवालों के साथ थानेदार साहब पहुँच गये ओर मुझे गिरफतारी की सूचना दे मकान की तलासी लेने लगे।..........मैं भारत रक्षा कानून, दफा 26 उपनियम 1 के 6वें वाक्य के अनुसार गिरफतार किया गया था। 9बजे बाद मुझे मलाका जेल में पहुँचा दिया गया।56 राहुलजी जेल में रहते हुए भी गंभीर अध्ययन लेखन में व्यस्त रहे। 23जुलाई 1942 में, दो साल का कारावास काटकर फिर से बाहर की दुनियाँ में पैर रखा। इस तरह राहुलजी का विशाल जीवन सागर की तरह है जिसमें अनुभूति, ज्ञान और तजुर्बे की परिधि निःसीम है, अगाध है।

निष्कषर्तः राहुल एक व्यक्ति का नाम नहीं, विचारधारा का नाम है। उनके जीवन के बहुमूल्य भाग वैचारिक आन्दोलनों में बीता ,भले वह आन्दोलन किसान आन्दोलन हो या भाषा आन्दोलन या देश की आजादी हेतु असहयोग आन्दोलन। हर आन्दोलन से राहुलजी किसी न किसी रूप में जुड़े रहे क्योकि वे सदैव प्रगतिशील विचारों के आग्रही रहे और जहाँ–कही भी बिचारों में संकीर्णता देखी, छद्म देखी वहीं राहुलजी ने उसे केंचुल की तरह उतार फेका। किसान आन्दोलन में राहुलजी के वैचारिक बदलाव की रुपरेखा दिखाई देती है। अमवारी किसान आन्दोलन के समय राहुलजी ने शांति और बिना शोरगुल के आन्दोलन किया। इस आन्दोलन के दौरान सिर फूटने तथा बिना अपराध के पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने के बाद भी राहुलजी चुपचाप रहे पर वहीं राहुलजी का उग्र वैचारिक रुप छितौनी गाँव में दिखाई देता है। राहुलजी का यह ललकार "हिजड़ो ! क्यों खड़े हो , यदि कुछ भी तुममें ताकत हैं ,तो अपनी तलवार और भाले को मेरे उपर चलाओ ! मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।" राहुलजी ने न केवल शोषित जनता का पक्ष लिया वरन् अपने प्राणों की बाजी लगाकर शोषकों का विरोध किया। इस तरह राहुलजी इस आन्दोलन के द्वारा दबे–कुचले किसानों ,मजदूरों और महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखलाया ।

स) राष्ट्रीय आन्दोलन में राहुलजी की सहभागिता एवं विचार–

राहुलजी के जीवन कर्म और विचार यात्रा के एक पक्ष हैं राजनीति। राहुलजी बचपन से ही विदेशी गुलामी, अत्याचार के विरूद्ध प्रतिरोध का रूप देखते और सुनते आए। राहुल को राजनीति की ओर झुकाव ऐसे ही नहीं हुआ बल्कि उन्होंने अपनी आँखों एवं पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से अपने देश की वर्तमान स्थिति की तस्वीर देखी।

जहाँ अंग्रेजी हुकूमत भारतवासियों पर अनेकों जुल्म ढ़ा रहे थे। वही 1918 ई0 में गाँधीजी द्वारा चलाया जा रहा चम्पारण आन्दोलन का प्रभाव लगभग सभी भारतवासियों पर पड़ा, जिसके परिणाम स्वरूप सभी के सभी भारतवासी आजादी की सपना देखने लगे थे। राहुलजी ने इस तजुर्बे से सीखा की देश में होमरूल आन्दोलन शुरू तो हुआ है पर अभी साधारण जनता तक आन्दोलन नहीं पहुँचा हैं। नरमदली, गरमदली कांग्रेस के दो दल जरूर बन गए हैं पर नरमदली कांग्रेस और होमरूल अभी तक उच्च मध्यश्रेणी तक सीमित है।57 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजी सरकार ने भारत में स्वतंत्र शासन की घोषण कर दी थी जिसके परिणाम स्वरूप पत्र–पत्रिकाओं की संख्या बढ़ी। पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने, देश–विदेश की राजनीतिक खबरों को ध्यान से देखने तथा राजनीतिक क्रांति की चाह ने राहुलजी को इस जंग में कूदने से रोक नहीं सका। महायुद्ध के अंत ने देशवासियों के मनोभाव पर कैसा परिवर्तन लाया? यह केदार थर्मामिटर के टूटने और पारे के उड़ान से अनुभव किया। 58 युद्ध के समय राहुलजी लाहौर में थे और समाचार पत्रों के माध्यम से भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर पैनी दृष्टि रखे हुए थे। अंग्रेजी सरकार ने अपने विरूद्ध किसी तरह के हलचल को दबा देने के लिए भारत रक्षा कानून का बन्दोबस्त कर लिया था। यह कानून युद्ध के बाद भी नहीं हटा। राहुलजी ने उस समय यह अनुभव किया कि जनता जैसे निर्भीक हो रही है उसी तरह राजनीतिक हलचलों को दबाने वाला भारतरक्षा कानून भी चुस्त है पर इसके बावजूद भी क्रातिकारियों की जनता में काम करने की प्रकिया बंद नहीं हुई है। महायुद्ध के शुरूआती दौर में संगठन सिर्फ बंगाल तक सीमित था, अब वे युक्तप्रांत और पंजाब तक पहुँच गए थे। अंग्रेजी सरकार क्रांतिकारियों की इस करवाई से डरी हुई थी। क्रांतिकारियों की आवाज को

दबाने और हर उग्र राजनीतिक संगठन को कुचलने हेतु अंग्रेजी सरकार ने 1919ई0 में रोलेट कानून बनाया।59 इस एक्ट के विरोध में राहुलजी हिन्दू मुस्लिम को एक साथ नारा लगाते हुए देखा और लिखे है–"रोलेट एक्ट के विरूद्ध आन्दोलन करने का बीड़ा गाँधीजी ने उठाया। वह मथुरा जिला के पलवल स्टेशन पर गिरफतार कर लिए गये और फिर सारे देश में आग–सी लग गई। 6अप्रैल1919 को इतवार के दिन भारत के अनेकों नगरों की तरह लाहौर में भी विराट जुलूस और विशाल सभायें हुई। उस दिन सदियों के बँधन को तोड़ कर हिन्दू मुस्लिम एक साथ एक गिलास में पानी पीते देखे गए,"60 यह स्मरणीय दृश्य राहुलजी के लिए राष्ट्रीयता का प्रथम पाठशाला थी। इस राष्ट्रीयता की बाढ़ में हिन्दू मुसलमानों की छुआछूत का पिछड़ापन और नफरत बह गए थे। हिन्दू मुस्लिम संगठन राहुलजी के दिलों दिमाग पर ऐसा भारी पड़ा कि वे भी इस जंग में कूद पड़े। उसी दिन राहुलजी को मार्शल लॉ का शासन देखने का मौका मिला और राजनीति से उनका सीधा सामना हुआ।61 उस समय फौजी आज्ञा चारों तरफ लागू थी। लोगों को कब चलना चाहिए, कब सोना चाहिए, दुकानदारों को चीजे किस भाव में बेचना चाहिए नही तो क्या दण्ड होगा?निःशस्त्र साधारण–सा आन्दोलन, जलियावाला बाग का नरसंहार, मार्शल–लॉ और रेलों तथा यातायात के साधनों की अवस्था देख राहुलजी को यूरोपीय जीवन का दिन याद आ रहा था। इन परिस्थियों में राहुलजी यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि उसमें उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए? परन्तु वे ऐसे जीवन को पसन्द करते थे, क्योंकि उसी में उन्हें परिवर्तन की आशा थी और ऐसे जीवन के लिए वे कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार थे।62 स्वतंत्रता की चाहत ने राहुलजी को लाहौर में रोक नहीं पायी अतः राहुलजी 7अप्रैल 1919ई0 को हरिद्वार, ज्वालापुर और गुरुकुल कागड़ी होते हुए

ढ़ाकियावरी पहुँचे। ढ़ाकियावरी में अपने मित्र अभिलाषचंद्र से मिले। अभिलाषचंद्र क्रांतिकारी संगठन के सक्रिय अभिनेता थे। उनसे मिलकर राहुलजी को बहुत खुँशी हुई। अभिलाषचंद्र का आजादी के प्रति जोश और परिवारिक उतरदायित्व देख राहुलजी उसे समझाते हुए कहा–'हवा कि हिलोर में उड़ती फिरती सूखी पत्ती पर विवाह ने थोड़ा भार रख दिया है, अब पत्तियों की भाँति तुम हल्के नहीं हो' 63 इस विचार का असर अभिलाषचंद्र पर पड़ा, उसने धीरे–धीरे युक्तप्रांत से मेकेनिकल इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की। इस तरह राहुलजी ने अपनी व्यवहार बुद्धि से अपने दोस्त को उचित मार्गदर्शन दिया। 12अप्रैल1919ई0 को अपने दोस्त अभिलाषचंद्र से विदा लेकर अमृतसर के लिए चल पड़े। अमृतसर में गोली चली है यह सुनकर राहुलजी का रोम–रोम खड़ा हो गया। यहाँ मरने वालों में उनके एक मित्र मुंशीराम शास्त्री भी थे जिसे राहुलजी अपने जीवन से कभी भी भूला नहीं पाये। उन्हें याद करते हुए राहुलजी लिखते हैं–''तरूण इसी साल शास्त्री की परीक्षा दी थी। मुंशीराम अनाथालय में पला था और एक नौजवान लड़का था।'हसरत उन गुचों पर है, जो बिन खिले मुर्झा गए' जीवन यात्रा में मुंशीराम जैसे बहादुरों ने मार्शल–लॉ के हाथों क्रोधांध ब्रिटिश शासकों के हाथों अपनी जान गँवाई।''64

राहुलजी में ब्रिटिश के साथ–साथ उन भारतवासियों के प्रति भी सख्त धृणा की भाव थी जो ब्रिटिश सरकार की फरमावरदारी के लिए नोटिस निकाल रहे थे, जो ओडायर शाही की खुशामद के लिए रास्ते में पड़ी अपने शहीदों की लाशों पर से पैर रखकर जाने में भी संकोच नहीं करते थे। पंजाब की बहादुर जनता ने इन्हें 'कुत्ते ' 'झोली चुक्क ' के खिताब दिए। जिसकी चोट से उन्हें बचाने में मार्शल लॉ भी असमर्थ रहा।

उस वक्त के इन झोली चुक्कों पर पीछे सरकार की पुरी कृपा होनी स्वभाविक थी और उसने उन्हें सर मिनिस्टर और क्या क्या नहीं बनाया। राहुलजी ने मन ही मन सोचा देश क्या उनके गुनाहों को भुला देगा?'65 ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व पर राहुलजी अति दुखी हुए और मन ही मन सोचा, आखिर किस स्थाई लाभ के लिए ये लोग इतने नीचे गिरते हैं? पेट तब भी उनका चल रहा था, कुछ पैसे ज्यादा मिल गए, किन्तु वह सदा के लिए नहीं मिलते रहेंगे। ऐसे लोगों को बाद में दाने–दाने के लिए तरसते हुए राहुलजी ने अपनी आँखों से देखा। राहुलजी ने अपने देश की ऐसी परिस्थिति को देखकर अपनी जीवन यात्रा को राजनीति के तरफ मोड़ दिया। उनके सामने एक ऐसी ललकार थी जिसमें मठों की संस्कृति प्रधान धार्मिक कार्यप्रणाली एवं आर्यसमाज की व्यवस्थाओं आदि की कोई उपयोगिता नहीं थी। उस समय उनके रोम–रोम में क्रांति की आग लग गई और स्वतंत्रता की लड़ाई कहाँ से शुरू करू, इस अन्तर्द्वन्द्व में उलझे राहुलजी की जीवन यात्रा आगे बढ़ी।

क) राजनीति में प्रवेश–

राहुलजी ने राजनीति में सन्1921 ई0 में प्रवेश किया। उस समय असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से कितने ही वकील, बैरिस्टर अपनी प्रैक्टिस बन्द कर इस आन्दोलन से जुड़ गये थे। राहुलजी उस समय दक्षिणभारत में कुर्ग नामक स्थान के यात्रा पर थे। यह क्षेत्र भी इस आन्दोलन से अछूता नहीं रहा। राहुलजी की राजनीतिक भावनाएँ भी बाहरी वायुमंड़ल की अनुकूलता पाकर उभरने लगी और वे इस आन्दोलन से जुड़ गये।66 राहुलजी अपने मित्रों की उस मूखर्ता से दुःखी हुए जो अपनी परीक्षा छोड़ आन्दोलन से जुड़ने जा रहे थे। राहुलजी ने अपने अन्तर्विचार को

पत्र द्वारा प्रेषित कर अपने मित्रों को समझाया कि आप लोगों की बी0ए0 की परीक्षा के दो–तीन महीने है, परीक्षा खत्म करके असहयोग कीजिए। किन्तु वहाँ कौन मानने वाला था? गाँधीजी ने जो साल भर में स्वराज देने का ठीका ले लिया था। स्कूल कालेज को शैतानी शिक्षणालय समझ उनसे असहयोग तथा साल भर में स्वराज इन दो बातों का शुरू से ही मैं विरोधी हूँ। यद्यपि दूसरे तौर से राजनीति जागृति और संघर्ष का जबर्दस्त पक्षपाती हूँ।67 उसी दौर राहुलजी के पिता की मृत्यु हो गई। मृत्यु सुन घर आने तथा राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने का निश्चय किया, किन्तु शुरूआत कहाँ से की जाए? इस प्रश्न को हल करने में कुछ समय अवश्य लगा। चूँकि उन्होंने आजमगढ़ न जाने की प्रतिज्ञा कर चुके थे अतः छपरा के पक्ष में फैसला लिए और एक पत्र छपरा जिला कांग्रेस के मंत्री के पास अपने आने तथा योग्य सेवा करने के बारे में भेज दिए।68 राहुलजी का युवा जननेता अपने आपसे यह सवाल पूछ रहा था, क्या मुझमें सैद्धांतिक सूझ हैं? राजनीतिक प्रतिभा है? क्या मैं दूरदर्शी हूँ?''''''''''''''''

ख) सत्याग्रही राहुलजी–

जलियावाला बाग और मार्शल लॉ के अत्याचारों को सुनकर सारे भारत में रोष का तूफान फूट निकला। गाँधीजी द्वारा चलाये गए दक्षिण अफ्रिका के आन्दोलन से उन्हें सिर्फ भारत की शिक्षित जनता ही जानती थी पर चम्पारण और खेड़ा के आन्दोलन ने उन्हें भारत की साधारण जनता में प्रसिद्धि और सर्वप्रियता प्रदान की। अमृतसर, नागपुर और कलकता में गाँधीजी का सितारा उच्च से उच्च तक उठता ही गया और

विदेशी सरकार के साथ संघर्ष लेने में उन्हीं को आगे बढ़े देख जनता ने असहयोग और सत्याग्रह का स्वागत किया।''69 राहुलजी को गाँधीजी का यह दावा कि'साल भर में स्वराज'मिल जाएगा, अतिरंजित लगा था। वह जुलाई 1921ई में छपरा आए थे, 31दिसम्बर,1921तक यहाँ काम करते हुए उसे जादू मंतर पर विश्वास करनेवाली अनपढ़ जनता को निकट से समझा। उस समय सत्याग्रही सत्याग्रह के लिए तैयार थे–रात को पहारा देना, हुक्का तंबाकू, मछली मांस छोड़ देना, पंचायत द्वारा फैसला करना, प्रतिदिन मुटठीभर अन्न मुठिया निकालना, इन कामों में शुरु में जोश था, अब वह जोश ठंडा पड़ रहा था। राहुलजी इस काम में ततपरता के साथ जुट गये।'70

सत्याग्रह के लिए राहुलजी को एकमा में अच्छे साथी मिले। राहुलजी लिखते है कि' ''मुझे जीवन के वे दिन बड़े मधुर मालूम होते है,जब कि प्रभुनाथ, गिरीश, लक्ष्मी, हरिहर, मधुसूदन, रामबहादुर, छबीला, वासुदेव जैसे एक दर्जन शिक्षित तरुण कष्टों और कठिनाईयों की बिलकुल परवाह न कर चौबीसों घंटे राष्ट्रीय काम के लिए दे रहे थे। हमने एकमा थाने के कोने कोने को छान डाला था। एकमा में एक गाँधी विद्यालय भी खोला गया। जहाँ पठन पाठन के साथ करघा और चरखा भी चलता था। बच्चों में इस तरह के जोश लाने में गाँधी विद्यालय जैसे विद्यालयों का हाथ कम न था।''71 एकमा की स्त्रियों में जागृति कैसी लाई जाए तथा उन्हें सत्याग्रह से कैसे जोड़ा जाए? इसके लिए राहुलजी ने मल्ली या भोजपुरी भाषा में भाषण दिया ''तुम्हें राज काज चलाना होगा, मर्दो के जूते खाना छोड़ अपने बराबर हक के लिए तुम्हें लड़ना होगा, तुमको जज और मजिस्ट्रेट बनना होगा।''72 इस तरह राहुलजी के व्याख्यान में चर्खा करघा प्रचार मादक द्रव्य निषेध का अंश बहुत कम रहता। उन्होंने

तो विदेशी शासन के शोषण अत्याचार, और देश के लिए संगठन और कुरबानी पर ज्यादा जोर दिया। राहुलजी की निःस्वार्थ सक्रियिता एवं कर्मठता व निष्ठा के कारण कांग्रेसी नेता उनसे दूर रहते थे, अब वही लोग राहुल को अपनी बिरादरी में श2मिल करना चाहते थे। राहुलजी भी जिले के अन्य नेताओं से जुड़ने के बाद सत्याग्रह की तैयारी में जी जान से लग गए। राहुलजी और उनके साथियोंके सहयोंग से स्वयंसेवक दल का विराट रूप उस समय दिखाई दिया जब एकमा के स्वयं सेवक सम्मेलन में बीस पच्चीस हाथियों, सैंकड़ों हजारो झड़ों पताक2ओं के साथ विराट जुलूस एक विशाल जनप्रवाह हजारों पैरों से चलता, हजारों कंठों से गगनभेदी नारे लगाते जनशक्ति का विराट बिंब दिखाई दिया। इस दल को अंग्रेजी सरकार ने क्रिमिनल ला सुधार कानून द्वारा गैरकानूनी करार दे दिया।''73 छपरा जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक 31 जनवरी 1922 को राहुलजी के सभापतित्व में हुई। राहुलजी को प्रथम बार गिरफतार किया गया और उन्हें छः मास बिहार के बक्सर स्थित केन्द्रीय कारागार में रखा गया। जेल की स्थिति एवं कैदियो के साथ दुर्व्यवहार तथा फाइल के लिपा पोती पर राहुलजी ने कविता बनाई, जिसका कुछ अंश इस प्रकार था–

''फाइल में बैठी रोटी फाइल भर मॉगतु है

फाइल भर भात लाग करत काज कूरो हैं।

कपड़ें की फाइल कुर्ते कम्बल को फाइल होत

आप फेरि जेलर फाइल देख लेत पूरो है।''74

राहुलजी ने वहाँ देखा कि जेल के कर्मचारी भी चोरों से बेहतर नहीं है। राहुलजी लिखते है–" तरकारी से अच्छी चीज सुपरिटेंडेंट के पास ,बाकी जेलर, असिस्टेंट जेलर, डाक्टर, जमादार ने मिलकर बॉट ली ,कैदियों को मिलता बालू मिला आटा, कंकड छिलका मिला दाल चावल, साग की जगह लकडी घास, बक्सर के बूढे डाक्टर के पाकेट में मुर्गी मिलती।"75 इस तरह के व्यवहार से जेल अधिकारियों से एकाध बार राहुलजी को खटपट भी हुई। 24 मई को बिहार के जेलों के इन्सपेक्टर जेनरल कर्नल बनातवाला जेल के मुआयना के लिए आये। जेल के अधिकारियों ने हमारे साथियों की गॉधी टोपी छीन ली। जिस वक्त बनातवाला आये, लोगों ने अँगोछे फाड़ फाड़कर बिना सिली गाँधी टोपियाँ बना उन्हें लगा ली और शायद उनके सामने हम लोग खड़े भी न हुए। बनातवाले ने एक लेक्चर दिया, इन्स्पेक्टर जेनरल हो जाने से, सरकार के इतने वर्षो के नमकख्वार होने से उन्हें अधिकार हो गया था कि हमें सच्ची राजनीति का रास्ता बतलावें। मुझे तो वह आदमी विलकुल ही रदी सा जँचा। भारतीय होते हुए, उसे अपनी बेबसी को देखते जबान को रोककर बोलने चाहिए था, किन्तु वह 'एकां लज्जां परित्यज्जय त्रैलोक्यविजयी भवेत' का नाटक कर रहा था।"76 इसी दौरान राहुलजी ने 1917 की रुसीक्रांति एवं साम्यवाद के विषय में 'प्रताप' आदि हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में जो कुछ पढ़ा था, उसी आधार पर एक समाज की कल्पना की और 'बाईसवीं सदी' नामक पुस्तक लिखी ' 76। इस आन्दोलन के प्रभाव से 'चौराचौरी' गोरखपुर में, उतेजित भीड़ ने थाने में आग लगा दी और 22 पुलिस कर्मियों को मार डाला। अत; गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लेने की घोषणा की। गाँधीजी द्वारा आन्दोलन वापस लिए जाने पर अपनी प्रतिकिया व्यक्त

करते हुए राहुलजी ने कहा कि 'इतने बड़े देश में कहीं भी कोई पक्षी या विपक्षी भी यदि हिंसा कर बैठे, तो सत्याग्रह बन्द कर दिया जायेगा, इस शर्त पर क्या कभी सत्याग्रह हो सकता है?77। गाँधीजी जेल जाने से पहले कह गए, चरखा करघा चलाओ, मादक द्रव्य का सेवन बन्द करो, पंचायतों से फैसला करवाओं, सरकारी शिक्षण संस्थओं का बायकाट करो। इस कार्य में धीरे धीरे शिथिलता आने लगी। राहुलजी इस कार्य को सुचारू रूप से जोर शोर से अन्त तक परिणत करने में लगे रहे। राहुलजी का कहना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता हमारा स्थाई ध्येय है, हम गाँधीजी के जेल चले जाने पर भी उसे छोड़ नहीं सकते अत;इस ध्येय की प्राप्ति के लिए भी संघर्ष करना अनिवार्य है। चूँकि संघर्ष जन जागृति तथा संगठन बिना नहीं हो सकता अत; राहुलजी ने इस ओर विशेष ध्यान दिया।78 राहुलजी कुछ लोगों के हाथ में राजनीतिक कमान हो इसके पक्षधर नहीं थे। राहुलजी को बक्सर जेल से ही यह मानसिकता बन चली थी कि राजनीति को थोड़े से पढ़े लिखे आदमियों के हाथ में देकर चुप बैठा नहीं जा सकता, ऐसा करने से जनता को बराबर नुकसान उठाना पड़ा है।79 उन्नतीस अक्टूबर 1922 को हुए चुनाव में राहुलजी को जिला कांग्रेस का मंत्री चुना गया पर राहुलजी एक कार्यकर्ता के रुप में ही अपनी सेवायें देने के पक्ष में थे। क्योकि इस समय जिला कांग्रेस कमेटी को मजबूत करने के लिए पूरे परिश्रम की आवश्यकता थीं इसलिए यह पद स्वीकार कर लिए। एकमा, सिसवन रघुनाथपुर में कार्यकर्ताओं की कमी नहीं थी पर वहाँ उचित परामर्शदाता मौजूद नहीं था । राहुलजी ने एक कुशल परामर्शदाता एवं संगठनकर्ता की भूमिका को बखूबी अंजाम दिया। इसका प्रतिफल यह रहा कि जिला कांग्रेस के पास पैसे आने लगे, गाँवों में सभायें होने लगी, सब नहीं किन्तु बहुत से इलाकों में फिर से जागृति हो गई, जिनमें

कुआड़ी के साथ साथ बरौली, एकमा, सिसवन, महाराजगंज प्रमुख थे। गाँधीजी के जेल जाने के बाद कांग्रेस दो दलों में बँट गयी, एक अपरिवर्तनवादी दूसरा परिवर्तनवादी। राहुलजी परिवर्तनवादी पक्ष का समर्थन किए।''80 पटना में भाषण देते हुए राहुलजी ने कहा–''देश की आजादी के लिए इस तरह के शहीदों का खून देश माता के लिए चन्दन होगा। ओजस्वी भाषण के कारण राहुलजी पर भारतीय दंड विधान की धारा 124 ए के अनुसार राजद्रोह का मुकदमा चला और उन्हें दो वर्ष के लिए हजारी बाग जेल भेज दिया गया।'81 इस दौरान राहुलजी पठन पाठन में इतने व्यस्त रहे कि सजा के दो वर्षो का पता ही नहीं चला और 18 अप्रैल 1925 ई को इन्हें रिहा कर दिया गया। राहुलजी ने जिस दिन से गुलामी की जंजीरों को तोड़ा, उसी दिन से उनके जीवन में ज्ञान की उन्मुक्त धारा प्रवाहित हो गई। उन्होंने किसी विचार को तभी स्वीकार किया, जब वह जीवन को दो पग आगे बढ़ाने में सहायक हुआ। सारे विश्व की मिट्टियॉ उनकी पहचान थी। समस्त भाषायें उनकी चेरी थी और मध्य एशिया के कण–कण पर उनके चरण चिन्ह अंकित हैं। उन्होंने जिस क्रांति के उद्देश्य से काम किया, वह युगों–युगों से चली आने वाली मनुष्य की दिमागी गुलामी थी। जिसे वे समाप्त कर मनुष्य को दिमागी आजादी देना चाहते थे। ज्ञान के वे सूर्य थे, जिनके निकट अन्धविश्वास और स्वार्थ के सारे अन्धकार जल कर खत्म हो गये थे। वे अपने आप में एक संस्था थे। जितना काम उन्होंने अकेले रह कर किया, उतना कार्य सैकड़ों व्यक्तियों के बस की बात न थी।82

ग) राजनीतिक शिथिलता–

हजारीबाग जेल से रिहा होने के बाद जब छपरा पहुँचे तो देखा कि चारों तरफ राजनीतिक शिथिलता है। गर्मी की परवाह न कर केदार जिले का दौरा शुरु किया। एकमा, सिसवन और मीरगंज में अनेकों सभायें की। उन्होंने देखा कि व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए, अपने सम्बन्धियों और पिट्ठुओं को आर्थिक सुभीता दिलाने के लिए सदस्यगण आपस में झगड़ते है। जिसके कारण उन्होंने डिस्ट्रिक्टबोर्ड, जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा दिए गए मान पत्र को लौटा दिया। इसके उत्तर में राहुलजी ने इन सदस्यों को काफी फटकार लगाई। हक साहब ने संयम बरतने की सलाह दी। राहुलजी को अपनी गलती का एहसास हुआ, इसका कारण उसने अपना साधारण अज्ञान एवं दो वर्ष का जेल का एकान्तवास वताए। 83 पन्द्रह अगस्त 1925 को राहुलजी एकमा से रेल द्वारा मीरगंज पहुँचे। उसने देखा कि महावीरी झण्डे के जुलूस के कारण हिन्दू मुस्लिम का दंगा भड़क उठा। मुसलमानों की माँग थी कि 'मस्जिद' के सामने बाजा नहीं बजना चाहिए, जबकि हिन्दू इसे अपने धर्म की तौहिनी समझते थे। इस झगड़े के समय राहुलजी अपने जान की परवाह न करते हुए मुसलमानों को बचाने के लिए यथा सम्भव प्रयास किए। राहुलजी वास्तव में हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे इसीलिए उन्होनें मीरगंज में जो कुछ भी देखा उसे देख राहुलजी को उन हिन्दू, मुसलमान अगुओं के प्रति घृणा उत्तपन्न हो गई जो कि निहित स्वार्थ वश हिन्दू मुस्लिम दंगे भड़काते हैं।84 वही राहुलजी को भोरे के दारोगा के अत्याचार का पता लगा। गाँव के किसी भी आदमी की हथेली पर खाट का पाव रख वह उस खाट पर बैठ जाता था, थाने में बुलाकर पीटता, झुटे गवाह तैयार करना उसकी आम बातें थी।

जिला कांग्रेस की ओर से केदार और बाबू रामानंद सिंह जाँच करने निकले, जांध भर पानी में चलकर लोगों से हस्ताक्षर या अंगूठे की निशान ली, पहले लोग शिकायत करते हुए डर रहे थे, फिर समझाने पर तैयार हुए, रिपोर्ट राहुलजी ने लिखी ,सभापति ने स्वयं जिला मजिस्ट्रेट को जाँच की रिपोर्ट दी ,मजिस्ट्रेट ने वचन भी दिया, किन्तु वह आजतक हो रही है। राहुलजी को एहसास हो गया कि 'ब्रिटिश सरकार का एक पैर पुलिस, जिसके अवलम्ब पर वह भारत में कायम है, कितना गंदा, कितना अपराध पूर्ण है और उसके दोषों को किस तरह सरकार और उच्च अधिकारी ढाँक देते हैं।'85 इसी बीच सन् 1925 में राहुलजी कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए कानपुर चले गए, एवं कुछ महिनों के लिए भ्रमण हेतु पंजाब, कश्मीर एवं लदाख, थोगला,ल्हासा की सैर पर निकल गए।

घ) कौसिल चुनाव–

राजनीतिक क्षेत्र से बहुत दिन अनुपस्थित रहते हुए राहुलजी 1926 में छपरा लौटे। उस समय कौसिल का चुनाव होने वाला था। उन्हें मालूम हुआ कि छपरा के कार्यकताओं में कौसिल के उम्मीदवारों को लेकर मतभेद हो गया है। मतभेद का मूल वजह था, प्रन्तीय कौंसिल के लिए उत्तरी सारन से बच्चा बाबू जिनहें पं गिरीश तिवारी का समर्थन प्राप्त था, तो दूसरे उम्मीदवार बाबू जलेश्वर प्रसाद थे। राहुलजी ने प्रान्तीय नेताओं पर जोर डालते हुए कहा कि उम्मीदवार चुनने में कार्यकर्ताओं की इच्छा का भी ख्याल करें इसके बाबजूद कांग्रेस ने जलेश्वर बाबू को ही अपना उम्मीदवार चुना। मुझे यह देखकर बड़ा अफसोस हुआ कि प्रांत के नेता स्थानीय कार्यकर्ताओं और स्थिति का बिलकुल न खयाल कर पूर्व निर्णय ही पर कायम रहे।

86 राहुलजी ने अपनी मन;स्थिति को व्यक्त करते हुए लिखा है–"मेरे लिए तो कांग्रेस ने जिसको खड़ा कर दिया, उसी का समर्थन करना आवश्यक था। उधर गिरीश बाबू, बच्चा बाबू को वचन दे चुके थे अत; वे तथा अनेक कार्यकर्ता उनके साथ प्रतिज्ञाबद्व थे''''''चुनाव में मैं कांग्रेस उम्मीदवार के लिए सभायें करता फिरता और उधर गिरीश कांग्रेस विरोधी उम्मीदवार के सदस्य बने। इसमें शक नहीं कि गिरीश जैसा साथी यदि न मिला होता, तो हजारों खर्च करके भी बच्चा बाबू हार जाते हम दोनों की विचित्र स्थिति थी। महा भारत के द्रोण और अर्जुन की कथा याद आती थी। दोनों दो ओर से लड़ रहे थे, लेकिन उनके निजी संबन्ध में कोई अन्तर नहीं आया। चुनाव के दौर में कभी कभी मिल जाते। गिरीश आकर चरण छूकर बाबा को प्रणाम करते इसी चुनाव में किसानों के प्राण स्वामी सहजानंद सरस्वती उस समय बच्चा बाबू के समर्थक होकर उनके चुनाव क्षेत्र में धूमते थे। प्रचार करने वाले मेरे धुआधार प्रचार से धबराते थे और कभी उट पटांग बातें भी करना चाहते थे।;;;;;;;;जब कभी कोई ऐसी बात बोलना चाहता था,तो स्वामीजी उसे डॉट देते थे चुप रहो,तुम्हें उनका पता है।' 87 चुनाव में बच्चा बाबू की जीत हुई और कांग्रेस की हार। कुछ दिनों बाद बच्चा बाबू एवं गिरीश बाबू कांग्रेस में आ गए और आजीवन कांग्रेस में ही रहे। कौसिल चुनाव के बाद अब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का चुनाव होने वाला था। मौलाना मजहरुल हक साहब तीन साल तक चेयरमेन रहें। वे निर्विरोध खड़ा होना चाहते थे। राहुलजी को उस समय काफी दु;ख हुआ जब हक साहब के स्थान पर कोई और खड़ा हो गया और हक साहब ने अपना नाम वापस ले लिया।88 राहुलजी का दृढ़ मत था कि अपनी राजनीतिक समस्याओं का हल धर्मो में खोजना बड़ी भारी गलती है। धार्मिक विचारों के लिए स्वतंत्रता भले ही रहे,लेकिन राजनीति में धर्म का दखल बहुत ही

हानिकारक बात है।'89 बोंड का चुनाव सम्पन्न हुआ कांग्रेस विरोधी उम्मीदवारों की विजय हुई और सबसे सोचनीय बात यह हुई कि बोर्ड़ की दलबन्दी भूमिहारों, राजपूत, कायस्थ आदि जातियों के नाम पर हो गई। यह राहुलजी को काफी अप्रिय लगा। उसी दिन राहुलजी प्रतिज्ञा की जब तक जमींदारी प्रथा रहेगी, मैं फिर परसा में पैर न रखूँगा।90 इससे दुखी होकर राहुलजी मन परिवर्तन के लिए श्रीलंका के विद्याविहार में संस्कृत के अध्यापक बन वहाँ चले गये।

ड़.) राजनीतिक ठहराव–

राहुलजी ने अध्ययन अध्यापन, अनुसंधान, यायवरी के साथ अपने जीवन में राजनीतिक कार्य को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया हैं। सन् 1921से लेकर 1927 तक राहुलजी के राजनीतिक कार्य का प्रथम दौर था। वे कांग्रेस के एक सक्रिय कार्यकर्ता थे। इसी दौरान उनकी मुलाकात डा0 काशीप्रसाद जायसवाल से हुई। जायसवालजी के विचार से राहुलजी काफी प्रभावित हुए और अपना ध्यान राजनीति से हटाकर बौद्व ग्रंथों की खोज में लगा दिया। जायसवालजी के विचार से प्रभावित होकर राहुलजी अपना समय बौद्वग्रन्थों की खोज, अध्ययन, अनुसधान और लंका, तिब्बत, नेपाल, समस्त यूरोप, जापान, कोरिया, ईरान भ्रमण में बिताया। लंका में 'यंग इडिया' की कापियाँ भारतीय लोग राहुलजी के पास बड़े ही चाव से पहुँचाते थे।91 उस समय राहुलजी के तनमन में भारत की स्वतंत्रता पूर्णरूप से रचबस गई थी तभी तो एक दिन वे भदन्त आनंदजी के कमरे में पहॅुच कर बोले–'भारत में यज्ञ हो रहा है। उसमें समिधाओं की कमी नहीं रहनी चाहिए'92 इस वाणी को सुनकर जायसवालजी ने लिखा है –उस समय मुझे तनिक भी अनुमान नहीं था कि इस आदमी का विकास

उस राहुल सांकृत्यायन के रुप में होगा जिसे आज मैं जानता हूँ। एक ऐसा मनुष्य, जो बुद्व से मिलता जुलता है, जो जीव मात्र के प्रति दुर्भावना से मुक्त है, जिसका दृष्टिकोण विश्वव्यापी है जो पूर्ण रुप से सुस्थिर और शांत है जिसके पास बच्चे आप से आप दौड़ पड़ते है जो अगर कहे कि मेरे पीछे आओ तो मनुष्य उसके पीछे उसी प्रकार चल पड़ेगे जैसे वह गौतम बुद्व या ईसामसीह के पीछे।'93 जायसवालजी के निधन के पश्चयात् राहुलजी अपने आपको वचन मुक्त समझा और 11वर्षके बाद पुन; सकिय राजनीति में प्रवेश की घोषणा की।'94

च) महिलाओं और किसान मजदुरों के साथी राहुलजी–

राहुलजी किसान मजदूर के साथ एवं महिलाओं के राजनीतिक पथ प्रदर्शक थे। 1938 ई0 में चौथी तिब्बत यात्रा से लौटने के बाद कलकता में पुन; सक्रिय राजनीति में भाग लेने की धोषणा की। इसी संदर्भ में वे लिखे है–'मैं पहले भी राजनीति में अपने हदय की पीड़ा दूर करने आया था –गरीबी और अपमान को मैनें भारी अभिशाप समझता था। असहयोग के समय भी मै जिस स्वराज की कल्पना करता था वह काले सेठों और बाबुओं का राज नहीं था, वह राज था किसानों और मजदूरों का क्योकि तभी गरीबी और अपमान से जनता मुक्त हो सकती थी। अब तो देश विदेश देखने के बाद और भी पीड़ा को अनुभव करता था। मैंने भारत जैसी गरीबी कही नहीं देखीं। मार्क्सवाद के अध्ययन ने मुझे बतला दिया कि क्रांति करनेवाले हाथ है यही मजदूर किसान क्योकि उन्ही को सारी यातनायें सहनी पड़ती है और उन्ही के पास लड़ाई में हारने के लिए सम्पति नहीं है।लेकिन यह सब रहते हुए जब तक वह अपना मजबूत संगठन तैयार नहीं करते,तब तक क्रांति करने की शक्ति उनमें नहीं आ

सकती;;;;;;उनके इस संघर्ष के संचालन के लिए कोई सेना संचालक मंडली होनी चाहिए और मंडली ऐसी होनी चाहिए, जिनके सदस्य दूरदर्शी हो, अन्तिम त्याग के लिए तैयार हो और जिनको कोई प्रलोभन अपनी ओर खींच न सके।'95 दो नवम्बर से लेकर पच्चीस नवम्बर तक महाराजगंज, अतरसन, एकमा, बरेजी, मॉंझी आदि गाँवों में धूमे तथा वहाँ की राजनीतिक अवस्थाओं के अध्ययन किए।96 उस समय सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शिथिलता आने लगी तो इस स्थिति से उबरने के लिए उन्होने अपनी राजनीतिक उर्जा को किसानों को संगठित करने में लगाना प्रारंभ किया।97 उन दिनों बिहार में कांग्रेस की सरकार थी मगर वह जमीनदारों का ही पक्ष लेती थी। जमींदार किसानों पर बराबर अत्याचार करते रहते थे। राहुलजी ने किसानों एवं मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों को देखते हुए जमींदारों के खिलाफ किसान सत्याग्रह आयोजित किए। जेल गए। भिक्षु के वस्त्र त्यागे। धर्म से नाता तोड़ लिया। जेल से छूटने पर मुंगेर में 19 अक्टूबर 1939 को बिहार की कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य बने। राहुलजी इस संदर्भ में लिखते है–"अनुशासन रहित भीड़ का सेनापति होने की जगह अनुशासनबद्व सेना का एक साधारण सैनिक होना ज्यादा अच्छा है क्योंकि वहा अधिक सफलता की संभावना है।"98 इस तरह राहुलजी ने किसान सभा, एवं कम्युनिस्ट पार्टी, के माध्यम से किसानों मजदूरों के संधर्षो में सक्रिय हिस्सा लिया। किसानो को शिक्षित करने और उनकी चेतना का स्तर उन्नत करने के लिए उन्होनें सहज भाषा में कई पुस्तकें लिखी–'पंचायती खेती का एक प्रयास' कम्युनिस्ट क्या चाहते है?'जीने के लिए' और 'भागो नहीं दुनियॉ को बदलो' जैसी गम्भीर चिन्तनशील पुस्तकें इसी क्रम में लिखी गई। किसान कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और तरुण युवा वर्ग को इन पुस्तकों से उचित मार्ग दर्शन मिला।99 राहुलजी ने अमवारी

छितौनी, रयोड़ा, बड़हियाटाल के साथ आस पास के गाँवों के किसानों को भी हक के लिए जाग्रत किया। 24–25 फरवरी 1940 ई को मोतीहारी में राहुलजी के सभापतित्व में सम्मेलन हुआ ,जिसमें स्वामी सहजानंद सरस्वती, नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, जेड,ए,अहमद आदि के भाषण हुए।100 राहुलजी ने लक्षित किया कि इस किसान जागरण ने व्यापक सामाजिक सांस्कृतिक जागरण को जन्म दिया है। स्त्रियाँ घर की चौखट लांधकर जमींदारों के जुल्म के खिलाफ लडाई में उतर पड़ी;;;;;वे खुशी खुशी, अपने हक के लिए जेल जाने का गीत गा रही है–चलु चलु सखियाँ, जेहल के जवैया गे! जाति और धर्म के बन्धन धीरे धीरे किसान जागरण की आग में जलकर भस्म हो गए।101 उसी वर्ष उन्हें पलासा में होने वाले अखिल भारतीय किसान सभा के पाँचवे अधिवेशन के लिए सभापति चुना गया। मगर सम्मेलन के पहले ही 15 मार्च 1940 को उन्हें इलाहाबाद में भारत रक्षा कानून के तहत गिरफतार कर लिया गया।102 दो साल चार माह कारावास में ही लेखन कार्य किया, इस दौरान उन्होनें–मेरी जीवन यात्रा–1, विश्व की रुप रेखा, मानव समाज, दर्शन–दिग्दर्शन, वैज्ञानिक भौतिकवाद ,सिंह सेनापति, वोल्गा से गंगा, आदि पुस्तकें लिखी। 103 हजारीबाग जेल से छुटने के बाद राहुलजी सीधे छपरा आये, उस दौरान भारत छोड़ों आन्दोलन शुरू हो गया था। उसने देखा कि चारों तरफ गाँधी के 'करो मरो' के आवाहन पर लोग अति उत्साह में तोड़ फोड़ कर रहे हैं। 'सेना इस वक्त विद्रोह दबाने में लगी हुई है। गाँधीवाद अराजकता को छोड़ व्यवस्थित संधर्ष का रुप थोड़े ही ले सकता है और अराजकता पीछे बदमाशों और गुण्ड़ों के हाथ में चली जाती है।;;;;;नेता लोग तो जल्दी पकड़ें जाने के लिए उतावले हो उठे,दमन करते वक्त ब्रिटिश नौकरशाही यह ख्याल नहीं कर रही हैकि उसके सिर पर जापान बैठा हुआ है

और भारतीय जनता को उसे जापान से मुकाविला करना है।104 समय के साथ राहुलजी की यात्रा भी आगे बढती रही वे बेटे पत्नी से मिलने के लिए रुस के लिए रवाना हुए। पच्चीस माह बाद, लंदन होते हुए जहाज से भारत वापस आ रहे थे। उस समय सभी भारतीयों में 15 अगस्त की चर्चा थी। हमारे लिए क्यो, यह हमारे देश के लिए सबसे बडी घटना थी। क्योंकि उस दिन तलवार के जोर पर दखल अपने करने वाली अंग्रेजों की सेनाएँ भारत को छोड़ जाने वाली थी। हमारा देश भाग्य का विधाता होनेवाला था।;;;;;;ब्रिटिश सरकार को जल्दी जल्दी अपना बोरिया बाँधना, बाँधकर भारत छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।'105 स्वदेश लौटने पर राहुलजी ने सबसे पहले अपने देश का दौरा किया, जगह जगह भाषण दिए। उसी समय वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन सभा बम्बई अधिवेशन के सभापति चुने गए। अपने भाषण में हिन्दी उर्दू और इस्लाम के बारे में कहा जिस विचार के कारण राहुलजी को कम्युनिस्ट पार्टी से पृथक होना पड़ा।106 राहुलजी अपनी कलम और वाणी से साम्यवादी तथा प्रगतिशील विचारों को प्रवल बनाने का कार्य सतत करते रहे। उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य न रहना भी खल रहा था। फरवरी सन 1955ई0 में दिल्ली पहुँचकर पार्टी की सदस्यता का आवेदन पत्र भर दिया और पुन; हमेशा के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गए।

इस तरह राहुलजी का राजनैतिक व्यक्तित्व एक कर्मठ योग्य साधक के रूप में दिखाई देता है। उनका व्यक्तित्व कर्म करने का है, न कि सिर्फ बोलने तक सीमित है। युवाकाल से लेकर जीवन के अन्तिम दौर तक राहुलजी सक्रिय राजनीति से जुड़े रहे, चाहे वह देश की आजादी हेतु आन्दोलन हो या किसान आन्दोलन। इन

आन्दोलनों में राहुलजी सदैव अपनी सूझ–बूझ का परिचय दिया है। राहुलजी कुछ दिनों तक राजनीति से भले ही दूर हट गए थे, मगर उनका मन सदा राजनीति में ही लगा रहा। उनका कृतित्व का प्रमाण चाणक्य के प्रस्तुत श्लोक से मिलता है–

''गुणैरुतमतां यति नोच्चैरासन संस्थित;। प्रसादशिखरस्थोअपि काक किं गरुड़ायते।''107

संदर्भ सूची–

1 राहुल सांकृत्यायन,'दर्शन–दिग्दर्शन', किताब महल, इलाहाबाद,पूर्वोक्त,भूमिका।

2 राहुल सांकृत्यायन, 'वैज्ञानिक भौतिकवाद', किताब महल इलाहाबाद,पृ0 सं0–27

3 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0–42–43

4 गुणाकर मुले, 'स्वंयभू महापंड़ित', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0,सं0–105

5 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0–299–300

6 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0–276–282

7 गुणकर मुले,'स्वयंभू महापंडित', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0–104

8 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0–280

9 गुणाकर मुले, 'स्वयंभू महापंडित', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0–108

10 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0–351

11 गुणकर मुले,'स्वयंभू महापंडित', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ0 सं0–110

12 राहुल सांकृत्यायन, 'विश्व की रुपरेखा', किताब महल इलाहाबाद,पृ0 सं0–117

13 वही,पृ0 सं0–117–118

14 राहुल सांकृत्यायन,'मानव समाज', आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता,पृ0 सं0–31–38

15 राहुल सांकृत्यायन',धुमक्कड़शास्त्र', इलाहाबाद,1994,पृ0 सं0–7

16 राहुल सांकृत्यायन,'दर्शन–दिग्दर्शन', किताब महल इलाहाबाद,पृ0 सं0–279

17 राहुल सांकृत्यायन,विश्व की रुपरेखा', किताब महल,इलाहाबाद,पृ0 सं0–300

18 राहुल सांकृत्यायन,'दर्शन–दिग्दर्शन', किताब महल इलाहाबाद,1942,पृ0 सं0–277–278

19 राहुल सांकृत्यायन, 'मानव समाज', आधुनिक पुस्तक भवन,कलकत्ता, 1951,पृ0 सं0–286

20 राहुल सांकृत्यायन, 'वैज्ञानिक भौतिकवाद', लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद,1998,पृ0 सं0–128–129

21 राहुल सांकृत्यायन,'मानव समाज', आधुनिक पुस्तक भवन,कलकत्ता,1951,पृ0 सं0–284

22 विष्णुचंद्र शर्मा,'राहुल का भारत', इलाहाबाद,1995,पृ0 सं0–84

23 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–2, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0–229

24 गुणाकर मुले,'स्वयंभू महापंड़ित', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0–112

25 सहजानंद सरस्वती,' मेरा जीवन संघर्ष ', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,पूर्वोक्त,पृ0 सं0–327

26 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0,303

27 वही, पृ0 सं0 303

28 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0304

29 उर्मिलेश,'राहुल सांकृत्यायनः सृजन और संघर्ष', वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ0 सं0,58

30 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0304

31 वही पृ0 सं0,305

32 उर्मिलेश,'राहुल सांकृत्यायनः सृजन और संधष', वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ0 सं0,59

33 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0सं0305

34 सिंह अवधेश्वर प्रसाद(सम्पादित),'राहुलजी का अपराध',अमवारी सत्याग्रह,हिन्दी कुटिया पटना 1939,पूर्वोक्त,पृ0सं0,40

35 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–,2,,पृ0सं0,308

36 वही पृ0सं0,309

37 डा0 अभिजीत भट्टाचार्य,'महापंड़ित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वातरण की प्रक्रिया', आनंद प्रकाशन कोलकत्ता,पृ0सं0143

38 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0सं0,314

39 सिंह अवधेश्वर प्रसाद(सम्पादित),'राहुलजी का अपराध',अमवारी सत्याग्रह,हिन्दी कुटिया पटना 1939,पूर्वोक्त,पृ0सं0,45

40 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0सं0315

41 उर्मिलेश,'राहुल सांकृत्यायनःसृजन और संधर्ष ',वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं063

42–कमला सांकृत्यायन, किसान आन्दोलन,'वसुधा'राहुल जन्मशती अंक–26,रीवा,अप्रैल–जून,1994,पृ0सं088

43 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0316

44 सिंह अवधेश्वर प्रसाद(सम्पादित),'राहुलजी का अपराध',अमवारी सत्याग्रह,हिन्दी कुटिया पटना 1939,पूर्वोक्त,पृ0सं0,53

45 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0सं0318

46–वही,पृ0सं0,319

47–वही पृ0 सं0319

48–स्वामी सहजानंद सरस्वती,मेरा जीवन संघर्ष,दिल्ली,पृ0 सं0 320

49 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0 324

50 वही,पृ0सं0,325

51 वही,पृ0सं0,327

52 वही,पृ0सं0,365

53 सिंह अवधेश्वर प्रसाद(सम्पादित),'राहुलजी का अपराध',अमवारी सत्याग्रह,हिन्दी कुटिया पटना 1939,पूर्वोक्त,पृ0सं0,40

54 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 2, पृ0सं0335

55 वही,पृ0सं0336

56 वही,पृ0सं0,337

57 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–2, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0–123

58 वही,पृ0 सं0 123

59 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग –1,पृ0सं0288

60 राहुल सांकृत्यायन,'जिनका मैं कृतज्ञ',किताब महल,इलाहाबाद,1957,पृ0सं0116

61 वही

62 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पूर्वोक्त,293

63 23 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0–125

64 वही पृ0 सं0 128

65 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 1,पृ0सं0299

66 वही,पृ0सं0 252

67 वही,पृ0सं0,253

68 वही, पृ0सं0,253

69 वही,पृ0 सं0,258

70 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0140

71 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 1,पृ0सं0 258

72 वही,पृ0 सं0260

73 वही,पृ0 सं0260–262

74 वही पृ0 सं0264

75 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0–150

76 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग– 1, पृ0 सं0266

77 वही,पृ0 सं0,265

78 वही,पृ0 सं0,266

79 वही,पृ0सं0267

80 वही,पृ0 सं0 267–268

81 वही पृ0 सं0 276

82 डी0पी0हरति''महामानव'',हरति प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं069

83 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1,पृ0सं0282

84 वही पृ0सं0284

85 वही पृ0सं0285–286

86 वही पृ0 सं0 306

87 राहुल सांकृत्यायन,'मेरे असहयोग के साथी',किताब महल इलाहाबाद,पूर्वोक्त,पृ0 सं0 31

88 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग– 1,पृ0 सं0,310

89 राहुल सांकृत्यायन,''जीने के लिए',वाणी मन्दिर,छपरा, पृ.सं. 39

90 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा ',भाग– 1, पृ0 सं0 311

91 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा ',भाग– 2,पूर्वोक्त,109

92 भदंत आनंद कौसल्यायन–छोट्टी छोट्टी बातों में भी महान,राम शरण शर्मा,'मुंशी',सम्पादित–राहुल स्मृति,नई दिल्ली,1988,पृ0सं0213

93 सिलेक्टेड एसेज ऑफ राहुल सांकृत्यायन,नई दिल्ली,पृ0सं016

94 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 2,पृ0सं0303

95 वही, पृ0 सं0303

96 वही पृ0सं0304

97 विपिनचन्द्र(सम्पादित),'भारत का स्वतंत्रता संधर्ष ', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय,पूर्वोक्त,322

98 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 2,पृ0 सं0 330

99 उर्मिलेश,'राहुल सांकृत्यायनः सृजन और संधर्ष', वाणी प्रकाशन,दिल्ली,पृ0सं059

100 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग– 2,पृ0सं0335

101 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं0,234

102 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा', भाग– 2,पृ0सं0337

103 वही,पृ0सं0 351

104 वही, पृ0 सं0 364

105 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग– 3,पृ0सं0213

106 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग– 4,पृ0सं0253–54

107 चाणक्य नीति दर्पण,पृ0सं0166

चतुर्थ अध्याय

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक

विचारों का विकास

अ) हिन्दी साहित्य विषयक राहुल सांकत्यायन के विचार

ब) भाषा–विवाद और राहुल सांकृत्यायन

स) एशिया संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

द) यूरोप संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

अ) हिन्दी साहित्य विषयक राहुल सांकत्यायन के विचार

हिन्दी साहित्य के विकास में राहुलजी के अप्रतिम योगदान है। साहित्य के स्वरूप और समाज से उसके अन्तःसम्बन्ध को विवेचन विश्लेषण को छोड़कर हिन्दी साहित्य के विकास और समृद्धि को ध्यान में रखकर विचार करें तो राहुलजी की देन कम नहीं है। उन्होंनें 'सरह दोहा कोश' 'संस्कृत काव्यधारा', 'हिन्दी काव्य धारा' 'दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन करके भारतीय साहित्य में प्रगतिशील चेतना के सातत्य को रेखांकित किया है। हिन्दी काव्यधारा में आठवीं सदी से तेरहवीं सदी तक के बौद्व सिद्धों और जैन कवियों की मूल रचनाओं के नमूने और उसकी हिन्दी छाया प्रस्तुत करके राहुलजी ने ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया है। इन कवियों को हिन्दी साहित्य से जोड़कर हिन्दी साहित्य के इतिहास को लगभग 250 वर्ष और पीछे तक विस्तृत कर दिया है।राहुलजी यह मानते थे कि– "लोक भाषाओं में भारत भूमि का वैविध्य, उसका धूसर सौन्दर्य और उसकी मूल प्राणधारा सुरक्षित हैं"।1 दक्खिनी हिन्दी के इस समृद्ध साहित्य को संकलित करते हुए राहुलजी ने इसके महत्व और इसकी उपेक्षा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। वास्तव में हिन्दी साहित्य के मूल्यांकन क्रम में दक्खिनी हिन्दी का मूल्यांकन ही नहीं किया गया था, जिसके कारण एक बहुत महत्वपूर्ण काव्यधारा उपेक्षित रह गयी। इसके पीछे अनुसंधान अथवा अध्ययन की सीमायें भी थी और आलोचकों का पूर्वाग्रह से ग्रसित दृष्टीकोण भी था। राहुलजी अपना विचार प्रगट करते हुए लिखते है–"आचार्य शुक्ल के इतिहास की रचना उस समय हुई थी जब हिन्दी साहित्येतिहास का अध्ययन अपनी आरम्भिक अवस्था में था। हिन्दी का अधिकांश

प्राचीन साहित्य या तो अप्रकाशित था अथवा अज्ञात था तथा उसका समुचित अनुसंधान और विश्लेषण भी नहीं हुआ था। शुक्लजी के इतिहास में कई स्थानों पर हिन्दी और उसकी बोलियों के विकास के सम्बंध में जो टिप्पणियॉ है, ये उनके पूर्वाग्रह को दर्शाती है, 'अब तक साहित्य की भाषा ब्रजभाषा ही रही, इसे सूचित करने की आवश्यकता नहीं। अतः गद्य की पुरानी रचना जो थोड़ी सी मिलती है वह ब्रजभाषा में है।...........जिस समय गद्य के लिए खड़ी बोली उठ खड़ी हुई उस समय तक गद्य का विकास नहीं हुआ था, उसका कोई साहित्य नहीं खड़ा हुआ था, इसी से खड़ी बोली के ग्रहण में कोई संकोच नहीं हुआ।''2 राहुलजी इसी संदर्भ में आगे कहते है–''उतर में खड़ीबोली की कविता 19वीं सदी के अन्त में नाम मात्र और सो भी बेमन से हुई। वस्तुतः उसका आरंभ 20वीं सदी से आरम्भ होता है। जिसमें पहली दो दशाब्दियों अभ्यास करने की थी लेकिन अलाउदीन और मुहम्मद तुगलक की दक्षिण विजय के साथ जो लाखों मुसलमान, सामन्त, सैनिक, शिल्पकार गये, उनके ही कारण दक्षिण में गुलमार्ग, गोलकुण्डा और बीजापुर में खड़ी हिन्दी की कविता शुरू हुई। इस वक्त मैथिली कोकिल विद्यापति अपने मधुर गीतों से प्राची को मुखरित कर रहे थे। किन्तु उसकी प्रौढ़ता का जमाना वही है, जबकि सूर और तुलसी का कविताओं के रूप में ब्रजभाषा और अवधी की कविताएँ उन्नति के शिखर पर पहुँची। इस दक्खिनी खडी हिन्दी कविता के सूर और तुलसी, वजही, सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब और गौवासी थे। इस कविता का प्रवाह तबतक विकसित होता चला गया, जबतक कि औरंगजेब ने दक्खिन की इन मुसलमानी रियासतों को 1686–1687ई0 में खत्म नहीं कर दिया।''3

हिन्दी के विकास में दक्खिनी हिन्दी ओर उर्दू का योगदान काफी है। इस योगदान की चर्चा करते हुए राहुलजी कहते है कि–"हमारी हिन्दी उर्दू की विशेष तौर से गद्य की ऋणी है।.............हिन्दी के साहित्य विकास में दक्खिनी हिन्दी और उर्दू का बहुत बड़ा हाथ है। उर्दू को बहुत से लोग हिन्दी का प्रतिपक्षी समझते है, जो गलत है। हम हिन्दी वाले उसे हिन्दी को एक शैली मानते है। वह समय दूर नहीं है जब उर्दू का समस्त श्रेष्ठ साहित्य नागरी अक्षरों में आकर सबके लिए सुलभ हो जाएगा। कौरवी लोकभाषा से व्यवधान कसने के लिए उर्दू ने जो विधि निषेध बनाए, हिन्दी ने उसे स्वीकार कर लिया। कौरवी में 'आवै है' का प्रयोग आज भी होता है उर्दू ने आता है कर दिया, तो हिन्दी भी इस लक्ष्मण–रेखा से बाहर जाने की शक्ति नहीं रखती।"4 राहुलजी हिन्दी, उर्दू और हिन्दूस्तानी के सहज आन्तरिक संधर्ष के साक्षी थे। हिन्दी ढल रही थी और उर्दू एक मूल की होकर भी दूर हो रही थी। राहुलजी ने इस संदर्भ में लिखा है–एक मूल से पैदा होने पर भी इसका विकास इतनी दूर तक अलग पथ पर हो चुका है कि उसे फिर मूल रुप से लौटाया नहीं जा सकता।"5

हिन्दी के सम्बन्ध में राहुल का अभिमत अलग था। वे राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा अपनाए जाने के प्रबल समर्थक थे। इसके साथ साथ वे हिन्दी भाषा की सामर्थ्य, उसकी दुर्बलताओं एवं अभावो से भी पूर्णत; अवगत थे। इस संदर्भ में वे लिखते है कि–"हिन्दी को हमें समृद्व और उन्नत बनाना है। विज्ञान आधुनिक जगत की विशेषता है। वह हमारे जीवन के प्रत्येक अंग को नए सांचे में ढाल रहा है। ऐसी अवस्था में हिन्दी का भण्डार विज्ञान से अपूर्ण रहे यह हमारे लिए श्रेयस्कर और उचित नहीं"6 उन्होंने हिन्दी साहित्य की शक्ति को पहचानने के लिए उसे वैज्ञानिक

दृष्टि से विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया है जो उसके ऐतिहासिक सामाजिक संदर्भ की सही पहचान करा सके और यह दृष्टि मानव समाज की प्रगति और विकास के विश्लेषण को सम्भव बनाने वाली समस्त ज्ञानधाराओं को आत्मसात करके ही लब्ध की जा सकती है यह राहुलजी की दूसरी बड़ी देन है, जिस पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।7

हिन्दी साहित्य के प्रति महापंडितजी में अपार पक्षपात और श्रद्धा रही और वे आजीवन इसके एक निष्टावान सेवक भी रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन 1948 में अध्यक्ष पद से बोलते हुये उन्होनें कहा था–",हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है। आकाशवाणी पर वे कभी बोलने नहीं गये, क्योकि तब उनका अनुबन्ध कभी हिन्दी में नहीं रहता था। वह कटरपंथी नहीं थे, लेकिन सत्य के आर पार देख लेने की दृष्टि उनके पास थी,"8 हिन्दी को हानि पहुँचानेवालों के प्रति वे अपनी लेखनी से निर्मम प्रहार करने में भी नहीं चूकते थे। स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी होनी चाहिए–इस आन्दोलन के प्रमुख सदस्यों में से राहुलजी भी एक रहे। यदि उनके समक्ष कोई भारतीय अंग्रेजी बोलता तो पंडितजी विशुद्व हिन्दी में उतर देते यह देखने के लिए कि अंग्रेजी दॉ भारतीय कितने पानी में है। एक बार उत्तर भारत के किसी नगर में 'सूरदास जयन्ती' समारोहपूर्वक मनाने का आयोजन हुआ, जिसके लिए एक कार्यकारणी समिति गठित की गई। लैटरपैड भी छापे गये थे। संयोजक महोदय ने कुछ प्रश्नावली बना अंग्रेजी में लिखकर पंडितजी के पास भेजी। पंडितजी ने उस प्रश्नावली का उत्तर न देकर संयोजक महोदय को आडे हाथों लिया–"आप लोग सूरदास का क्या खाक मूल्यांकन

करेगें जबकि लैटर पैड हिन्दी में छपा होने पर भी प्रश्नावली आप अंग्रेजी में लिखते है! आप हिन्दी में प्रश्न पूछिये तभी मैं उतर दूँगा।' संयोजक महोदय ने बडी झेंप के साथ अपनी गलती सुधारते हुए ऐसा ही किया।राहुलजी के सामने कोई हिन्दीभाषी अंग्रेजी में बोलने की कोशिश करे तो उसे झट से कह देते–आप हिन्दी में बोलिए'' ।9 राहुलजी हिन्दी प्रेम के कारण ही उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के पक्ष में नहीं थे बल्कि वे व्यावहारिक दृष्टि से भी अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी को वरीयता देते थे। उर्दू की तुलना में हिन्दी की वकालत करते हुए उन्होनें लिखा है–''सारे भारत के प्रन्तों की नब्बे फीसदी जनता के लिए हिन्दी का पढ़ना लिखना बहुत आसान है। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले साठ सतर फीसदी''''असमिया, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तैलगू, कन्नड, भाषा भाषियों के पहले ही से परिचित है। इसके विरुद्व, उर्दू के साठ फीसदी अरबी फारसी के शब्द उनके लिए बिलकुल नए हैं। उर्दू का अपमान बहुत मंहगा सौदा है।''10 भागलपुर में बिहार प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाषण देते हुए राहुलजी ने हिन्दी के पक्ष लेते हुए कहा–''सरकार अंग्रेजों के इशारे पर उर्दू लिपि को भी बिहार की कचहरियों में घुसेड़ना चाहती थी। मैंने यही कहा,कि यदि रोमन अक्षर स्वीकार करते हैं, तो उर्दू से पिंड छूटता है, नहीं तो उर्दू भी सबको अवश्य पढनी पडेगा। कचहरियों के बाहर हमारा सब काम काज हिन्दी नागरी में होना चाहिए।''11 राहुलजी हिन्दी में अरबी फारसी की तुलना में संस्कृत शब्दों का प्रयोग औचित्यपूर्णमानते है। उनकी दृष्टि में वैज्ञानिक शब्दावली की प्राप्ति ग्रामीण भाषाओं के स्थान पर संस्कृत भाषा से ही संभव है। राहुलजी ने हिन्दी भाषा की समद्वि हेतु अपने सारगर्भित, वैज्ञानिक एवं संतुलित विचार प्रकट किए हैं। राहुलजी के हिन्दी प्रेम को लेकर डा0रामाधार सिंह की यह टिप्पणी काफी उचित प्रतीत होती

है कि–"हिन्दी भाषा के प्रति उनका अदम्य उत्साह और अगाध प्रेम युगों तक लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।;;;;उनके मन में हिन्दी जगत को वे सभी चीजें उपलब्ध करा देने की ललक थी जिनकी अभाव हिन्दी जगत को था। इसीलिए 'विश्व की रुपरेखा' जैसी शुद्ध वैज्ञानिक पुस्तक हिन्दी जगत को दी। इस पुस्तक को हिन्दी में लिखने में उन्हें पारिभाषिक शब्दावली की कठिनाई नहीं आई। उन्होनें ऐसी पुस्तक हिन्दी में लिखकर उन आलोचकों के मुख पर करारा तमाचा मारा कि 'हिन्दी में शब्द सम्पदा नहीं हैं"12

,राहुलजी प्रगतिशील लेखक जन कल्याण का समर्थक थे।13 राहुलजी द्वारा लिखित 'प्रगतिशीलता का प्रश्न' 'प्रगतिशील लेखक' एवं 'आज का साहित्यकार' आदि लेखों में जहाँ एक ओर उनकी प्रगतिवादी विचारधारा परिलक्षित होती है तो दूसरी ओर कई स्थानों पर वे एक समीक्षक के रूप में नजर आते हैं। उनकी दृष्टि में–"प्रगतिवाद कोई कल्ट या संकीर्ण सम्प्रदाय नहीं है। प्रगतिवाद का काम है प्रगति के रूधे रास्ते को खोलना, उसके पथ को प्रशस्त करना। प्रगतिवाद कलाकार की स्वतंत्रता का नहीं परतंत्रता का शत्रु है। प्रगति जिसके रोम रोम में भीग गई है, प्रगति ही जिसकी प्रकृति बन गई है, वह स्वयं अपनी सीमाओं का निर्धारण कर सकता है।'14 सच कहा जाए तो यही मूल मंत्र राहुलजी के साहित्य संबंधीविचारों का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करता है। राहुलजी के हृदयमें प्राचीन स्वर्णिम साहित्य के प्रति आस्था थी,गर्व था, और उसी से प्रेरणा प्राप्त करते हुए वे वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में नवीनता के समर्थक थे। उन्होंने लिखा भी है–"किसी भी भाषा साहित्य के लिए उसकी भूतकाल की कृतिया, चाहे वे कितनी ही भव्य और महत्वपूर्ण हों, पर्याप्त नहीं होती। इसके लिए हमें

वर्तमान और भविष्य की ओर भी ध्यान देना होगा।'15 राहुलजी प्रगतिशील साहित्यकार को जनवादी कलाकार के रुप में मानते हैं। उनके अनुसार प्रगति का स्रोत लेखक का मस्तिष्क न होकर साधारण जनताहै। 'साहित्यिक प्रगतिशीलता की सीमाओं के बारे में राहुलजी का विचार हैं–''साहित्य में प्रगतिशीलता हमसें मॉग करती हैं, कि जितनी ही विस्तृत हो उतनी ही गहरी भी हो, जितनी ही देश में फैली हो, उतनी ही एक एक व्यक्ति के पास पहुँची भी हो। इसके लिए मातृभाषाओं के द्वारा शीघ्र से शीघ्र सारी जनता को साक्षर और शिक्षित, कला साहित्य पारखी बनाने के सिवाय और कोई रास्ता नही।उनके अनुसार प्रगतिशील साहित्यकार को जन साहित्यकार बनना है, उसे जन मन का रंजन करना है,जन मन में शक्ति और स्फूर्ति पैदा करनी है,उसे पलायन के स्थान पर संघर्ष का संदेश देना है,उसे दुनिया को बदलना है।'16 राहुलजी के प्रगतिवादी चिंतन वैज्ञानिक दृष्टीकोण से अभिभूत है।उनके अनुसार वैज्ञानिकदृष्टि से हमारा हिन्दी साहित्य पिछड़ा हुआ है।आधुनिक जगत में विज्ञान के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योकि वह जीवन के प्रत्येक अंग को नवीन ढंग से विकसित कर रहा है।अतःउनका विचार था कि–हिन्दी का भण्डार विज्ञान से अपूर्ण रहे,यह हमारे लिए श्रेयस्कर और उचित नहीं है,इसलिए हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए''।17

हिन्दी साहित्य के काल निर्धारण की दिशा में राहुलजी के योगदान को भूलाया नहीं जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हाजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डाॅ0 धीरेन्द्र वर्मा आदि साहित्यकार हिन्दी साहित्य का आरम्भ 10वीं–11वीं शताब्दी,सन1050 से मानते थे।'18 जबकि राहुलजी ने हिन्दी साहित्य के आदि काल की परिधि को 10वी–11वी

शताब्दी से बढाकर 8 वी शताब्दी तक पहुँचाया।19 हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण क्र्रांति ने सिद्धों के साहित्य को हिन्दी का आदि साहित्य प्रमाणित किया। राहुलजी के इस काल निर्धारण में उनकी सूक्ष्म अन्वेषण प्रतिभा एवं अध्ययनवृति दृष्टिगोचर होती है। राहुलजी के तरह ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, गुलेरीजी एवं काशीप्रसाद जायसवाल आदि ने भी हिन्दी साहित्य के आरम्भ का काल 7वी–8वी शताब्दी माना है।20 अपभ्रंश ,हिन्दी के बीच मतभेंदों को व्यर्थ मानते हुए राहुलजी लिखते है–"अपभ्रंश और हिन्दी में मूलतः कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही भाषायें है। अपभ्रंश और आज की हिन्दी में अन्तर इतना ही है कि एक में शुद्ध संस्कत तत्सम शब्दों का प्रयोग विल्कुल वर्जित है, जबकि आज की साहित्य भाषा में मुश्किल से तदभव शब्दों का प्रयोग होता है।"21

राहुलजी द्वारा लिखित निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृतसंस्मरण, डायरी, पत्र आदि हिन्दी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ है। इसका कारण यह है कि जिस समय उन्होंने इनका प्रयोग किया उस समय तक हिन्दी में ये विधायें विकास की आरंभिक अवस्था में थी। राहुलजी ने सफलतापुर्वक इनका प्रयोग करके हिन्दी गद्य को समृद्व कर दिया। दूसरा कारण यह है कि इनका रचना विधान उतना जटिल नहीं है जितना उपन्यास, नाटक या कहानी का। ये विधायें विषयनिष्ठ है। उदाहरण के लिए यदि यात्रावृत्त को ही लिया जाय तो इसमें लेखक की कल्पना से अधिक महत्व यात्रा–क्रम में आने वाले व्यक्तियों, दृश्यों, वस्तुओं और स्थानों का है। आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि की भी लगभग यही स्थिति है। इसलिए इनकी समद्वि में उनका योगदान अविस्मरणीय है। यह देखकर

आश्चर्य होता है कि कैसे राहुलजी ने अकेले हिन्दी गद्य को लोक जीवन की उष्मा से लेकर उच्चस्तरीय चिन्तन के शिखर–आलोक तक पहुँचा दिया। केवल यात्रावृत्त को लें और देखें–राहुलजी ने लददाख, तिब्बत, जापान, ईरान ,रूस, चीन, नेपाल, एशिया के अनेक दुर्लभ भूखण्डों तथा भारत के विभिन्न स्थानों की यात्रा करके इन देशों और स्थानों के निवासियों के भौगोलिक परिवेश, रहन सहन, बोली वाणी तथा मानसिक बुनावट के दुर्लभ शब्द–चित्रों से हिन्दी गद्यकी इस विधा को सहसा इतना समृद्व कर दिया है कि हम इस पर गर्व कर सकते है। डा0 नागेन्द्र ने उनके उपन्यासों की समीक्षा करते हुए लिखा है––"आज से तीन वर्ष पूर्व 'वोल्गा से गंगा' की आलोचना करते हुए मैने लिखा था कि राहुलजी के पास ऐश्वर्यमयी कल्पना है, ऐतिहासिक सामग्री का अक्षय भण्डार है, एकान्त स्वच्छ और निर्भ्रान्त जीवन दर्शन और सहस्त्रों वर्षो के व्यवधान के आर पार देखने वाली तीव्र दृष्टि है, परन्तु कथाशिल्प विशेष नही है। आज इन दोनों उपन्यासों का अध्ययन करते हुए मेरी यह धारणा और भी पुष्ट होती जाती है और मै एक बार फिर उसी निर्णय को दुहराता हूँ। इन उपन्यासों में औपन्यासिक घटना विधान और चरित्रचित्रण का बहुत कुछ अभाव सा ही है–राहुलजी न तो आकर्षक नाटकीय परिस्थितियों की सृष्टि कर सके हैं और न चारित्रिक द्वन्द्वों की उदभावनाही।'वास्तविकता यह है कि राहुलजी ने किसी भी साहित्य–विधा को शिल्प की दृष्टि से समृद्ध करने के लिए नहीं अपनाया। वे तो साफ साफ कहते है–इतिहास को चलते चलते साम्यवाद के दरवाजे पर कैसे पहुँचना पडा। इसे यदि कहानियों के रूप में पढना चाहते है तो 'वोल्गा से गंगा'तैयार है। यही स्थिति उनके उपन्यासों की है।"22

राहुलजी की हिन्दी सेवा का एक पक्ष कोश निर्माण का कार्य है। उनके द्वारा निर्मित 'शासन शब्द कोष' राष्ट्रभाषा कोष', 'तिब्बती हिन्दी कोश'और 'तिब्बती संस्कति कोश', प्रसिद्व है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों के अभाव का प्रश्न उठाया गया। राहुलजी ने इस चुनौती को स्वीकारा और 'शासन शब्द कोश'का निर्माण किया इस कोश निर्माण के लिए उन्होंने चार आधार सूत्र सामने रखे थे।1–कोई भी शब्द, चाहे वह अहिन्दी प्रान्तों का हो, अंग्रेजी का हो या अन्य विदेशी भाषा का, यदि वह बहुप्रचलित है और यथार्थ परिभाषा दे सकता है, तो उसे लेना चाहिए।2–सभी नए अप्रचलित शब्द संस्कत से लिए जाए, क्योंकि वह हमारी प्रान्तीय भाषाओं की ही नहीं वेहतर भारतीय भाषाओं की मूल भाषा है।3–संकर शब्दों को ग्रहण करते हुए संस्कृत असंस्कृत का विचार न करके इस बात का ध्यान रखा गया है कि ऐसे शब्द जन साधारण को खटकने वाले न हो।4–जहाँ तक हो सके बडे सामाजिक और उच्चारण क्लिष्ट शब्दों के स्थान पर सरल और सटीक अर्थ का बोध कराने वाले असामासिक शब्द रखे जाए। इन सूत्रों को दृष्टि में रखकर राहुलजी ने लोकसभा, सचिवालय, सामान्य प्रशासन तथा न्यायालयों के लिए उपयोगी 16,000 शब्दों का संग्रह करके एक बहुत बड़े अभाव को पूर्ति की। वह कोश हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाशित है।'राष्ट्रभाषा कोश', प्रचार समिति',वर्धा से प्रकाश्ति है और व्यावहारिक उपयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार राहुलजी ने हिन्दी साहित्य को जो कुछ दिया है, वह श्लाध्य है। उस पर हमें गर्व है। हिन्दी साहित्यकारों में राहुलजी, मुंशी प्रेमचंद के काफी प्रशंसक थे। उन्होंने प्रेमचंद को भारत का अमर लेखक एवं कलाकार की संज्ञा देते हुए लिखा है–'उन्होंने साहित्यिक मनोरंजन ओर उच्च आर्दश के लिए अन्त; प्रेरणा का ही सफल प्रयास

नहीं किया,बल्कि उनकी लेखनी द्वारा 20 वीं शताब्दी की साढ़े तीन दशाब्दियों के लोक जीवन का स्वरूप,लोक इतिहास बडी स्पष्टता और ईमानदारी के साथ चित्रित हुआ है।::::::प्रेमचंद का विश्व के साहित्यकारों में क्या स्थान होगा, इसका अनुमान आप इसी से कर सकते हैं कि रुस के प्रसिद्व लेनिनगग्रद विश्वविधालय में हर साल प्रेमचंद दिवस मनाया जाता है। उनके 'गोदान' को सुन्दर कृति समझकर रुसी भाषा में अनुवाद किया गया है''।23 दुसरे साहित्यकार जिनसे राहुलजी प्रभावित थे वे थे 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र', जिन्हें उन्होने आधुनिक साहित्य का सूर्य कहा है। राहुलजी ने उनकी तुलना रुसी लेखक पुश्किन से की है, जिसे रुसी साहित्य का 'सूर्य 'कहा जाता है। अपने इस तुलनात्मक अध्ययन 'भारतेन्दु और पुश्किन' में राहुलजी विस्तार पूर्वक बतलाते है कि विश्व के दो महान रचनाकारों की मानसिकता में कितना समानता है।''24

राहुलजी बहुभाषाविद होने पर भी हिन्दी के ही महान सेवक एवं पक्षधर रहे। उन्होने हिन्दी में ही सोचा, हिन्दी में ही लिखा और अपने जीवन के अन्त तक हिन्दी भाषा और वाडमय के भण्डार को ही समृद्व करते रहे। हिन्दी वाडमय के भण्डार को समृद्व बनाने में उन्होंने विविध विषयों के अनेक ग्रंथों को देकर अकेले जितना योगदान किया उतना और कौन व्यक्ति कर सकता है?''25 राहुलजी के निधन पर ''जनयुग'' के सम्पादक श्री रमेश सिन्हा ने सम्पादकीय में लिखा–''भारत के सच्चे सपूत,हिन्दी जगत के अप्रितम विद्वान ,शोषित मानवता के महान प्रहरी,मार्क्स और लेनिन के महान सिद्धान्तों के शिक्षक,कम्युनिस्ट राहुल तुम्हारी मंजिल पूरी हो गई। अब हम तुम्हें कभी न देख सकेगें। सच है लेकिन तुम्हारी प्रेरणा हमें, हमारी जनता और हमारे देश को

शक्ति देती रहेगी।हमारी आँखें सजल है, लेकिन हम दुख सहना भी जानते है। सह लेगें। हमारा जनयुग परिवार बुद्ध परिवार, तुम्हें तुम्हारी स्मृति को नमन करता है। लो लाल सलाम।'''26

निष्कर्षतः राहुलजी ने अपने अथक परिश्रम से हिन्दी साहित्य के एक एक कोने को परिमार्जित और पुष्पित किया है। वे हिन्दी साहित्य में दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा, जैन और बौद्ध के साहित्य को जोड़कर हिन्दी साहित्य की परिधि को 260 वर्ष और पीछे ले गये और इस साहित्य को वैज्ञानिक आधार देकर जनजन की भाषा बनाने के लिए राष्ट्रभाषा का स्वरूप प्रदान करने के पक्षपाती बने, जिससे राहुलजी का हिन्दी साहित्य में एक अलग स्थान बन जाता है।

ब) भाषा–विवाद और राहुल सांकृत्यायन

राहुलजी ने भाषा संबंधी विवाद पर मौलिक चिंतन करते हुए अलग अलग भाषाओं पर गहराई से विचार किया है। उन्होंने हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू, पाली, संस्कृत भाषाओं का व्यापक अध्ययन किया और उन भाषाओं के अन्तर्सम्बंध और बिभेद को व्यापक रूप से विशलेषण अपने अनेक लेखों में किया है। राहुलजी भाषा को जन भाषा के निकट लाने और उसे जन जीवन के मेल में रखने के हिमायती थे। वह किसी भी साहित्यिक भाषा के लिए अपनी लोक भाषा से घनिष्ठ संबंध स्थापित करने पर शुरु से जोर देते रहे हैं। "हिंदी के विशाल क्षेत्र में बार बार घूमते हुए वह रुस की जिस रोमनी भाषा को खोज सके,वह भी हिंदी के ही प्रवाह का एक हिस्सा थी"27 जालौन आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में सनातनधर्मी शास्त्रार्थ के लिए हुज्जत कर रहे

थे–'संस्कृत में ही शास्त्रार्थ होना चाहिए।'राहुलजी ने कहा–'फिर जनता क्या मल्लू बनकर बैठी रहेगी? संस्कृत और हिन्दी दोनों में शास्त्रार्थ हो।''28

राहुलजी जन भाषा के समर्थक थे। जन भाषा न जानने से कितनी बड़ी भूल होती है। इस विषय पर राहुलजी लिखते है–''एक बार आगरा में एक महिला राहुलजी से कही'जाईए न, दो पैसे की पकौड़ी लाइए दरवाजा के बाहर से,बताउँ की। 'कही बेवकूफ न समझा जाने लगूँ इसलिए मैंने और इन्तिजार करना पसंद नही किया, और अच्छा कह वहा से चला गया। सोचा श्रीमति की फर्माईश पकौड़ी की है, बताउँ की ऐसे ही दो बार मुँह से निकल आया, वाक्य तो उतने ही पूरा हो जाता है। मैनें प्याज की पकौड़ी खरीदी, और लाकर उनके सामने रखा।उन्होने आश्चर्य के साथ कहा–'यह क्या?मैने तो बताउॅ की पकौड़ियाँ मँगाई थी।''बताउॅ क्या बला है? अरे बैगन, बैगन। मैंने अफसोस जाहिर करते हुए कहा–माफ कीजिए, बताउँ का मतलब मुझे समझ में नहीं आया।''29 राहुलजी जहाँ जाते थे, वहाँ की भाषा का अध्ययन कर यह पता लगाते थे कि वहाँ की जनता किस प्रकार की भाषा को आसानी से समझने में समर्थ है और ये उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते थे। राहुलजी इस संदर्भ में लिखा है–''एक बार छपरा में राजेन्द्र बाबू के साथ भाषण देने गये थे कुछ लोगों ने उनकी क्षेत्रीय भाषा पर आपति की पर मैंने छपरा की बोली में भाषण शुरु किया। दो ही मिनट में किसानों के सिर हिलने लगे,फिर तो सभापति ने यह उज्र पेश कर हिन्दी में भाषण देने के लिए जोर दिया, कि लोग छपरा की बोली नहीं समझते। मैंने जनता से पूछा–यदि आप लोग मेरी भाषण नहीं समझते तो क्या करुँगा उर्दू–फारसी में बोलने की कोशिश करुँगा।जनता ने एक स्वर से कहा–नहीं, हम आपकी भाषा

खूब समझते है"।30 युगीन विचारकों एवं लखकों के अनुसार राहुलजी बहुभाषाविद थे।31 'राहुलजी ने इस बात को स्वयं स्वीकार किए है–'1922 ई0, गया में आर्य समाज के पंडाल में इस विषय में एक बडी सभा हुई, जिसमें मेरे और कई अन्य बौद्व तथा हिन्दू साधुओं के व्याख्यान हुए थे। पाली, अंग्रेजी, संस्कृत, के कितने ही व्याख्यानों के अनुवाद करने का भार मुझ पर पड़ा, जिसे देखकर लोगों ने मुझे अनन्तभाषाज्ञ बना डाला।" 32 उनकी मान्यता थी कि अपनी मातृभाषओं एवं मातृ भूमि के लिए सजग अनुराग एवं आकर्षण, नैसगिक होता है"33 अत. मातृभाषा एवं जन भाषा में सृजित साहित्य को जन सामान्य सरलता के साथ पढ़ लिख एवं आत्मसात कर सकता है। यह विचार मात्र सैद्वांन्तिक नहीं थे। अपनी मातृभाषा के प्रति अनुराग उनकी कृतियों में भी स्पष्टत. दृष्टीगोचर होता है। 1942ई0प्रयाग में, हिन्दी सम्मेलन में मातृभाषा पर जोर देते हुए राहुलजी ने कहा–"मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए। मैं इसके वारे में अपने विचारों के पत्रों को प्रकाशित कराता रहा हूँ, इसलिए कोई नई चीज नहीं थी, तो भी मैंने देखा कि अभी हमारे साहित्यिक इस सच्चाई को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। वह समझते है कि इससे हिन्दी को हानि होगी। मैंने उनकी शंकाओं का जबाब देते हुए कहा कि हिन्दी को नुकसान होने का डर नहीं, क्योकि पटना, बनारस या आगरावालों को प्रयागवालों के साथ साहित्यिक संपर्क रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होगी, जो हिन्दी ही होगी।"34 भोजपुरी भाषा राहुलजी की मातृभाषा थी। वह अपने क्षेत्र में मातृभाषा को ध्यान में रखकर भाषण देते थे। इस सम्बन्ध में वे लिखते है –"छपरा में मैंने जब से राजनीतिक काम किया, तब से ही सभाओं में मेरा भाषण सदा वहॉ की भाषा भोजपुरी, मल्ली में होता था। इस चुनाव के समय उम्मीदवारों के पक्ष में मैनें कई नोटिस इसी भाषा में

निकाली, जिसको पहले तो लोगों ने उचित नही समझा, किन्तु जनता पर सीधी सादी देहाती भाषा का असर देख उन्हें उसके महत्व को स्वीकार करना पडा'''35 ग्रियर्सन ने भोजपुरी के भीतर काशिका और मल्लिका बोली को मानते थे। राहुलजी ने अपने तजुर्बे से देखा, ग्रियर्सन का यह सर्वेक्षण गलत था, आज सवा करोड़ से अधिक मललवासी–छपरा, बलिया, आरा, मोतीहारी, देवरिया, दिलदारनगर में हैं।36 राहुलजी ने जनपदीय भाषाओं का नक्शा प्रस्तुत किया है। जब भारत ,पाकिस्तान का विभाजन नहीं हुआ था। किस भाषा का जनपद कौन सा है, और किस केंद्र में जाने पर भाषा बोली जाती है, जिसकीसारणी इस प्रकार है–

भाषा	जनपद	केंद्र
1,हिंदवी	पच्छिमी पंजाब	रावलपिंडी
2,मध्य पंजाब	मध्यपंजाब	लाहौर
3,पूर्वी पंजाब	पूर्व पंजाब	लुधियाना
4,सिंधी	सिंध	कराची
5,मुल्तानी	मुल्तान	मुल्तान
6,कश्मीरी	काश्मीर	श्रीनगर
7,पच्छिमी पहाडी	त्रिवर्ग	कांगडा
8,हरियानी	हरियाना	दिल्ली
9,मारवाडी	मारवाड	जोधपुर

10,वैराटी	विराट	जयपुर
11,मेवाडी	मेवाड	चितौड़
12,मालवी	मालवा	उज्जैन
13,बुंदेली	बुंदेलखंड	झॉसी
14,ब्रज	शूरसेन	आगरा
15,कौरवी	कुरु	मेरठ
16,पंचाली	रुहेलखंड	बरेली
17,गढवाली	गढवाल	श्रीनगर
18,कूमॉचली	कूर्माचल	अलमोडा
19,कोशली	कोशल	लखनउ
20,वात्सी	वत्स	प्रयाग
21,चेदिका	चेदी	जबलपुर
22,बधेली	बधेलखंड	रीवां
23,छतीसगढी	छतीसगढ	विलासपुर
24,काशिका	काशी	बनारस
25,मल्लिका,भोजपुरी	मल्ल	छपरा

26,वज्जिका	वज्जी	मुजफफरपुर
27,मैथिली	विदेह,तिरहुत	दरभंगा
28,अंगिका	अंग	भागलपुर
29,मागधी	मगध	पटना
30,संथाली	संथाल	जसीडीह

37 आजादी के बाद भाषावार प्रांत बनाने की मॉग करते हुए राहुलजी ने जनपदीय भाषाओं में उन जनपद के लोगों को शिक्षा देने की जोरदार मॉग की थी।,उसी समय राहुलजी ने छपरा की भाषा में आठ नाटक लिखे।इनमें जपनिया राछछ,देस रच्छक,जरमनवॉ के हार निहिचय, ई हमार लडाई, ढुनमुन नेता, नइकी दुनिया, जोक, मेहरारुन के दुरदसा''38 'हंस' के सितम्बर 1943 के अंक में प्रकाशित अपने लेख में राहुलजी लिखे है– आज कलकता, बंबई, कानपुर, अहमदाबाद ,जमशेदपुर, जमालपुर, जैसे कलकारखानों वाले शहरों को देखने से मालूम होता है कि किस तरह वहा भिन्न भिन्न प्रांतों के मजूर मजूरिनें एक जगह रह एक ग्र्रम के वासी बन गये है ,जिसके कारण आपस में सम्बंध स्थापित करने के लिए एक सम्मिलित भाषा की उपयोगिता को समझने ही नहीं लगे है,बल्कि हिन्दी का इस्तेमाल भी करते है।आज के युग में सम्मिलित भाषा को न समझना वस्तुत; बड़े आश्चर्य की बात होगी, इसलिए हिन्दी के सम्मिलित साझे की भाषा होने से हम इन्कार नहीं करते। 'हिन्दी–हिन्दुस्तानी, नागरी–उर्दू के सम्बन्ध में मश्रूवाला के विचार के विरोध में उनका कहना था–हम नेहरु को मध्यरथ मान लें। मुझे भला कैसे पसंद आता, जिस बात में

नेहरु का ज्ञान नही के बराबर है, और जिस विषय में उनका निर्णय पहले ही से मालूम है, उसे यह काम केसे सौपा जाए?"39 राहुलजी ने भाषा सम्बन्धी अनेकों लेख लिखे है जो 'राहुल निबन्धावली' संग्रह में संग्रहीत है,जिसमें 'हिन्दी की मूल भाषा कौरवी बोली है', सिद्ध कवियों की भाषा,हिन्दी में ८ रिभाषित शब्दों का निर्माण, साहित्यकार का दायित्व, साहित्यिक प्रगति में बाधाएँ आदि भाषा विवाद के तहत लिखे गये संग्रह है। इन निबन्धों के जरिए भाषा के क्षेत्र में जो समस्याएँ आज भी मौजूद हैं, उनको समझने तथा उनके हल प्रस्तुत करने में भी काफी मदद मिल सकती है। सिद्ध कवियों की भाषा' निबन्ध में 'सातवीं' शताब्दी में उतरी भारत की भाषा को अपभ्रंश माना है,जिसका स्थान भाषा के विकास की दृष्टि से संस्कृत, पाली और प्राकृत के बाद आता है। पाणिनि ने वेद की भाषा को 'छान्दस' माना था तथा पाणिनि के समय पाली अथवा मागधी भाषा की बहनें ही आर्य जनों के बीच प्रचलित थी,जिसका उल्लेख राहुलजी ने किया है। उनका यह भी मानना था कि–'ऋगवेद की भाष बोलचाल की भाषा के अत्यन्त नजदीक है जैसे त्रिपिटक की पाली बुद्धकालीन मागधी के अत्यन्त नजदीक है"40 राहुलजी भाषा के मामले में एक प्रगतिशील और वैज्ञानिक दृष्टि रखते थे इसलिए उनकी बातों का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि उनका यह मानना आज जितना प्रसंगिक है उतना कल या आने वाले समय में भी रहेगा। इस सम्बन्ध में राहुलजी लिखा है–"भाषा और उसका साहित्य धारा के रुप में चलता है,फर्क इतना ही है कि नदी को हम देश की पृष्ठभूमि में देखते हैं जबकि भाषा देश और भूमि दोंनों की पृष्ठभूमि को लिए आगे बढ़ती है–कालक्रम के अनुसार देखने पर ही हमें उसका विकास अधिक सुस्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होता है।ऋग्वेद से लेकर 19 वीं सदी के अन्त तक की धारा को समझने के लिए उन उन

भाषाओं की गद्यधारा और काव्यधारा के संग्रहों की आवश्यकता है।''41 राहुलजी के सामने भाषा सम्बन्धी कई समस्याएँ और प्रश्न उभर कर आए जिसके लिए उन्होंने भाषा का गहन अध्ययन और अघ्यापन किया। वे सिद्धों की भाषा की खोज करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि सिद्धों की भाषा अपभ्रंश से निकली हुई भाषा थी, जिसे राहुलजी ने अपभ्रंश की पौत्री कहा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्राकृताभास कहा है। 42 अपभ्रंश के बिना हिन्दी, गुजराती, उड़िया, असमिया, बंगाली, पंजाबी, जैसी भाषाओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा में प्राकृत ओर हिन्दी के बीच को जोड़ने वाली कड़ी यही सिद्यों की भाषा अपभ्रंश है।''43 अपभ्रंश को छोड़कर हम हिन्दी के साहित्य को समझ नहीं सकेगे। छंद, भाव, भाषा, कवि शिल्प सभी का उद्‌गम हिन्दी के लिए अपभ्रंश से हुआ है। प्राकृत, पाली, संस्कृत के युगों और साहित्य में सर्वथा अज्ञात दोहा ,चौपाई जैसे छंद केवल अपभ्रंश में पहले पहल देखे जाते हैं। वाणभद्द ने अपभ्रंश के श्रेष्ठ कवि ईशान का उल्लेख किया है। इसी प्रकार राहुलजी ने स्वयंभू और पुष्पदंत नामक अपभ्रंश के दो महान कवियों का पता लगाया, जिनके बारे में पहले किसी को पता नहीं था। इस दृष्टि से देखा जाए तो उक्त दोनों कवि राहुलजी की विशेष खोज माने जा सकते है। 'सिद्य–सामंत युग' ग्रंथ के प्रथम पृष्ट पर राहुलजी लिखते है–'हमारे मध्यकालीन कवियों ने अपना नाता सिर्फ संस्कृत के कवियों से जोड़ रक्खा, जिससे हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकास की यह महत्वपूर्ण कडी काव्य परम्परा से टूटकर अलग जा पड़ी:::::बीच की पॉच सदियों के अपभ्रंश काव्यों का थोड़ा सा भी अनुशीलन हमें लाभ ही पहुँचाएगा::::यह न केवल हिन्दी की ही, बल्कि बंगला गुजराती–मराठी–सिंधी–उडिया–पंजाबी–राजस्थानी मगही–मैथिली–भोजपुरी आदि भाषाओं की सम्मिलित निधि है, सिद्ध सामंत युगीन

जन साहित्य की अवहेलना हमारे लिए हानिकारक होगी।''44 राहुलजी इस पर जोर देते हुए पुनः कहते है–अपभ्रंश के कवियों को भुला देना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिन्दी काव्यधारा के प्रथम श्रष्टा थे। वे अश्वघोष, भास, कालिदास और वाण की सिर्फ जूठी पत्तलें नही चाटते रहे, वल्कि उन्होने एक योग्य पुत्र की तरह हमारे काव्य क्षेत्र में नया सृजन किया है–नए चमत्कार, नए भाव पैदा किए है, यह स्वयंभू आदि की कविताओं से अच्छी तरह से मालूम हो जाएगा। नए नए छन्दों की सृष्टि करना तो इनका अदभुत कृतित्व है। हम संस्कृत के कवियों से संबंध जोड़ने के विरोधी नहीं है। लेकिन हमें बीच की कड़ी, जो हमारी अपनी कड़ी है को लेते हुए, संस्कृत के प्राचीन कवियों के साथ सम्बंध जोड़ना होगा, तभी हम ऐतिहासिक विकास से पूरा लाभ उठा सकेगे।''45 अल्पसंख्यक जातियों की भाषा और संस्कृति को रक्षा को अपना कर्तव्य मानते हुए राहुलजी उस समुदाय को पूरी सुविधा देने के पक्ष में थे जो उर्दू भाषा और अरबी लिपि के द्वारा पढना चाहते हों। उन्होंने कहा है–''मेरी समझ में उस हिन्दुस्तानी भाषा का भविष्य विल्कुल अंधकारपूर्ण है जिसने खुसरो, वली, आतिश के द्वारा प्रयुक्त हिंन्दी शब्दों को भी निकालकर अरबी फारसी का व्रत ले रखा है।::::हाँ तो सवाल है सौदा और गालिब की कतियों के लिए हमें क्या करना चाहिए? मैं कह चुका हूँ कि वे हमारे है ,हमारे रहेगे। शताब्दियाँ बीतती जाएगी और हम गालिब की कविताओं और उनके सुंदर पात्रों को बड़े चाव से पढेंगें। ''बिहार प्रांतीय सभापति का भाषण। हिन्दी और उर्दू के बारे में एक जगह वे कहते हैं–''यह दो स्वतंत्र भाषाएँ है, एक मूल से पैदा होने पर भी इनका विकास इतनी दूर अलग अलग हो चुका है कि उन्हें फिर उस मूल रुप में लौटाया नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ दार्शनिक साहित्य को ले लीजिए। लेकिन दार्शनिक साहित्य परिणाम में

कम है। दूसरे विषयों को लेकर लिखा गया साहित्य अधिक है। लिपि की समस्या भी इस अलगाव का कारण थी फिर भी रीतिकाल साहित्य, भक्तिकालीन साहित्य और सूफी साहित्य में समानता मिलती है। यह समानता अन्तर्वस्तु के स्तर पर भी है और वाक्यविन्यास के स्तर पर भी । यदि अरबी फारसी और संस्कत के शब्दों को निकाल दें तों अवधी के साहित्य में हिन्दी और उर्दू का भेद कम से कम नजर आएगा।46,

16 सितम्बर को बनारस में साहित्य सम्मेलन था, उस सम्मेलन में राहुलजी का विचार इस प्रकार है– "लोग हिन्दुस्तानी का विरोध कर रहे थे ,मैं भी विरोधी था, लेकिन हिन्दू संस्कृति और हिन्दू नाम के धर्म पर नहीं, बल्कि दो विस्तृत और विकसित साहित्यों की एक नकली भाषा के द्वारा एक करने का प्रयत्न मुझे बिल्कुल लड़कपन मालूम होता था। मैं पहिले लिख चुका हूँ कि–" हिन्दुस्तानी के पक्षपाती यदि एक बार पन्त ओर इकबाल की कविताओं को साथ साथ रखकर जरा उन्हें समझने की तकलीफ करें, तो मालूम होगा कि दोनों के समझने के लिए इस अधकचरी हिन्दुस्तानी से काम न बनेगा। अब मैं समझता हूँ, भाषाओं का सवाल दाढी–चोटियों के मिलाने से नहीं हल होगा, उसे जड़ से मिलाकर ही हम हल कर सकते है और जड़ है हमारी मातृभाषाएँ, गॅवारू, असाहित्यक कहकर जिनकी अवहेलना की जाती हैं हिन्दी उर्दूवाले एक दूसरे से बातचीत कर सके, साधारण भावों को समझा सकें, इसके लिए मैं जरुर चाहता था कि हिन्दी पढ़ने वाले विधार्थियों को अपने ही अक्षरों में दो चार पाठ उर्दू के भी दे दिए जाएं, वही बात उर्दू के लिए भी की जाए।47

आन्ध्रप्रदेश में सज्जाद जहीर के नववधू रजीयॉ के द्वारा पूछे जाने पर,क्या आप उर्दू के विरोधी है? मैंने कहा–मैं उर्दू का विरोधी नहीं हूँ। मैं तो जिसकी जो मातृभाषा है, उसको अपनी मातृभाषा को पढ़ने लिखने, पूरी उन्नति करने का पक्षपाती हूँ। हाँ, मैं

इसका विरोधी जरुर हूँ कि लोग हिन्दुस्तानी के नाम से एक तीसरी भाषा के गढने का प्रयत्न करते है। मैं तो यह भी कहता हूँ कि उर्दूवालों का स्वेच्छापूर्वक कुछ हिन्दी भी सीखनी चाहिए।48 फारसी के प्रेफेसर आगा हुमाई से राहुलजी का भाषा सम्बन्धी चर्चा अनेकों घंटो हुंई। प्रो0 आगा हुमाई ने राहुलजी से कहा फारसी भाषा का व्याकरण अभी तक अरबी व्याकरण के ढॉचे पर लिखा जाता रहा है। अरबी भाषा का हमारी भाषा से कोई सम्बंध नहीं है, इसलिए यह सारे व्याकरण अधूरे हैं मैंने कहा, यदि आप अपने व्याकरण को संस्कृत से मदद लेकर लिखें, तो वह ज्यादा अच्छा होगा। कई दिनों तक हमारी बैठक में व्याकरण के ढॉचे पर बहस होती रहीं। कभी सुबन्त की चर्चा छिडती, कभी कृदन्त की ,कभी कारक आता, तो कभी स्त्री प्रत्यय। कृदन्त संस्कृत में सम क्षीर होगा। राहुलजी इस संबंध में लिखते है–" एक दिन कहा–हिन्दी–यूरोपीय जातियों का पहिला विभाजन जो हुआ था, उसे विद्वान लोग सौ के पर्याय शब्द को लेकर सतम और केनटम के नाम से पुकारते है। सतम् परिवार आगे दो टुकडों में बॅटा–एक आर्य दूसरा स्लाव,स्लाव रुसी लोग है,और आर्य नाम हिन्दियों ओर ईरानियों ने अपने लिए सुरक्षित रखा। संस्कृत ओर स्लाव भाषाओं में जो समान शब्द या धातु मिलते है, उनको जरुर ईरानी भाषा में होना चाहिए। एक दिन हम पीना धातु पर विचार कर रहे थे। साहित्यिक फारसी में पीना का बिल्कुल उपयोग नहीं होता, फिर हममें से किसी ने प्याला का नाम लिया और अंत में हुमाई ने लोरी या किसी दूसरी प्रान्तीय भाषा में पीना का प्रयोग भी ढूँढ निकाला।49 भाषा वैज्ञानिक प्रो0भारतभूषण'सरोज'ने लिखा है–ध्वनियों के आधार पर भारोपीय परिवार की भाषाओं को दो वर्गो 'सतम' और 'केन्तुम' में रखा जाता है। इसका आधार विभिन्न भाषाओं में 100 के लिए पाए जाने वाले शब्दों से है। भाषाविज्ञान–भारतभूषण

'सरोज'प्रकाशन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। इस कथन से राहुलजी के विचार शतप्रतिशत मिलता है। इस तरह राहुलजी अल्पसंख्यकों की भाषा और संस्कृत की रक्षा के प्रति केवल सहमत ही नहीं थे, बल्कि इस दिशा में उनके विचार बहुत ही संयमित थे। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविघालय या जामिया मिलिया दिल्ली में शिक्षा के माध्यम के रुप में अरबी लिपि को स्वीकृति देने के पक्ष में थे और उनका विश्वास था कि इससे सरकारी नौकरियों में डिग्रीधारियों को दफतरी काम में कोई बाँधा न होगी।''50 अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाये जाये, रखने के विचार को राहुलजी देश की मानसिक परतंत्रता समझते थे।51 यद्यपि राहुलजी अंग्रेजी को चिर दासता का प्रतीक मानते थे,परन्तु फिर भी ज्ञानार्जन हेतु वे अंग्रेजी के साथ साथ अन्य भाषाओं के अध्ययन को भी आवश्यक मानते थे। ऐसे लोग जो एक मात्र अंग्रेजी को ही ज्ञान का श्रोत मानते थे ,उनके लिए राहुलजी ने लिखा है–'अंग्रेजी की देखा देखी हममें भी यह दुर्गुण आ गया है, कि हम केवल अंग्रेजी भाषा को ही सारे ज्ञान विज्ञान का भंडार समझते हैं। विद्वान जानते है कि कितने ही ऐसे विषय हैं जिनके सुपरिचय के लिए फ्रेंच तथा जर्मन भाषओं की अंग्रेजी से भी अधिक आवश्यकता है।52 किसी देश का उत्थान विदेशी भाषा के माध्यम से संभव नहीं, क्योकि भाषा का सवाल सीधे रोटी का भी सवाल होता है। अनिवार्य भाषा के रुप में राहुल को अंग्रेजी विल्कुल मान्य नहीं थी। राहुलजी के विचार इस विषय में जितने स्पष्ट थे उतना ही स्पष्ट था उनका यह कथन–

''आज फिर भारत एक संघ में बद्धा हुआ है।हमारे भारत संध की कोई एक भाषा भी होनी आवश्यक है। संघ भाषा के बारे में कुछ थोड़े से लोग अपने व्यक्तिगत विचारों

और कठिनाईयों को लेकर बाधा डालना चाहते हैं। हम पूछेंगे संघ के काम के लिए भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं को लेना संभव नहीं, फिर किसी एक भाषा को हमें स्वीकार करना होगा। फिर प्रश्न होगा–क्या हमारे संघ की राष्ट्रभाषा स्वदेशी होनी चाहिए या विदेशी,यानी अंग्रेजी होनी चाहिए या भारतीय? अश्चर्य करने की बात नहीं है, यदि अब भी कुछ दिमाग यह सोचने का कष्ट नहीं उठाते और अब भी अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाए रखने का आग्रह करते हैं। यह भी दासता के अभिशाप का अवशेष है। चूँकी किसी की आँखे सूरज को देख नहीं सकती, तो सूरज को उगना ही नहीं चाहिए। चूँकि इन्होंने अंग्रेजी छोड़ किसी भारतीय भाषा पर अधिकार पाया,सदा साहबी ठाठ में रहे और कभी ख्याल भी नहीं किया कि देश की जनता भी किसी भाषा से संबंध रखती है और उसका साहित्य,जहाँ तक शुद्व साहित्य का संबंध है विश्व की किसी भाषा से पीछे नहीं हैं।53

इस तरह राहुलजी अनेक भाषाओं के प्रकांड पण्डित होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रति उनका अगाध प्रेम और निष्ठा थी। कमला सांकृत्यायन ने इस संबंध में लिखा हैं कि–राहुलजी बहुभाषाविद होने पर भी हिन्दी के ही महान सेवक एवं पक्षधर रहे। उन्होंने हिन्दी में ही सोचा, हिन्दी में ही लिखा और अपने जीवन के अन्त तक हिन्दी भाषा ओर वाङ्मय के भंडार को ही समृद्ध करते रहें"54 वे राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी भाषा को अपनाए जाने के प्रबल समर्थक थे। इसके साथ ही साथ हिन्दी भाषा की सामर्थ्य, उसकी दुर्बलताओं एवं अभावों से भी पूर्णत अवगत थे।वह स्वयं कहते थे–"मैंने भोजन, वस्त्र एवं धर्म को कई बार बदला, किंतु यदि मुझमें कोई वस्तु अपरिवर्तनशील है तो वह है राष्ट्भाषा के प्रति मेरी दृढ़ आस्था। हिन्दी आनेवाले युग

में संपर्क भाषा बने, इस पर उनके स्पष्ट विचार थे–'हिंदी में बोलेंगे और किसमें बोलेंगे? इन्हीं की बात क्यों पूछ रहे हो, मदरसा, कालीकट ,बेजवाड़ा, पूना, सूरत,कटक, कलकता और गौहाटी के मेंबर भी जब सारे हिंदुस्तान के प्रजातंत्र संघ की बड़ी पंचायत में इकठा होंगे तो क्या वह अंग्रेजी में लेक्चर देंगे? अंग्रेज जोंको के जुए को उतार फेंकने के साथ ही अंग्रेजी में भाखा का राज हिंदुस्तान में खतम समझों। जब हिंदुस्तान में एक दूसरे के साथ बोलने चालने ओर सारे देश की सरकार के कामकाज के लिए एक भाखा हिंदी ही होगी। 'भागो नही दुनियॉ को बदलो,प0163। हिन्दी की दुर्बलता एवं कमी की ओर हम सब का ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखे हैं–'हिन्दी को हमें समद्ध और उन्नत बनाना है। विज्ञान आधुनिक जगत की विशेषता है। वह हमारे जीवन के प्रत्येक अंग को नए सांचे में ढाल रहा है। ऐसी अवस्था में हिन्दी का भण्ड़ार विज्ञान से अपूर्ण रहे, यह हमारे लिए श्रेयस्वर और उचित नहीं।'55 हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए वे विदेशी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को हिन्दी भाषा से जोडने के पक्षधर थे । वे कहते है–''हिन्दी शब्द कोष की समृद्धि में संस्कृत एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों के प्रयोग को उचित मानते हुए दैनिक जीवन में प्रचलित विदेशी शब्दों का बहिष्कार अनुचित मानते हैं, लेकिन वे संस्कृत शब्दों के अत्यधिक प्रभाव एवं अंग्रेजी के अनुकरण को प्रशस्त नहीं मानते। उनके विचार में ऐसी स्थिति में स्थानीय भाषाओं के शब्द अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।''56 लेकिन जहाँ तक अरबी फारसी एवं संस्कत शब्दों के प्रयोग का सम्बन्ध है, वहाँ संस्कृत हिन्दी की जननी है ओर अरबी फारसी विदेशी। यही कारण है कि राहुलजी अरबी फारसी की तुलना में संस्कत शब्दों का प्रयोग औचित्यपूर्ण

मानते हैं। उनकी दृष्टि में वैज्ञानिक शब्दावली की प्राप्ति ग्रामीण भाषाओं के स्थान पर संस्कत भाषा से ही संभव है।'',57।

इस प्रकार राहुलजी ने हिन्दी भाषा की समृद्धि हेतु अपने सारगर्भित, वैज्ञानिक एवं सन्तुलित विचार प्रकट किए हैं। राहुलजी पण्डित अम्बिकादत बाजपेयी के उस मत से सहमत थे जिसके अनुसार हिन्दी भाषा के क्रमिक विकास को इस रुप में सरलता से समझाया गया था कि ''वह संस्कृत से प्राकृत में पहुँच महाराष्ट्री और शौरसेनी के मिश्रण से नागर के रुप में परिणत हो गयी और यही नागर प्राकृत कालान्तर में आगे चलकर नागरी भाषा में बदल गई, जिसका आधुनिक नाम हिन्दी है।''58 राहुलजी बार बार यह प्रश्न भी उठाते दिखाई देते हैं कि किस अपभ्रंश से हिन्दी की उत्पति हुई है और वे इस प्रश्न का उत्तर खुद देते हुए कहते है कि''वह कौन सी बोलचाल की भाषा है, जो हिन्दी की अपनी बोली हो सकती है? कौरवी छोड़ आप किसी भी भारतीय भाषा को नहीं पेश कर सकते, जिसमें हमारी हिन्दी समा जाती हो।''59 ।स्पष्ट है कि राहुल कौरवी से ही हिन्दी भाषा की उत्पति स्वीकार करते है, जिसे अधिकांश भाषाविदों ने भी स्वीकार किया हैं। राहुलजी ने परिभाषिक शब्दों के निर्माण में अथवा कोश निर्माण के सिलसिले में जो संकेत किये है वे काफी महत्व के है।उनकी पुस्तके–'शासन शब्द कोश, 1948, राष्ट्रभाषा कोश, 1951,तिब्बती हिन्दी कोश 1960, ये उनकी भाषा चिन्ता और चिन्तन के ही प्रतिफल है। इसी से स्पष्ट हो जाता है कि राहुलजी आजीवन भाषागत चिन्तन के तहत अपनी रचनाओं से लेकर अपने समय की रचनाशीलता, भाषागत समस्याओं आदि से जुड़े रहे तथा समय समय पर उसमें अपना रचनात्मक अंशदान करते रहे। आचार्य रघुवीर जैसे कोशकार की

हिन्दी भाषा के शब्दों के साथ बरती गई अराजकता अथवा गैरजनवादी रवैया के प्रति आलोचनात्मक रुख राहुलजी अपनाये रहे। राहुलजी की भाषा नीति अथवा भाषा दृष्टि से मिलती जुलती भाषा नीति और भाषा दष्टि ड्ा0 धीरेन्द्र वर्मा की थी। उनका मत था कि–"राष्ट्र की एक मुख्य तथा प्रत्यक्ष पहचान भाषा की एकता है,अतः भारत के जितने भूमिभाग में हमारी भाषा अर्थात हिन्दी या हिन्दुस्तानी मातृभाषा की तरह बोली ओर समझी जाती है, वह हमारा राष्ट्र है।"हिन्दी को जानबुझकर क्लिष्ट नहीं बनाना चाहिए। इसमें अपनी ही हानि है, क्योकि यदि जनता की भाषा से साहित्यिक हिन्दी बहुत दूर गई तो जनता इसको छोड़ देगी।"60 राहुलजी की तरह धीरेन्द्र वर्मा ने भी उर्दू हिन्दी के एकीकरण की बात कही परन्तु उनका विश्वास था कि बिना सरकार की सहायता से यह सम्भव नहीं हैं। डॅा रामविलास शर्मा का भी मत यही था। राहुलजी, धीरेन्द्र वर्मा तथा रामविलास शर्मा ये सभी के सभी भाषा के आधार पर प्रंतों के पुनर्गठन के पक्ष में थे।रामविलास शर्मा ने लिखा है–"राजनीतिशास्त्र में एक भाषा भाषी लोगों का एक राष्ट्र में होने का केवल इतना ही तात्पर्य है कि राष्ट्र के छोटे से बडे तक तथा बच्चों से बूढे तक सब लोग एक दूसरे की बात को स्वाभाविक रीति से अच्छी तरह समझ सके, जिससे व्यर्थ को किसी कत्रिम माध्यम का सहारा लेने की आवश्यकता न पड़े।"61 इस तरह राहुलजी की भाषा चिन्तन कई भाषा वैज्ञानिकों की अपेक्षा ज्यादा सुलभ और जनभाषा के अनुकूल है।

स) एशिया संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक ऐसा नाम है जिनके कारण विश्व–भारती के इतिहास का पृष्ट चिरकाल तक गौरवशाली रहेगा। जानने की ललक,घ ुमक्कड़ी और

चिंतन ने इस वरद्पुत्र में एशिया भ्रमणा करने की जिज्ञासा पैदा कर दी। जिज्ञासु राहुलजी की ज्ञान पिपासा इतनी तीव्र थी कि अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के निमित दुःसह कष्टों की परवाह नहीं की और अतल सागरों तथा दुर्लध्य पर्वतों को पार करते हुए तिब्बत, श्रीलंका, नेपाल, जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत रुस, ईरान, अफगानिस्ता आदि एशियाई देशों का भ्रमण किये। राहुलजी ने अपने साहसिक अभियानों द्वारा मात्र निजी जिज्ञासा को ही शांत नहीं किया, वरन् उन्होंने अनेक भूले बिसरे तथाकाल के गर्भ में खोये ऐतिहासिक तथ्यों का उद्धार कर संसार के सामने अपना विचार रख दिया। 62 सर्वप्रथम 1923 ई0में साधु रामोदर दास पशुपति नाथ के दर्शन हेतु डेढ़ मास के लिए नेपाल गये, वही बौद्ध धर्म को निकट से देखे। उसी परिचय में वृद्धि 1926 ई0 में हुई जब राहुलजी ने खैरब में लंडीकोतल तक की,लेह लद्दाख तथा तिब्बत के पश्चिमी सीमा क्षेत्र की विस्तृत यात्रायें की और रामपुर–बुशहर के रास्ते वापस लौटे। वे चीनी तुर्किस्तान के काशगर यारकंद और खोतन शहरों तक पहुँचना चाहते थे,परन्तु पासपोर्ट की दिक्कत थी।बहुत चाहने और प्रयास करने पर भी राहुलजी का चीनी तुर्किस्तान की यात्रा का सपना कभी साकार नहीं हो सका।63 धुमक्कड़ी का भूत,बौद्ध धर्म से प्रभावित राहुलजी 1927ई0में श्रीलंका के विद्यालंकार विहार पहुँचे।राहुलजी ने वहाँ संस्कृत के दर्शनकाव्य ग्रन्थ पढ़े तथा भौगोलिक दृश्य तथा स्थानीय भाषाओं की विशेषताएँ आदि के ज्ञान ने राहुलजी के मस्तिष्क और स्मृति के भीतर उथल–पुथल करके प्रथम बार वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा कर दिया, इससे आर्यसामाजिक और जन्मजात सारे विचार उनके छूट गये। सृष्टि के कर्ता है सिर्फ इस पर विश्वास रह गया था। राहुलजी ने वहॉ देखा कि– "लंकावाले उतर भारत को जम्बूद्वीप और दक्षिण भारत को इंडिया या दमिल कहते है।जहॉ जम्बूद्वीप

के प्रति उनकी अपार श्रद्धा है, वहाँ दमिल या इंडिया का नाम लेते ही पिछले बाईस सौ वर्ष के राजनीतिक संघर्ष की कटु स्मृतियॉ प्रबल हो उनके दिल में घृणा पैदा कर देती है।''64 राहुलजी जम्बूद्वीपिय थे, जिसके कारण श्रीलंका वाले सम्मान देते थे। श्रीलंका में राहुलजी ने देखा कि वहाँ महिलाएँ पर्दा नहीं करती है, सफेद लुंगी और ब्लौस पहनती है, संवारकर बांधे जूड़े को फूल या रत्नजड़ित केशसूचियों से सजती है। इसे देखकर राहुलजी की आँखे अब तक प्रकृति और नारी के सौंदर्य से बहुत तृप्ति अनुभव करने लगी। 65 ''लंका में जोतिस की भॉति भूत–प्रेत,जादू मंतर पर साधारण जनता नहीं,शिक्षितों तक का बहुत विश्वास है।भिक्षु–नियम के विरुद्ध होने पर भी भिक्षु लोग पैसे के लोभ से इन बातों के प्रचार में खासतौर से सहायता पहुॅचाते है।ईश्वरवाद के विरुद्ध कहने पर तो वह खुश होते हैं,किन्तु भूतवाद के विरुद्ध बात करना पसंद नहीं करते।राहुलजी भूतवाद,मंत्रवाद,जोतिसवाद का खूब खंडन किया।इसलिए यहॉ के भिक्षु उसे सहते तथा कितने ही विश्वासहीन भी होने लगे थे।66 राहुलजी ने वहाँ अनुभव यह भी किया कि भारत नेपाल, तिब्बत और लंका जैसे एशियाई देशों के बीच मुक्ति ओर संधानकर्ता का द्वंद्व है। यूरोप मुक्त है और एशिया गुलाम। 'हमारे अपने देशवासियों के भीतर दो तरह के द्वंद्व अकसर चलते रहते है और हम उनके प्रति सहिष्णुता रखते हैं, इसलिए कि वह हमारे अभिन्न अंग हैं। राहुलजी ने एशिया को मानवीय विकास का आधार बताया है।67

सन्1929 से 1938 ई0 तक की राहुलजी की यात्राएँ केवल तिब्बत तक ही सीमित नहीं रहीं। तिब्बत की प्रथम यात्रा से लौटकर वे सीधे श्रीलंका पहुँचे और 1935ई0 में जापान, कोरिया, मंचूरिया, साइबेरिया सहित सोवियत भूमि, ईरान और

बलूचिस्तान की यात्रा की। राहुलजी की यह यात्रा एक प्रकार से एशिया की महापरिक्रमा थी। प्रस्थान किया था दक्षिण पूर्व भारत से, वापस लौटे पश्चिमोतर भारत से, मरुस्थल के मार्ग से।करीब साढ़े छह महीनों की इस महायात्रा में राहुलजी को जापान व कोरिया में अपार स्नेह व सौहार्द मिला,तो ईरान व बलूचिस्तान के कुछ स्थानों पर काफी कष्ट भी झेलने पड़े।68

इस यात्रा के दौरान पंड़ितजी अनेकों पुस्तकें लिखी और अनुवादित की। मध्य एश्यिा के जनजीवन से संबंधित'दाखुन्दा','जो दास थे','अनाथ','अदीना','सूदखोर की मौत', शादी' आदि ऐसी ही ताजिक भाषा की पुस्तकें थी।जिनका अनुबाद करने से राहुलजी का इन देशों से धनिष्ट सम्बंध हो गया। इन देशों से आकर्षित होने का दूसरा कारण यह भी था कि उन्हें खयाल आया कि आधुनिक ऐतिहासिक घटनाओं को पिछले इतिहास की पृष्ठभूमि में देखना चाहिएं। इस तरह राहुलजी आगे बढ़े और उन्हें यह भी मालूम हुआ कि मध्य एशिया का इतिहास हमारे देश के इतिहास से बहुत घनिष्ट समबन्ध रखता है। द्रविण जाति–जिसने मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के भव्य नगर और यशस्वी सिन्धु सभ्यता को प्रदान किया उसका सम्बन्ध एशिया से भी था।69

बौद्ध संस्कृति के अध्ययन के लिए राहुलजी 2 अप्रैल,1935 को 2 बजे 'गंगा सागर' से जहाज द्वारा रंगून के लिए रवाना हुए और 5 अप्रैल को 9–10 बजे रंगून पहुँचे, यह राहुलजी की बौद्ध चिंतन की यात्रा थी। रंगून में भारतीय प्रवासियों ने राहुल की बड़ी सहायता की।वहॉ राहुलजी ने देखा कि बर्मी लोग बहुत बेफिक्र होते है। जीवन के आनंद को वह वर्तमान में मानते है, भविष्य की उतनी चिंता नहीं करते, गाना–बजाना, नाचना–खेलना उन्हें बहुत पसंद आता है, अगर गॉंव में कोई नाटक आया हो,तो घर

भर के लोग चटाई लेके वहाॅ पहुॅच जाएगे,चाहे घर लुट ही क्यों न जाए।'70 रंगून, भारत के बीच सम्बन्ध को बताते हुए वे लिखते है– "बर्मा और हिन्दुस्तान पहले एक थे।भारत में राजनीतिक आंदोलन तेज हुआ। अंग्रेजों को लगा, बर्मी भी स्वतंत्रता आंदोलन में उतर सकते है। उसने कूटनीति के नाते बर्मा को हिंदुस्तान से अलग कर दिया, इसके पीछे एक आर्थिक उपनिवेश बनाने का स्वार्थ भी था। बर्मी हिन्दुस्तानी एक होते हुए भी एक दूसरे से घृणा करते है। बर्मा ने हिन्दुस्तान के बौद्ध धर्म को अपनाया है, और उसके बड़े–बड़े तीर्थ हिन्दुस्तान में है, लेकिन हिन्दुस्तानी को वह भी'काला'कहते है,मालूम नहीं इस शब्द में गोरों जैसी घृणा है या नहीं। घृणा के कारण है–मारवाड़ी, चेंटी और गुजराती व्यापारियों के सामने बर्मी व्यापारियों का परास्त होना जिसके कारण काला आदमी बहुत खराब है।इस वैमनस्य को अंग्रेज अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते है।हमारे देश को इससे क्या फायदा है,? राहुलजी ने वर्मा में यह भी देखा कि वहाॅ की स्त्रियाॅ सारे एशिया में सबसे अधिक स्वतंत्र है–आर्थिक तौर से भी और सामाजिक तौर से भी।हिन्दुस्तानी उन्हें प्रेम में फॅासते है,वेश्या ओर दासी की तरह रखना चाहते है,अपने बच्चों को भी बेगानों की तरह मानते हैं। बर्मी समझते हैं,कि हिन्दू हम को नीच समझते है। हिन्दुस्तानी मुसल्मान इस बात में ज्यादा उदार हैं,लेकिन वह अपने बच्चों को बर्मी न बना उन पर अपनी संस्कृति और अपना धर्म लादते है।बर्मी समझते हैं मुसल्मान हमारी जाति को कमजोर करते हैं।यह भी वैमनस्य की भारी जड़ है और हाल में कितने ही खूनी झगड़े इसीलिए हुए है। इन सारी समस्याओं का हल यही है कि बर्मा बर्मियों का हो, हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का हो,खून चूसनेवाली देशी–विदेशी जोंकें तबाह हो जायें।'71 वहाँ हिन्दुस्तानियों को दरबानजी कहा जाता है। इस शब्द को सुनकर

राहुलजी मन ही मन खुशी जाहीर की:'यहाँ सब धान बाईस पसेरी का चलन है। बंबई और सिंध में मेहनती आदमी 'भैया' कहा जाता है और यहाँ पसीने की कमाई खाता हिंदुस्तानी 'दरबान' है। यह गुलामी मानसिकता का असर है।72 बर्मा में बौद्ध भिक्षुकों की संख्या ज्यादा है, जिससे बौद्ध धर्म बदनाम है क्योकि पुराने मन्दिरों और स्तूपों की मरम्मत करने की जगह हर आदमी नयें स्तूप, नये मन्दिर बनाना चाहता है। शायद इसीलिए कि यह उसकी स्वतंत्र कीर्ति होगी लेकिन देख तो रहे है, डेढ़ ही दो सौ वर्षो में पहिलेवालों की कीर्तियाँ धूल में मिल रही है।आदमी इतना बेवकूफ क्यों बनता है? अपने को इतना धोखा क्यों देता है?73 राहुलजी की यात्रा आगे बढ़ी । वे क्वालालमपुर पहुँचे जो मलाया की राजधानी है। वहाँ अपने विचार को एक सभा में रखा। राहुलजी ने बताया कि कैसे वज्रयान के विद्धान प्रतिभाशाली कवि चौरासी सिद्ध विलक्षण ढंग से उस समय रहते थे।कोई पनही बनाता था,इसलिए उसे पनदीया कहते थे,कोई कंबल ओढ़कर रहता था, इसलिए उसे कमरीया कहते थे, कोई डमरु रखने से डमरीया कहा जाता था।सिद्ध त्राटक या हिप्नोटिज्म की अदभुत किया के नाते जनता में उसकी धाक थी 74

27अप्रैल1935ई0 को राहुलजी होंगकाँग पहुँचे। वहाँ भी भारतीयों की स्थिति गुलामी से जुड़ी हुई थीं अंग्रेजों ने वहाँ गोरों के लिए अलग बस्तियाँ बनाई थी,जहाँ काले जा नहीं सकते थे। यहाँ भी राहुलजी ने देखा: पहाड़ हरे भरे है और शहरवाले पहाड़ पर तो नीचे से चोटी तक कोठियाँ और बँगले बने हुए है। पहाड़ के उपर सिर्फ यूरोपियन ही घर बना सकते हैं। यहाँ के रहन-सहन देखकर राहुलजी काफी दु:खी हुए।इस संबंध में राहुलजी लिखते है-''एशिया के भूखंड पर ही एशियाइयों का यह अपमान!

मुझे खटकता रहा और मन ही मन सोचे,जिसकी लाठी उसकी भैंस जो ठहरी।75 छःदिन के बाद वहाँ से राहुलजी शाङ्–हैई पहुँचे।शाङ्हैई एशिया का सबसे बड़ा शहर है। राहुलजी ने इस शहर में देखा कि–'इस शहर पर यूरोपीय देशों ने अपना छोटा–छोटा राज्य कायम कर लिया है। जबकि यह शहर चीन भूमि का जीवित अंग है,जिस पर विदेशी गिद्ध बैठकर चोंचे मार रहे है।'76शाङ्हैय और जापान के बीच समुद्र की दो ढाई दिन की यात्रा राहुलजी को करनी पड़ी।पंदहा से जापान तक जिस सभ्यता की यात्रा राहुलजी ने की थी,यूरोप के बाद जापान को दूसरा पूँजीवादी सभ्यता का केन्द्र बताया। इतना ही नहीं जापान को परंपरा और जनतंत्र का बड़ा ठोस आधार बतायें।77 जापान का सफर राहुलजी के लिए बड़ा ही आनन्दमय और ज्ञानवर्धक रहा। जापान में बौद्ध विद्वान 'व्योदो' का आतिथ्य ग्रहण किया। वे लगभग सवा महीने व्योदो के गॉव 'निता' में रहे। जापानी किसानों के तौर–तरीके, खाद का उपयोग, लोकाचार, आतिथ्य को करीब से देखा।साथ ही जापानी लोकधर्म एवं नारी के पिछड़ेपन को भी राहुलजी ने गहरे रुप से पर्यवेक्षण किया। जापान में भूगर्भी रेल की सीढ़ियों पर चढ़ने उतरने में राहुलजी को बड़ा तरद्दुद मालूम हुआ, राहुलजी का दिमाग इस पर सोचने के लिए मजबूर हो गया। वे लिखते है–"दुनिया भी इसी तरह चलनेवाली एक सीढ़ी है।हमारे एक पैर को वह जर्बदस्ती पकड़कर खींच चल देती है,लेकिन दूसरे को हम स्थिर–भूमी पर गाड़ करके रखना चाहते हैं। हिंदुस्तान इस बीमारी का सबसे जबर्दस्त शिकार है,लेकिन हम अपनी धार्मिक सामाजिक सभी बातों में अतीत को पकड़े रखना चाहते हैं। हमारे लोग साइंस पढ़ते हैं, भूगोल पढ़ते है,ज्योतिष पढ़ते हैं,फिर ग्रहण नहाकर पुण्यदान कर सूर्य–चंद्र की मुक्ति कराते हैं और पुराने भ्रम–पूर्ण ज्योतिष पर आधारित भविष्यवाणी पर पूरा भरोसा रखते हैं,

हिमालय की ओर स्वर्ग जाते वक्त पांडवों के गल जाने की बात पर विश्वास करते हैं।चुटिया, जनेउ, धोती, सूटसाट सबको लिए दिए इस बिजली की सीढ़ी के भवसागर को पार कर जाना चाहते हैं।'78 अपने अनुभव के द्वारा जापान के बारे में राहुलजी का कथन है–"जापानी लोगों के बारे में इतना ही कहूँगा, कि साधारण जापानी बड़े ही मधुर स्वभाव के होते हैं।''''''जापान की साधारण जनता बहुत ईमानदार है।उनमें स्नेह और प्रेम है,जो विदेशी के लिए और भी बढ़ जाती है।किसी भी गॉव में जाने पर हर आदमी मुसाफिर की सेवा करने के लिए उत्सुक दिखाई देता है।कष्ट सहने के लिए उनमें अद्‌भुत शक्ति है। घर में प्रिय से प्रिय संबंधी मर गया हो,लेकिन आप कभी उनके मुख की मुस्कुराहट देखकर समझ नहीं पाएँगे कि इसके दिल में पीड़ा का तूफान–चल रहा है। अपने दुख से दूसरे को दुखी करना वह पसन्द नहीं करता। लेकिन जापानी अपमान को नहीं सह सकता मृत्यु से इतनी निर्भीक जातियॉ कम ही है।लेकिन यही सारी बातें जापानी शासकों के बारे में नहीं कही जा सकती।वह अपने स्वार्थ के लिए सबकुछ कर सकते है।वह साधारण जापानी जनता को यह सिखलाते है कि'देश के लिए जो कुछ किया जाए,सब धर्म है'।और देश से मतलब है अपना स्वार्थ।"79

जापान के विभिन्न स्थलों के सफर के बाद राहुलजी का दूसरा पड़ाव कोरिया था। कोरिया छोटा–सा प्रायद्वीपीय देश है। राहुलजी ने नोट किया 'कोरिया में किसी भारतीय भिक्षु के आने का अवसर सात–आठ सौ बरस से इधर तो नहीं हुआ होगा।'80 राहुलजी ने वहाँ के सचिवालय के साथ ही साथ विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया और महशूस किया कि कोरियन और जापानियों का आपस में बर्ताव बहुत कुछ

वैसा ही है,जैसा अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियों का। इतना फर्क जरुर है, कि जापानी कोरियन दामाद का स्वागत करते हैं,लेकिन कोरियन इसे शंका की दृष्टि से देखते हैं,उन्हें डर लगता है कि ऐसा करने से चन्द लाख कोरियन 6 करोड़ जापानियों में हजम हो जायेंगे।81 राहुलजी ने एक चीज और देखी कि कोरियन संगीत में कोरिया के लोक संगीत से अधिक जापानी संगीत का प्रभाव था।यहॉ यूरोपियन संगीत कोरिया के लोक संगीत को दबाता था।युवा मन पर इस दबाव का असर भी था।उस दबाव को बदलने का उत्साह उनमें अभी नहीं आया था।जापान के क्रूर दमन के कारण वह खुल कर अपने भावों को प्रकट नहीं करना चाहते थे,लेकिन मालूम होता था कि कोरियन अपने देश को आजाद देखना चाहते हैं।जापानी पुरुष बेरोक–टोक यूरोपियन पोशाक पहनते है,किन्तु कोरियन वैसी पोशाक पहनकर जापानी कहलाने के लिए तैयार नहीं।वह अपने लम्बे चोंगा–जैसी पोशाक को पहिनने में अभिमान अनुभव करते हैं।82 राहुलजी ने एक बात और स्पष्ट की कि नवीं–दसवीं सदी में तुर्क और मंगोल जातियॉ कोरिया के पास तक रहती थी। उइगुर, किर्गिज–कजाक,तुर्कमान आदि तुर्क जातियाँ हैं। 83

19 अगस्त 1935 ई0 को राहुलजी कोरिया की सीमा पार कर मंचूरिया पहुँचे।वहॉ के जापानी बाजार,जापानी सेना के कार्य भवन और शिक्षा विभाग देखकर राहुलजी को लगा,जापानी मंगोल विभाग को सिर्फ मंचूरिया के मंगोलों के लिए ही इस्तेमाल नहीं करना चाहता है,बल्कि उनके सामने बाह्य मंगोलियॉ का स्वतंत्र प्रजातंत्र और बुरयत सोवियत प्रजातंत्र भी था,जापानी आशा करते थे कि एक दिन सारी मंगोल जाति उनके झंडे के नीचे आ जाएगी।पर शंति–रक्षा के नाम पर जापान को मंगोलिया

गणतंत्र के आगे नाक रगड़नी पड़ी थी। राहुलजी एक चीज और देखे सफेद चमड़े वाले व्यक्ति की इजत मंचूरिया में कुछ भी नहीं है। आज भी हजारों गरीब सफेद रुसी सिड्किड् में रेलवे में चापरासी,पैटमैन जैसी नौकरी कर पेट पालते हैं। इनका चमड़ा वैसे ही सफेद था जैसे अंग्रेजों, अमेरिकनों या फ्रांसीसियों का।84 राहुलजी ने इन देशों के भ्रमण करने के बाद यह अनुभव किया कि बौद्ध धर्म के कारण भारत का एशिया के विभिन्न देशों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। बौद्ध धर्म का युग भारत में यदि ईसा पूर्व की दूसरी–पहली सदी को लें तो हमें भारत और मध्य एशिया के सांस्कृतिक संबन्धों के अकाट्य प्रमाण मिलते है। भारत के मिट्टी के वर्तनों को पकाने के बाद रँगने का ढंग भी उसी काल के मध्य एशिया के फरगना के ढंग से मिलता जुलता है। इन प्रमाणों से यह पता लगता है कि उस काल में लोग मध्य एशिया से भारत आते जाते थे। तक्षशिला और मध्य एशिया में पाये गये शीशों तथा कटोरियों में बहुत समानता पायी जाती है। सोवियत पुस्तक 'घुमन्तू कबीले भारत की ओर ' में इस समानता पर प्रकाश डाला गया है।85 राहुलजी की यात्रा वहाँ से 29 अगस्त 1935 ई0 को सोवियत–भूमि की ओर बढ़ी। साम्राज्यवादी जापान से साम्यवादी सोवियत रुस की सीमा पार करते समय राहुलजी अपनी भावनाओं के बारे में कहते है–"29 अगस्त से 21 सितम्बर तक मुझे सोवियत भूमि में साँस लेने की मौका मिला। मैं अपना धन्य भाग समझा, क्योकि 1917 की लालक्रान्ति ने दुनिया के करोड़ों आदमियों में विचारों की क्रान्ति पैदा की, और मेरे विचारों पर तो उसने स्थायी मुहर लगा दी। गाँवों, शहरों, स्त्री–पुरुषों का जो स्वरूप मैंने 'बाईसवी सदी' में चित्रित किया था, वह कल्पना जगत की चीजें थी। लेकिन यहाँ ठोस दुनिया में उन्हें साकार रूप दिया जा रहा था, फिर सोवियत भूमि को मैं अपनी श्रद्धास्पद भूमि समझूँ,

तो आश्चर्य क्या?''86 पंजाब की ज्वालामुखी की तरह रूस में भी ज्वालामाई का मन्दिर है। राहुलजी ने 16 वर्ष पहले ज्वालामाई की बात एक साधु से सुनी थी कि माई के मंदिर में जो नैवेद्य रखा जाता है, माई अपने आप ग्रहण करती है तथा वहॉ अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।उस मंदिर को देखने की लालसा जो उनके हृदय में थी, वहाँ आज मंदिर के द्वार पर पहुँच कर अपनी लालसा पुरा किये। मंदिर देखने के बाद राहुलजी इस तरह के अंधविश्वास पर अपना बिचार प्रकट करते हुए लिखते है-''ऐसी जगह आग का जल उठना और भीतर की गैस से उसका बराबर जलते रहना बिल्कुल स्वाभाविक बात है। शायद हिन्दुओं की ज्वालामाई उस वक्त प्रकट हुई थी, जब कि मिट्टी के तेल का उपयोग अभी शुरू नहीं हुआ था।''87 इस स्थान के दर्शन के बाद राहुलजी सोवियत भूमि के अनेको स्थलों की यात्रा करते हुए, काफी चमत्कृत हुए। सोवियत रूस में न केवल सामाजिक रीतिनीति का स्तर अत्यन्त ऊँचा है, बल्कि लोगों में सहृदयता की मात्रा भी बहुत अधिक है। दुकानों से लेकर यातायात के साधन, सड़क से लेकर बच्चों के खेलने का उद्यान, किसी व्यक्तिगत सम्पति के अधीन नहीं, बल्कि राष्ट्राधीन है। 11सितम्बर को अकेले घूमते हुए पूँजीवादी बाजार और सभ्यता से साम्यवादी बाजार और सभ्यता का अंतर देखते और परखते रहे। प्रथम रुस-यात्रा से लौटते समय राहुल ईरान के रास्ते से होकर लौटे। राहुलजी ने वहाँ के रीति-रिवाज, को देखा और उन्हें लगा, भारत और ईरान कितने समय से एक दूसरे के करीब है, फिर भी एक धुंध अभी भी दोनों के राजनीतिक जीवन में है।88 ईरान में किस तरह मंगोल शासक पहले बौद्धधर्मी थे और फिर राजनीतिक लाभ के लिए कभी इस्लाम और कभी ईसाइयत की ओर झुकते रहे। अंत में दूर के सलीबी योद्धाओं से आशा न देख उन्हें शासितों के धर्म इस्लाम को स्वीकार

करना पड़ा। इस्लाम ने ईरान और भारत से क्यो नहीं स्थान त्याग किया?89 ईरान के बाद तेहरान और अस्फहान गये। वहाँ के ऐतिहासिक स्थानों को देखते हुए शीराज की ओर रवाना हुए। वहाँ ईरान के विश्वप्रसिद्ध कवि हाफिज की मजार तथा शेख सादी की मजार को देखा और वहीं उन्होंने शान्त वातावरण और ईरानी संस्कृति को करीब से देखा। वही रात को तमाम स्त्री–पुरुषों की जमात में बैठकर राहुलजी ने एक फिल्म देखी। राहुलजी विभिन्न एशियाई देशों के यात्रा के बाद, प्राचीन में भारत का एशिया के विभिन्न देशों से किस तरह और कैसे सम्बन्ध रहा?, इसे स्पष्ट किये हैं। हुण, द्रविण, शक, आर्य भारत कैसे आए, इनका एक दूसरे से किस तरह का सम्बन्ध रहा? राहुलही लिखते हैं–"आर्यो का सम्पर्क द्रविड़ जाति से सबसे पहले सिंधु उपत्यका में नहीं बल्कि ख्वारेज्म में हुआ। वहाँ पराजित कर उनका स्थान ले आर्य भारत की ओर बढ़े। उनका बढ़ाव पिछली विजित भूमि को बिना छोड़े आगे की तरफ होता रहा, इसीलिए भारतीय आर्यो की परम्परा में अपने पुराने छोड़े हुए स्थानों का उल्लेख नहीं पाया जाता। आर्यों की अनेक लहरों के बाद ग्रीक लोगों ने भी बाख्त्रिक से आकर भारत के कुछ भाग पर शासन किया। शक–कुषाण भी वहाँ से होकर आये। तथाकथित हूण–हेफताल भी मध्य एशिया से भारत की ओर बढ़े। तुर्क और इस्लाम भी वहाँ से चलकर भारत आये। इन शासकों और इनकी जातियों के इतिहास का एक भाग मध्य एशिया में पड़ा रहा जिसे जाने बिना हम अपने इतिहास को समझने में गलती कर बैठते हैं। हूणों के बारे में राहुलजी बताते है कि असली हूण, ट्रांस ओक्सासियस और भारत में नहीं गये। ताजिक से ब्याह कर ज्यादा सफेद हो जाने से हूणों या यूशिकों का यह नाम पड़ा।"90

राहुलजी ने अनुभव किया कि एशिया के विभिन्न देशों पर बौद्ध संस्कृति का प्रभाव बहुत है ।भारतीय संस्कृति देश की सीमा से बाहर प्रायः बौद्ध धर्म के साथ गई, लेकिन यह भी कहना पड़ेगा कि जहाँ तक इन्दोनेशिया, इन्दो–चीन और अफगानिस्तान का सम्बन्ध है, सांस्कृतिक प्रचार और प्रसार के काम में ब्राम्हणधर्मी भी पीछे नहीं रहे। स्वतंत्रता खोने के साथ उन देशों से भारत का सम्बंध नहीं रह गया,जो कि भारतीय संस्कृति से आज भी अनुप्राणित है। इस विस्मृत संबंध को फिर से सामने रखने में बौद्ध धर्म के ज्ञान ने हमारी बड़ी सहायता की, इसमें संदेह नहीं। यदि हम भारत के पुराने काल के उस कर्मठ जीवन के बारे में जानना चाहते है,तो एशिया की मुख्य मुख्य भाषाओं में अब भी मौजूद बौद्ध साहित्य, तथा वृहतर भारत का इतिहास और भूगोल हमारी कूपमंडूकता दूर करने में सहायक हो सकता है।91

इस प्रकार राहुलजी की एशिया–यात्रा सिर्फ यात्रा ही नहीं बल्कि विचार की यात्रा है। हर देश के धर्म, संस्कृति, रीति रिवाज और समाज को निकट से जानने के लिए कभी ईरान के मुसलमान परिवार के अतिथि रहे, तो कभी किसी तिब्बती या जापानी बौद्ध परिवार के। अनवरत ज्ञानसाधना करते हुए वे कभी दुर्गम भूखंड़ों में विचरते रहे,तो कभी जेल की कोठरियों में बंद रहे।92 राहुलजी एशिया के विभिन्न देशों की यात्रा करने के पश्यात् इन देशों की सामाजिक,राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों को संग्रहित कर 'मध्य एशिया का इतिहास' नामक पुस्तक लिखे। इस पुस्तक में एशिया वालों की समूची जीवन पद्धति का वर्णन किये है, पशुचारण, धातुनिमार्ण, शस्त्र–अविष्कार, सामूहिक जीवनपद्धति, शिविरों में रहना, आखेट, प्रारम्भिक कृषि और युद्धों द्वारा संग्रहशील समाजों को लूटना इसके साथ चीन, भारत, अफगानिस्तान,

ईरान, कैस्पियन सागर और रुस के सांस्कृतिक राजनीतिक इतिहास का विस्तार से विश्लेषण किये है। राहुलजी की यह ऐतिहासिक कृति न केवल सामाजिक सरचना, जाति और वर्ग विभाजन, शासक और शासितों के अन्तविरोधों एवं विभिन्न कालखण्ड़ों से गुजरती मानव की सामाजिक विकास यात्रा को ही दर्शाती है,अपितु राहुलजी की विचारों के विभिन्न आयामों को भी रेखांकित करती है।

द) यूरोप संबंधी राहुल सांकृत्यायन के विचार

राहुलजी का जीवन यायावरी की एक महागाथा है। उनका अधिकांश जीवन वस्तुतः एक यात्री का जीवन रहा है। लंका तीसरी बार आकर राहुल बाबा आनंदजी से कभी भावी यात्राओं पर बात करते, कभी अपने अधूरे कार्यो को पूरा करने की योजना बनाते,वक्त पर विद्यार्थियों को पढ़ाते, वक्त पर भाषा सीखाने का अभ्यास करते।93 पाँच जुलाई 1932 को आनन्द कौसल्यायन के साथ राहुलजी यूरोप रवाना हुए। यह पर्यटन बौद्ध चेतना की व्याप्ति का तजुर्बा पाने के साथ–साथ राहुलजी की वैयक्तिक चेतना के ज्ञानात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रचार का सूचक भी था। 6 वजे कोलम्बो बन्दरगाह से 'दार्तयन्नॉ' नामक जहाज से यूरोप के लिए दोनों चल पड़े। राहुलजी लिखते हैं– ''यूरोप में लोग कोट–बूट पहन के जाते हैं, और हमारे बदन पर थी, ढ़ाई हजार बरस के पहिले की भिक्षुओं की पोशाक चीवर। उन्होंने देखकर खूब जोर से हँसकर हमारा स्वागत किया।''94 समुद्र की यात्रा क्रम में राहुलजी ने देखा कि 'शाम के वक्त योरोपीय स्त्री पुरुष डेक पर जमा होते, फोनोग्राम बजता और वह खूब नाचते। राहुलजी यूरोपीय स्त्री–पुरुष के जीवन संदर्भ के बारे में लिखते हैं–''यूरोपीय स्त्री पुरुषों को बहुत नजदीक से और सो भी चौबीसों घंटे पहले पहल

यहीं देखने का मौका मिला। कल तक एक दूसरे से बिलकुल अपरिचित,आज खूब हँसते खेलते थे। स्त्री पुरुषों में कोई बिलगाव नहीं था। मैंने अनुभव किया कि यूरोपीजन स्त्री पुरुष प्रेम के विषय में बहुत खुले होते है, वैसा अन्यत्र नहीं देखा जाता, तो भी इसके कारण नहीं कह सकते कि वह दूसरों की अपेक्षा जयादा कामुक है।''95 राहुलजी ने एक बात का और अनुभव किया कि एशिया की अपेक्षा यहाँ का मानव ज्यादा स्वतंत्र है।96 राहुलजी 18 जुलाई को स्वेज नहर पार करते हुए पोर्टसईद पहुँचे। वहाँ स्त्री–पुरुषों के नंगे वीभत्स फोटो बहुत बिक रहे थे, तीनों महाद्वीपों की रुपाजीवाओं की पोर्टसईद में हाट है। वहाँ के लोग फ्रांसीसी, अंग्रेजी और अरबी तीनों भाषाएँ फरफर बोल रहे थे। उस समय राहुलजी का मन 2200 वर्ष पहले मिश्र में बौद्ध–भिक्षुओं पर सोचता रहा कि सिकंदरिया में कभी बौद्ध–विहार थे। अब उनका कोई चिंह नहीं है।97 राहुलजी 22जुलाई को मारसेई के बन्दरगाह पर पहुँचे। राहुलजी मार्सेई शहर घूमने के बाद विश्व प्रसिद्ध नोत्रदम गिरजाघर को देखने गए। इस गिरजाघर में पूजी जाने वाली माता मरियम व शिशु ईसा की मूर्ती काफी चमत्कारी मानी जाती है। राहुलजी के मन में इस तरह के बातों पर विश्वास बहुत पहले से मिट चुका था। इसीलिए इस चमत्कारी स्थान को देखने के बाद राहुलजी कहते है–''माई ने न जाने कितने करोड़ अंधो को ऑख दी, कितने ही लुंजों को पैर दिया प्रमाणस्वरुप लुंजों,लुगड़ों की बहुत सी वैसाखिया मंदिर में टँगी हुई है। माई के प्रताप के लिए बड़े–बड़े लोगों ने प्रमाणपत्र दिए है,जिनमें एक इंग्लैंड की राजमाता भी है। कौन कह सकता हे कि ईसाइयों के पास कामाख्या माई,विंध्यवासिनी भवानी और महाकाली की कमी है। मुझे जरुर इसका अफसोस हुआ,कि मेरे पास अब वह हिन्दू हृदय नहीं था कि इन कहानियों पर विश्वास करता।'' 98

इस यात्रा के दौरान राहुलजी 4 यूरोपीय देश के अनेको शहरों में धूमा और अनुभव किया कि वहाँ के समाज में वर्ग–भेद का भावना काफी है। राहुलजी लिखते है–"लेनिनग्राद में मजदूरीनें भी बाजार या विनोदोद्यान में जाते समय भद्र वर्ग की महिलाओं जैसे कपड़ा पहिनकर निकलती थी, वहाँ फटे बुरे कपड़े पहिने नर–नारी मिलते नहीं थे, किन्तु यहाँ मजूरों के उपर दरिद्रता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी, और उसके विरुद्ध उच्च और मध्यम वर्ग की फैशन से भरी नारियॉ सौन्दर्य–प्रदर्शन करती देखने में आती थी। जरा ही आगे बढ़ने पर एक और बात ने दोनों संसारों के अन्तर को स्पष्ट कर दिया। एक आदमी ने आकर अंग्रेजी में कहा–बहुत सुन्दर लड़कियॉ और बढ़िया अंगूरी शराब तैयार है,चलिए,रात की मेहमानी कीजिए।99 इस तरह अंग्रेजी मजदूर परिवारों की क्या अवस्था होती होगी, इसका अनुमान आप आसानी से कर सकते है तो दूसरे तरफ बड़े घरों के लोग ज्यादा कठोर हृदय के होते है, कुत्ता छोड़ देते हैं, नही तो टेलिफोन करके पुलिस बुला उसके हवाले गरीबों को कर देते है।100 राहुलजी इस यात्रा के दौरान अपने सर्वेक्षण के आधार पर यह बतायें कि फिनलैंडवासी और भारत के द्रविण–मुंडा का सम्बन्ध एक ही वंशज से रहा है। भाषातत्वज्ञों का विचार है कि नव–पाषाण युग में द्रविड़ों की पूर्वज जाति की एक शाखा उतर की ओर फेंक दी गई। उसी की संतानें कोमी, इस्तोनिया और फिनलैंड में आजकल रह रही है। हमारे यहाँ शुद्ध द्रविड़ की पहचान शरीर का काला होना है, लेकिन हेलसिंकी में काले बालवाले नर–नारी भी मिलने बहुत मुश्किल थे। क्या 6–7 हजार वर्षो तक अतिशीतल प्रदेश में रहने के कारण इतना अन्तर हो गया? हॉ, हेलसिंकी की गलियाँ में भी ऐसे नर–नारी बहुत थे, जिनका फोटो लेकर यदि किसी शुद्ध द्रविड़ पुरुष–स्त्री के फोटो से मिलाया जाता

तो समानता साफ दिखलाई पड़ती–फरक रंग का ही था,नही तो नाक, चेहरे की हड्डी और बनावट तथा शरीर की खर्दकायता एक ही जैसी थी।101 दूसरी यात्रा क्रम में राहुलजी स्वीडन गये। वे लिखते है कि "स्वीडन में रहने वाले लोगों की खोपडियाँ लम्बी तथा कद ऊँचे थे। इन्हें असली हिन्दी–यूरोपीय जाति का नमूना माना जाता है। यहाँ के लोगों में सौन्दर्य भी अधिक है, यह मानना पड़ेगा।"102 यूरोप जाते समय एक चुनौती राहुलजी के मन में थी, 'हम भारतीय, तिब्बती, चीनी, जापानी, मंगोल, रूसी, लंकावासी काम में किसी यूरोपीय से पीछे नहीं हैं, मध्य–एशिया के खंडहरों में कई हजार अभिलेख हमारी समृद्धि संस्कृतियों के मिले हैं। जिनके बारे में कितनों का साधारण–सा ज्ञान है? कितने भारतीयों ने उनके उद्धार और पठन में समय लगाया? यदि इसका उत्तर अभी तक नहीं में है, तो कम से कम ऐसा उत्तर स्वतंत्र भारत के लिए क्षम्य नहीं हो सकता।103, 14वीं सदी तक यूरोप जो बर्बर समझा जाता था। इटालियन विद्वान अपने देशवासियों को इस बात के लिए फटकारते थे,कि वह क्यों अरबों को सर्वगुण सागर और देवता समझते है। लेकिन आज 600 वर्ष बाद पासा उल्टा हो गया है। 2200 वर्ष पहिले भी अशोक के वक्त बौद्धभिक्षु मकदूनिया और दूसरे यूरोपीय सभ्य देशों में धर्म प्रचार के लिए गए थे, हम दोनों भी उसी काम के लिए यूरोप जा रहे थे, लेकिन हममें उतना आत्मविश्वास नहीं था। हमारे पूर्वजों के पास दूसरे देशों को देने के लिए उच्च सन्देश था–धर्म दर्शन का ही नहीं, कला, विज्ञान का भी।104 राहुलजी उस समय विक्षुब्ध सागर को देखते हुए सोच रहे थे, 'क्या यूरोप और भारत, रूस और मिश्र, चीन और जर्मनी, अमेरिका और अफ्रीका बुद्ध के मध्यम–मार्ग की खोज में नहीं है।105 यात्री राहुलजी का यूरोप की भूमि को देखकर पहली उत्सुकता तो शान्त हो गई,लेकिन उनके मन में न जाने

क्या क्या भाव उठ रहे थे। राहुलजी टॉमसकुक के आदमी के जिम्मे सामान सौप पेरिस के लिए चल पड़े।राहुल ने पेरिस में अनुभव किया कि–" पेरिस में मुसाफिर को ओढ़ना–बिछौना ढोने की जरुरत नहीं है, यह सब चीजें होटल की ओर से मिलती है।हमारे लिए पेरिस नगर तमाशा और दूसरों के लिए हम तमाशा थे तथा यहाँ के मानव एशिया की अपेक्षा ज्यादा सवतंत्र है।"106 राहुल और आनन्दजी ने पेरिस शहर में घुमते हुए,वहाँ के श्रेष्ट कलात्मक संग्रहालयों को देखा, वहीं विश्व विख्यात फ्रंसीसी विद्वान पॉल पेलियो से भी राहुलजी मिले। राहुलजी इस संदर्भ में लिखते है–"फोन करने पर पता लगा कि डाक्टर पेलियों घर पर ही है। साढ़े तीन बजे हम उनके पास गए। डाक्टर पेलियो चीनी भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। मध्य एशिया के अनुसंधान में स्टाइन की तरह इन्होंने बहुत काम किया। मैंने उन्हें अपनी सम्पादित 'अभिधर्मकोश' की एक प्रति भेट की। कितनी ही देर हम लोग बात करते रहे।107 वही एक बुढिया से राहुलजी अपने फ्रेंच ज्ञान का परिचय देना शुरु किया लेकिन एकाध ही मिनट में गाड़ी अटक गई। राहुलजी ने बुढ़िया से लड़के बच्चों के बारे में पूछा, बुढ़िया ने जबाब दिया–'ज स्वि तू सेल' और शब्दों का अर्थ तो राहुलजी को मालूम था, लेकिन अंतिम शब्द का अर्थ उन्हें नहीं मालूम था। इसलिए बुढ़िया का मूल अभिप्रायः नहीं जान सके। उस अनुभव पर राहुलजी ने यह नोट लिखा :"वस्तुतः भाषा के सीखने का अच्छा तरीका किताब नहीं है,वार्तालाप है।किताब पढ़ने वाले का ध्यान ज्यादातर अक्षरों की ओर होता है,शब्दों के उच्चारण की ओर नहीं।"108 राहुलजी मित्र के तौर पर आनंदजी के साथ इंग्लैड और यूरोप आए थे।लंदन के विक्टोरिया स्टेशन पर दोनों भिक्षु पहुँचे। महाबोधि सभा के प्रतिनिधि दया हेवातिवारणे लेने के लिए स्टेशन पर पहुँचे। रात थी, लेकिन बिजली के प्रदीपों से लन्दन की

सड़के जगमग–जगमग कर रही थी।हम मोटर से महाबोधि सभा भवन में चले गए।रात को खूब टॉग पसारकर सोए।राहुलजी में साम्यवादी सोच एवं दृष्टिकोण का प्रसार काफी तेजी से बढ़ रहा था।लन्दन रहते हुए राहुलजी ने अंग्रेजी पूंजीवादी अखबार में तिब्बत–कला के क्षेत्र में नई कल्पनाएँ करके बुद्ध के उपदेश का बिल्कुल उल्टा–पुल्टा अर्थ में देखा। राहुलजी लिखते है–"अभी अँग्रेजी पत्रों का हमें पहिला तजर्बा था,और भारतीय पत्रों के झूँठ–सॉच को देखकर कुछ शंकित दृष्टि से देख रहे थे।लेकिन आगे जो तजर्बा हुआ,उससे मालूम हो गया,कि काले को सफेद और सफेद को काला करने की जितनी क्षमता इंग्लैड के पत्रों में है,अभी वहॉ तक पहुँचने में हमारे पत्रों को बहुत दिन लगेंगे ,'डेली हेरल्ड'के प्रतिनिधि ने आकर हमसे कुछ सवाल किए,हमने सीधे–सादे शब्दों में जबाब दे दिया कि हम लोग इंग्लैड वासियों के सामने बुद्ध की शिक्षा रखना चाहते है।उसने छाप दिया,कि ये दोनों बौद्ध भिक्षु सारे इंग्लैड को बौद्ध बना डालने की सोच रहे है। इस तरह कूपमंडूकता,स्वार्थाधता और अबुद्धिप्रधानता यहॉ के पत्रकारों में देखा।"109 राहुलजी को कुछ ऐसे प्रेत विद्याविशारद पत्रकारों से भी भेट हुई जो तरह तरह की खुरफातें लिखते।ऐसे पत्रकारों का उपहास उड़ाते हुए राहुलजी ने कहा कि कितने ही अक्ल के अन्धे इन अर्ध–विक्षिप्तों की बकवास को भी विद्वता समझते है।"110

इग्लैड में भूत–प्रेत, जादू–मंतर, तावीज, स्वप्न पर विश्वास वहाँ की जनता में खूब थी। इंग्लैड में जहाँ–तहाँ से यंत्र या तावीज के लिए मेरे पास चिठियाँ आई। साहेब लोग गंडा–तावीज नहीं मानते, यह धारणा तो मेरी बहुत पहिले ही हट गई थी, पर 4 अगस्त को एक महिला बात करने आई जो चित्र–विचित्र सपने देखा करती थी।

स्वप्न की अद्‌भुत शक्ति पर विश्वास प्राथमिक मानव से चला आ रहा है। इतना ही नहीं वहाँ मुझे थियोसाफी की बहुत सी पुस्तकें पढ़ने को मिली। सिनेट की पुस्तक 'महात्माओं की चिठियॉ' को पढ़कर मेरे दिल में आग लग गई।दिन दहाड़े झूठ और बौद्धिक डकैती को देखकर ऐसा होना ही चाहिए । तिब्बत में उन महात्माओं को कोई नहीं जानता, जिनकी चिठियाँ यहाँ एक भद्र पुरुष ने छापी थी। तारीफ यह कि इन महात्माओं में से कितनों के स्थान शिगर्चे आदि बतलाया गया। शिगर्चे शायद अज्ञात तिब्बत का अज्ञात स्थान होने से बाहर के लोगों की आखों में धूल झोंकने के लिए अच्छा नाम था, किन्तु मैं जानता था कि वह भी हिन्दुस्तान के हजारों कसबों की तरह एक कस्बा हैं,हाँ, कुछ ज्यादा पिछड़ा हुआ। थियोसोफी को तो मैं समझने लगा कि यह धोखेबाजों का एक गुट है, जो धर्म के नाम पर पच्छिमी प्रभाव के नाम पर लोगों को उल्लू बनाता है।111 राहुलजी ने देखा कि इंग्लैण्ड में अनेकों धर्मो का बोलबाला है। इंग्लैण्ड को अपने-अपने धर्म में खींचने के लिए कितने धर्मप्रचारक जोर लगा रहे है।बौद्ध भी इस काम में कुछ तत्परता दिखला रहे थे। लेकिन वह तत्परता कितनी हल्की थी,यह इसी से मालूम है कि चीन,जापान जैसे विशाल बौद्ध देश ने भी नहीं,श्याम जैसे स्वतंत्र राष्ट्र ने भी नहीं, बर्मा ने भी नहीं,सीलोन ने-बल्कि कहना चाहिए,सीलोन के एक व्यक्ति ने लन्दन पर बौद्ध धर्म का झंडा गाड़ना चाहा। रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेन्ट इसाई धर्म तो खैर, इंग्लैण्ड को अपनी बपौती जागीर समझता है,क्योकि वह वहाँ हजार-पाँच सौ वर्ष पहिले पहुँचा था। इस्लाम ने भी अपनी मस्जिद बना ली है-पहिले डेढ़ ईट की लेकिन द्वितीय महायुद्ध के बाद वह डेढ़ लाख ईट की बनेगी। यूहदी तो ख़ैर,अपने धर्म को खून से सम्बद्ध मानते है,और उनके कितने ही मंदिर है।हिन्दू धर्म बचा हुआ था,अब वह भी वहाँ पहुँच गया।112

दो तीन दिन वहाँ के रहने के बाद राहुलजी को यह बात जरुर खटकी, बौद्धधर्म यदि इंगलैण्डवालों का धर्म बनना चाहता है, तो उसे इंगलैण्ड के बातावरण में रहना चाहिए लेकिन यहाँ धर्म–प्रचार के लिए जो भिक्षु आए थे, वह अपने साथ लंका का वातावरण लेकर आए थे। उनका रसोईया लंकावासी, भोजन लंका जैसा और साथ में रहनेवाले विद्यार्थी थी सारे लंका ही के,ऐसी अवस्था में वह कैसे इंग्लैण्ड–निवासियों के साथ मिश्रित हो सकते थे। खैर मैं धर्मप्रचार की दृष्टि से तो वहॉ आया नहीं था और न महाबोधि सभा के प्रबन्धक मुझसे इसके बारे में कुछ राय पूछते थे।113 राहुलजी ने देखा कि धर्मो के कितने ही पक्षपाती इस बात का बहुत खतरा महसूस कर रहे हैं कि आगे चलकर धर्म कहीं लुप्त न हो जाय। इसलिए लन्दन में कई धर्मो के छुटभैया नेता मिल के सर्वधर्म–मित्र–मंडली की स्थापना करने जा रहे थे। बौद्धों के बिना ऐसी मंडली भला पूरी कैसे हो सकती थी? उन्होंने हमारे यहाँ भी निमंत्रण भेजा आनन्दजी ने देखा,तो कहा ईश्वर का नाम रहने पर तो बौद्ध इस संगठन में नहीं शामिल हो सकते,क्योकि बौद्ध ईश्वर को नहीं मानते वहॉ बैठे एक मौलवी को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ,कह उठे–'या अल्लाह! यह भी कोई धर्म है,जिसमें खुदा के लिए कोई स्थान ही न हो।'खैर,बौद्धों को उसमें रखना था,इसलिए ईश्वर की बात हटा दी गई।114 राहुलजी का बौद्धधर्म के साथ भी कच्चे धगे का सम्बन्ध था। वे लिखते है–"बुद्ध के प्रति तो मेरी श्रद्धा कभी कम नहीं हुई। मैं उन्हें भारत का सबसे बड़ा विचारक मानता रहा हूँ, और मैं समझता हूँ कि जिस वक्त दुनिया के धर्म का नामोनिशान न रह जायगा,उस वक्त भी लोग बड़े सम्मान के साथ बुद्ध का नाम लेंगे। मैंने उनके वचनों के पढ़ने के बाद समझा,कि वह भी दुनिया के साम्यवादी बनने का सपना देखते थे।"115 तकनीकी विकास के चरमोत्कर्ष पर यूरोप के देश

बसे हुए थे। राहुलजी ने हमेशा अपनी मातृभूमि भारत की मूल सामाजिक समस्याओं के स्थायी निदान के बारे में सोचना चाहा।यहॉ की तकनीकी प्रगति को देखते हुए अपने देशवासियों के विषय में सोचते हुए राहुलजी का कहना है–" इंग्लैण्ड में भूगर्भी–रेल की सीढ़ियों पर पैर रखने के बाद हमने महसूस किया कि दुनिया भी इसी तरह चलनेवाली एक सीढ़ी है।हमारे एक पैर को तो वह जबर्दस्ती पकड़कर खींच चल देती है,लेकिन दूसरे को हम स्थिर भूमि पर गाड़ करके रखना चाहते हैं। हिन्दुस्तान इस बीमारी का सबसे जबर्दस्त शिकार है। परिस्थितियॉ जबर्दस्ती एक टॉग को खींचकर उसे भविष्य की ओर ले जा रही हैं, लेकिन वह अपनी धार्मिक, सामाजिक सभी बातों में अतीत को पकड़े रखना चाहता है।हमारे लोग साइंस पढ़ते हैं,भूगोल पढ़ते हैं,ज्योतिष पढ़ते हैं, फिर ग्रहण नहाकर पुण्यदान कर सूर्य–चन्द्र की मुक्ति कराते है, और पुराने भ्रमपूर्ण ज्योतिष पर आधारित भविष्यवाणी पर पूरा भरोसा रखते हैं,हिमालय की ओर स्वर्ग जाते वक्त पांडवों के गल जाने की बात पर विश्वास करते हैं:चुटिया,जनेउ,धोती,छूतछात सबको लिये दिये इस बिजली की सीढ़ी के भवसागर को पार कर जाना चाहते हैं।116, 22 जुलाई को राहुलजी ब्रिटिश म्युजियम देखने गये।उस म्युजियम में इंग्लैड की साम्राज्यवादी समाज–व्यवस्था और बीसवीं सदी के आधुनिक जीवन–पर्याय के विभिन्न रंग–रुपों को देखकर राहुलजी अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते है–"ब्रिटिश म्युजियम फिर से सजाया जा रहा था। इसकी तुलना लेनिनग्राद के एर्मिताज म्युजियम से करने पर अंग्रेजों के सांस्कृतिक प्रेम की गति की मंदता साफ मालूम होती थी। भूतत्व और सांइस के म्युजियमों को इतनी जल्दी सजा देने से यह भी मालूम हो गया कि अंग्रेज कितने यर्थाथवादी हैं। इंगलैंड की भूमि में क्या क्या सम्पति है,और उसकी भूमि का निर्माण कैसे हुआ, इसे

बतलाने के लिए एक एक इलाके को भूतत्व म्युजियम में अच्छी तरह दिखलाया गया था। वहाँ से निकलनेवाली चीजों का जहाॅ संग्रह करके रखा गया था, वहाँ साथ ही नक्शे और रेखाचित्र बनाकर उन्हें अच्छी तरह समझा दिया गया था। मुझे ख्याल आ रहा था,भारत की भूमि भी रत्न–गर्भा है,कब वहॉ के भू–गर्भ की सामग्री इस तरह दिल्ली आदि में इकट्ठी की जाएगी और उसे छात्रों और लोगों को जानने का मौका मिलेगा।::::::::अल्वर्ट म्युजियम की चित्रशाला में देखने से मालूम होता था,कि इंग्लैड पन्द्रहवी सदीं में ही वस्तुवादी हो गया था,जबकि रुस को वहॉ पहुॅचने में 18 वीं सदी तक इंतजार करना पड़ा।''117 लंदन में राहुलजी का बहुत–सा समय साम्यवादी साहित्य,विशेषकर रुस संबंधी पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों के खोजने और पढ़ने में बीता। राहुलजी के सम्बन्ध में विष्णु चंद्र शर्मा लिखते है–''किताबों का कीड़ा वह अपना एक दुर्गुण मानते थे।पर लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम की पुरानी मूर्तियॉ और कला की चीजें वह ध्यान से देख रहे थे।डॉ0वरनेट भारतीय तत्वविज्ञान के अच्छे वृद्ध पंड़ित थे।उन्होंने राहुलजी की ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय में बैठ कर पढ़ने में सहायता की।118 राहुलजी की यात्रा जारी रही। उन्होंने 16 सितम्बर को जर्मनी की धरती पर कदम रखे। वहाँ पूर्व परिचित जर्मन पंडित डॉ0 रुडोल्फ ओटो से मिले। दोनों के बीच पॉच घंटे तक पाली, बौद्धधर्म, महायान, विशिष्टद्वैतवाद, आर्यो का अश्वपालन आदि पर चर्चा हुई। राहुलजी ने जर्मनी में देखा कि शिक्षित मघ्यम वर्ग में बुद्ध के प्रति अनुराग रखनेवाले आदमियो की काफी तायदाद थी । संस्कृत और पाली भाषाओं के बड़े बड़े विद्वान जर्मनी में पैदा हुए। उन्होंने हजारों ग्रंथों का सम्पादन और अनुवाद किया। उन्हें मालूम हुआ कि एक ऐसा भी व्यक्ति संसार में पैदा हुआ था, जिसके जीवन में ईसा से भी ज्यादा स्नेह, माधुर्य और सादगी थी, जिसकी प्रतिभा

कितनी ही बातों में ढ़ाई हजार बरस बाद आज भी बिल्कुल ताजी है। ऐसे व्यक्ति के प्रति निम्न–मध्यम वर्ग के शिक्षितों का आकृष्ट होना स्वाभाविक है। यदि वे अधिक धनी होते, तो उन्हें ऐसे धर्म की जरुरत होती, जिसके द्वारा साधारण जनता की ऑखों में ज्यादा धूल झोंकी जा सकती, और ऐसा धर्म वही हो सकता है,जिसको सैकड़ों वर्षों से अपनाकर जनता हजारों परम्पराओं और मिथ्या विश्वासों का ताना बाना अपने गिर्द घेर चुकी है।यदि वे सम्पतिहीन मजदूर वर्ग के होते,तो ध्यान और निर्वाण के शराब के नशे में गर्कहोने की जगह कोई बेहतर काम अपने हाथ में लेते,जिससे संसार में लोगों का जीवन अधिक सुखपूर्ण हो सकता।119 जर्मनी के औधोगिक एवं सामाजिक स्वरुप को जानने के लिए राहुलजी ने वहॉ के बड़े–बड़े कारखानों और औधैागिक संस्थानों को देखा, वही समाज से धुल मिलकर उन्होंने पाश्चात्य जीवनधारा का सम्यक ज्ञान भी प्राप्त किया। 26 जुलाई 1945कोदूसरी बार इंगलैण्ड़ गये। वहाँ के सामाजिक व्यवस्था के रुप रेखा के सम्बनध में राहुलजी लिखते हैं–"वहाँ के नौकर,, खेत–मजदूरों की हालत बड़ी बुरी है। वह अपने मालिक के साथ रहते है। उनके पास न अपनी जमीन होती है, न अपना मकान। हमारे यहाँ के खेत मजदूर कम से कम अपनी झोपड़ी तो रखते है। किसान अपने मजदूरों के लिए चाहे बाहर झोपड़ा बना देता है,या अपने साथ रखता है। झोपड़ों में बॅधे हुए यह दास– से है,इसीलिए इस प्रथा को वहॉ 'टाईट काटेज' कहते है।सचमुच खेत–मजदूर घर के बॅधुए है।वह काम छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकते,क्योकि उसका अर्थ है,परिवार सहित बेकार ही नहीं,बेघर हो पथ का बटोही बनना।पुराने काल की तरह ही मालिक मजूर को खरीदते वक्त उनके हाथ पैर टटोलकर देखते है: वह काम करने की कितनी शक्ति रखता है। पहिले इंग्लैंड की बहुत सी देहातों में यह हाट

लगती थी। आज उसके अवशेष कैम्बरलैंड जैसे पिछड़े इलाकों में ही हैं। इस पर भी अंग्रेज दुनिया को सभ्यता सिखलाने का दम भरते हैं।120 अपने उपन्यास 'जीने के लिए' में नायिका जेनी के द्वारा इंग्लैड के मध्यमवर्ग और सर्वहारा वर्ग के अंतर्विरोधों के बारे में लिखा है:–"यह शिक्षित लोग मजदूर की सहानुभूति प्राप्त कर आगे बढ़ने का मौका पाते हैं।वह भी अपनी वैयक्तिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए किसी उच्च आदर्श के लिए आत्मसात् करने के लिए नहीं।दो एक अपवाद भले ही हो सकते हैं,लेकिन आमतौर से इंग्लैड़ के सभी मजदूर नेताओं का यही हाल है।यह पूंजीवादी सभ्यता की टोरी और मजदूर पार्टी का चरित्र है।"121

इस तरह यूरोप–पर्यटन से न केवल राहुलजी में वैश्विक चेतना का संचार हुआ, बल्कि जीवन एवं उसके सामाजिक कल्याण की परिधि को वे थोथी संकीर्णता और सीमाओं से ऊपर उठाकर वैश्विक मानवता के धरातल पर रखने में समर्थ हुए।

संदर्भ सूची–

1 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं0400

2 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पृ0 सं0 222–224

3 राहुल सांकृत्यायन,'दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद,पटना,,पृ0 सं0 251

4–वही,पृ0 सं0 5

5 रामशरण शर्मा 'मुंशी'(सम्पादित),'राहुल स्मृति',पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,पृ0 सं0 107

6 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबन्धावली', उत्तम भिक्खुना, पटना,पृ0 सं0 27

7 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं0400

8 वही, पृ0 सं0 339

9 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन',राधाकृष्णप्रकाशन,नइ दिल्ली, पृ0 सं0 23

10 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबन्धावली', उत्तम भिक्खुना,पटना,पूर्वोक्त,पृ0 सं0 124

11 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0 137

12 राजेश्वरी शॉडिल्य,'राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व एवं कृतित्व',कानपुर,1995,पृ0 93

13 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबन्धावली', उत्तम भिक्खुना,पटना,पृ0 सं0,129

14 वही,पृ0 सं0 227

15 वही, पृ0 सं0,2

16 राहुल सांकृत्यायन,'आज की समस्यायें',किताब महल,इलाहाबाद,1945,पृ0 सं0 51–63

17 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबन्धावली', उत्तम भिक्खुना,पटना,पूर्वोक्त,पृ0 सं0 26–27

18 वासुदेव सिंह'हिन्दी साहित्येतिहास के क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन का अवदान'सम्मेलन पत्रिका', भाग–76, संख्या3–4,पूर्वोक्त,पृ0 21–22

19 राहुल सांकृत्यायन,'हिन्दी काव्यधारा', किताब महल,इलाहाबाद1945,की भूमिका

20 वासुदेव सिंह 'हिन्दी साहित्येतिहास के क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन का अवदान'सम्मेलन पत्रिका', भाग–76, संख्या3–4,पूर्वोक्त,पृ0 21–22

21 राहुल सांकृत्यायन,'हिन्दी काव्यधारा',उत्तम भिक्खुना,पटना,पुर्वोक्त,पृ0 सं0 11

22 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं0401–402

23 राहुल सांकृत्यायन'प्रेमचन्द स्मृति',राहुल वाङ्मय, पूर्वोक्त पृ0 593

24 राहुल सांकृत्यायन,'भारतेन्दु और पुश्किन'राहुल वाङ्मय,पूर्वोक्त 578–81

25 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन',राधाकृष्ण,प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 23

26 लेखक डी0पी0हरित, महामानव',हरित साहित्य प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 84

27 विष्णु चंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–2, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0सं0222

28 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0209

29 वही,पृ0 सं0 187

30 वही,पृ0 सं0 306

31 कृष्ण कुमार गोस्वामी,'भाषा चिन्तन',वसुधा, पूर्वोक्त,पृ0 सं0 130

32 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 270

33 राहुल सांकृत्यायन,'घुमक्कड़ शास्त्र', किताब महल इलाहाबाद,पूर्वोक्त,पृ0 सं0 13

34 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 366

35 वही, भाग–1,पृ0 सं0 307

36 विष्णु चंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–2, संबाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0 224

37 वही, पृ0 सं0 223

38 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 340

39 वही, भाग–4,पृ0 सं0 372

40 'राहुल निबन्धावली', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,पृ0 सं0 97

41 वही,पृ0 सं0 101

42 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं021

43 'राहुल निबन्धावली', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,पृ0 सं0 101

44 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन',राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 130

45 'समकालीन सृजन',15,जनवरी–मार्च,1993,संपादक–शंभुनाथ,कलकता–7,पृ0187 ।

46 'अभिनव कदम', भाग–2,अंक,18–19,प्रकाशक, साहित्य–सांस्कृतिक संस्था,मउ,उ0प्र0,पृ0सं0244

47 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0सं0330

48 वही,पृ0 सं0 255

49 वही,पृ0सं0274

50 'समकालीन–सृजन',15,जनवरी–मार्च,1993,संपादक–शंभुनाथ,कलकता–7

51'साहित्य निबंधावली', उत्तम भिक्खुना,पटना,पृ018

52 'साहित्य निबंधावली',उत्तम भिक्खुना,पटना,पृ0, सं03–4।

53 'समकालीनसृजन',15,जनवरी–मार्च,1993,संपादक,शंभुनाथ,कलकता–7

54 कमला सांकृत्यायन,'राहुलजी का व्यक्तित्व'वसुधा,पूर्वोक्त,पृ020

55 साहित्यनिबन्धावली, उत्तम भिक्खुना,पटना,पृ027

56 वही,पृ013

57 वही,पृ031

58 'राहुलनिबंधावली', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, पृ055।

59 वही,पृ0सं065

60 हिन्दी साहित्य का इतिहास पुनर्लेखन की समस्याएँ पृ031।

61 हिन्दी साहित्य का इतिहास पुनर्लेखन की समस्याएँ,पृ032।

62 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन', राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली,पृ0 सं0 52

63 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 17

64 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा', भाग–2,पृ0 सं0 17–18

65 वही,पृ0 20

66 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0 178

67 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 78

68 राहुल सांकृत्यायन,'बोल्गा से गंगा', किताब महल इलाहाबाद,पृ0सं0 131

69 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन,नइ दिल्ली,पृ0 सं0 19

70 राहुल सांकृत्यायन,'मध्य एशिया का इतिहास' की भूमिका

71 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 193,

72 विष्णु चंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी'भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 285

73 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 195–196

74 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0286

75 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 195

76 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी'भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 289

77 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 199

78 वही,पृ0 199

79 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 293

80 वही,पृ0 294

81 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 208

82 वही,पृ0 212

83 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन', राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0104

84 विष्णुचंद्र शर्मा',समय साम्यवादी',भाग–1,संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 305

85 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन', राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 101

86 राहुल सांकृत्यायन,'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 218

87 वही,पृ0 224

88 विष्णुचंद्र शर्मा,'समय सामयवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 318

89 कमला सांकृत्यायन,'महामानव महापंडितः राहुल सांकृत्यायन', राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 105

90 वही,पृ0 101–102

91 बौद्ध संस्कृति, आधुनिक पुस्तक भवन,कलकता,1952–53,प्राक्कथन,पृ0108

92 गुणाकर मुले,'राहुल चिंतन', राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 46

93 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबंधावली', उत्तम भिक्खुना,पटना,पूर्वोक्त,पृ0112

94 राहुल सांकृत्यायन , 'आज की समस्यायें' किताब महल,,इलाहाबाद,1945, पृ0 सं0 61

95 राहुल सांकृत्यायन,'साहित्य निबन्धावली' पूर्वोक्त,पृ0 सं0 165–66

96 वही ,पृ0 सं0 3

97 वही, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 207

98 राहुल सांकृत्यायन 'ऐतिहासिक उपन्यास' आलोचना,उपन्यास विशेषांक,अंक–13,दिल्ली ,अक्टूबर,1954, पृ0 सं0 171

99 राहुल सांकृत्यायन ,'साहित्य निबन्धावली ',पूर्वोक्त,पृ0 सं0,26–27

100 राहुल सांकृत्यायन',प्रेमचंद–स्मृति''राहुल बाड़्मय' पूर्वोक्त,पृ0 सं0 593

101 राहुल सांकृत्यायन, ' मेरी जीवन यात्रा' भाग–3,पृ0 सं0 196

102 वही

103 विष्णुचंद्र शर्मा, 'समय साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0,सं0 231

104 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा' भाग–2,पृ0 सं091

105 विष्णुचंद्र शर्मा,' समय साम्यवादी',भाग–1, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0,सं0 233

106 राहुल सांकृत्यायन 'भारतेन्दु और पुश्किन' राहुल बाड़्मय,पूर्वोक्त ,पृ0 सं0 578–81

107 राहुल सांकृत्यायन, ' मेरी जीवन यात्रा' भाग–1,पृ0 सं0 93

108 बासुदेव सिंह,'हिन्दी साहित्येतिहास के क्षेत्र में श्री राहुल सांकृत्यायन का अवदान' सम्मेलन पत्रिका, भाग–76,सं0 3–4, पूर्वोक्त,पृ0 सं0 21–22

109 राहुल सांकृत्यायन ,'पुरातत्व निबंधावली', प्रयाग 1937 ,पृ0 146

110 राहुल सांकृत्यायन ,'हिन्दी काव्यधारा' ,इलाहावाद ,1945,भूमिका

111 'सम्मेलन' पत्रिका ,भाग–76 ,सं0 3–4,पूर्वोक्त ,पृ0 22

112 राहुल सांकृत्याय ,'बौद्ध संस्कृति' ,कलकत्ता,1952,पृ0 3

113 अभिनव कदम–2 ,साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मउ ,उ0प्र0,पृ0 366

114 राहुल सांकृत्यायन ,साहित्य निबंधावली, पूर्वोक्त ,पृ0 71

115 राहुल सांकृत्यायन, 'अकबर' ,उत्तम भिक्खुना,पटना,पूर्वोक्त,पृ0 343

116 राहुल सांकृत्यायन ,'बौद्ध संस्कृति' ,प्राक्कथन,पृ05

117 राहुल सांकृत्यायन ,'अकबर' उत्तम भिक्खुना,पटना,,पृ0 538

118 राहुल सांकृत्यायन,'मानव समाज' , आधुनिक पुस्तक भवन,कलकत्ता,पूर्वोक्त,पृ0218

119 राहुल सांकृत्यायन,'अकबर',पूर्वोक्अत,पृ0 सं0 337–338

120 अभिनव कदम–2 ,साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मउ ,उ0प्र0,पृ0 371

121 राहुल सांकृत्यायन ,'अकबर',पूर्वोक्त, पृ0 सं0 344

पंचम् अध्याय

राहुल सांकृत्यायन के वैचारिक आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन

अ) दार्शनिक विचारों का अध्ययन

ब) राजनीतिक विचारों का अध्ययन

स) साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारों का अध्ययन

अ) दार्शनिक विचारों का अध्ययन

राहुल सांकृत्यायन उन विरल लोगों में से हैं, जो मनोभूमि के स्तर पर आस्था के निर्माण, खंडन व नवीन निर्माण के भीतर से गुजरते रहे। उनके जीवन में जितने मोड़ आये, वे उनकी तर्क बुद्धि के कारण आये। जीवन के प्रथम काल खण्ड में सनातनी जीवन दर्शन को स्वीकार करना राहुलजी का पारिवारिक पृष्टिभूमि की उपज है। ब्राहम्ण कुल में जन्म लेने से 'सनातनी संस्कार' के बीज राहुलजी में बचपन से थे। रूढ़ियों–अन्धविश्वासों से जर्जर एक पिछड़े गाँव में बाल्यकाल बीता। ग्यारह साल की कच्ची उम्र में राहुलजी के विवाह ने व्यवस्था के प्रति विद्रोह के बीज मन में बो दिया। अतः घर छोड़ राहुलजी ने सनातनी संस्कार को भलीभाँति अपना लिया। इस संबन्ध में राहुलजी लिखते हैं–"मैंने संध्या सीख ली थी, दिन में तीन बार नहाकर संध्या करता। कुश की आसनी बराबर साथ रहती। सिर्फ एक वक्त, सो भी अपने हाथ का बनाकर भोजन करता। धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने या परमहंस बाबा के दर्शन तथा हरिकरण बाबा के सत्संग में समय बिताता हँसी मजाक की तो बात क्या? किसी से बातचीत करना भी मुझे पसंद न था"1 इस जीवन शैली से राहुलजी में वेदान्त–दर्शन के प्रति अधिक आकर्षण बढ़ा। 'ब्रहम् सत्यम् जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्ममै्व नापरः'2 श्लोक राहुलजी के मन में घर कर लिया। राहुलजी ने गृहत्याग कर वैष्णव साधु रामोदर बन अयोध्या से आगे चलते हुए उतराखण्ड बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री एवं अनेक दुर्गम स्थानों की यात्रा की। इस यात्राक्रम में राहुलजी ब्रह्म और जीव की शाश्वतता और मोक्ष के विचारों से अवगत हुए। इसी दौरान साधुओं के आचार व्यवहार, ,कार्यकलाप एवं बाह्याडम्बर को देखकर राहुलजी का मन

सनातनी जीवन शैली से डगमगाने लगा।राहुलजी लिखते है–"मैं संतों को बहुत नजदीक से देख रहा था और उनके धुआंधार चिलमों में अभी भी मैं शामिल न हुआ था। उन्हें ब्रह्म वेदांत की चर्चा में लीन भी मैं नहीं देखता था ,तो भी मुझे उनसे घृणा और उदासीनता नहीं हुई। यह बात नहीं कि वेदांत और वैराग्य को मैं भूल गया था।"3

सन् 1910 में उतराखण्ड़ से लौटकर राहुलजी काशी में ' मोतीराम का बाग' आश्रम में चक्रपाणी ब्रह्मचारी के सानिध्य में संस्कृत का पठन–पाठन और मंत्र साधना की कोशिश की और विफल होने पर आत्महत्या करने का प्रयास किया। सनातनी आस्था के मामले मे राहुल को इस क्रिया से एक बड़ा मोहभंग हुआ और जिसके फलस्वरूप उनके भीतर की कट्टरता काफी घट गई। राहुलजी वहाँ से परसा मठ में भावी महंत बनकर पहुँचे। वहाँ त्याग–तपस्या या वैष्णव साधना की कठोरता लेशमात्र नहीं था। पहली बार राहुलजी अपने सम्पूर्ण परिचय का विसर्जन देकर अनुष्ठानिक रूप से साधु बने। वहाँ रह रहे साधुओं के रीति–रिवाज और चाल–चलन को करीब से देखा और कुछ दिन बाद वहाँ से दक्षिण भारत की यात्रा पर निकल पड़े।

1914 ई0 तक आते–आते राहुलजी में बुनियादी वैचारिक बदलाव के आसार दिखने लगे थे–जो एक उदार मानवीय धरातल के साथ–साथ ,ज्ञानार्जन व सक्रिय सामाजिक सरोकार का स्वरूप उजागर कर सका। रूढ़िवादी, संकीर्ण, साम्प्रदायिक ,सनातनी जीवन–शैली को छोड़कर राहुलजी नई दिशा की तरफ आगे बढ़े। अपनी उन दिनों की मनःस्थिति के बारे में राहुलजी लिखते है–"मेरी मनोवृति में अंतर आ गया था। आर्यसमाज के अतिरिक्त अखबारों द्वारा वाह्य जगत की हवा भी मुझे लग

रही थी। मैं अपने अंतःस्थल में एक संकीर्ण गड़हिया से निकलकर विशाल जलाशय में जाने की मूकवेदना को अनुभव कर रहा था ,यद्यपि अब भी मुझे यह नहीं मालूम था कि वह जलाशय किस दिशा में है,कैसे है?"4 सनातन जीवन शैली को छोड़ राहुलजी आर्यसमाज के तरफ बढ़ें। आर्यसमाज ने न सिर्फ राहुलजी को वैचारिक मुक्तता की जमीन प्रदान की ,बल्कि उसकी तार्किक अन्तर्दृष्टि और भीतरी प्रतिभा के सम्यक विकास का स्वस्थ वातावरण प्रदान किया। लेकिन आर्यसमाज में मौजूद ईश्वर की सर्वशक्तिमान सत्ता को वे कायल नहीं रह सके। राहुलजी का मानना है कि ईश्वर की सत्ता का स्वीकारना मनुष्य की स्वतंत्रता और संभावना को सीमित करना है। दयानंद की तार्किकता ने राहुलजी को स्वतंत्रता की सही पहचान करने के लिए उकसाया। स्वतंत्रता को बाधित करने वाले मूल अवरोधक तत्वों की तरफ राहुलजी में गहरी सोच और समझ बनने लगी। राहुलजी इस दौरान इतिहास, दर्शन, साहित्य ,ज्ञान–विज्ञान का गम्भीर अध्ययन में लगे रहे। दुनिया भर के धार्मिक–दार्शनिक पोथियों और मतवादों की खोज में उन्होंने खाक छानी, और इस अध्ययन क्रम में पाया कि 'शासकों, धर्माचार्यो ,धूर्तो और वणिकों की जमात के लिए शेष नब्बे प्रतिशत जनता अपना खून–पसीना एक कर प्रभुओं के आगे भोग–विलास की सामग्री उपस्थित करती है और खुद पेट के अन्न और तन के कपड़े बिना मरती है। उपरोक्त तीन कामचोर जमात के अतिरिक्त एक और जमात संसार–त्यागियों की रही है, जो अपने को वर्गो से ऊपर ,निष्पक्ष, निर्लोभ और सत्यान्वेषी समझती है। इनसे इन मेहनती वर्गो को क्या मिलता है? संसार झूठा है, संसार की वस्तुऐ झूठी हैं, इसकी समस्याएँ झूठी हैं, इनकी ओर से आँख मूँदना ही अच्छा है। धनी–गरीब भगवान के बनाये हैं–धर्म के संवारे हैं ,उनके भोगों से ईष्या रखने की जरूरत नहीं हैं, संतोष

और धैर्य से काम लो, जिन्दगी भर ही तो दुःख है।"5 इसके बाद सनातनियों सामाजियों से राहुलजी का मोह भंग हो गया। इसी बीच करीब दस साल तक राहुलजी का जीवन वैचारिक और धार्मिक चिंतन की दृष्टि से एक साथ कई धाराओं में बहा। उस दौरान राहुलजी ने एक साथ कई पार्ट अदा किए। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में पहुँचते तो कंठीधारी वैरागी साधु दामोदर दास बन जाते थे। पंजाब और पश्चिम उतर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार का कार्य करते होते ,तो 'आर्यमुसाफिर' केदारनाथ बन जाते थे। इस तरह वैरागी साधु और आर्यसमाजी प्रचारक दोनों ही भूमिकाएँ साथ–साथ अदा कर रहे थे। राहुलजी के विचारों में स्थिरता कभी नहीं रही उनके विचार काल, स्थान और परिस्थिति वश परिवर्तित होते रहे। अब वे हर बात को सच्चाई की कसौटी पर कसना चाहते थे और तत्पश्चात उसे अपने आचरण में उतारने की चेष्टा करते थे परन्तु एक बात स्मरणीय है कि उन्होंने किसी भी अच्छे तत्व को प्राप्त करके छोड़ा नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारने की चेष्टा की। सनातन धर्म की रुढ़िवादिता एवं अंधविश्वास से तंग आकर उन्होंने आर्यसमाज को अपनाया। आर्य समाज के कुछ तौर तरीके राहुलजी को पसंद नहीं आए। इसी संदर्भ में राहुलजी लिखते हैं–आर्यसमाज की बीमारी गाँवों में पहुँच रही थी और संयम नियम के नाम पर जनता के मनोरंजन के हर तरीके पर कुठाराघात किया जा रहा था। फाग अश्लील है सो नहीं गाना चाहिए, नाचना असभ्यों और रंडियों का काम है, उसके पास तक नहीं फटकना चाहिए। किसी समय गॉवों की अधिकांश जातियॉ ,स्त्री–पुरुष दोनों ऐसे मौकों पर गाते–नाचते थे, किन्तु वे बाते अब विस्मृति के गर्भ में विलीन होती जा रही थी।'6 इस तरह राहुलजी ने आर्यसमाज के

वैदिक सत्य शाश्वत सत्य से ऊब कर एक नया पथ पकड़ा जिसके सत्य की खोज के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, वह है बौद्ध धर्म।

आर्यसमाज से मोहभंग होने के बाद राहुलजी को बुद्ध का यह वचन–"भिक्षुओं, मैं नौका की तरह धर्म का उपदेश करता हूँ। यह पार होने के लिए है, पकड़कर बैठने के लिए नहीं। जिसे हमने अधर्म मान लिया है, उसे तो छोड़ देना ही पड़ता है किन्तु जिसे हमने धर्म भी मान रखा था, और कालान्तर में हमें लगा कि धर्म भी अब त्याज्य है ,तो उसे भी छोड़ देना चाहिए।"7 अपनी ओर आकृष्ट किया। जाहिर है एक आस्था केन्द्र से दूसरे आस्था केन्द्र की मानसिक बौद्धिक यात्रा में राहुलजी को अन्तर्द्वन्द्वों से गुजरना पड़ा। राहुलजी कुछ समय तक ईश्वर और बुद्ध को साथ–साथ लेकर चले। पर दोनों का सहअस्तित्व असंभव दीखने लगा। धीरे–धीरे ईश्वर एक काल्पनिक चीज लगने लगा और बुद्ध यथार्थ। पुराने के टूटने की कचोट भी हो रही थी और बुद्ध के सहारे भ्रांतियों के टूटने की प्रंसन्नता भी। इस अन्तर्द्वन्द्व के प्रभाव ने राहुलजी के लिए अनुकूल पथ प्रशस्त किया और वे बौद्ध तीर्थो की यात्राओं पर निकल पड़े। राहुलजी बताते हैं: "कई सालों से जमा होते भावों ने बुद्ध के प्रति मेरे दिल में परमश्रद्धा उत्पन्न कर दी थी। इधर उनकी जीवनियों के पढ़ने से बुद्ध के जीवन से संबंध रखनेवाले स्थानों के दर्शन के लिए उत्सुकता बढ़ी थी," 8 और लंका की दूसरी यात्रा में प्रवज्या लेकर बौद्ध 'राहुल' बने। बौद्ध दर्शन ने उन्हें वह अन्तर्दृष्टि दी , जिसकी तालाश राहुलजी बचपन से ही कर रहे थे। बौद्ध दर्शन के अध्ययन से उन्हें यह रोशनी मिली कि मायावाद, नियतिवाद और पूजापाठ आधारित ईश्वरवाद अपनी सामाजिक उपयोगिता नष्ट कर चुके है और केवल बौद्ध दशर्न का 'प्रतीत्य

समुत्पाद' ही इनसे मुक्ति दिला सकता है। इसी संदर्भ में राहुलजी का कहना है–"बुद्ध के प्रतीत्य–समुत्पाद को देखने पर ,जहाँ तत्काल प्रभुवर्ग भयभीत हो उठता, वहॉ प्रतिसंधि और कर्म का सिद्धान्त उनहें विल्कुल निश्चित कर देता था। यही वजह थी कि बुद्ध के झण्डे के नीचे हम बडे बडे राजाओं, सम्राटों, सेठ साहूकारों को आते देखते है और भारत से बाहर लंका, चीन, जापान, तिब्बत में तो उनके धर्म को फैलाने में राजा सबसे पहले आगे बढे। वे समझते थे कि यह धर्म सामाजिक विद्रोह के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति को स्थापित रखने के लिए बहुत सहायक साबित होगा।"9

बौद्ध दर्शन मूलतः भाववादी विरोधी दर्शन है। अगर भारतीय दर्शन के सन्दर्भ में वस्तुवादी एवं भाववादी दर्शनों की ऐतिहासिकता को देखें तो विशुद्ध भाववादी दर्शन सिर्फ तीन ही है–योगाचार, माध्यमिक एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन। बाकी सभी दर्शनों में भाववाद के खंडन का पक्ष ही अधिक परिपुष्ट है। "राहुल अद्वैत दर्शन के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। इसी के चलते बौद्ध दर्शन के अध्येता के रूप में उन्होंने अद्वैत–सिद्धान्त और शांकर वेदान्त को नवीन आलोक में सम्प्रेषित किया है।"10 बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद ने राहुल के बचे खुचे सनातनी या आर्यसमाजी संस्कार की जड़े हिला दीं। इस तरह बुद्ध के सारे दर्शन का आधार 'प्रतीत्यसमुत्पाद'है। यह बौद्ध दर्शन को समझने की कुंजी है। जगत, समाज, मनुष्य सभी को उसने क्षण–क्षण परिवर्तनशील घोषित किया और कभी न लौटने वाले की परवाह छोड़कर परिवर्तनशीलता को समझते हुए अपने व्यवहार, अपने समाज के परिवर्तन के लिए सदा तत्पर रहने की वह शिक्षा देता है। बौद्ध दर्शन में बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अनीश्वरवादिता ने राहुल को

मुक्त विचार और 'नास्तिक मानवीयता' के उदार जीवनबोध के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया। अनीश्वरता के प्रसंग में राहुलजी का कहना है–"बुद्ध के दर्शन का जो रूप–अनित्य, अनात्म, प्रतीत्य–समुत्पाद में हम देख चुँके है, उसमें ईश्वर या ब्रह्म की भी उसी तरह गुंजाइश नहीं है।, जैसे कि आत्मा की। ईश्वर का ख्याल जहॉ आता है, उससे विश्व के स्त्रष्टा, भर्त्ता, हर्त्ता, एक नित्य–चेतन व्यक्ति का अर्थ लिया जाता है। बुद्ध के प्रतीत्य समुत्पाद में ऐसे ईश्वर की गुंजाइश तभी हो सकती है ,जब कि सारे –धर्मों' की भाति वह भी प्रतीत्य–समुत्पन्न हो। प्रतीत्य समुत्पन्न होने पर वह ईश्वर ही नहीं रहेगा।"11

राहुलजी ने देखा कि बौद्ध दर्शन ने ब्रह्म और निवार्ण तक की उड़ान लगाई, आत्मा–परमात्मा तक का सूक्ष्म विश्लेषण किया, पुर्नजन्म के बन्धनों और दुःख से मुक्ति की बातें की, किन्तु नब्बे प्रतिशत जनता के पशुवत् जीवन, उनके उत्पीड़न और शोषण के बारे में इससे अधिक नहीं बतलाया कि यह अवश्य भोक्तव्य है। इन्हीं मन्थनों में उलझे राहुल के मन और बुद्धि पर 1917 की रूसी कांति का प्रभाव पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप राहुलजी का विचार इस दर्शन से हटने लगा। राहुलजी यूरोपीय यात्रा के दौरान अपने विचार को स्पष्ट करते हुए लिखते है–"ज्योतिष ,भूत–प्रेत ,तंतर––मंतर, गड़ा–तावीज पर से मेरा विश्वास आर्यसमाज ने सदा के लिए खतम कर दिया था। सीलोन आने पर बेचारे ईश्वर ने भी पिण्ड छोड़ दिया। तिब्बत जाने के बाद योग ,ऋद्धि–सिद्धि और दिव्यशक्ति पर से मेरा विश्वास जाता रहा। उसकी सारी शक्तियाँ त्राटक और मेस्मरिज्म के कुछ हथकंडे आत्मसम्मोहन के परिणाम हैं। वस्तुतः अब मेरे और भौतिकवाद में इतना ही अन्तर रह गया था, कि मैं

मरने के बाद भी जीवन प्रवाह के जारी रहने पर विश्वास करता था। बौद्धों के बड़े प्रिय सिद्धान्त–निर्वाण को तो मैं पहिले से भी दिए की तरह बुझाकर जीवन–प्रवाह को सदा के लिए खतम हो जाने के सिवा और कुछ नहीं मानता था।" 12 इस तरह बौद्धिकता एवं आस्था के धरातल पर राहुलजी ने बौद्ध धर्म के आधार पर अपनी जीवन–धारा को परिवर्तित किया। वैचारिक मुक्तता का अपार–वातावरण आर्यसमाज में अन्तर्मुक्ति के बाद राहुलजी को मिला था। वही बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पादी, क्षणवादी, अनात्मवादी एवं अनाश्वरवादी किन्तु गहन रूप से मानवीय चिन्तन का आधार पाकर राहुल की बौद्धिक छटपटाह काफी शांत हुई ,और वैचारिक यात्रा की नई दिशा की ओर आगे बढ़ें।

1932 ई0 में यूरोप की यात्रा के दौरान राहुलजी को अनेकों साम्यवादी साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिला। उन्होंने पाया कि मार्क्स से पहले के दार्शनिकों ने किस्मत की लकीरों को बदलने के मानवीय प्रयत्नों को कभी महत्व नहीं दिया। दार्शनिकों के समस्त द्रविण प्राणायाम समाज के प्रभुओं के भोग विलास तथा उनके द्वारा किये जा रहे शोषण–उत्पीड़न को चुनौती देने में न सिर्फ असमर्थ रहे बल्कि उन पर लीपापोती ही करते रहे। ऐंगल्स की उक्ति है–'दर्शन का मूल प्रश्न जीवन–जगत की व्याख्या भर कर देना नहीं बल्कि दुनिया को बदल कर मानव को प्रताड़ना, शोषण और दुःख से निजात दिलाना है। 'ये विचार राहुलजी को रोशनी दिखाई।उन्हें मार्क्सवादी दर्शन में साफ शीशे की तरह दिखाई देने लगा कि मनुष्य के दुःखों का कारण नभ में नहीं धरती पर है। वे लिखते है–"मानव–जीवन को समृद्ध और आनंदित करने वाले संसाधनों पर प्रकृति नाम नहीं लिखती है। सृजन–संहार,,

ऋतु–परिवर्तन के व्यापार में प्रकृति कोई मुनाफा नहीं करती है। सम्राटों और फकीरों को प्रकृति नहीं गढ़ती। प्रकृति के अवदानों पर हिंसाचार करते हुए उत्पादन के साधनों पर मुनाफाखोरी के लिए कब्जा किये हुए पूँजीवादी व्यवस्था जनता के दु'खों का सच्चा कारण है। वे आर्थिक गुलामी को सभी प्रकार की स्वतंत्रता का अवरोधक मानने लगे और पूँजीवादी व्यवस्था के धोर विरोधी हो गये। उनहें लगने लगा कि साम्यवाद के रास्ते चलकर ही पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म किया जा सकता है और मानव समाज को उसके दुःखों से निजात दिलाया जा सकता है।13

इस तरह राहुलजी ने विभिन्न दार्शनिक वीथियों–राजमार्गों से गुजरते हुए विश्व के सभी दर्शन का प्रणयन किया और वैचारिक स्तर पर सक्रिय साम्यवादिता के धरातल तक आते–आते उनका जीवन, संस्कारी सनातनी प्रवाह, आर्यसामाजिक वैदान्तिक दृष्टिकोण एवं बौद्ध चिन्तनप्रक्रिया के पड़ावों से गुजर चुका था और मार्क्सवाद के पड़ाव पर ही राहुलजी को सत्य का आभास हुआ । मार्क्सवादी दर्शन द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद राहुलजी के विचारों के साथ–साथ जीवन दर्शन का भी स्थायी हिस्सा बन गया और अन्त तक अपने जीवन से इस दर्शन को जोड़ कर रखे।

ब) राजनीतिक विचारों का अध्ययन

राहुलजी का जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ था, जब हमारा देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। बाल्यकाल से ही राहुलजी ने अपने युग की परिस्थितियों को स्वयं देखा एवं परखा था। अंग्रेजों का भारतीयों के साथ किये जा रहे दुर्व्यवहार देख राहुलजी की राजनैतिक विचारधारा पनपने लगी। सन् 1914 ई0 मे जिस समय कामागाटामारू के बहादुर सिक्खों और उनके नेता गुरदीप सिंह के ऊपर कलकत्ता

के पास बजबज में गोलीकांड घटित हुआ, और कामागाटामारू के सिक्खों ने जिस साहस के साथ अंग्रेजों का सामना किया उससे राहुलजी काफी प्रभावित हुए और इसे उन्होंने भारतीयों के लिए अभिमान की चीज माना।14 इस घटना ने राहुलजी को एक नई दिशा दी। राहुलजी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखते है–"राष्ट्रीय स्वातन्त्रय का जोश अपने जैसे लाखों भारतीय नौजवानों की भाँति मेरे हृदय में भी हुआ था :::::::::मेरी मानसिक अवस्था उस वक्त ऐसी थी कि यदि उनके या उनके दूसरे साथियों को छुड़ाने के लिए सशस्त्र चेष्टा के लिए प्राण देनेवाले स्वेच्छासेवकों की जरूरत पड़ती तो मैं उनमें पहिले नाम लिखाता। 15

राहुलजी के राजनीतिक विचारों को सन् 1917 ई0 की रूसी क्रांति की खबरों ने काफी प्रभावित किया। इस क्रांति के प्रभाव से राहुलजी के जीवन दर्शन को नवीन दिशा दी।16 यही कारण है कि राहुलजी की राजनीतिक विचारधारा मानवता पोषक है। वे राजनीति के क्षेत्र में किसी एक विचारधारा से बंध कर नहीं रहे, जहाँ सत्य था, मानवकल्याण की भावना थी, उसी का साथ दिया। "राहुल राजनीति में सर्वप्रथम 1921ई0 में प्रवेश किया। सन्1922ई0 में राहुलजी स्वराजपार्टी के कार्यक्रमों में आस्था प्रगट करते हुए कांग्रेस के परिवर्तनवादी पक्ष का समर्थन किया। इस दल के नेता थे, पंडित मोतीलाल नेहरू, बिट्टलभाई पटेल और देशबन्धु चितरंजन दास। सन् 1931 ई0 में कांग्रेस की समाजवादी पार्टी के सदस्य बने। और सन्1939 ई0 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन अपना जीवन उनकी सेवा में समर्पित किया।"17 सन्1938–39 ई0 में राहुलजी ने सम्पूर्ण सारण, सीवान जिलों के अन्तर्गत विभिन्न गाँवों में धूम धूम कर जमींदारों के खिलाफ किसानों को संगठित किया और वकाश्त

जमीन, हरि बेगारी के सवाल पर किसानों के साथ मिलकर जमींदारों के विरुद्ध भूमि संघर्ष का नेतृत्व भी किया। जिसके कारण राहुलजी बिहार के एक प्रमुख किसान नेता के रूप में उभरे। राहुलजी की इच्छा थी कि ग्रामीण इलाकों से स्वराज और असहयोग भावना का प्रचार, समाज–कल्याण के साथ जुड़कर ग्रामीण उत्थान और राजनीतिक जोश, दोनों की जमीन तैयार करें। राहुलजी के राजनीतिक जीवन के उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि वे ऐसी राजनीति एवं शासन व्यवस्था के पक्षधर थे जो किसान एवं मजदूरों की हितचिन्तक तो हो ही, साथ–साथ भारतीय दासता, निर्धनता, वर्ग–वैषम्य आदि का परिहार कर मानव समता की समर्थक हो। राहुलजी के राजनैतिक जीवन में उत्पन्न विचारों का जीता जागता रूप उनकी कृतियों में दिखाई देता है।

राहुलजी के विचार राजनीति के क्षेत्र में काफी क्रांतिकारी थे। राजनीति में राहुलजी जाति–पाँति, उच्च–नीच के भेद को काफी हानिकारक मानते थे। उनका मानना था कि यदि कोई आदमी राष्ट्रीय नेता रहना चाहता है और साथ ही अपने भाइयों की घनिष्टता को कायम रखना चाहता है, तो या तो ईमानदार नहीं रहेगा या उसे असफल होकर रहना पड़ेगा। अपनी जाति के साथ घनिष्टता रखकर कैसे, कोई दूसरी जाति का विश्वासपात्र हो सकता है? मंत्रियों को तो खास तौर से सावधान रहना पड़ेगा। क्योंकि जाति भाइयों की घनिष्टता उन्हें आसानी से बदनाम कर सकती है। राहुलजी कर्मठय राजनीतिज्ञ और सबसे लोकप्रियता हासिल करने के लिए अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखते है–"मेरी समझ में प्रान्त के लिए राष्ट्र के लिए, कांग्रेस के लिए और व्यक्तिगत तौर से नेताओं के लिए अच्छा यही है, कि हरेक

प्रधान नेता तुरन्त से तुरन्त अपने लड़के–लड़कियों, भतीजे–भतीजियों अथवा भांजा–भांजियों या नाती–नातिनियों में से कम से कम एक की शादी जाति–पॉति तोड़कर दिखला दे, जैसे कि महात्मा गॉधीजी तथा राजगोपालाचारी ने करके दिखाया।''18 इस तरह राहुलजी को किसी भी प्रकार की दासता असह्य थी और हर तरह से मुक्त होकर जीवन जीने के पक्षपाति थे। राजनीतिक आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी दासता से मुक्त होने के लिए राहुलजी क्रांतिकारी गतिविधियों के समर्थक थे। इस संबंध में राहुलजी के क्रांतिकारी विचारों के परिप्रेक्ष्य में भदन्त आनन्द जी ने लिखा है–''जिस समय महात्मा गॉधी का अहिंसामूलक असहयोग आंदोलन अपने ओज पर था, महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने कहा कि राजनीति में रक्त का स्थान वही होता है जो पूजा पाठ में चंदन का। उस समय की ब्रिटिश सरकार ने कहा कि सूक्तियों के ऐसे धनी का स्थान जेल में होता है। राहुलजी को पकड़कर हजारीबाग जेल भेज दिया गया।19 राहुलजी अपने राजनीतिक जीवन में जब भी जेल गए तो उन्होंने अपने समय का सदुपयोग लेखन एवं अध्ययन में किया और तत्युगीन राजनीतिक धटनाओं के प्रति भी सदैव जागरूक रहे। वे इस बात से दुःखी थे कि अन्य नेता कारावास के दौरान राजनीतिक ज्ञान बढ़ाने की कोशिश नहीं करते थे। साथ साथ कुछ धार्मिक पुस्तकों को ही अपना सब कुछ समझते थे। राहुलजी अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखते है––हमारे राष्ट्रीय नेताओं को जेल में वर्ष–वर्ष तक का निश्चित समय मिला था। यदि वे चाहते तो इस समय को बहुत आसानी से भारत की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को हल करने के विचार में तथा तत्संबंधी विशाल साहित्य के अध्ययन में लगा सकते थे, लेकिन सामने तो गॉधीजी का सतयुग और रामराज्य था। उनको आजकल के शैतानी साहित्य–अर्थशास्त्र ओर

साईस से क्या प्रयोजन?कोई गीता की आवृति रोज कर लेता था।बिहार के कुछ सभ्रांत नेता तो इस बड़ी खोज में लगे हुए थे कि अठ्ठारहों अध्याय गीता में 'क' कितनी बार आया है और'ष' कितनी बार।20 राहुलजी इस तरह से समय गवाँने वाले दैशभक्तों को संबोधित किया कि "हमें अपनी मानसिक दासता की बेड़ी की एक एक कड़ी को बेदर्दी के साथ तोड़कर फेंकने के लिए तैयार होना चाहिए। बाहरी क्रांति से कहीं ज्यादा जरूरत मानसिक क्रांति की है।"21 राहुलजी उस समय के सामाजिक परिस्थितियों को देखकर अनुभव किया कि मजदूर किसान ही असली क्रांति के अग्रदूत है और संगठित होकर वे कार्य करे तो निश्चित रूप से अपने देश को आजाद करा सकते है। राहुलजी लिखते है–"मार्क्सवाद के अध्ययन ने मुझे बतला दिया कि क्रांति करने वाले हाथ हैं–यही मजदूर किसान, क्योकि उन्हीं को सारी यातनाएँ सहनी पड़ती है। और उन्हीं के पास लड़ाई में हारने के लिए सम्पति नहीं है। लेकिन यह सब रहते हुंए जब तक वह अपना मजबूत संगठन तैयार नहीं करते, तब तक क्रांति करने की शक्ति उनमें नहीं आ सकती। उनका संगठन भी तभी मजबूत हो सकता है,जबकि अपने रोज ब रोज के कष्टों को हटाने के लिए वह संघर्ष करें। उनके इस संघर्ष के संचालन के लिए कोई सेना संचालन मंडली होनी चाहिए। और मंडली ऐसी होनी चाहिए, जिसके सदस्य दूरदर्शी हो, अन्तिम त्याग के लिए तैयार हों और जिनको कोई प्रलोभन अपनी ओर खींच न सके।22

राहुलजी का राजनीतिक जीवन विभिन्न–विभिन्न स्थानों से गुजरा और उन स्थानों के लोगों के विचारों से अवगत हुए, पर वे विशेष रूप से मौलाना मजहर–उल हक, डा0 राजेन्द्र प्रसाद एवं गॉधीजी के विचारों से प्रभावित हुए। राहुलजी ने हक साहब से

राजनीति के अलावा दर्शन एवं अध्यात्म की भी काफी बातें सीखीं। हक साहब अपने घर में रखी हुई पुस्तकों को दिखाते हुए राहुलजी से कहा था–"राम उदार क्या मारे मारे फिरते हो, यहाँ आकर बैठ जाओ, इन पुस्तकों को पढ़ो। अध्यात्मवाद कोरी कल्पना की चीज नहीं हैं। परलोक और मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्व प्रत्यक्ष सिद्व होने की चीज है।"23 गाँधीजी से राहुलजी को सर्वप्रथम डा0 राजेंन्द्र प्रसाद ने ही सन् 1927 ई0 में मिलवाया था। राहुलजी का विचार बहुत हद तक डा0 राजेन्द्र प्रसाद से मिलता था। बोध गया मंदिर के बारे में दोनों बौद्धों के हाथ में दे देने के पक्षधर थे।24 डा0राजेन्द्र प्रसाद के बारे में राहुलजी ने लिखा है–"राजेन्द्र बाबू के बारे में भी यह कहना पड़ेगा कि वे अपने से मतभेद रखने वालों की बातें भी बराबर ध्यान से सुनते और जहाँ तक हो सके,मतभेद को मिटाने की कोशिश करतें हैं।यदि किसी बात में दोनों की राय में फर्क हो तो भी उसमें कड़वाहट आने नहीं देना चाहते।"25 राहुलजी अपनी कृतियों में गाँधीजी की कुछ विचारधाराओं एवं कार्यो का समर्थन करते हैं, तो कहीं कहीं उनके विचारों एवं कार्यो के प्रति असहमति भी वे व्यक्त करते हैं। असहयोग आन्दोलन के दौरान गाँधीजी द्वारा चलाये जा रहे रचनात्मक कार्यो में राहुलजी ने स्कूल कालेजों के बहिष्कार के प्रति असहमति व्यक्त की थी। क्योंकि स्कूल,कालेजों के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा प्राप्त होती है,जिसके द्वारा ही देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।26 परन्तु अन्य रचनात्मक कार्यो के प्रति सहमति व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है–"कचहरियों का वायकाट?ठीक इसके द्वारा हम विदेशी शासकों को अपनी क्षमता और रोष दिखलाते हैं। विलायती माल का बायकाट भी अंग्रेजी बनियों के मुँह पर जबरदस्त चपत है,और इससे हमारे स्वदेशी उद्योग धन्धों को मदद मिलेगीं।"27 राहुलजी का बौद्ध धर्म में प्रवेश होने के बाद

ईश्वर शब्द से उनका विश्वास हट गया था। अतः उन्होंने गाँधीजी की प्रार्थनाओं एवं ईश्वर भक्ति के प्रति आस्था पर असंतोष व्यक्त किया है। राहुलजी का मानना था कि राष्ट्र की जो कठिनाइयाँ और दुःख हैं, वे सच्चे हैं, काल्पनिक नहीं। ईश्वर भक्ति उसे भुला देने में सहायक हो सकती हैं, लेकिन राष्ट्र से संबंधित प्रत्येक पेचीदा प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने में बाधक भी बहुत होती है।"28 दूसरी ओर जब गाँधीजी आम जनता को एकजूट कर राष्ट्रीय आन्दोलन तथा अछूतों को मंदिर में प्रवेश करने हेतु आन्दोलन चलाया, राहुलजी ने खुलकर इन आन्दोलनों में भाग लिए। इस संबंध में अपना आक्रोश प्रतिक्रियायें व्यक्त करते हुए लिखा है–"जिन मंदिरों में चिमगादड़ें और पुजारी एक साथ रहते हैं ऐसे मंदिरों में अछूतों को भी प्रवेश करा देने से क्या लाभ होगा।"29 इतना ही नहीं अछूतोद्धार आन्दोलन की प्रासंगिकता पर भी सवाल उठाते हुए लिखा है–"गाँधीजी के अछूतोंद्धार का महत्व घट जाता है जब हम उसके साथ ऋषि मुनियों ओर उनके ग्रन्थ गीता आदि के गौरव को,उनके द्वारा खूब बढ़ाया जाता देखते हैं। जिन ग्रन्थों में छूआछूत की बात भरी पड़ी हैं और जिन ऋषिमुनियों ने अपने आश्रमों के आसपास मनुष्य नामधारी दास–दासियों के उपर सहस्त्राब्दियों तक अमानुषिक अत्याचार होते देखकर भी अपनी तपस्या भंग न की,उनके ग्रन्थ अछूतोद्धार के बाधक छोड़ साधक कैसे हो सकते हैं?"30

राहुलजी कुछ लोगों के समाज पर प्रभुत्व एवं समाज में व्याप्त विषमता को अभिशाप मानते थे। जमींदारी प्रथा,वर्ग भेद एवं पूँजीवाद से उन्हें सख्त नफरत थी। राहुलजी का राजनीति विचार हमेशा इसे मिटाने से जुड़ा रहा। उन्होंने अपनी राजनीतिक आस्था साम्यवाद में प्रकट की। उनका मानना था कि–"हमारे देश भारत में जीवन

की सभी आवश्यक चीजें उत्पन्न की जा सकती है।अतः साम्यवाद यहाँ के लिए एक आदर्श व्यवस्था है।31 राहुलजी के अनुसार साम्यवाद ही एक मात्र जरिया है, जिसके सहारे भारत की अखंडता कायम रखी जा सकती है। अपने साम्यवादी विचारों के चलते राहुलजी आम जनता की राजनीतिक स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि स्वतंत्रता के बाद साम्यवादी व्यवस्था द्वारा ही भारत, अपनी सारी बुराईयों को हटाकर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में समृद्ध एवं उन्नत होने की क्षमता रखता है।32 इस तरह राहुलजी की राजनीतिक विचारधारा साम्यवादी विचारों से अभिभूत रहे है, जो राजतंत्र, पूँजीवाद एवं साम्राज्यवाद के स्थान पर गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली को श्रेयस्कर माना है। राहुलजी ने अपनी विभिन्न ऐतिहासिक कृतियों में राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली की तुलना में गणतंत्रातमक शासन प्रणाली की अच्छाइयों पर प्रकाश डाला है। अपने लेख 'वैशाली का राज्य प्रबंध' एवं 'संन्यासी अखाड़ों की व्यवस्था' में राहुलजी ने प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली में निहित व्यवस्थ एवं महत्व का उल्लेख किया है। राहुलजी के अनुसार गणतंत्र शासन प्रणाली प्रजा के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा करता है, वहीं स्वतंत्रता, समानता एवं सुव्यवस्था रहता है। 33 राहुलजी के राजनीतिक विचारधारा "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" से जुड़ी हुई है। इस विचारधारा के चलते राहुलजी गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली के प्रबल समर्थक एवं प्रशंसक प्रतीत होते है। उन्होंने किसी विचार को तभी स्वीकार किया, जब वह जीवन को दो पग आगे बढ़ाने में सहायक हुआ।इस तरह राहुलजी किसी एक राजनीतिज्ञों के विचारधाराओं से नहीं बँधकर रहे। राष्ट्र के हित में जिसकी विचारधारा सही रही उसी पथ पर राहुलजी आगे बढ़ते हुए अपना परिचय राष्ट्र के सामने रखा।

स) साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारों का अध्ययन–

राहुलजी के साहित्य चिन्तन में प्रगतिवादी विचारधारा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। प्रगतिवाद मार्क्स के दर्शन पर आधारित है। राहुलजी के समस्त लेख चाहे वह 'प्रगतिशीलता का प्रश्न', प्रगतिशील लेखक' एवं 'आज का साहित्यकार' हो, इन सभी लेखों में उनकी प्रगतिवादी विचारधारा परिलक्षित होती है। राहुलजी ने 'प्रगतिवाद' शब्द पर अपना व्यख्यान देते हुए लिखा है–''प्रगतिवाद कोई कल्ट या संकीर्ण सम्प्रदाय नहीं है। प्रगतिवाद का काम है, प्रगति के अवरूद्ध रास्ते को खोलना, उसके पथ को प्रशस्त करना। प्रगतिवाद कलाकार की स्वतन्त्रता का नहीं परतंत्रता का शत्रु है। प्रगति जिसके रोम रोम में भींग गई हैं, प्रगति ही जिसकी प्रकृति बन गई हे, वह स्वयं अपनी सीमाओं का निर्धारण कर सकता है।34 यही मूल मंत्र राहुलजी के साहित्य संबन्धी विचारों का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करता है। राहुलजी में बचपन से ही लिखने की प्रेरणा दिखाई देती है। राहुलजी का सर्वप्रथम लेख ' भास्कर ' में छपा, जिसमें उन्होंने साधुओ के चाल–चलन, व्यवहार पर कटाक्ष करते हुए वैदिक सत्य पर प्रकाश डाला है। राहुलजी के हजारीबाग जेल में बिताए गए दो साल के दौरान सृजनात्मक लेखन उनकी प्रगतिवादी विचारधारा को पुष्ट करती है। उनके द्वारा लिखित 'दर्शनदिग्दर्शन' मानव समाज, 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' 'तुम्हारी क्षय' रचना प्रगतिवादी विचारधारा को परिलक्षित करती है। 1927–28 में लंका के विद्यालंकार में अध्ययन के दौरान राहुलजी के कई लेख 'सरस्वती ' में क्रमशः प्रकाशित हुये, जिसमें यात्रा वर्णन के साथ प्राचीन साहित्य पर प्रकाश डाले है।

राहुलजी ने प्रगतिशील साहित्य लिखने के साथ ही साथ प्रगतिशील साहित्यकार से भी काफी अपेक्षाएँ रखीं। उनके अनुसार आज के प्रगतिशील साहित्यकार को जन साहित्यकार बनना हैं, उसे जन मन का रंजन करना है, जन मन में शक्ति और स्फूर्ति पैदा करनी है ,उसे पलायन के स्थान पर संधर्ष का संदेश देना है, उसे दुनिया को बदलना है।35 राहुलजी प्रगतिशीलता से संबंधित अपने मत के बारे में कहते हैं–" मैंने बतलाया कि प्रगतिशीनता का यह मतलब नहीं है कि सूर, तुलसी, कालीदास, और बाण दकियानूसी विचारवाले समझे जाएँ। वह सामन्ती युग में पैदा हुए थे। उनकी कविता से सामन्त समाज की पुष्टि हुई थी, इसलिए इनकी कविताएँ गंगा में न बहा देनी चाहिए। महान कवि चाहे किसी समाज और युग में पैदा हुए हों, वह हमेशा हमारे लिए महान है।"36 आगे उन्होंने लिखा है कि–" प्रगतिशीलता तो बल्कि यह चाहती है कि आज जो हमारे उन कलाकारों को जनता के इतने कम लोग जानते हैं, उस कमी को दूर करके, उन्हें सर्वसाधारण के हृदय में बिठाया जाय"37 साहित्य की गतिविधियों के निरीक्षण के साथ साथ साहित्यकार एवं समालोचक के दायित्व पर राहुलजी ने लिखा है–"आज का साहित्यकार एकांगी आलोचना करता है, उसका कर्तव्य केवल दोष दिखलाना नहीं है वरन् गुणों की ओर भी ध्यान देना है। इसलिए समालोचना को अतिचार एवं एकांगी पथ का परित्याग कर यथार्थता को प्रस्तुत करना चाहिए।"38 इसके साथ आलोचकों का दृष्टिकोण पूर्वाग्रह से ग्रसित न होकर निष्पक्ष एवं उदार होना चाहिए। राहुलजी जिस समय साहित्य का सृजन कर रहे थे, उस समय छायावाद के प्रति लोगों के मन में अनेक प्रकार की दुश्चिंताएँ घर कर रही थी। ऐसे समय में राहुलजी ने रीतिकालीन काव्य की तुलना में छायावादी काव्य को श्रेष्टतर माना। दोनो विचारधारा का तुलनात्मक

मूल्यांकन करते हुए राहुलजी ने लिखा है–"गत अर्ध शताब्दी हिन्दी कविता के लिए हेमन्त काल था।नायक–नायिकाओं की रीतियों के गोरखधंधे द्वारा सम्मोहित लोग भले ही तारीफ के पुल बॉधते हों, किन्तु इस काल में मस्तिष्क को उद्भाषित और हृदय को द्रवित कर देने वाली उक्त कविताओं का अभाव ही रहा है।इस निराशामयी स्थिति में भी आशा की झलक आने लगी है,और यह झलक मुझे तो उस कविता द्वारा आती मालूम होती है,जिसे लोग निन्दा अथवा प्रशंसा के भाव से छायावाद कहते हैं। इस छायावाद की परिभाषा दूसरे चाहे कुछ भी करते हों,मैं तो इसे समझता हूँ पुरानी रूढ़ियों और नाना भॉति की जकडबन्दियों के प्रति विद्रोह का झंडा उठाना,इसी में,मैं आशामय भविष्य की आभा पाता हूँ।39 राहुलजी के उक्त विचारों से उनकी विचारगत प्रगतिशीलता की छाप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती हैं, जो कि छायावाद के सही निर्धारण की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

ऐतिहासिक साहित्य एवं ऐतिहासिक साहित्कारो से राहुलजी का काफी लगाव था। उनके बारे में राहुलजी लिखते है–"अतीत का ही उज्जवल होना हमारे लिए पर्याप्त नहीं वरन् उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता वर्तमान को ज्वलन्त बनाने में प्रेरणा प्रदान करना है।40 राहुलजी की मान्यता थी कि एक साहित्यकार की तुलना में एक ऐतिहासिक साहित्यकार का दायित्व अधिक होता है, क्योकि उसकी प्रत्येक पंक्ति पर 'निष्ठुर मर्मज्ञ समूह' पैनी दृष्टि से देख रहा होता है, अन्यथा अनौचित्यपूर्ण तथ्यों से उसकी कला उपहासास्पद हो सकती है।41 इस तरह राहुलजी प्राचीन इतिहास को आधुनिक विकास में उसका सराहनीय योगदान बताया है। राहुलजी अपने साहित्य चिन्तन में विज्ञान के महत्त्व को भी स्वीवार करते हैं, इसीलिए उनका प्रगतिवादी

चिंतन भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिभूत है। उनके अनुसार " वैज्ञानिक दृष्टि से हमारा हिन्दी साहित्य पिछड़ा हुआ है। आधुनिक जगत में विज्ञान के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि वह जीवन के प्रत्येक अंग को नवीन ढ़ंग से विकसित कर रहा है। अतः"हिन्दी का भण्डार विज्ञान से अपूर्ण रहे,यह हमारे लिए श्रेयस्कर और उचित नहीं हैं,इसलिए हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए।"42

हिन्दी साहित्कारों में राहुलजी विशेषतौर से मुंशी प्रेमचंद के प्रशंसक थे, उन्होंने प्रेमचंद को भारत का अमर लेखक एवं कलाकार की संज्ञा देते हुए लिखा है–"मुंशी प्रेमचंद साहित्यिक मनोरंजन और उच्च आदर्श के लिए अन्तः प्रेरणा का ही सफल प्रयास नहीं किया,बल्कि उनकी लेखनी द्वारा 20वी शताब्दी की साढ़े तीन दशाब्दियों के लोक जीवन का स्वरूप,लोक इतिहास बड़ी स्पष्टता और ईमानदारी के साथ चित्रित हुआ है।;;;;;;;;प्रेमचंद का विश्व के साहित्यकारों में क्या स्थान होगा,इसका अनुमान आप इसी से कर सकते हैं कि रूस के प्रसिद्ध लेनिनग्रद विश्वविद्यालय में हर साल प्रेमचन्द–दिवस मनाया जाता है,उनके 'गोदान' को सुन्दर कृति समझकर रूसी में अनुवाद किया गया है।43आगे राहुलजी लिखते है–"कविता हो या गद्य साहित्य,भारतीय हो या विदेशी,बहुत कम लेखक मुझे प्रभावित करते हे।बाज–वक्त इसके कारण मुझे अपने उपर अविश्वास होने लगता है किन्तु साथ ही कुछ साहित्कार तो मुझे प्रभावित भी करते हैं।ऐसे ही साहित्कारों में मैं प्रेमचन्द को मानता हूँ।आगे उन्होंने प्रेमचन्द की भाषा में मॅजाई और उनके भावों में गहराई की कमी की शिकायत करनेवालों पर जोर की टिप्पणी की है। दूसरे साहित्यकार जिनसे राहुलजी प्रभावित थे,'भारतेन्दु हरिश्चन्द' जिन्हें,उन्होंने आधुनिक साहित्य का "सूर्य्र" कहा

है।राहुलजी ने उनकी तुलना रूसी लेखक पुश्किन से की है,जिसे रूसी साहित्य का "सूर्य" कहा जाता है।अपने इस तुलनात्मक अध्ययन'भारतेन्दु और पुश्किन' में राहुलजी विस्तार पूर्वक बतलाते है कि विश्व के दो महान रचनाकारों की मानसिकता में कितनी समानता है।44

हिन्दी साहित्य के काल निर्धारण की दिशा में राहुलजी का अभूतपूर्व योगदान है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ,हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा0 धीरेन्द्र वर्मा आदि साहित्कार हिन्दी साहित्य का आरम्भ 10वी–11वीं शताब्दी से मानते है।45 जबकि राहुलजी ने चौरासी सिद्धों का काल 800–1175 ई0 को हिन्दी साहित्य से जोड़ कर हिन्दी साहित्य के आदि काल की परिधि को 10वी–11वी0 शताब्दी से बढ़ाकर 8वी0 शताब्दी तक पहुँचाया।46 यह हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्रांति है। राहुलजी के समर्थकों में ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, गुलेरीजी एवं काशीप्रसाद जायसवालजी का नाम आता है। कुछ विद्वान हिन्दी और अपभ्रंश को अलग अलग मानते है। राहुलजी हर मतभेदों को व्यर्थ मानते हुए लिखा है–"अपभ्रंश और हिन्दी में मूलतः कोई भेद नहीं है।दोनों एक ही भाषायें हैं।अपभ्रंश और आज की हिन्दी में अन्तर इतना ही है कि एक में शुद्ध संस्कृत तत्सम् शब्दों का प्रयोग बिलकुल बर्जित हैं,जबकि आज की साहित्यिक भाषा में मुश्किल से तद्भव शब्दों का प्रयोग होता हैं।47

राहुलजी की उपर्युक्त साहित्य संबंधी विवेचना से स्पष्ट है कि उनकी विचारधारा प्रगतिशीलता की पक्षधर है। क्योकि राहुलजी ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के पारखी एवं चिंतक थे। सबसे साहित्यिक अध्ययन में जो चीज हमें सबसे जयादा प्रभावित करती है, वह है उनके पास एक अत्यन्त संवेदनशील कवि हृदय। उनकी

भाषा देशी है, जिसमें व बहुत आत्मीयता से पाठकों से बातें करते हैं। पार उतारनेवाली ज्ञान की नाव को वे कभी सिर पर लिए नहीं चलते, यह दूसरी उत्साहवर्धक बात है। पर इन दोनों विशेषताओं से बढ़कर है कि यह महापण्डित अपने पास एक बहुत ही तरल हृदय रखता है, जो बड़े संयम रूप में यथावसर प्रवाहित हो उठता है।

राहुलजी का विचार सदैव प्रगतिवादी रहा है। अपने देश की संस्कृति के साथ विश्व संस्कृति से राहुलजी का काफी लगाव था। इसका प्रमाण राहुलजी द्वारा लिखित साहित्य है। संस्कृति क्या है? इसे समझाते हुए राहुलजी ने लिखा है–"संस्कृति वस्तुतः देश जाति से संबंधित है, धर्म के साथ उसका नाता गौण रीति ही हो सकता है। जाति के साथ संस्कृति या संस्कार का संबंध वैसे ही है, जैसे नए घड़े में घी या तेल भरके कुछ दिन रखकर उसे निकाल देने पर घड़े के भीतर प्रविष्ट स्नेह का अंश बच जाता है। एक पीढ़ी आती है, वह अपने आचार–विचार ,रूचि–अरूचि, कला संगीत, भोजन–छाजन, या किसी ओर दूसरी आध्यात्मिक धारणा के बारे में कुछ स्नेह की मात्रा अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाती है। एक पीढ़ी के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी और आगे बहुत सी पीढ़िया आती जाती रहती हैं और सभी अपना प्रभाव या संस्कार अपने से अगली पीढ़ी पर छोड़ती जाती हैं। यही प्रभाव संस्कृति है।"48 राहुलजी ने संस्कृति के बारे में जो विचार प्रकट किया हैं, यदि हम राहुलजी की समस्त जीवनयात्रा पर नजर डाले, तो देखा जाता हैं कि वे विभिन्न संस्कारों, चाल–चलन के प्रभावों से अछूतें नहीं रहे। उन्होंने बचपन में वैष्णव संस्कार से गुजरते हुए आर्यसमाज को अपनाया, वहाँ से आगे बढ़ते हुए बौद्ध संस्कृति,

साम्यवादी विचार, रीति–रीवाज में बँधे रहे। इस संदर्भ में प्रो0 कृष्णनाथजी ने लिखा है कि " राहुलजी ने एक ही जीवन में अनेक पीढ़ियों का जीवन जिया है।"49 राहुलजी अपने जीवन काल में हर परिस्थितियों के बीच भारत की सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश करते रहे। क्योकि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति के निर्माण में संपूर्ण मानवीय चेतना का हाथ रहता है। धर्म, दर्शन, साहित्य, राजनीति, इतिहास की परम्परा, विज्ञान की चेतना और समय बोध के हस्तक्षेप के साथ लोक चेतना की सामूहिक अभिव्यक्ति से जो जीवन दृष्टि कायम होती है, वही संस्कृति है। भारत जैसे बहुभाषिक राष्ट्र की सांस्कृतिक परंपरा को परखने के लिए राहुलजी ने अखण्ड जम्बूद्वीप की सांस्कृतिक चेतना के प्रति चिंतनशील होकर प्राचीनता और नवीनता को एक साथ जोड़ा है।

राहुलजी धर्म और संस्कृति को अलग अलग बताते हैं। उनके अनुसार "संस्कृति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व है।"50 धर्म समय–समय से बदलता है पर संस्कृति नहीं बदलती है। इस संदर्भ में राहुलजी ने लिखा है–" संस्कृति और धर्म एक चीज नहीं है, उदाहरण मैं स्वयं हूँ। बुद्ध के प्रति बहुत सम्मान रखते हुए भी, उनके दर्शन को बहुत हद तक मानते हुए भी, मैं अपने को बौद्ध धर्म का अनुयायी नहीं कह सकता। अनुयायी होता तो भी, भारतीय संस्कृति को अपनी प्यारी संस्कृति नहीं मानता, पूरा नास्तिक होते हुए भी भारतीय संस्कृति के प्रति मेरा वैसा ही आदर और अटूट सम्बन्ध है। इसलिए मैं दावे के साथ अपने को उस संस्कृति का उतराधिकारी मानता हूँ। किसी का मजाल नहीं कि मुझे इस हक से वंचित कर सके या उग्र स्वतंत्र विचारों के लिए मुझसे संबंध–विच्छेद कर सके।"51 भारतीय संस्कृति

देश की सीमा से बाहर प्रायः बौद्ध धर्म के साथ गई और अपनी दूरदर्शिता के कारण स्वयं को 'जैसा देश वैसा वेश' के अनुसार ढ़ाल लिया परन्तु मूल स्वरूप वही रहा। राहुलजी लिखते हैं–''बौद्ध संस्कृति ने हर देश में जाकर वहॉ का चोला पहना––'दृष्टिकोण उदार और बौद्ध, किन्तु रूप हो राष्ट्रीय'–इस सूत्र का उसने अक्षरतः पालन किया। इसीलिए बौद्ध देशों में विदेशी और स्वदेशी संस्कृतियों का संधर्ष नहीं हुआ ओर न धर्म के नाम पर एक ही जाति के अनेक टुकड़े बनें।''52 इस तरह संस्कृति धर्म बदलने से नही मिटती है पर एक बात यह भी है कि जिस देश में अनेक जातियों का आगमन होता है वहाँ की संस्कृति कभी स्थायी नहीं हो सकती है। राहुलजी इस संदर्भ में लिखा है कि " मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि भारत की ऐतिहासिक सामग्री को इस्तेमाल करते हुये कुछ ऐसे उपन्यास और कहानियाँ लिखी जायें जिससे हमारी प्रगतिशीलता को मदद मिले''''''। किताबों मे दिखलाना चाहता था कि भारतीय सम्यता और संस्कृति की दुहाई देने वाले झूठमूठ की प्राचीनता के नाम पर हमारे रास्ते में रोड़े अटकाते हैं। वस्तुतः भारतीय संस्कृति सभ्यता कही अचल नहीं रही। उसके हर एक अंग में घोर परिवर्तन होते रहे।''53 इसका प्रमाण भारत में वैष्णव की सहिष्णुता, बौद्धों की करूणा, जैनियों की अहिंसा और द्रविणों की सरलता है।

राहुलजी विभिन्न संस्कृति के समन्वय के प्रबल समर्थक थे। भारत में अनेकों जातियॉ आई और अपनी संस्कृति को एक दूसरे के साथ सम्बद्धकर उसे अपनाया। इस सम्बन्ध में राहुलजी लिखते है–''भिन्न भिन्न संस्कृतियॉ शीत और ताप की तरह एक स्थान में अलग अलग नहीं रह सकती। उबलते दूध की बोतल को ठंड़े पानी के

बरतन में रखने पर दूध का पारा नीचे उतरने और पानी का पारा उपर चढ़ने लगता है। कुछ देर में दोनों का ताप एक हो जाता है। मनुष्यों में तो इस तरह का भी अन्तर नहीं है, क्योकि वहॉ कॉच जैसी व्यवधान करने वाली कोई ठोस चीज नहीं होती। वे इकठ्ठे होते ही एक होने लगते है।"54 आर्य, यवन, शक, गुर्जर, जट्ट, आभीर, हूण, कितनी ही जातियाँ समय–समय पर भारत में आई प्रत्येक ने अपना अलग शासक कायम किया, किन्तु जब शासन हाथ से जाता रहा तो वे भारतीय संस्कृति का ही एक अंग बन गई। यद्यपि बहुत कोशिश की गई कि वे और भारतीय संस्कृति अलग–अलग ही रहें, पर ऐसा नहीं हो सका। राहुलजी का मानना है कि "संस्कृतियों के समागम में कितनी ही बाधाऍ आए एवं इनके बीच कैसी भी दीवार हो अन्ततः दीवार को धराशायी होना ही पड़ता है।"55 राहुलजी का कहना है कि संस्कृतियों के समागम से दोनों ही संस्कृतियों को लाभ मिलता है। भारत में यवन, शक,हूण और अनेकों जातियाँ आई, सभी के सभी अपना संस्कार रहन सहन का असर एक दूसरे पर छोड़ते गए और आज सब मिलकर भारत की संस्कृति बन गई है। फलित ज्योतिष में होड़ा चक्र की वर्णमाला यवन की देन है। यवन और हमारी कला के द्वारा भारतीय गांधार कला का विकास हुआ। इसी तरह शक कुषाण संस्कृति के भारतीय संस्कृति में समन्वय के संदर्भ में राहुलजी ने लिखा है–" बूटधारी सूर्य आज हजारों की तादाद में हमारे देश के कोने–कोने में मिलते हैं। इनके पैरों में वही बूट हैं, जो मथुरा में मिली कनिष्क की मूर्ति के पैरों में हम देखते हैं।''''''उनके बूटधारी देवता हमारे मंदिरों में बैठे, यह अनहोनी सी बात थी। लेकिन अनहोनी, होनी हो गई''''' ।"56 दूसरी तरफ राहुलजी ने यह भी कहा है कि एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति में समागम सरल रूप से नहीं होता है। बड़े–बड़े संतों और राजाओं ने अपने

प्रयास से हिन्दू–मुस्लिम को एक करना चाहा, राजा अकबर ने इसके लिए काफी प्रयास किया पर असफल रहे। राहुलजी ने अकबर के अथक प्रयास के बारे में लिखा है–" अकबर की देशभक्ति, राष्ट्र प्रेम अद्वितीय था। पर''''''समस्या इतनी जबर्दस्त थी कि अकबर जैसे अद्वितीय महापुरूष का दीर्घ जीवन भी उसके सुलझाने के लिए पर्याप्त नहीं था।"57

राहुलजी भारत के सांस्कृतिक इतिहास के ध्वजवाहक रहे है। भारतीय संस्कृति की खोज में उन्होंने संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। उन्हे जहाँ कही भी ऐसी सामग्री मिली जिसमें भारत का सांस्कृतिक इतिहास हो, राहुलजी वहाँ तक पहुँच कर उसे समाज के समक्ष रखा , चाहे रास्ता कितनी ही दुर्गम क्यों न हों? इस कार्य में उनका व्यक्तित्व एक जाबाज की तरह दिखाई पड़ता है। इसके लिए राहुलजी ने अपना नाम ओर रूप भी बदला है। उन्होंने संस्कृति के खोज हेतु ' चरैवेति चरैवेति ' सिद्धान्त को स्वीकार किया। तभी तो संपूर्ण सुख–सुविधाओं की संभावना वाले परसा के महंथ के उत्तराधिकार का त्याग कर अपनी धुन में आगे बढ़ते हुए अपने देश के साथ तिब्बत, चीन, जापान, श्रीलंका, इंडोनेशिया आदि देशों के मठों, मन्दिरों, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, राजघरानों, तहखानों आदि को छानते रहें। इतना ही नहीं सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश में राहुलजी ने लोक और वेद दोनों का अध्ययन किया इसके लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं ओर बोलियों तक को अपना विषय बनाया। 'हिन्दी काव्यधारा','दोहाकोश' के माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को सिद्ध साहित्य के साथ जोड़कर आलोचकों के लिए नई दिशा दिखाई और इससे हिन्दी साहित्य का इतिहास सातवीं सदी तक पहुँच गया। राहुलजी ने साहित्य, दर्शन,

विज्ञान और राजनीति के माध्यम से एक ओर भारत की आभिजात्य वर्ग की संस्कृति को प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर लोक साहित्य का अध्ययन कर उन्होंने लोक संस्कृति और लोक जीवन का पक्ष उपरिथत किया है। इन सब के पीछे राहुलजी का उदेश्य भारतीय संस्कृति को और विस्तृत करना था। वे जानते थे कि लोकभाषा की उपेक्षा करने से लोक मन, लोक संस्कृति ओर लोक जीवन आदि से दूर रह जाना है, जहाँ भारत की आत्मा बसती है। राहुलजी कम्युनिस्ट होते हुए भी कम्युनिस्टों द्वारा लोकभाषा की उपेक्षा से दूर रहे और लोकभाषा से अपनी आत्मा को जोड़कर रखा। राहुलजी ने सांस्कृतिक निधियों के संरक्षण को प्रत्येक व्यक्तियों का कर्त्तव्य बताया है। राहुलजी लिखते है–" वस्तुतः सभ्य और संस्कृत कहलाने का हक उसी जाति को हो सकता है जो अपने संकट के समय में भी अपने सांस्कृतिक कर्त्तव्य को न भूले।"58 इस प्रकार सांस्कृतिक निधियों की सुरक्षा और भारत की छिपी हुई संस्कृति का इतिहास राहुलजी के रचना–संसार में यत्र–तत्र दिखाई पड़ता है।

उपर्युक्त संस्कृति विषयक विचारों से स्पष्ट है कि उन्हें भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव था। उन्होंने भारतीय संस्कृति को गंगा नदी के प्रवाह की तरह निर्मल बताया है। राहुलजी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए संस्कृति का व्यापक विशलेषण किया है। वे संस्कृति को समाज की अनुवांशिकता बतलाते हुए लिखते है–"पुंरानी पीढ़ी अगली पीढ़ी से सादृश्य रखती है,पुरानी भाषा का स्थान लेने वाली नई भाषा भी मॉ के समान होगी।सारी दुनियॉ में यह नियम लागू है।इसी सादृश्य को मानव समाज के भीतर हम संस्कृति कहते है। 59 राहुलजी को सिर्फ भारतीय संस्कृति से ही लगाव नहीं था, बल्कि पुरातत्व और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के भीतर पैठकर उन्होंने विश्व

संस्कृति की खोज की, साथ ही अनेक स्त्रोतों से स्मृति–सुरक्षा पर बल दिया। साथ ही साथ आज के वैश्वीकरण और बाजारीकरण के दौर में राहुलजी ने भारतीय संस्कृति को वैज्ञानिक पहचान दी है।

संदर्भ सूची–

1, राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 79

2, वही

3, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 94

4, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 170

5,' अभिनव कदम', भाग–2, संवाद प्रकाशन,मेरठ,पृ0 सं0 199

6, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 185

7, कौसल्यायन भदन्त आनन्द, 'राहुलजी का बौद्ध साहित्य और दार्शनिक विचार' राहुल सांकृत्यायनः 'व्यक्ति औा वाङ्मय' (सं0 श्रीनिवास शर्मा) में संकलित, पृ0 सं0 25

8, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 229

9, राहुल सांकृत्यायन, ' दर्शन–दिग्दर्शन 'किताबमहल,इलाहाबाद, पृ0 सं0 415

10, डॉ0 अभिजीत भट्टाचार्य,' महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया', आनंद प्रकाशन, कोलकाता, 2005, पृ0 सं0 98

11, राहुल सांकृत्यायन, ' बौद्ध दर्शन ' किताब महल,इलाहाबाद,पृ0 सं0 36–37

12, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–2, पृ0 सं0 98

13, अभिनव कदम, भाग–2,अंक18–19,संवाद प्रकाशन,मेरठ, पृ0 सं0 200–201

14, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 237

15, वही, पृ0 सं0 232

16, वही, पृ0 सं0 271

17, ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव,'राहुल सांकृत्यायनः एक इतिहासपरक अनुशीलन' किताब महल, इलाहाबाद,2004, पृ0 सं0 251

18, राहुल सांकृत्यायन, ' दिमागी गुलामी 'किताब महल,इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 6

19, राहुल सांकृत्यायन,'राहुल वाङ्मय',खण्ड–2, जिल्द–2, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 559

20, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 265

21, राहुल सांकृत्यायन,' दिमागी गुलामी' किताब महल, इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 6

22, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–2, पृ0 सं0 303

23, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 310

24, राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा', भाग–1, पृ0 सं0 270

25, राहुल सांकृत्यायन, ' दिमागी गुलामी 'किताब महल, इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 8

26, राहुल सांकृत्यायन, 'बोल्गा से गंगा ' किताब महल,इलाहाबाद, 1998,पृ0 सं0 317

27, वही, पृ0 सं0 318

28, राहुल सांकृत्यायन, ' दिमागी गुलामी ',किताब महल,इलाहाबाद पूर्वोक्त, पृ0 सं0 9–10

29, राहुल सांकृत्यायन, 'राहुल वाङ्मय' खण्ड–2, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 559

30, राहुल सांकृत्यायन, 'दिमागी गुलामी' ,किताब महल,इलाहाबाद,पूर्वोक्त, पृ0 सं0 9

31, राहुल सांकृत्यायन,' साम्यवाद ही क्यो',किताब महल, इलाहाबाद, 1977,पृ0 सं0 56–57

32, राहुल साकृत्यायन, ' सोवियत मध्य एशिया ' किताब महल इलाहाबाद, 1999, पृ0 सं0 1

33, राहुल सांकृत्यायन, 'जय–यौधेय', किताब महल इलाहाबाद, 1956,पृ0 सं0 216

34, राहुल सांकृत्यायन, ' साहित्य निबंधावली ',किताब महल,इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 127

35, राहुल सांकृत्यायन, ' आज की समस्यायें',किताब महल, इलाहाबाद, 1945, पृ0 सं0 61

36, डॉ0 अभिजीत भट्टाचार्य,' महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया', आनंद प्रकाशन, कोलकाता, 2005, पृ0 सं0 180

37, राहुल सांकृत्यायन, 'साहित्य निबन्धावली',किताब महल,इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 165–66

38, वही, पृ0 सं0 166–67

39, वही, पृ0 सं0 3

40, वही, पृ0 सं0 207

41, ' आलोचना ' पत्रिका, ' उपन्यास विशेषांक', अंक–13 दिल्ली,अक्टूबर1954, पृ0 सं0 171

42, राहुल सांकृत्यायन, ' साहित्य निबन्धावली'',किताब महल,इलाहाबाद, पृ0 सं0 26–27

43, राहुल सांकृत्यायन, ' साम्यवादी ही क्यों',किताब महल,इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 105–106

44, राहुल सांकृत्यायन, ' साहित्य निबन्धावली',किताब महल,इलाहाबाद, पृ0 सं0 209

45, नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, 'हिन्दी साहित्य और महापंडित' ',वसुधा' , इलाहाबाद 1961, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 115

46, राहुल सांकृत्यायन, 'हिन्दी काव्यधारा' इलाहाबाद 1945, भूमिका

47, ' सम्मेलन ' पत्रिका, भाग 76, संख्या 3–4, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 22

48, राहुल सांकृत्यायन, ' बौद्ध संस्कृति',आधुनिक पुस्तक भवन,कलकत्ता, 1952, पृ0 सं0 3

49 कृष्णनाथ, ' भारतीय संस्कृति के संदर्भ में ' वसुधा पत्रिका, राहुल जन्मशती अंक, रीवा, अप्रैल–जून 1994, पृ0 सं0 139–40

50, राहुल सांकृत्यायन, ' साहित्य निबन्धावली ', किताब महल,इलाहाबाद, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 71

51, राहुल सांकृत्यायन, ' अकबर ' पूर्वोक्त, पृ0 सं0 343

52, राहुल सांकृत्यायन, ' बौद्ध संस्कृति ',आधुनिक पुस्तक,भवन कलकत्ता, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 5

53, राहुल सांकृत्यायन, ' बोल्गा से गंगा ', किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 सं0 212

54, राहुल सांकृत्यायन, ' अकबर ' किताब महल इलाहाबाद 1967, पृ0 सं0 338

55, वही

56, वही, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 7–8

57, वही, पृ0 सं0 8

58, राहुल सांकृत्यायन, ' राहुल वाङ्मय ' खण्ड–2, जिल्द–2, पूर्वोक्त, पृ0 सं0 452

59, राहुल सांकृत्यायन, ' अकबर ' उत्तम भिक्खुना, पटना, पृ0 सं0 336

षष्ठ अध्याय

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का व्यक्ति चिंतन

आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का व्यक्ति चिंतन

राहुल सांकृत्यायन एक ऐसे चिंतक हैं, जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में अपने दृष्टि से कुछ न कुछ देखा और उस संदर्भ में चिंतन किया। राहुलजी के व्यक्ति चिंतन उनके व्यक्तित्व का एक अलग पहचान कराता है। बाल्यकाल से लेकर अन्तिम जीवन तक राहुलजी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और भाषिक चिंतन के साथ व्यक्ति चिंतन में भी लगे रहे और यह चिंतन राहुलजी का एक नवीन पहचान है। राहुलजी का बचपन गॉव में बीता, परिवार में नाना–नानी, माता–पिता, के साथ मामा–मामी का संस्कार और प्यार मिला। राहुलजी के भीतर बचपन से मानवता एवं कोमलता का स्फुरण दिखाई देता है उनके चारित्रिक निर्माण में मातृकुल एवं पितृकुल दोनों का हाथ रहा है। नाना रामशरण पाठक के धुमक्कड़ सिपाही जीवन, कड़े अनुशासन, वक्त की पावन्दी, शिकार की गप्पों ने राहुलजी में बाहर की दुनियाँ को देखने की इच्छा जाग्रत किया। राहुलजी कहते हैं–'इन शिकार यात्राओं की बातें बुढ़ापे में पाठक बड़ी रात तक अपनी धर्मपत्नी को सुनाया करते थे। उस वक्त उनकी बगल में बैठा या गोद में लेटा सात–आठ का उनका नाती उन बातों को सुनता और आश्चर्य करता। कामाठी, धुलिया, नासिक, अमरावती यद्यपि उस बच्चे को शब्द मालूम होते थे, किन्तु उन्होंने पीछे भूगोल और नक्शा पढ़ने में बड़ी दिलचस्पी पैदा की।'1 वहीं राहुलजी में नानी के दयालु भाव ने गरीबों के प्रति दया की भावना भरी। राहुलजी की नानी जगरानी देवी, ग्रामीण महिला होते हुए भी अन्तर्मुखी प्रकृति वाली थी जो उन्हें दूसरी महिलाओं से अलग करती थी। राहुलजी लिखते है–'नानी का दिल अत्यन्त कोमल था। पशु और पक्षी तक उनके वात्सल्य से वंचित न थे। ::::::::::::::जीवन के आरम्भिक पाँच वर्षो में नानी ने मेरा पोषण ही नहीं, निर्माण भी किया।'2 राहुलजी को मातृकुल से धुमक्कड़ी,

दयाभाव, निरन्तर काम करते रहने की प्रवृति मिली तो पितृ कुल से ठेठ देहाती जीवन से जुड़े मानवीय संस्कार और मुक्त दृष्टि मिली। पिता गोबर्धन पाण्डे रूढ़िग्रस्त समाज के एक सुसंस्कार ब्राह्मण परिवार के होते हुए भी प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति थे। जाति–पात, छूआ–छूत से ग्रस्त ग्रामीण समाज में रहते हुए भी वे अपने खेत में काम करनेवाले चिनगी चमार का दाह संस्कार कर रूढ़िग्रस्त सामाजिक नियमों को एक जोर का धक्का पहुँचाया। अपनी माँ के बारे में राहुलजी लिखते है–' उनके स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने का साक्षात् अवसर नहीं मिला था। अपनी माँ के तरह वह झगड़े–झंझट से दूर रहती थीं, यह तो इसी से सिद्ध है कि सारे गाँव में सबसे अधिक रूखी और कड़े मिजाज की सास रहने पर भी उनके साथ झगड़ा होते नहीं देखा गया।'3 गाँव के साथियों में नरसिंह, दलसिंगार, बिरजू, मग्घू और रामदीन थे। अपने छोटे मामा रामदीन के बारे में राहुलजी बताते है कि–' मानव शिशु और दूसरे शिशु भी बड़ों का अनुकरण करके ही हरेक बात सीखते हैं। ज्ञानार्जन और आगे की मंजिल के बारे में सबसे पहिले मैनें जो सीखा, वह रामदीन मामा से ही।::::::: मेरा घसीट सीखने का काम दर्जा एक के बाद ही शुरू हुआ होगा। एक दिन उनके घसीट लिखे सारे पृष्टों को जब मैं पढ़ गया, तो रामदीन मामा ने बहुत खुश होकर नाना से कहा–काका, अब यह घसीट में पास हो गया।'4 दलसिंगार रिश्ते में राहुलजी के नाना लगते थे। दोनों में बहुत प्रेम था। दलसिंगार की मृत्यु होने से राहुलजी को काफी दुःख पहुँचा था। राहुलजी लिखते है–' दलसिंगार आखिर चल बसा। इसी वक्त सर्वप्रथम मुझो मृत्यु के चोट का अनुभव हुआ। मैं रोता नहीं था, बल्कि मेरे हृदय में एक तरह की असह्य, एकान्तता का अनुभव होता था। मेरे दिमाग में मौत के बारे में तरह तरह के खयाल पैदा होते थे।–मरकर दलसिंगार गया कहाँ?

अगर कहीं गया है, तो क्या मैं उससे मिल नहीं सकता ?'5 पन्दहा में राहुलजी की अनेकों मामिया थी। रामदीन की पत्नी से राहुलजी को आन्तरिक स्नेह और प्रेम था। राहुलजी लिखते है–' छोटी मामी में वे सारे गुण थे–जो किसी बच्चे को रिझाने के लिए किसी में होना चाहिए। छोटी मामी न केवल सुन्दर व स्वस्थ थी, बल्कि अत्यन्त कोमल स्वभाव के होने के साथ साथ शीघ्र बात समझने वाली थी, और अपने भांजे को खुश करनेवाली मीठी बातें करना जानती थी।'6 कुछ ही वर्षो बाद वह इस दुनियाँ से चल बसी। 1909 में नाना रामशरण पाठक ने राहुलजी का विवाह रामदुलारी के साथ करा दिया। राहुलजी ने कभी उसे अपना विवाह स्वीकार नहीं किया। " कनैला की कथा " में प्रथम परिणीता को समर्पित करते हुए लिखा है–' समर्पण उसी प्रथम परिणीता को जिसका सारा जीवन मेरी महत्वाकांक्षाओं का शिकार हुआ।'7 इस विरक्ति और नफरत से ऊबरने में राहुलजी को पर्याप्त वक्त लगा। राहुलजी सोवियत रूस में परिवार तथा समाज तथा भारतीय मैरेज एक्ट को अनदेखा करते हुए दूसरा विवाह लोला के साथ किया। राहुलजी का यह गृहस्थी जीवन बहुत सुखद नहीं था। राहुलजी लोला के बारे में कहते है–" हम दोनों में प्रकृति सामंजस्य नहीं था। मैं पुस्तकों के एकांत प्रेमी था और वह उसे उतनी आवश्यक बात नहीं समझती थी। कितनी ही बार हमारा मन–मुटाव भी हो जाता था, यद्यपि झगड़ा करने का स्वभाव न मेरा था, न उसका ही, इसलिए बात दूर तक नहीं बढ़ती थी।"8 धीरे–धीरे इस दाम्पत्य जीवन के बीच वैचारिक विरोध हुआ। भारत लौटने के बाद पत्नी वियोग राहुलजी को खला और तीसरी शादी कमला परियार से कर ली। राहुलजी को इस पारिवारिक माहौल में किसी से स्नेह–प्रेम मिला तो किसी

डाट–फटकार तो किसी से अक्षर की पहचान जो राहुलजी के जीवन पर अपना पहचान बनाकर रखी है।

राहुलजी का पठन–पाठन अनेको जगहों पर हुआ। इनके प्रारम्भिक गुरूओं में द्वारिका प्रसाद सिंह, पतरसिह, लालबहादुरसिंह, मौलवी इस्लाम, फूफा महादेव पंडित और मँगनीरामजी थे। अपने गुरू द्वारिका प्रसाद सिंह के बारे में कहते है–" द्वारिका प्रसाद सिंह नाटे और गठीले बदन के तरूण थे। वह हमारी कापियों पर अपना हस्ताक्षर अँग्रेजी में किया करते थे।''''''''''''उस वक्त ' छड़ी बिना विद्या नहीं आती ' यह सर्वमान्य शिक्षा–सिद्धान्त था, किन्तु मुझे जहाँतक स्मरण है, द्वारिकासिह बहुत ज्यादा मारते–पीटते नहीं थे, तो भी हम विद्यार्थीयों पर उनका काफी रोब था।"9 रानी की सराय स्कूल में द्वारिका प्रसाद सिंह के बदले नये अध्यापक पतरसिंह आए। राहुलजी लिखते है–" कहावतें उन्हें सैकड़ों याद थी, और बिलकुल मौके की। हाथ से जहाँ छड़ी बरसती, वहाँ उनके मुँह से कहावतो की झड़ी लग जाती।" 10 राहुलजी को लगता था कि औपचारिक पढ़ाई का रास्ता बहुत धीमा रास्ता है। इस रास्ते पर चलकर तो चुटकी भर ज्ञान के लिए वर्षो की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। राहुलजी में यह धीरज नहीं है। वे तो कम समय में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहते थे। उच्चशिक्षा ग्रहण की अभिलाषा और संयासी बनने की इच्छा से राहुलजी हरिद्वार पहुँचे। वहाँ संस्कृत पढ़ने हेतु विष्णुदत्त से मिले। राहुलजी विष्णुदत्त के बारे में लिखा है–" साठ–आठ दिन रहने के बाद पंडितजी का रहस्य खुलने लगा। उनको संस्कृत से कोई वास्ता न था। ' व्रतार्क ' को छपवाकर प्रेसवालों से कुछ रूपया ओर साथ ही तीर्थ पर आये भक्तों पर अपनी विद्वता की धाक जमाना उनका काम था।"11 वहाँ से

राहुलजी उत्तर भारत के विभिन्न स्थलों की यात्रा करते हुए, बनारस मँगनीराम के आश्रम में पहुँचे। उनकी विद्वता और आचरण से राहुलजी काफी प्रभावित हुए। राहुलजी लिखते है–"मँगनीराम ब्रह्मचारी के प्रति श्रद्धा जिन व्यक्तियों के हृदय में थी, वे साधारण राह चलते आदमी नहीं थे।""""""""वह निराकांक्षी थे, प्रदर्शन–शून्य थे। मँगनीराम शास्त्री विद्वान थे, वेदान्त और उपनिषद के खासतैर से, किन्तु विद्या 'विवादाय' क्या होती, इसकी ख्याति तो हृदय से हृदय तक पहुँच जाती थी। उनके विद्या अध्ययन के बारे में कहा जाता था, कि ' सुखी पत्तियों की क्षणिक प्राप्त रोशनी के सहारे उन्होंने पाठ याद किये थे।"12 काशी निवास के दौरान ज्योतिषा, तन्त्र–मन्त्रादि का भी ज्ञान राहुलजी ने प्राप्त किया। वही महान विद्वान रामावतार शर्मा से राहुलजी का परिचय हुआ, जिसका राहुल के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। राहुलजी कहते है–" शर्माजी चाहते थे कि मैं उनके साथ बराबर नहीं, तो कुछ समय जरूर काम करूँ। मेरी भी इच्छा ऐसे विद्वान की छत्र–छाया से लाभ उठाने की थी। पर 1921–1926 के साल मेरे लिए ऐसे थे जब कि एक पैर बाहर ओर एक पैर जेल में रहता थां इस प्रकार मुझे उस अद्भूत पंडित की आराधना मूक रहकर दूर से ही करनी पड़ी थी , पर उन्होंने विद्वत्ता का ऊँचा रूप मेरे सामने रक्खा था जिसके लिए सदा में अपने को उनका ऋणी मानता हूँ।"13 राहुलजी की ज्ञानतृष्णा धीरे–धीरे अपनी अन्वेषी प्रवृति के कारण नई राहों की तरफ बढ़ रही थी। वहाँ से राहुलजी ने दक्षिण भारत की यात्रा की और इस दौरान हरिप्रपन्ना स्वामी के संसर्ग में संस्कृत, वेदान्त और न्याय का अध्ययन किया। राहुलजी ने वहाँ विधिवत अध्ययन हेतु आगरा के आर्य मुसाफिर विद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ महेश प्रसाद के संसर्ग में राहुलजी को एक नई पहचान मिली। राहुलजी लिखते है–, " मेरी स्वाभाविक प्रवृति किधर को

है, इसका परिचय मुझे नहीं था। यहाँ आगरा में भाई साहेब के संपर्क में आने पर मालूम हुआ, जैसे आदमी अंधेरी कोठरी से निकालकर सूरज की रोशनी में रख दिया जाए, जैसे दम घुटती काली कोठरी से निकाल शीतल–मंद–सुगंधित वायु परिचालित बाग में ला रखा जाए। अब मुझे मालूम होने लगा, दुनिया में ऐसे भी काम हैं, जिनके लिए जीवन की आवश्यकता है, ऐसे भी आदर्श हैं, जिनके लिए मृत्यु मधुरतम वस्तु हैं ''14 राहुलजी ने अपने इस काल को नव प्रकाश का काल बताया है।

1921 से 1940 तक के वर्ष राहुलजी के सक्रिय राजनीति से जुड़ने के वर्ष हैं। इस काल में राहुलजी का परिचय अनेकों देशभक्त और राजनीतिज्ञों से हुआ। उस समय असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। गाँधीजी हर व्यक्तियों के दिलो दिमाग पर छाये हुए थे। राहुलजी ने गाँधीजी के बारे में मिश्रित प्रतिक्रियायें व्यक्त की हैं। एक ओर राहुलजी गाँधीजी की कुछ विचारधाराओं एवं कार्यो का समर्थन करते हैं, तो दूसरी ओर गाँधी के कुछ विचारों एवं कार्यो के प्रति वे असहमति भी व्यक्त किया हैं। राहुलजी ने गाँधीजी के विचारों के प्रति असहमति प्रगट करते हुए लिखा है–'' परीक्षा खतम करके असहयोग कीजिए। किन्तु, वहाँ कौन माननेवाला था, गाँधीजी ने जो ' सालभर में स्वराज' देने का ठीका ले लिया था। स्कूलों–कालेजों को शैतानी शिक्षणालय समझ उनसे असहयोग, तथा साल भर में स्वराज– इन दो बातों का शुरू से ही मैं विरोधी रहा,''15 यद्यपि दूसरे तौर से राहुलजी गाँधीजी की राजनीतिक जागृति और संघर्ष के जबर्दस्त पक्षधर था। उन्होंने लिखा है–'' कचहरियों का बायकाट? ठीक इसके द्वारा हम विदेशी शासकों को अपनी क्षमता और रोष दिखलाते हैं। विलायती माल का बायकाट भी अंग्रेजी बनियों के मुँह पर जबरदस्त चपत है,

और इससे हमारे स्वदेशी उद्योग धन्धों को मदद मिलेगी।"16 राहुलजी ने आम जनता को एकजुट करने का श्रेय गाँधीजी को देते हुए लिखा है–" गाँधीवाद ने भारतीय इतिहास में सबसे उल्लेखनीय महत्व की जो बात की है, वह है साधारण जनता तक क्रांति के संदेश को पहुँचाना और उसके लिए सर्वस्वत्याग का भाव पैदा करना। यह मामूली बात नहीं है, और इसके लिए इतिहास हमेशा गाँधीजी का नाम आदर और अभिमान के साथ लेगा।"17 गाँधीजी को राहुलजी ने बुद्ध के समकक्ष बताया है। राहुलजी ने छपरा से अपना राजनीतिक कार्य शुरू करते हुए, इस क्षेत्र के विभिन्न गाँवों का दौरा किया। यही राहुलजी की मुलाकात मौलाना मजहरूल हक एवं राजेन्द्र प्रसाद से हुई। हक साहब के राजनीतिक कार्य एवं सादगी पूर्ण व्यवहार ने राहुलजी को काफी प्रभावित किया। राहुलजी उनके बारे में लिखा है " हक साहब बड़े आदमी थे असली अर्थ में, तो भी मेरा उनकी ओर बड़ा आकषर्ण था। उनके बर्ताव बातचीत में एक तरह की सादगी अकृत्रिमता होती थी, जो मेरे जैसों पर भारी असर किये बिना नहीं रह सकती थी।'''''''तत्कालीन राजनीतिक नेताओं में जिस व्यक्ति के प्रति मेरी अपार श्रद्धा हुई, वह हक साहब ही थे। कितनी ही बार मेरी इच्छा थी कि कुछ समय फरीदपुर में उनके पास रहूँ, किन्तु मेरा समय कांग्रेस का काम ले लेता था।''' मेरा स्वप्न था कि छपरा में हक कालेज खोला जाये, एवं एक विस्तृत हक ' हॉल' बने, जिसमें उनकी मूर्ति रखी जावे।"18 डा0 राजेन्द्र प्रसाद के बारे में लिखा है–" राजेन्द्र बाबू के बारे में भी यह कहना पड़ेगा कि वे अपने से मतभेद रखने वालों की बातें भी बराबर ध्यान से सुनते और जहाँ तक हो सके, मतभेद को मिटाने की कोशिश करते हैं। यदि किसी बात में दोनों की राय में फर्क हो तो भी उसमें कड़वाहट आने नहीं देना चाहते।"19 असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण

राहुलजी को गिरफ्तार कर बक्सर जेल में भेज दिया गया। जेल अधिकार बनातवाले के प्रति अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राहुलजी लिखते है–" बनातवाले ने एक लेक्चर दिया, इस्पेक्टर–जेनरल हो जाने से, सरकार के इतने वर्षो के नमकख्वार होने से उन्हें अधिकार हो गया था, कि हमें सच्ची राजनीति का रास्ता बतलावें। मुझो तो वह आदमी बिलकुल ही रद्दी–सा जँचा। भारतीय होते हुए, उसे अपनी बेबसी को देखते जबाब को रोककर बोलना चाहिए था, किन्तु वह ' एकां लजजां परित्यज्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ' का नाट्य कर रहा था।"20 राहुलजी ने कुछ दिनों तक राजनीति से दूर रहते हुए नेपाल, हिमालय, श्रीलंका, तिब्बत, यूरोपीय देशों के साथ सोबियत रूस की यात्रा किया और 1938 ई0 में भारत लौटने के बाद किसान आन्दोलन से जुड़ गए। अमवारी में किसान सत्याग्रह के जुर्म में राहुलजी को गिरफ्तार किया गया, जिसकी जाँच पुलिस इंसपेक्टर जेनरल अलखकुमार के हाथ में सौंपी गई। राहुलजी लिखते है–" अलखकुमार में विशेष योग्यता थी , इसे इंकार करने की जरूरत नहीं, किन्तु साधारण तौर की योग्यता उनको इतने ऊँचे पद पर नहीं पहुँचा सकती थी। उनमें सबसे बड़ी योग्यता यह थी कि उन्होंने अपने शरीर और आत्मा को अंग्रेजों के हाथों में बेच डाला था, फिर ऐसे आदमी आए तो उससे क्या आशा की जा सकती।"21 जेल से छुटने के बाद राहुलजी फिर से अपने अभियान में जुड गये। बुद्ध की पच्चीसवीं शताब्दी भारत सरकार द्वारा मनाये जाने पर राहुलजी 4 जवाहरलाल नेहरू की भूरी–भूरी प्रशंसा करते हुए लिखते है–"इसमें कोई शक नहीं कि यदि पं0 जवाहरलाल नेहरू की जगह हमारे देश का कोई दूसरा प्रधानमंी होता, तो उतनी दूरदर्शिता से काम नहीं ले सकता था। नेहरू अपने विचारों और आदर्शो के लिए बुद्ध के व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट थे। उन्होंने वही काम किया

जो करना हमारे देश का कर्त्तव्य था, पर उसे वही कर सकते थे।"22 डा0 अम्बेडकर के प्रयास से जब कई भारतीयों ने बौद्ध धर्म को अपनाया तो बाबा साहब के इस प्रयास को राहुलजी ने काफी सराहा। राहुलजी ने लिखा है–" डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर ने यह बहुत बड़ा काम किया। भारत में लाखों बौद्धों को पैदा कर पुरानी सांस्कृतिक निधियों का उन्हें दायाभागी बनाया और उनके द्वारा भारत से बाहर के साथ सम्बन्ध स्थापित किया।"23 राजनीति से जुड़े बहुत से ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने राहुलजी के कदम से कदम मिलाकर चलते हुए खुद अपना परिचय दिया है।

राहुलजी को साहित्यकार के रूप में भी जाना जाता है। अपने जीवन काल में राहुलजी बहुत से देशी–विदेशी साहित्कारों एवं विद्वानों के साथ रहे हैं। 1931–32ई0 में राहुलजी की मुलाकात सारनाथ में प्रौढ़ विद्वान महामहोपाध्याय विधुशेखर शास्त्री से हुई जिनके बारे में राहुलजी बताते हैं–" उनका नाम पहिले ही सुन चुका था, लेकिन दर्शन करने का यह पहिला अवसर था। वह भी मेरे लेख ' भारत में बौद्ध धर्म का उत्थान और पतन ' पढ़ चुके थे। इसलिए में उनके लिए अपरिचित न था। उनकी सादगी, सदास्मितमुखता और मधुरभाषिता नवागन्तुक को देखने मात्र से आकर्षित किए बिना रह नहीं सकती और फिर मैं तो उनकी विशाल विद्वता का कुछ परिचय जरूर रखता था।"24 राहुलजी यूरोप यात्रा के दौरान पेरिस में फ्रांसीसी विद्वान पॉल पेलियो के विद्वत्ता से काफी प्रभावित हुए। राहुलजी कहते हैं–" फोन करने पर पता लगा कि डाक्टर पेलियो घर पर ही है। साढ़े तीन बजे हम उनके पास गए। डा0 पेलियो चीनी भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। मध्य एशिया के अनुसंधान में स्टाइन की तरह इन्होंने भी बहुत काम किया। मैंने उन्हें अपनी सम्पादित ' अभिधर्मकोश ' की

एक प्रति भेट की।"25 यही प्राच्य विद्या के प्रसिद्ध पंडित सिलवाँ लेवी से राहुलजी की मुलकात हुई। राहुलजी उनके कार्य को देखकर मुग्ध हो गए। राहुलजी उनके बारे में लिखते है–" 70 वर्ष के करीब उनकी अवस्था थी। भारतीय संस्कृति के वह दुनिया में सर्वश्रेष्ठ विद्वान थे। सारे बाल सफेद हो गए थे। इस अवस्था से बहुत पहिले ही भारतीय विद्वान बूढ़ा समझ काम छोड़ बैठते हैं''''''''''''आचार्य लेवी इस बुढ़ापे में भी दस–दस, बारह–बारह घंटा अनुसंधान करते तथा अपने काम के लिए दुनिया के किसी भी कोने में जाने के लिए तैयार थे।"26 जबकि इसके विपरीत भारतीय विद्वान राखालदास बनर्जी जो 50 साल के भी नहीं हो पाए थे, उसने मुझसे कहा कि–" हमें जो कुछ करना था वह कर चुके, अब आगे तुम लोगों को करना है।"27 रूस ी यात्रा के दौरान राहुलजी की मुलाकात डा0श्चेरवात्स्की से हुई जो संस्कृत, बौद्ध दर्शन के साथ रूसी भाषा के श्रेष्ठ विद्वान थे। उनके बारे में राहुलजी बताते है–" उनका मेरे प्रति बहुत स्नेह हो गया था। पत्र व्यवहार हमारा कई वर्षो से था, लेकिन इस दो महीने के सहवास ने एक दूसरे को बहुत नजदीक कर दिया था। 13 जनवरी को लेनिनग्राद छोड़ते वक्त मुझे कभी ख्याल नहीं आया था कि आचार्य के दर्शन अब न हो सकेंगे। मुझे वह जयसवाल की तरह एक बड़े सहृदय मिले थे और अपनी शिष्या लोला तथा इंगोर के प्रति उनके प्रगाढ़ स्नेह ने मुझे और भी उनका आत्मीय बना डाला था।"28 वहीं राहुलजी का भेट मेघनाथ साहा से हुई। मेघनाथ साहा के विचार और वाणी से राहुलजी अतिप्रसन्न हुए। राहुलजी उनके बारे में अपना उदगार प्रगट करते हुए कहते है–" भारत की उन खूसट खोपड़ियों में डा0 मेघनाथ साहा नहीं है, जो दूसरे देशों में जाकर अंग्रेजी को सर्वे–सर्वा मानने में जातीय अपमान का ख्याल नहीं करते। डा0 साहा ने यह इच्छा प्रगट की कि देश

हमारा पराधीन है, अतः मैं अपना संदेश अंग्रेजी में कत्तई नहीं दे सकता। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि वे संस्कृत में उनके अंग्रेजी भाषण को अनूदित कर दें। मैंने वैसा ही किया और उसे डा0 साहा के पास भेज दिया।"29 हिन्दी साहित्यकारो में राहुलजी निराला, दिनकर, नार्गाजुन भारतेन्दुजी के साथ मुंशी प्रेमचंद के काफी प्रशंसक थे, उन्होंने प्रेमचन्द को भारत का अमर लेखक एवं कलाकार की संज्ञा देते हुए लिखा है–" मुंशी प्रेचन्द साहित्यिक मनोरंजन और उच्च आदर्श के लिए अन्तः प्रेरणा का ही सफल प्रयास नहीं किया, बल्कि उनकी लेखनी द्वारा 20 वीं शताब्दी की साढ़े तीन दशाब्दियों के लोक जीवन का स्वरूप, लोक इतिहास बड़ी स्पष्टता और ईमानदारी के साथ चित्रित हुआ है।'''''''''''प्रेमचन्द का विश्व के साहित्यकारों में क्या स्थान होगा, इसका अनुमान आप इसी से कर सकते हैं कि रूस के प्रसिद्ध लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में हर साल प्रेमचन्द–दिवस मनाया जाता है, उनके ' गोदान ' को सुन्दर कृति समझकर रूसी भाषा में अनुवाद किया गया है।"30 बनारस में निरालाजी के साथ प्रकाशकों द्वारा किए गये वर्ताव से राहुलजी काफी नाखुश थे। राहुलजी लिखते है–" निरालाजी द्वारा कुछ रूपया माँगने पर लोगों ने कायदे–कानून की बात करनी शुरू की, तो उन्होंने अपने संग्रह को देने से इन्कार कर दिया। भला ऐसे पुरूष के सामने कायदे कानून की बाते करनी चाहिए।"31 ' सरस्वती ' के भूतपूर्व संपादक पं0 देवीदत्त शुक्लजी के बारे में राहुलजी लिखते है–" द्विवेदीजी के सबसे अधिक समय तक ' सरस्वती ' के कर्णधार पं0 देवीदत्त शुक्ल रहे, मुझे तो उनका और भी अधिक कृतज्ञ होना था, क्योकि देर से जब मैं हिन्दी पत्रिकाओं में लेख लिखने लगा, तो सबसे पहले संबंध ' सरस्वती ' से हुआ। शुरू से ही शुक्लजी ने मेरे लेखों का स्वागत ही नहीं किया, बल्कि औरों के लिए माँग करते रहे। यह

उस समय की बात है, जबकि मैं पहली बार लंका गया था।"32 कवि गुरू रवींद्रनाथ की शांतिनिकेतन कला भवन में बने भिन्न–चित्र को देखकर रवींद्रनाथ के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राहुलजी ने लिखा है–" कविगुरू का आश्रम कविता ओर कला के लिए विशेष तौर से महत्व रखता है। कला का प्रेम मेरा शायद गंभीर नहीं था, इसीलिए इस पवित्र स्थान के देवता रूष्ट हो गये थे। एक चित्र को देखने के लिए मैं मेज पर चढ़ा, उतरने लगा, तो देवता ने धीरे से स्टूल टेढ़ा कर दिया और मैं लिए दिए जमीन पर गिर पड़ा। पर, देवता अपने रोष को केवल मजाक से ही पूरा करना चाहते थे।"''''कवि गुरू के संपर्क में आकर यहाँ के देवता इतने क्रूर नहीं हो सकते थे। वर्षो से उनमें कवि ने मानवता का प्रचार किया था, फिर इसका फल क्यों न होता?"33 अपनी साहित्य यात्रा कम में राहुलजी का सम्बन्ध मिश्रबन्धु, ग्रियर्सन, काशीप्रसाद जायसवाल, द्विवेदीजी के साथ आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी से बना रहा , वही रामविलास शर्मा से सदैव राहुलजी का मतभेद रहा।

राहुलजी ने व्यक्ति के रूप में स्वयं अपना चिंतन किया है,जो व्यक्ति चिंतन का एक भाग है। राहुलजी का बचपन गॉव में बीता, गॉव के रीतिरिवाज के अनुसार नाना रामशरण पाठक राहुलजी का विवाह तय कर दिया, जो राहुलजी को स्वीकार नहीं था। राहुलजी लिखते है– "उस वक्त ग्यारह वर्ष की अवस्था में मेरे लिए यह तमाशा था। जब मैं सारे जीवन पर विचारता हूँ, तो मालूम होता है, समाज के प्रति विद्रोह का प्रथम अंकुर पैदा करने में इसने ही पहिला काम किया। 1908 ई0 में जब मैं 15 साल का था, तभी से मैं उसे शंका की नजर से देखने लगा था, 1909 ई0 के बाद से तो मैं गृहत्याग का बाकायदा अभ्यास करने लगा, ''''''''''निश्चित तौर से मैं इसे

अपना ब्याह नहीं कहता था। ग्यारह वर्ष की अबोध–अवस्था में मेरी जिन्दगी को बेचने का घरवालों का अधिकार नहीं, यह उत्तर उस वक्त भी मैं अपने बुजुर्गो को दिया करता, जो कि ब्याह के प्रति अपना कर्तव्य मुझे समझाते। मेरा उस वक्त का ज्ञान बहुत परिमित था, तो भी मैं इसे घर और समाजवालों का अन्याय समझता था, और उसे बर्दाश्त करने के लिए तैयार न था।"34 राहुलजी जीवन भर अपनी प्रथम परिणीता से दूर रहे और 1943 से पहले आजमगढ़ जिले की भूमि पर पैर तक नहीं रखा। इस वक्त किये गए संकल्प को राहुलजी बखुबी निभाया। तीस वर्ष बाहर भटकने, ज्ञान प्राप्त करने और एक अत्यन्त परिपक्व व्यक्तित्व अर्जित करने के उपरान्त ही राहुलजी आजमगढ़ के अपने गॉव की भूमि पर पैर रखते है। रहने के लिए नहीं, मात्र एक संस्पर्श के लिए। चौके में भोजन करके वापस आते समय तक वस्त्रों में लिपटी स्त्री उनका चरण छूने को आगे बढ़ती है। राहुलजी निर्दय ढ़ंग से आगे बढ़ जाते है। उस स्त्री से कोई संवाद नहीं होता है। वह स्त्री राहुलजी की पहली पत्नी थी। राहुलजी ने उस सम्बन्ध को एकदम अस्वीकार कर दिया था परन्तु प्रश्न उठता है कि उस स्त्री का क्या दोष था ?क्या उसके साथ थोड़ी संवेदनाशीलता राहुलजी नहीं दिखला सकते थे। शायद राहुलजी को लगा हो जरा भी रियायत बन्धन बन जाएगी, निर्दयता ही मुक्ति का रास्ता बन सकती है। इस सम्बन्ध विच्छेद पर अपनी प्रतिकिया व्यक्त करते हुए राहुलजी लिखते है–"किसी बाकायदा तिलाक से मेरा यह तिलाक–जो वस्तुतः अस्वीकृत अबोध बिवाह के लिए जरुरी भी न था–कहीं बढ़कर था, और मैंने उसी रुप में लिया था, इसलिए मैं समझता हूँ, उक्त घटना–ब्याह–के लिए समाज की जगह मुझे जिम्मेदार ठहराना गलत होगा। मैंने उसे कभी न ब्याह समझा, न उसकी जिम्मेवारी अपने उपर

मानी।"35 इस विवाह से राहुलजी परिवार वालों तथा समाज से बगावत करते है, जो उन्हें उनके अनचाहे, दे दी गई थी। उन पर थोप दी गई थी। इस विरक्ति और नफरत से उबरने में राहुलजी को पर्याप्त वक्त लगा। राहुलजी ने सोवियत रुस में परिवार, समाज तथा भारतीय मैरेज एक्ट को अनदेखा करते हुए दूसरा विवाह लोला के साथ किया। भारत आगम के बाद पत्नी वियोग राहुलजी को खला और तीसरी शादी कमला से कर ली। इस तरह राहुलजी ने परिवार समाज और कानून को लताड़ते हुए, अपने चाहत के अनुरुप वैवाहिक जीवन को स्वीकारा जो राहुलजी का व्यक्ति चिंतन का प्रतिफल है।

राहुलजी का पठन–पाठन अलग अलग जगहों पर हुआ। राहुलजी को लगता था कि औपचारिक पढ़ाई का रास्ता बहुत धीमा रास्ता है। इस रास्ते पर चलकर तो चुटकी भर ज्ञान के लिए वर्षो की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। राहुलजी में यह धीरज नहीं था। वे तो कम समय में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहते थे। रानी के सराय स्कूल में पढ़ते वक्त के समय राहुलजी लिखते है–"पढ़ने का काम मेरे लिए बिलकुल मुश्किल न था। वस्तुतः चार मास की पढ़ाई के लिए मेरे बारह मास यों ही बरबाद किये जा रहे थे।"36 बनारस में पढ़ाई के वक्त ही राहुलजी ने मंत्र–तंत्र की साधना किया। इस साधना का प्रभाव राहुलजी पर किस प्रकार पड़ा ?इस वास्तविक स्थिति पर वे लिखते है–"अब मुझमें कुछ परिवर्तन था। यह तो नहीं कह सकता, कि मंत्र–तंत्र, देवी–देवता पर से मेरा विश्वास उठ गया। उसकी सम्भावना कहॉ थी, जबकि मेरे आसपास के विद्वान–मूर्ख सब उस विश्वास को बढ़ाने में सहायक थे। हॉ ,अब फिर वैसे तजुर्बा के लिए मैं तैयार न था। धार्मिक वायुमंडल में उड़ने के साथ ठोस पृथिवी पर भी पैर

रखना चाहिए , इधर भी मेरा खयाल गया।" 37 आगरा के आर्य मुसाफिर विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हुए राहुलजी को एक नई पहचान मिली, " मेरी स्वाभाविक प्रवृति किधर को है, इसका परिचय मुझे नहीं था। यहाँ आगरा में भाई साहेब के संपर्क में आने पर मालूम हुआ, जैसे आदमी अंधेरी कोठरी से निकालकर सूरज की रोशनी में रख दिया जाए, जैसे दम घुटती काली कोठरी से निकाल शीतल–मंद–सुगंधित वायु परिचालित बाग में ला रखा जाए। अब मुझे मालूम होने लगा, दुनिया में ऐसे भी काम हैं, जिनके लिए जीवन की आवश्यकता है, ऐसे भी आदर्श हैं, जिनके लिए मृत्यु मधुरतम वस्तु हैं " 38 इस ज्ञान से प्रभावित होकर 1929–30ई0 में राहुलजी ने तिब्बत के दुगर्म स्थलों की यात्रा की। वहाँ सवा वर्ष रहकर अनेकों दुलर्भ पुस्तकों की खोज की तथा अपने आपको तिब्बती सिद्ध करने के लिए नया नाम दिये खुन्नू छेवड़।39 इतना ही नहीं वहाँ से राहुलजी इक्कीस खच्चरों पर ग्रंथराशि जमा करके लाये और उन पुस्तकों को अध्ययनार्थ कोलंबो ले गये, फिर उन दुर्लभ ग्रंथों को अपने साथ लाए और उनमें से कुछ पुस्तकें आज भी विहार रिसर्च सोसाईट संग्रहालय में रखे हुए है। अतः राहुलजी को जहाँ भी ज्ञान का रास्ता दिखाई देता था, बेझिझक उस रास्ते को अपनाते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ते रहे। राहुलजी लिखते है–जब तब पढ़े संस्कृत के दर्शन–काव्य ग्रन्थ ,घूमते–फिरते वक्त दृष्टिगोचर हुई भौगोलिक तथा स्थानीय भाषाओं की विशेषताएँ–इन सभी तरह के ज्ञानों ने मस्तिष्क और स्मृति के भीतर उथल–पुथल करके एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा कर दिया।"40

राहुलजी का बाल्यकाल गॉव में बीता ,गॉव के संस्कार ,रीति–रिवाज की छाप उनके जीवन पर पड़ी। गॉव में प्रचलित धर्म को सहर्ष स्वीकार किये पर उनकी मौलिक चिंतन बुद्ध के इस बचन –''बेड़े की भाति मैंने तुम्हें धर्म का उपदेश किया है ,वह पार उतरने के लिए है, शिर पर ढ़ोये–ढ़ोये फिरने के लिए नहीं।'41 'से जुड़ा रहा ,अतःजन्म से सनातनी राहुलजी वेद अध्ययन हेतु काशी गये। वैष्णव सहिष्णुता अच्छी लगी तो रामउदार साधु बनकर परसा मठ में रहे फिर नाव की तरह संन्यासी जीवन का चोला उतार फेंका और आर्यसमाजी बन गये। किन्तु जब उन्होंने देखा कि आर्य समाज भी कठमुल्लापन से मुक्त नहीं है तो उसे भी छोड़ दिया। राहुलजी लिखते है–अब मेरे आर्यसामाजिक और जन्मजात सारे विचार छूट रहे थे। अन्त में इस सृष्टि का कर्ता भी है ,सिर्फ इस पर मेरा विश्वास रह गया था।''42 आगे चलकर बुद्ध के विचारों को स्वीकार कर राहुल सांकृत्यायन के नाम से बौद्ध बन गये। राहुलजी ने हमेशा बुद्धि को अपना पथप्रदर्शक बनाया । एक दिन बड़ी सहजता से बौद्ध धर्म का चीवर भी उतार दिया और मार्क्सवादी बन गये। इन सारे विचारों के बदलाव के पीछे राहुलजी की अपनी आत्मचिंतन है। इतना ही नहीं उस समय के समाज में फैले हुए जाति–पाँति की भावना तथा उच्च–नीच का भेद,नारी के साथ दुर्व्यवहार राहुलजी की आत्मा को बेचैन कर दिया। इस संदर्भ में राहुलजी 'बोल्गा से गंगा' में रेखा अहीर के बहाने समाज की इस विभत्स करतूत को व्यक्त करते हुए लिखे है–''सबेरे रेखा का दूध नहीं आया। प्यादा के जाने पर रेखा ने गाय–भैंस न होने की बात कही। मालिक ने पॉच मुस्टंड़ों को हुक्म दिया–जाओ, हरामजादे की औरत का दूध दूहकर लाओं।''''''प्यादों ने चिल्लाती हुई मंगरी के स्तन को पकड़ कर गिलास में सचमुच कई धार दूध की मारी''43 इस तरह नारी के साथ किये जा रहे दुर्व्यवहार को

देखकर राहुलजी को तीव्र घृणा हुई और इस तरह शोषण पर टिके समाज की क्षय की कामना ही नहीं बल्कि इसमें बदलाव लाने के लिए हर तरह से संघर्ष भी किये। राहुलजी समाज निर्माण करने के लिए कहते है–"हम गॉव–गॉव में पंचायत को कायम करेंगे, जिसमें कम खर्च में लोगों को न्याय प्राप्त हो।हम सारे मुल्क की एक पंचायत बना देंगे,जिसको गॉव–गॉव की प्रजा चुनेगी और जिसका हुक्म बादशाह पर भी चलेगा। हम जमींदारी प्रथा को उठा देंगे, और किसान और सरकार के बीच कोई दूसरा मालिक न रहेगा"''''हम सिंचाई के लिए नहरें, तालाब और बॉध बनायेंगे, जिससे करोड़ों मजदूरों को काम मिलेगा, देश में कई गुना बेशी अनाज पैदा होगा और किसानों के लिए बहुत से नये खेत मिलेगें।"44

राहुल एक व्यक्ति का नाम नहीं, विचारधारा का नाम है जो केवल सिद्वान्त की बात नहीं करता बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उसे कियात्मक रुप देने में जान की बाजी भी लगा देता है। राजनीति के क्षेत्र में राहुलजी ने जब अपना पॉव रखा तो गॉधीजी के इस दावा से कि'साल भर में स्वराज'मिल जाएगा, अतिरंजित लगा था। राहुलजी आजमगढ़ में न जाने की प्रतिज्ञा कर चुके थे। अतः छपरा से राजनीतिक कार्य शुरु किया। वहॉ के लोगों में पशु वली,गॅजा एवं दारु समर्पित करने की परम्परागत क्रिया से अलग हटाने के लिए एक दिन अपने उपर देवता आने का नाटक करते हुए कहा–"हम सभी देवता गॉधी बाबा के साथ हैं, न हमें बलि चाहिए, न गॉजा, न शराब ,गॉधी बाबा के हुक्त के खिलाफ जो इन चीजों को चढ़ावेगा उसका हम नाश कर देगें"45 जनता को जागरुक करने के लिए राहुलजी अन्य नेताओं से अलग हट कर हिन्दी और 'भोजपुरी भाषा' 46 में भाषण देते थे क्योकि उन्हें विश्वास था कि

मातृभाषा से लोगों का दिल आसानी से जीता जा सकता है। इस संबंध में गुणाकर मुले लिखते है कि "छपरा की बोली में दिये जाने वाले राहुलजी के भाषण राजेन्द्र बाबू के भाषण से भी ज्यादा पसंद किये जाते थे। 47 राजनीतिक कार्यकर्ता होने एवं किसान आन्दोलन में भाग लेने के कारण अनेकों बार राहुलजी को जेल जाना पड़ा। राहुलजी जेल में अन्य क्रांतिकारियों के तरह बैठे नहीं रहे बल्कि जेल में अनेकों ऐसी पुस्तके लिखीं जिनमें वर्तमान के साथ भविष्य का चित्र दिखाई देता है। यह कार्य राहुलजी के अपने व्यक्ति चिंतन का प्रतिफल है।

राहुलजी ने अपने जीवनकाल में अनेक भाषाओं के अध्ययन किये पर जिस भूमि में राहुलजी का जन्म हुआ था, उस भूमि के भाषा को विकसित और समृद्ध करने में अन्तकाल तक लगे रहे। कमला सांकृत्यायन लिखती है–"राहुलजी हिन्दी में ही सोचा,हिन्दी में ही लिखा और अपने जीवन के अन्त तक हिन्दी भाषा और वाड्मय के भण्डार को ही समृद्ध करते रहे। हिन्दी वाड्मय के भण्डार को समृद्ध बनाने में उन्होंने विविध विषयों के अनेक ग्रंथों को देकर अकेले जितना योगदान किया उतना और कौन व्यक्ति कर सका है?"48 राहुलजी ने आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो इसके लिए अथक प्रयास ही नहीं किये बल्कि इसके विरोध करने वालों से सख्त नफरता भी रखे। 31 दिसम्बर सन्1947 ई0 में बम्बई अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के दौरान दिए गए भाषण में व्यक्त अपने हिन्दी प्रेम के चलते राहुलजी को कुछ वर्ष के लिए कम्युनिष्ट पार्टी से भी अलग रहना पड़ा था पर राहुलजी को इसके लिए थोड़ा भी अफसोस नहीं हुआ। राहुलजी हिन्दी से जुड़ी हुई लोक भाषाओं के विकास के समर्थक थे। लोक भाषा से राहुलजी का आशय प्रान्त विशेष की स्थानीय

भाषा से था। उनकी मान्यता थी कि किसी भी प्रान्त विशेष की उन्नति उसकी लोक भाषा से ही सम्भव है। लोक भाषाओं को ज्ञान का माध्यम बनाने से ही शिक्षा में प्रगति सम्भव है।राहुलजी ने अपनी पत्नी कमला को संस्कृत भाषा सिखाने के लिए एक सुन्दर तरकीब सोची। इस संबन्ध में कमला सांकृत्यायन ने लिखी है–"डायरी पढ़ने के लिए मुझे पूरी छूट दे रखी थी पंडितजी ने, इसलिए नहीं कि उनमें मेरी प्रशंसा ही प्रशंसा लिखी जाती थी, बल्कि इसलिए कि उनमें ज्यादातर मेरी शिकायतें ही रहती ताकि उनको पढ़कर मैं अपने में सुधार करुँ। मुझे संस्कृत पढ़ाने की उनकी बड़ी इच्छा थी, किन्तु अध्ययन के लिए जितना समय देना चाहिए उतना मैं दे नहीं पाती थी, घर गृहस्थी को भी तो सँभालना होता था।"""""""""तब उन्होंने मुझे संस्कृत सिखाने की एक तरकीब सोची। उन्हें पता था कमला उनकी डायरी तो पढ़ती ही है फिर क्यों न उसे हिन्दी की जगह संस्कृत में लिखे। मतलब की चीज वह तो समझ ही लेगी । उन्होंने 12 सितम्बर 1956 की दैनन्दिनी में लिखा–संस्कृते दैनंदिनी लिखितुमारब्धा,कदाचित् सा एवं संस्कृतं पठेत्। परं तस्या मन एव नात्र।"49 राहुलजी अपने जीवन में पढ़ाई के सामने हर चीज को तुच्छ मानते थे। अपनी पत्नी,बच्चों को भी सलाह देते रहे पढ़ाई जीवन का अमूल्य आभूषण है। कमला सांकृत्यायन इस संदर्भ में लिखती है–"अपने विद्यार्थी जीवन में मसूरी की कठोर सर्दी में पहनने के लिए एक भी स्वेटर नहीं बुन सकी। बच्चों के जन्म के समय एक दो जोड़े मोजे–टोपी बुनने पर भी वे शिकायत करते थे। इस काम को पढ़ाई के सामने तुच्छ मानते थे। ऐसा नहीं कि इस कला का वे अनादर करते हों, किन्तु उनका कहना था, पहले डिग्री प्राप्त कर लो, बाद में जो मर्जी हो करना।" इस चिंतन और दिशा निर्देशन का प्रतिफल है कि आज कमलाजी प्रोफेसर के पद पर है।"50 राहुलजी

अपने कार्य को घड़ी की सूई के तरह आगे बढ़ते हुए सदैव देखना चाहते थे। वे कल पर विश्वास नहीं रखते थे। कई एक बार इस सम्बन्ध में राहुलजी को अपनी पत्नी, मित्रों के साथ अन्य शुभ चिंतकों से विबाद भी हो गया पर राहुलजी पीछे नहीं हटे।

इस तरह राहुलजी ने अपने जीवन के बाल्यकाल से लेकर अंतिम समय तक जिन जिन व्यक्तियों के साथ और संपर्क में रहे, उन व्यक्तियों तथा अपने गुण और दोष को अपनी लेखनी में बाँध कर समाज के पटल पर रखा है। यह कार्य राहुलजी की विश्व के धरातल पर अलग पहचान बनाता है। राहुलजी की व्यक्ति चिंतन कठमुल्लेपन का कायल नहीं था। अपनी स्वतन्त्र तार्किक दृष्टि के सामने किसी भी पंथ, किसी भी नीति या मत के आगे झुकते नहीं थे। राहुलजी में आत्मनियंत्रण, अनुशासन, अन्तर्मुखता, सहनशीलता, बदलती परिस्थितियों के साथ अपने आपको बना लेने की क्षमता, निष्ठा, कठिन परिश्रम करने का शक्ति, अविवादित बने रहना, समय की पाबंदी सरलता व सहजता ही उनकी व्यक्ति चिंतन का पहचान है।

संदर्भ सूची–

1 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1, पृ0 सं0 344

2 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 11

3 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 34

4 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2, पृ0 सं0 585–586

5 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 51–52

6 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 347

7 राहुल सांकृत्यायन, 'कनैला की कथा ',किताब महल,इलाहाबाद,1956, समर्पण

8 राहुल सांकृत्यायन, 'राहुल वाङ्मय' खंड एक, जिल्द 3, पृ0 सं0 192

9 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 38

10 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 44

11 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 86

12 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 109

13 राहुल सांकृत्यायन ' राहुल वाङ्मय' खण्ड–दो, जिल्द एक ' जिनका मैं कृतज्ञ' पृ0 सं0 623

14 वही, पृ0 सं0 176

15 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 252

16 राहुल सांकृत्यायन, 'वोल्गा से गंगा' किताब महल,इलाहाबाद,पृ0 सं0 318

17 राहुल सांकृत्यायन,'दिमागी गुलामी',इलाहाबाद,1998 पूर्वोक्त,पृ0 सं0 9

18 राहुल सांकृत्यायन ' मेरी जीवन यात्रा' भाग–1, पृ0 सं0 310

19 वही पृ0 सं 8

20 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 266

21 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 319

22 राहुल सांकृत्यायन ' राहुल वाड़्मय' खण्ड–दो, जिल्द दो, पूर्वोक्त 567

23 वही, पृ0 सं0 562

24 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 86

25 वही, पृ0 सं0 92

26 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 107

27 वही , पृ0 सं0, 107

28 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 282

29 राहुल सांकृत्यायन, राहुल वाड्'मय, खंड एक, जिल्द तीन, पृ0 सं0 19–20

30 राहुल सांकृत्यायन, 'प्रेमचंद्र स्मृति' राहुल वाड़्मय, पूर्वोक्त,पृ0 सं0 593

31 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–4,पृ0 सं0 277

32 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–4,पृ0 सं0 40

33 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–4,पृ0 सं0 300

34 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 53

35 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 53

36 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 47

37 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 115

38 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 176

39 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 39

40 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 19

41 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 19

42 राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–2,पृ0 सं0 19

43 राहुल सांकृत्यायन, 'बोल्गा से गंगा',किताब महल,इलाहाबाद ,पृ0 सं0 286

44 राहुल सांकृत्यायन, बोल्गा से गंगा',किताब महल,इलाहाबाद ,पृ0 सं0 301

45 राहुल सांकृत्यायन,' मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 254

46– राहुल सांकृत्यायन, 'मेरी जीवन यात्रा',भाग–1,पृ0 सं0 259

47 गुणाकर मुले, 'स्वयंभू महापंड़ित',राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 1993,पृ0 सं0 40

48 कमला सांकृत्यायन',महामानव महापडित',राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ0 सं0 23

49 वही,पृ0 सं0 122

50 वही,,पृ0 सं0 78

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का श्रीगणेश करते समय हमारे सामने दो मौलिक समस्याऐं थी। सर्वप्रथम, राहुलजी की आत्मकथा साहित्य आत्मकथा की कसौटी पर खरी है या नहीं, इसकी मीमांसा करना। राहुलजी की आत्मकथा साहित्य पाँच खण्डों में प्रकाशित है। यह राहुलजी की जीवनी न होकर जीवन यात्रा है। उनकी यह जीवन यात्रा वैष्णव केदार के साम्यवादी राहुल सांकृत्यायन बनने की यात्रा है। यह आत्मकथा साहित्य एक दपर्ण की तरह है जिसमें आत्मकथा के सभी गुण समाहित हैं और यह राहुलजी के जीवन के समस्त वैचारिक आयामों को उद्घाटित करती है। दूसरी समस्या राहुलजी के जीवन में वैचारिक बदलाव कैसे और क्यों हुआ? इस पर समीक्षात्मक रूप से प्रकाश डालना। राहुल सांकृत्यायन ऐसे विलक्षण पुरूष है जो अपने जीवन और चिन्तन दोनों ही क्षेत्रों में आजीवन सक्रिय यायावर बने रहे। वे अपने जीवन में कई विभिन्न, विपरीतधर्मी पहचानों के साथ, आस्था के निर्माण व विखंडन के बीहड़ रास्ते पर चलते रहे। जीवन के प्रारम्भिक काल में राहुलजी का जो व्यक्तित्व था, वह अन्तिम दौर तक आते–आते कई बार परिवर्तित हुआ है। बचपन में सनातनी संस्कार में आस्था रखने वाला आर्यसमाजी से बौद्धभिक्षुक और अन्त में कटर साम्यवादी बनता है। बचपन से ही राहुलजी में सत्य की खोज के प्रति तीव्र आग्रह, अदम्य साहस और विद्रोह, गहरी संवेदनशीलता, देश प्रेम, गहर अध्यवसाय, अनुभव की व्यापकता, मानव जीवन और लोक की सूक्ष्म पहचान, पुरातत्व, इतिहास, दर्शन और राजनीति के प्रति विशेष अभिरूचि थी। उनके व्यक्तित्व के ये सभी गुण एक दूसरे से अभिन्नरूप से परस्पर संबद्ध है। मानव मुक्ति, जनचेतना और रूढ़िमुक्ति जीवन के पक्षधर होने के

कारण राहुलजी अपने जीवन में आस्थाओं को परखते हुए पुरानी आस्थाओं को छोड़ते गए और नवीन आस्थाओं की ओर बढ़ते चले गए। यह वैचारिक बदलाव स्वयं राहुलजी की अपनी मानसिक उपज का प्रतिफल है। उनके विचार और व्यक्तित्व की यह विकासोन्मुख प्रवृत्ति उनके जीवन के कार्यकलापों और लेखन से परिलक्षित होती है। प्रस्तुत शोध–अध्ययन राहुलजी की आत्मकथा पर केन्द्रित है। राहुलजी ने अपनी आत्मकथा ' मेरी जीवन यात्रा ' शीर्षक से लिखी है, जो पाँच भागों में प्रकाशित है। स्पष्ट है कि यह जीवनी न होकर जीवन यात्रा है। उनकी यह जीवन यात्रा वैष्णव केदार के साम्यवादी राहुल सांकृत्यायन बनने की यात्रा है। इस संदर्भ में प्रो. नामवर सिंह ने लिखा है " मेरी जीवन यात्रा का सबसे बड़ा आकषर्ण है कनैला के केदार पाण्डे का. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन में रूपान्तरण। जीवन की यह यात्रा अन्य यात्राओं से कितनी लम्बी है! कितनी दुर्गम! कितनी साहसिक! और कितनी रोमांचक! और कितनी सार्थक! " इन आत्मकथाओं में राहुलजी का बचपन, किशोरावस्था, पढ़ाई–लिखाई, वैराग्य की स्थिति, आर्यसमाज की दीक्षा, उन्मुक्त यायावर जीवन, राजनैतिक आंदोलन, रूस प्रवास का विवरण, साहित्य लेखन, परिभाषा निर्माण का कार्य तथा विश्वकोश संपादन आदि का समावेश है। यही हमारा शोध विषय का केन्द्र हैं जिसके संदर्भ में राहुलजी के वैचारिक विकास को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रथम अध्याय **'हिन्दी में आत्मकथा लेखन और राहुल सांकृत्यायन का आत्मकथा साहित्य'** शीर्षक से है। इस अध्याय के अर्न्तगत आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा, राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित आत्मकथा साहित्य और आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का प्रारम्भिक जीवन एवं

परिवेश पर प्रकाश डाला गया है। आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें आत्म कथाकार अपने जीवन के एक–एक वृतांत को वातावरण, परिस्थितियों के साथ ही साथ सामाजिक परिवेश से जोड़कर लिखता है। आत्मकथा लेखन की मूल प्रेरणा पाश्चात्य साहित्य ही रहा। आधुनिक काल के पहले अपवाद स्वरुप केवल एक ही आत्मकथा मिलती है, वह है बनारसी दास जैन की ' अर्द्धकथा' 'जिसका रचना काल 1641 ई0 है। आधुनिक काल में आत्मकथा लेखन का प्रचलन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हुआ। राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा'(पाँच खण्ड) आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय कृति है। इसमें लेखक ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों का विवरण बहुत ही कलात्मक रुप में प्रस्तुत किया है। राहुलजी ने अपनी जीवन यात्रा में यथार्थ का सदैव ध्यान रखते हुए स्मृति तथा डायरी के सहारे बाल्यकाल के जीवन को निष्कपट भाव से प्रस्तुत किया है। इसमें जीवन यात्रा के साथ–साथ वास्तविक यात्रावृत भी समाविष्ट है। लंका ,नेपाल ,तिब्बत ,इंग्लैण्ड ,यूरोप ,रुस ,ईरान ,हिमालय के उत्तरी क्षेत्र के साथ ही साथ लेखक उन देशों की राजनैतिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की रुपरेखा का चित्र आत्मकथा में किया है। इस आत्मकथा से राहुलजी के व्यक्तिगत जीवन के साथ ही साथ हमें तत्कालीन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के बारे में भी विस्तृत जानकारी मिलती है। इस विस्तृत आत्मकथा में राहुलजी की मानवीय दृष्टि, उनकी संवेदनशीलता उनकी देशभक्ति और विश्व–दृष्टि के साथ ही साथ वैचारिक परिर्वतन देखने को मिलता है। इस प्रकार राहुलजी की जीवन यात्रा एक दर्पण की तरह है, जिसमें राहुलजी के बाल्यकाल से लेकर 1956 तक के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों और वैचारिक प्रौढ़ता प्रतिबिम्बत है। राहुल सांकृत्यायन का जीवन एवं परिवेश गाँव से शुरू हुआ।

उनका जन्म 9 अप्रैल,1893 दिन रविवार को ननिहाल 'पन्दहा'' गॉव में हुआ। राहुलजी का पैतृक गॉव कनैला' है। राहुलजी का बचपन नाना–नानी के साथ पन्दहा में बीता। नाना के कड़े अनुशासन में राहुलजी का विकास हुआ। नाना–नानी के संस्कार के साथ पितृ परिवार के संस्कार की छाप भी राहुलजी के जीवन पर पड़ी। मातृकुल से राहुलजी को बाल्य काल में 'फौजी रौब, धुमक्कड़ी, दयाभाव, मिला तो पितृकुल से इन्हें ठेठ देहाती जीवन से जुड़े मानवीय संस्कार प्राप्त हुए। राहुलजी की पढ़ाई 1898 में मदरसा से शुरू हुआ। 1899 ई0 में राहुलजी को रानी की सराय में भर्ती कराया गया। राहुलजी की अपौचारिक शिक्षा सिर्फ मिडिल तक हुई। उसके बाद राहुलजी की शिक्षा अनौपचारिक रूप से अयोध्या, मोतीराम के बाग, आगरा, लाहौर और श्रीलंका में हुई। राहुलजी का बचपन का परिवेश गाँव के खेत खलिहान, धूल मिट्टी, विश्वास, शिष्टाचार के साथ भयंकर प्रभाव डालने वाले अकाल, हैजा, प्लेग के बीच बीता। गाँवों में फैले अंधविश्वास, भूत–प्रेत, देवी–देवता, ऊँच–नीच, छुआछूत का वातावरण मिला। साथ ही वहाँ मानवीय करूणा एवं उदारता भी मिली। राहुलजी ने अपने प्रारम्भिक परिवेश से इन्हीं गुणों को आत्मसात कर अपनी सूझ–बूझ से अपना रास्ता निर्मित किया।

शोध प्रबन्ध का दूसरा अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के दार्शनिक विचारों का विकास'** शीर्षक से है। राहुलजी के वैचारिक विकास के प्रमुखतः चार मोड़ है :वैरागी साधु ,आर्यसमाजी, बौद्ध और मार्क्सवादी। इन मोड़ों से होकर गुजरते हुए ही उनके दार्शनिक विचारों का विकास हुआ। कम उम्र में ही घरवालों द्वारा विवाह करा दिया गया, जो राहुलजी को स्वीकार नहीं था। राहुलजी को यहीं से

वैराग्य के प्रति आकषर्ण हुआ। उस दिन के बाद राहुलजी रोज परमहंस बाबा की कुटिया पर जाने लगे और धीरे–धीरे राहुलजी के ऑखों का पर्दे खुलने लगे,'एकश्लोकेन वक्ष्यामि,यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ब्रम्ह सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रम्हैव नापरः। 'जैसे श्लोक कंठस्थ हो गए। इन सारे श्लोकों एवं कुटिया पर होते सत्संग के प्रभाव के कारण केदार पाण्डे में वैष्णव साधु के संस्कार जाग गये। सन् 1913 से 1914 तक उन्होंने् दक्षिण भारत की लंबी यात्रा की। वे मद्रास, तिरूमले, तिरूमिशी, तिरूपति, बालाजी, कांचीपुरम आदि स्थानों पर रहे। सन् 1914 में राहुलजी वेद अध्ययन हेतु अयोध्या पहुँचे। वहाँ राहुलजी को ज्ञान की अपेक्षा आवारापन के तजुर्बे अधिक मिले। राहुलजी वहीं से हृषिकेश, केदारनाथ, बदरीनाथ की यात्रा पर गये। इस दौरान साधुओं के आचार व्यवहार, कार्यकलाप देखकर राहुलजी के मन में एक बदलाव आया। उतराखंड की यात्रा से लौटकर राहुलजी वाराणसी ब्रम्हचारी मंगनीराम के आश्रम में संस्कृत पढ़ने के लिए पहुँचे। वही राहुलजी ने वैष्णवों और शैवों के खंडन–मंडन की पुस्तकें पढ़ी और वैष्णव मत के विरोधी और कट्टर शिवभक्त बन गये। धीरे–धीरे राहुलजी का तंत्र–मंत्र की ओर आकर्षण बढ़ा। पर जब वह इस साधना में असफल हुए तो उनके विचारों में एक भारी बदलाव आया। राहुलजी ने इसे अपने जीवन में गॉठ की तरह बॉध लिया। इस कालखंड के दौरान उत्पन्न वैचारिकता में जाति–पॅात संबन्धी कट्टरता, साम्प्रदायिक संकीर्णता, साधु–संतो के चाल– चलन को बहुत निकट से देखा अब राहुलजी का जीवन यात्रा में एक नया मोड़ आया। अब वे तेजी से आर्य समाज के प्रति आकर्षित हुए। आर्यसमाज ने राहुलजी को वैचारिक मुक्तता की जमीन ही नहीं प्रदान की , बल्कि उसकी तार्किक अन्तर्दृष्टि ने भीतरी प्रतिभा के सम्यक विकास का स्वरथ वातावरण भी दिया।

राहुलजी आर्यसमाज के गर्मदलीय विचारों के जबरदस्त समर्थक थे। राहुलजी के विचार काल, स्थान और परिस्थितिवश परिवर्तित होते रहे। अब वे हर बात को सच्चाई की कसौटी पर कसना चाहते थे और तत्पश्चात् उसे अपने आचरण में उतारने की चेष्टा करते थे। राहुलजी ने आर्यसमाज के वैदिक सत्य के शाश्वत सत्य से ऊब कर एक नया पथ पकड़ा जिसने सत्य की खोज के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। यह पथ बौद्ध धर्म का था। महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों को पढ़कर राहुलजी के चिन्तन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। बुद्ध का यह वचन कि "मेरे उपदेश धर्म को बेड़े के समान समझना, पार होने के लिए है सिर पर लाद कर ढ़ोने के लिए नहीं"। इसे पढ़कर राहुलजी को प्रवज्या की सार्थकता का अहसास हुआ। उन्होंने यह भी समझा कि विचार जीवन में साधन हैं, साध्य नहीं। साथ ही उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि तथाकथित ईश्वर का अस्तित्व एवं बुद्ध दोनों का निर्वाह एक साथ नहीं हो सकता। यहीं से राहुलजी की एक नई यात्रा शुरु होती है। वे आत्मवादी से अनात्मवादी बनते हैं, वैष्णव व आर्यसमाज के रास्ते से हट कर बौद्ध में रुपांतरित होते हैं। सन् 1920 ई0 में उन्होंने बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक स्थानों की यात्रा की। 1927 ई0 में श्रीलंका चल गये। श्रीलंका में 19 माह रहकर अपना समय गम्भीर अध्ययन-अध्यापन में बिताया। विद्यालंकार विहार में अपने अठारह-उन्नीस माह के उस प्रथम निवासकाल में राहुल ने घोर परिश्रम किया, यहाँ तक कि वे अपने मिनटों तक का हिसाब देने का दावा करते है। इस यात्रा से राहुलजी में बौद्ध धर्म के प्रति अटूट विश्वास तथा बौद्ध ग्रंथों को पढ़ने जानने और लिखने की इच्छा बढ़ गई। बौद्ध ग्रंथो के खोज हेतु तिब्बत की यात्रा की। उन्होंने तीन बार सन् 1934, 1936 और 1938 ई0 में तिब्बत की यात्राएँ की। बुद्ध के मूल

सिद्धांतों यथा ईश्वर को नहीं मानना, आत्मा को नित्य नहीं मानना, किसी अन्य को स्वतः प्रमाण नहीं मानना और जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक परिमित मानना ने राहुलजी को विशेष रुप से प्रभावित किया। यहाँ से वे पूर्ण रुप से अनीश्वरवादी हो जाते हैं पर राहुलजी ऐसे प्रगतिशील थे, जो किसी एक खूंटे से बंधकर नहीं रह सकते थे। बौद्ध धर्म की कमियों को भी उन्होंने अपनी आँखों से देखा और धीरे–धीरे इस धर्म से भी उन्होंने अपना मुँह मोड़ लिया अब वे मार्क्सवाद की ओर बढ़ते गये। राहुलजी सन् 1932ई0 में इंग्लैड गये। वहाँ उन्हेंाने साम्यवादी साहित्य की अनेकों पुस्तकों का अध्ययन किया। राहुलजी ने मार्क्स के दर्शन के प्रकाश में समझा कि मनुष्य के दुःखों का कारण नभ में नहीं, धरती पर है। मार्क्स के दर्शन से प्रभावित होकर 1935 ई0 में राहुलजी रुस की यात्रा पर निकले, वहाँ की जनता की खुशहाली और वहाँ की समाजवादी व्यवस्था ने राहुलजी को विशेष रुप से प्रभावित किया। 1947 से लेकर राहुलजी की जीवन यात्रा 1963 तक एकमुखी ही बनी रही। राहुलजी के जीवन में यह जो वैचारिक परिवर्तन है, यह स्वयं राहुलजी के तर्कबुद्धि का परिणाम है।

शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के राजनीतिक विचारों का विकास '** शीर्षक से है। इस शीर्षक के अन्तर्गत राहुलजी की वैज्ञानिक दृष्टि और मार्क्सवाद, किसान आन्दोलन तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में सहभागिता पर प्रकाश डाला गया है। राहुलजी राजनीति के क्षेत्र में एक स्वतंत्रता सेनानी के साथ एक साइंस अध्येता के रुप में भी दिखाई देते हैं। राहुलजी ने 'साइंस' को 'प्रयोग'से जोड़ते हुए, प्रयोग, निरीक्षण तथा साक्ष्य पर आधारित 'वस्तु' की

वस्तुवादी व्याख्या को महत्व दिया है। इसी के साथ कार्य–कारण के सिद्धान्त को भी माना है। राहुलजी ने पदार्थ की सरंचना, परमाणु विखण्डन, सौरमण्डल की उत्पति, क्वांटम भौतिकी, सापेक्षवाद, विकासवाद तथा ताप गतिकीय सिद्धान्तों आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढ़ंग से किया है। उन्होंने आधुनिक ज्योतिष के लिए गणित का भी अध्ययन किया। केवल अध्ययन ही नहीं, इन विषयों पर हिन्दी में लिखना भी शुरु किया। 1940ई0 में राहुलजी ने किसान सत्याग्रह में भाग लिया। इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण राहुलजी गिरफतार हुए। जेल में रहकर राहुलजी ने 'विश्व की रुपरेखा' नामक पुस्तक लिखी, जो राहुलजी के वैज्ञानिक अध्ययन को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक राहुलजी के विज्ञान के प्रति उनकी रागात्मक और बौद्धिक दृष्टि को स्पष्ट करती है। इस तरह की अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों यथा 'दर्शन–दिग्दर्शन', 'मानव समाज' ,'वैज्ञानिक भौतिकवाद' और 'विश्व की रुपरेखा' को भी लिखा। राहुलजी ने साइंस तथा दर्शन के सम्बन्ध को भौतिक तत्व के आधार पर स्वीकार किया है। उन्होंने अपने सूक्ष्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए विज्ञान तथा दर्शन के सम्बन्ध को काफी बोधगम्य ढंग से प्रस्तुत किया है। राहुलजी ने समय समय पर अपने जीवन में अनेकों दर्शनों को समझा और स्वीकार किया परन्तु उन्हें इसका वैज्ञानिक स्वरुप मार्क्स के दर्शन में ही दिखाई दिया। वे मार्क्स के सिद्धान्तों को वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा पाते हैं। राहुलजी ने राजनीति में सन् 1921 ई0 में पदार्पण किया। उस समय असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से कितने ही वकील, बैरिस्टर अपनी प्रैक्टिस बन्द कर इस आन्दोलन से जुड़ गये थे। राहुलजी की राजनीतिक भावनाएँ भी बाहरी वायुमंड़ल की अनुकूलता पाकर उभरने लगी और वे भी इस आन्दोलन से जुड़ गये। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण कई एक

बार गिरफ्तार हुए। राहुलजी का कहना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता हमारा स्थाई ध्येय है, हम गॉधीजी के जेल चले जाने पर भी उसे छोड़ नहीं सकते अत; इस ध्येय की प्राप्ति के लिए भी संधर्ष करना अनिवार्य है। चूँकि संघर्ष जन जागृति तथा संगठन बिना नहीं हो सकता अत; राहुलजी ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। 29 अक्टूबर1922 को हुए चुनाव में राहुलजी को जिला कांग्रेस का मंत्री चुना गया पर राहुलजी एक कार्यकर्ता के रुप में ही अपनी सेवायें देने के पक्ष में थे। क्योंकि इस समय जिला कांग्रेस कमेटी को मजबूत करने के लिए पूरे परिश्रम की आवश्यकता थी इसलिए उन्होंने यह पद स्वीकार कर लिया। राहुलजी ने एक कुशल परामर्शदाता एवं संगठनकर्ता की भूमिका का कुशलता से निर्वाह किया। 26जनवरी 1923 ई0 को प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक पटना में हुई। पटना में भाषण देते हुए राहुलजी ने कहा–देश की आजादी के लिए इस तरह के शहीदों का खून देश माता के लिए चन्दन होगा। ओजस्वी भाषण के कारण राहुलजी पर भारतीय दंड विधान की धारा 124 ए के अनुसार राजद्रोह का मुकदमा चला और उन्हें दो वर्ष के लिए हजारी बाग जेल भेज दिया गया। हजारीबाग जेल से रिहा होने के बाद राहुलजी कुछ दिनों तक राजनीति से दूर रहे और नेपाल, श्रीलंका, इंग्लैण्ड आदि देशों का भ्रमण किया। 1938 में भारत लौटने के बाद किसान आन्दोलन में बढ़ चढ कर भाग लिया। उन्होंने बिहार के अनेक गाँवों, महाराजगंज, अतरसन, एकमा, बरेजा, मॉझी आदि में घूमकर किसानों के वास्तविक जीवन तथा राजनीतिक परिस्थितियों का परिचत पाया। 'हरी–बेगारी' प्रथा को मूल से उखाड़ फेंकने के लिए राहुलजी ने जोरदार आन्दोलन किया। शोषित उत्पीड़ित जनता के प्रति राहुल की असीम प्रतिबद्धता ने उन्हें जनता की आँखों की तारा बना दिया था। कुछ दिनों तक राहुलजी सक्रिय राजनीति से भले ही दूर हट

गए हो, मगर उनका मन सदा राजनीति में ही लगा रहा। यही कारण था कि वे अपनी कलम और वाणी से साम्यवादी तथा प्रगतिशील विचारों को सतत् प्रबल बनाने का कार्य करते रहे।

शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विकास'** शीर्षक से है। इस शीर्षक के अन्तर्गत राहुलजी के हिन्दी साहित्य एवं भाषा विषयक विवाद, एशिया और यूरोप संबंधी वैचारिक विकास का गहनता से अध्ययन किया गया है। हिन्दी साहित्य के विकास में राहुलजी के अप्रतिम योगदान है। उन्होंने 'सरह दोहा कोश' 'संस्कृत काव्यधारा','हिन्दी काव्य धारा' 'दक्खिनी हिन्दी काव्यधरा' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन करके भारतीय साहित्य में प्रगतिशील चेतना की शाश्वतता को रेखांकित किया है। हिन्दी काव्यधारा में आठवीं सदी से तेरहवीं सदी तक के बौद्व सिद्वों और जैन कवियों की मूल रचनाओं के नमूने और उसकी हिन्दी छाया प्रस्तुत करके राहुलजी ने ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया है। इन कवियों को हिन्दी साहित्य से जोड़कर हिन्दी साहित्य के इतिहास को लगभग 250 वर्ष और पीछे तक विस्तृत कर दिया। राहुलजी ने हिन्दी के विकास में दक्खिनी हिन्दी उर्दू के योगदान को उद्‌धाटित किया है। वे राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा अपनाए जाने के प्रबल समथर्क थे। राहुलजी प्रगतिशील साहित्यकार को जनवादी कलाकार के रुप में मानते थे। उनके अनुसार प्रगति का स्रोत लेखक का मस्तिष्क न होकर साधारण जनता है। राहुलजी की हिन्दी सेवा का एक पक्ष कोश निर्माण का कार्य है। उनके द्वारा निर्मित 'शासन शब्द कोश' राष्ट्रभाषा कोश' ,'तिब्बती हिन्दी कोश' और 'तिब्बती संस्कृति

कोश',प्रसिद्ध है। राहुलजी अपने अथक परिश्रम से हिन्दी साहित्य के एक एक कोने को परिमार्जित और पुष्पित किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य में दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा, जैन और बौद्ध साहित्य को जोड़कर हिन्दी साहित्य की परिधि को और पीछे ले गये और इस साहित्य को वैज्ञानिक आधार देकर जनजन की भाषा बनाने के लिए राष्ट्रभाषा का स्वरूप प्रदान करने के पक्षपाती बने। राहुलजी ने भाषा संबंधी विवाद पर मौलिक चिंतन करते हुए अलग अलग भाषाओं पर गहराई से विचार किया है। उन्होंने हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू, पाली, संस्कृत भाषाओं की व्यापक अध्ययन किया और इन भाषाओं के अन्तर्सम्बंधों को दर्शाने वाले अनेक लेख लिखे। राहुलजी भाषा को जन भाषा के निकट लाने और उसे जन जीवन के मेल में रखने के हिमायती थे। उन्होंने किसी भी साहित्यिक भाषा को लोक भाषा से घनिष्ठ संबंध स्थापित करने पर बल दिया है। राहुलजी ने तिब्बत, श्रीलंका, नेपाल ,जापान ,कोरिया, मंचूरिया, सोवियत रुस, ईरान, अफगानिस्ता आदि एशियाई देशों का भ्रमण किया। राहुलजी ने एशिया भ्रमण द्वारा अपनी मात्र निजी जिज्ञासा को ही शांत नहीं किया, वरन् उन्होंने अनेक भूले बिसरे ऐतिहासिक तथ्यों को उभार कर उन्हें संसार के सामने रखा। राहुलजी ने अनुभव किया कि भारत नेपाल, तिब्बत और लंका जैसे एशियाई देश मुक्ति की छटपटाहट के साथ हैं जबकि यूरोप मुक्त है। राहुलजी ने 1935ई0 में जापान, कोरिया, मंचूरिया, साइबेरिया सहित सोवियत भूमि, ईरान और बलूचिस्तान की यात्रा की। राहुलजी की यह एशिया–यात्रा सिर्फ यात्रा मात्र ही नहीं बल्कि यह उनके विचार की यात्रा थी। हर देश के धर्म, संस्कृति, रीति रिवाज और समाज को निकट से जानने के लिए कभी वे ईरान के मुसलमान परिवार के अतिथि रहे, तो कभी किसी तिब्बती या जापानी बौद्ध परिवार के। अनवरत ज्ञानसाधना करते हुए वे कभी दुर्गम

भूखंड़ों में विचरते रहे, तो कभी जेल की कोठरियों में बंद रहे। राहुलजी एशिया के विभिन्न देशों के यात्रा करने के पश्यात् इन देशों की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों को संग्रहित कर 'मध्य एशिया का इतिहास' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उन्होंने एशिया वालों की समूची जीवन पद्धति का वर्णन किया है यथा पशुचारण, धातुनिमार्ण, शस्त्र–अविष्कार, सामूहिक जीवनपद्धति, शिविरों में रहना, आखेट, प्रारम्भिक कृषि और युद्धों द्वारा संग्रहशील समाजों को लूटना इसके साथ चीन, भारत, अफगानिस्तान, ईरान, कैस्पियन सागर और रूस के सांस्कृतिक राजनीतिक इतिहास का विस्तार से विश्लेषण किया है। 5 जुलाई 1932 को आनन्द कौसल्यायन के साथ राहुलजी यूरोप रवाना हुए। यह पर्यटन बौद्ध चेतना की व्याप्ति का तजुर्बा पाने के साथ–साथ राहुलजी की वैयक्तिक चेतना के ज्ञानात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रचार का सूचक भी है। राहुलजी यूरोपीय देशों के अनेकों शहरों में घूमें और यह अनुभव किया कि वहाँ के समाज में वर्ग–भेद की भावना काफी है जबकि वहाँ के लोग में स्त्री–पुरूष का भेदभाव नहीं है। राहुलजी अपने सर्वेक्षण के आधार पर यह बताते हैं कि फिनलैंड़वासी और भारत के द्रविण–मुंडा का सम्बन्ध एक ही वंशज से रहा है। यूरोप–पर्यटन से न केवल राहुलजी में वैश्विक चेतना का संचार हुआ बल्कि जीवन एवं उसके सामाजिक कल्याण की परिधि को वे थोथी संकीर्णता और सीमाओं से ऊपर उठाकर वैश्विक मानवता के धरातल पर रखने में समर्थ हुए।

शोध प्रबन्ध का पाँचवा अध्याय **'राहुल सांकृत्यायन के वैचारिक आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन'** शीर्षक से है, जिसमें राहुलजी के दार्शनिक विचारों, राजनीतिक विचारों और साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन

समाहित है। राहुल सांकृत्यायन उन विरल लोगों में से हैं, जो मनोभूमि के स्तर पर आस्था के निर्माण, खंडन व नवीन निर्माण के भीतर से गुजरते रहे। उनके जीवन में जितने मोड़ आये, वे उनकी तर्क बुद्धि के कारण आये। जीवन के प्रथम काल खण्ड में सनातनी जीवन दर्शन को स्वीकार किया। ' ब्रहम् सत्यम् जगत् मिथया जीवो ब्रहमैव नापरः' श्लोक ने राहुलजी के मन में घर कर लिया। परिणति–गृहत्याग कर वैष्णव साधु रामोदर बन अयोध्या से आगे चलते हुए उत्तराखंड़ बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री के साथ अनेक दुर्गम स्थानों की यात्रा की। इस यात्राक्रम में राहुलजी ब्रह्म और जीव की शाश्वतता और मोक्ष के विचारों से अवगत हुए। इसी दौरान साधुओं के आचार व्यवहार, ,कार्यकलाप एवं बाह्याड़म्बर को देखा, जिससे राहुलजी का मन सनातनी जीवन शैली से डगमगाने लगा। 1914 ई0 तक आते–आते राहुलजी में बुनियादी तौर पर वैचारिक बदलाव के आसार दिखने लगे थे–जो एक उदार मानवीय धरातल के साथ–साथ ,ज्ञानार्जन व सक्रिय सामाजिक सरोकार का स्वरूप उजागर कर सका। रूढ़िवादी, संकीर्ण, साम्प्रदायिक ,सनातनी जीवन–शैली को छोड़कर राहुलजी आर्यसमाज के तरफ बढ़ें। आर्यसमाज ने न सिर्फ राहुलजी को वैचारिक मुक्तता की जमीन प्रदान की ,बल्कि उसकी तार्किक अन्तर्दृष्टि और भीतरी प्रतिभा के सम्यक विकास का स्वस्थ वातावरण प्रदान किया। लेकिन आर्यसमाज में मौजूद ईश्वर की सर्वशक्तिमान सत्ता के वे कायल नहीं रह सके। राहुलजी का मानना है कि ईश्वर की सत्ता का स्वीकारना मनुष्य की स्वतंत्रता और संभावना को सीमित करना है। दयानंद की तार्किकता ने राहुलजी को स्वतंत्रता की सही पहचान करने के लिए उकसाया। स्वतंत्रता को बाधित करने वाले मूल अवरोधक तत्वों की तरफ राहुलजी में गहरी सोच और समझ बनने लगी। राहुलजी इस दौरान इतिहास,

दर्शन, साहित्य ,ज्ञान–विज्ञान का गम्भीर अध्ययन में लगे रहे। दुनिया भर के धार्मिक–दार्शनिक पोथियों और मतवादों की उन्होंने खाक छानी, और इस अध्ययन कम में पाया कि 'शासकों, धर्माचारों ,धूर्तो और वणिकों की जमात के लिए शेष नब्बे प्रतिशत जनता अपना खून–पसीना एक कर प्रभुओं के आगे भोग–विलास की सामग्री उपस्थित करती है और खुद पेट के अन्न और तन के कपड़े बिना मरती है। समाज के इस स्वरूप को देख और समझकर राहुल के जीवन में वैचारिक बदलाव आया और सनातनियों के साथ आर्यसामाजियों से भी मोहभंग हो गया। इसी बीच करीब दस साल तक राहुलजी का जीवन वैचारिक और धार्मिक चिंतन की दृष्टि से एक साथ कई धाराओं में बहा। आर्यसमाज से मोहभंग होने के बाद राहुलजी को बुद्ध का यह वचन–"भिक्षुओं, मैं नौका की तरह धर्म का उपदेश करता हूँ। यह पार होने के लिए है, पकड़कर बैठने के लिए नहीं। जिसे हमने अधर्म मान लिया है, उसे तो छोड़ देना ही पड़ता है किन्तु जिसे हमने धर्म भी मान रखा था, और कालान्तर में हमें लगा कि धर्म भी अब त्याज्य है ,तो उसे भी छोड़ देना चाहिए।" अपनी ओर आकृष्ट किया। जाहिर है एक आस्था केन्द्र से दूसरे आस्था केन्द्र की मानसिक बौद्धिक यात्रा में उन्हें अन्तर्द्वन्द्वों से गुजरना पड़ा। राहुल अद्वैत दर्शन के तलस्पर्शी ज्ञाता थे। इसी के चलते बौद्ध दर्शन के अध्येता के रूप में उन्होंने अद्वैत–सिद्धान्त और शंकर वेदान्त को नवीन आलोक में सम्प्रेषित किया है। प्रतीत्यसमुत्पाद के आलोक में जिन दो बातों ने राहुल के बचे खुचे सनातनी या आर्यसमाजी संस्कार की जड़े हिला दी वे हैं–अनात्मवाद और अनीश्वरवाद। इस तरह बुद्ध के सारे दर्शन का आधार 'प्रतीत्यसमुत्पाद'है। यह बौद्ध दर्शन को समझने की कुंजी है। बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अनीश्वरवादिता ने राहुल को मुक्त विचार और 'नास्तिक मानवीयता' के उदार

जीवनबोध के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया। वैचारिक मुक्तता का अपार–वातावरण ,आर्यसमाज से मुक्ति के बाद राहुलजी को मिला था। बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पादी, क्षणवादी, अनात्मवादी एवं अनाश्वरवादी किन्तु गहन रूप से मानवीय चिन्तन का आधार पाकर राहुल की बौद्धिक छटपटाह काफी शांत हुई ,और वैचारिक यात्रा के नई दिशा की ओर आगे बढ़े। 1932 ई0 में यूरोप की यात्रा के दौरान राहुलजी को अनेकों साम्यवादी साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिला। उन्होंने पाया कि मार्क्स से पहले के दार्शनिकों ने किस्मत की लकीरों को बदलने के मानवीय प्रयत्नों को कभी महत्व नहीं दिया। प्रकृति का दोहन करती हुई उत्पादन के साधनों पर मुनाफाखोरी के लिए कब्जा करती हुई पूँजीवादी व्यवस्था वही जनता के दु'खों का सच्चा कारण है। वे आर्थिक गुलामी को सभी प्रकार की स्वतंत्रता का अवरोधक मानने लगे और पूँजीवादी व्यवस्था के विरोधी हो गये। इस तरह राहुलजी ने विभिन्न दार्शनिक वीथियों–राजमार्गों से गुजरते हुए विश्व के सभी दर्शन का प्रणयन किया। वैचारिक स्तर पर सक्रिय साम्यवादिता के धरातल तक आते–आते उनका जीवन, संस्कारी सनातनी प्रवाह, आर्यसामाजिक वैदान्तिक दृष्टिकोण एवं बौद्ध चिन्तनपक्रिया के पड़ावों से गुजर चुका था और मार्क्सवादी पड़ाव पर आकर ही राहुलजी को वास्तविक सत्य का अभास हुआ ।

राहुलजी के राजनैतिक जीवन विचारों का जीता जागता रुप उनकी कृतियों में दिखाई देता है। राहुलजी के राजनीतिक विचारों को सन् 1917 ई0 की रूसी क्रांति ने काफी प्रभावित किया। इस क्रांति के प्रभाव से राहुलजी के जीवन दर्शन को नवीन दिशा मिली। यही कारण है कि राहुलजी की राजनीतिक विचारधारा मानवता पोषक

है। वे राजनीति के क्षेत्र में किसी एक विचारधारा से बंध कर नहीं रहे, जहॉ सत्य था, मानवकल्याण की भावना थी, उसी का साथ दिया। राहुलजी ने राजनीति में सर्वप्रथम 1921ई0 में प्रवेश किया। सन्1922ई0 में राहुलजी ने स्वराजपार्टी के कार्यक्रमों में आस्था प्रगट करते हुए कांग्रेस के परिवर्तनवादी पक्ष का समर्थन किया। सन् 1931 ई0 में कांग्रेस की समाजवादी पार्टी के सदस्य बने और सन् 1939 ई0 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने उन्होंने अपना जीवन साम्यवादी विचारों की सेवा में समर्पित किया। सन्1938–39 ई0 में राहुलजी ने सम्पूर्ण सारण और सीवान जिले के अन्तर्गत विभिन्न गॉवों में घूम घूम कर जमींदारों के खिलाफ किसानों को संगठित किया और बकाशत जमीन के सवाल पर किसानों के साथ मिलकर जमींदारों के विरूद्ध भूमि संधर्ष का नेतृत्व भी किया। जिसके कारण राहुलजी बिहार के एक प्रमुख किसान नेता के रूप में उभरे। राहुलजी के राजनीतिक जीवन के उपर्युक्त परिवर्तनों से स्पष्ट है कि वे ऐसी राजनीति एवं शासन व्यवस्था के पक्षधर थे जो किसान एवं मजदूरों की हितचिन्तक तो हो ही, साथ–साथ भारतीय दासता, निर्धनता, वर्ग–वैषम्य आदि का परिहार कर मानव समता की समर्थक हो। राहुलजी के विचार राजनीति के क्षेत्र में काफी क्रांतिकारी थे। राजनीति में राहुलजी जाति–पॉति के भेद को काफी हानिकारक मानते थे। राहुलजी को किसी भी प्रकार की दासता असह्य थी और हर तरह से मुक्त होकर जीवन जीने के पक्षपाती थे। राजनीतिक आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी दासता से मुक्त होने के लिए राहुलजी क्रांतिकारी गतिविधियों के समर्थक थे। राहुलजी ने जनता को अपने राजनीतिक विचारों से अवगत कराया कि मजदूर किसान ही असली क्रांति के अग्रदूत हैं और संगठित होकर वे कार्य करें तो निश्चित रूप से अपने देश को आजाद करा सकते है। राहुलजी के राजनीतिक विचार

साम्यवादी विचारों से अभिभूत रहे है। वे राजतंत्र, पूँजीवाद एवं साम्राज्यवाद के स्थान पर गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली को श्रेयस्कर मानते है। राहुलजी ने अपनी विभिन्न ऐतिहासिक कृतियों में राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली की तुलना में गणतंत्रातमक शासन प्रणाली की अच्छाइयों पर प्रकाश डाला है। अपने लेख 'वैशाली का राज्य प्रबंध 'एवं 'संन्यासी अखाड़ों की व्यवस्था'में राहुलजी ने प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली में निहित व्यवस्था एवं महत्व का उल्लेख किया है। राहुलजी के अनुसार गणतंत्र प्रजा के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा करता है, वहाँ स्वतंत्रता, सम्मान समानता एवं सुव्यवस्था है। इस तरह राहुलजी के राजनीतिक विचार बहुजन हिताय की विचारधारा के चलते गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली के प्रबल समर्थक एवं प्रशंसक हैं।

राहुलजी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक थे। राहुलजी द्वारा लिखित'प्रगतिशीलता का प्रश्न', 'प्रगतिशील लेखक' एवं 'आज का साहित्यकार' आदि लेखों में जहाँ एक ओर उनकी प्रगतिवादी विचारधारा परिलक्षित होती है तो दूसरी ओर कई स्थानों पर वे एक समीक्षक के रूप में भी दिखाई देते है। राहुलजी ने अपने साहित्य चिन्तन में विज्ञान के महत्व को स्वीकार किया है, इसीलिए उनका प्रगतिवादी चिंतन भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिभूत है। हिन्दी साहित्यकारों में राहुलजी विशेषतौर से मुंशी प्रेमचंद के प्रशंसक थे। उन्होंने प्रेमचंद को भारत के अमर लेखक एवं कलाकार की संज्ञा दी है। दूसरे साहित्यकार जिनसे राहुलजी प्रभावित थे,'भारतेन्दु हरिश्चन्द' जिन्हें, उन्होंने आधुनिक साहित्य का "सूर्य" कहा है। राहुलजी के साहित्यिक विचारों के अध्ययन में जो चीज हमें सबसे जयादा प्रभावित करती है, वह है उनके पास एक अत्यन्त संवेदनशील कवि हृदय। उनकी भाषा देशी है, जिसमें

व बहुत आत्मीयता से पाठकों से बातें करते हैं। पार उतारनेवाली ज्ञान की नाव को वे कभी सिर पर लेकर नहीं चलते, यह दूसरी उत्साहवर्धक बात है। पर इन दोनों विशेषताओं से बढ़कर है कि यह महापण्डित अपने पास एक बहुत ही तरल हृदय रखता है, जो बड़े संयमित रूप में यथावसर प्रवाहित हो उठता है। राहुलजी के सांस्कृतिक विचार सदैव प्रगतिशील रहे हैं। राहुलजी धर्म और संस्कृति को अलग अलग मानते हैं साथ ही राहुलजी सांस्कृतिक समन्वय के प्रबल पक्षधर हैं। भारत में अनेकों जातियाँ आई और अपनी संस्कृति को एक दूसरे के साथ सम्बन्ध स्थापित कर यहाँ रहीं। आर्य, यवन, शक, गुर्जर, जट्ट, आभीर, हूण, कितनी ही जातियाँ ने पहले अपना अलग, शासन या उपनिवेशवादी समाज कायम किया, किन्तु जब शासन हाथ से जाता रहा तो वे भारतीय संस्कृति का ही एक अंग बन गई। राहुलजी भारत के सांस्कृतिक इतिहास के ध्वजवाहक रहे हैं। उन्हें जहाँ कही भी ऐसी सामग्री मिली जिसमें भारत का सांस्कृतिक इतिहास हो, वहाँ तक उन्होंने अपनी पहुँच बना ली, चाहे रास्ता कितनी ही दुर्गम क्यों न हों? इस कार्य में उनका व्यक्तित्व एक जाँबाज का तरह दिखाई पड़ता है, जो अपने जुझारूपन से दुर्लंध्य को भी लांधता है। वे अपने देश के साथ तिब्बत, चीन, जापान, श्रीलंका ,इंडोनेशिया आदि देशों के मठों, मन्दिरों, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, राजघरानों, तहखानों आदि को छानते रहे। इतना ही नहीं सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश में राहुलजी ने लोक ओर वेद दोनों का अध्ययन किया इसके लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं ओर बोलियों तक को अपना विषय बनाया। 'हिन्दी काव्यधारा', 'दोहाकोश', 'चर्यागीत' के माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को सिद्ध साहित्य के साथ जोड़कर आलोचकों के लिए नई दिशा खोल दी इससे हिन्दी साहित्य का इतिहास सातवीं सदी तक पहुँच गया।

साहित्य,दर्शन विज्ञान और राजनीति के माध्यम से उन्होंने एक ओर भारत की आभिजात्य संस्कृति को प्रस्तुत किया तो दूसरी ओर लोक साहित्य का अध्ययन कर लोक संस्कृति ओर लोक जीवन का पक्ष उपस्थित किया है। इन सब को समेटने के लिए उन्होंने 'हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास' भाग–16 का संपादन किया, जिससे हिन्दी के लोक साहित्य का विस्तृत विवेचन है। इन सब के पीछे राहुलजी का उदेश्य भारतीय साहित्य और संस्कृति को मजबूत करना था। राहुलजी को सिर्फ भारतीय संस्कृति से ही लगाव नहीं था, बल्कि पुरातत्व और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के भीतर पैठकर उन्होंने विश्व संस्कृति की खोज की।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का छठवाँ अध्याय **'आत्मकथा में अभिव्यक्त राहुल सांकृत्यायन का व्यक्ति चिंतन'** शीर्षक से है। राहुलजी बाल्यकाल से लेकर अन्तिम जीवन तक सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और भाषिक चिंतन के साथ व्यक्ति चिंतन में भी लगे रहे और यह चिंतन राहुलजी को एक अलग पहचान कराता है। राहुलजी का बचपन नानी–नानी के यहाँ बीता। नाना रामशरण पाठक के शिकार ी गप्पें, सिपाही जीवन के दौरान किए गये सफर के किस्सों ने राहुलजी में बाहर की दुनिया को देखने की इच्छा को जाग्रत किया वही नानी के दयालु भाव ने उनमें गरीबों के प्रति दया की भावना भरी। राहुलजी की नानी जगरानी देवी, ग्रामीण महिला होते हुए भी उनमें एक अन्तर्मुखी प्रकृति थी, जो उन्हें दूसरी महिलाओं से अलग करती थी। राहुलजी लिखते है–'जीवन के आरम्भिक पाँच वर्षो में नानी ने मेरा पोषण ही नहीं, निर्माण भी किया।' पिता गोबर्धन पाण्डे सुसंस्कृत ब्राह्मण होते हुए भी प्रगतिशील विचार के व्यक्ति थे। जाति–पात, छूआ–छूत से ग्रस्त ग्रमीण समाज में रहते हुए भी वे अपने खेत में काम

करनेवाले चिनगी चमार का दाह संस्कार कर रूढ़िग्रस्त सामाजिक नियमों को एक जोर का धक्का पहुँचाया। बचपन के साथियों में नरसिंह, दलसिंगार, बिरजू , मद्धू और रामदीन थे। अपने छोटे मामा रामदीन के विषय में लिखते है–' मानव शिशु और दुसरे शिशु भी बड़ों का अनुकरण करके ही हरेक बात सीखते हैं। ज्ञानार्जन और आगे की मंजिल के बारे में सबसे पहिले मैंने जो सीखा, वह रामदीन मामा से है।' गॉव के रीतिरिवाज के अनुसार नाना रामशरण पाठक ने राहुलजी का विवाह तय कर दिया, जो राहुलजी को स्वीकार नहीं था। इसलिए राहुलजी जीवन भर अपनी प्रथम परिणिता से दूर रहे और 1943 से पहले आजमगढ़ जिले की भूमि पर पैर तक नहीं रखा। इस वक्त किये गए संकल्प को राहुलजी बखुबी निभाया। तीस वर्ष बाहर भटकने, ज्ञान प्राप्त करने और एक अत्यन्त परिपक्व व्यक्तित्व अर्जित करने के उपरान्त ही उन्होंने आजमगढ़ के अपने गाँव की भूमि पर पैर रखे। चौके में भोजन करके वापस आते समय तक वस्त्रों में लिपटी स्त्री उनका चरण छूने को आगे बढ़ती है। राहुलजी निर्दय ढ़ंग से आगे बढ़ जाते है। उस स्त्री से कोई संवाद नहीं होता है। वह स्त्री राहुलजी की पहली पत्नी थी। राहुलजी ने उस सम्बन्ध को एकदम अस्वीकार कर दिया था। अपनी प्रथम परिणिता से सम्बन्ध विच्छेद पर अपनी मानसिक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राहुलजी ने लिखा है–"किसी बाकायदा तिलाक से मेरा यह तिलाक–जो वस्तुतः अस्वीकृत अबोध विवाह के लिए जरुरी भी न था–कहीं बढ़कर था, और मैंने उसी रुप में लिया था, इसलिए मैं समझता हूँ, उक्त घटना–ब्याह–के लिए समाज की जगह मुझे जिम्मेदार ठहराना गलत होगा। मैंने उसे कभी न ब्याह समझा, न उसकी जिम्मेवारी अपने उपर मानी।"2 इस विरक्ति और नफरत से उबरने में राहुलजी को पर्याप्त वक्त लगा। राहुलजी सोवियत रुस में

परिवार, समाज तथा भारतीय मैरेज एक्ट को अनदेखा करते हुए दूसरा विवाह लोला के साथ किया। भारत आगम के बाद पत्नी वियोग राहुलजी को खला और तीसरी शादी कमला से कर ली। इस तरह राहुलजी ने परिवार समाज और कानून को लताड़ते हुए, अपनी चाहत के अनुरुप वैवाहिक जीवन को स्वीकारा जो राहुलजी का व्यक्ति चिंतन का प्रतिफल है। राहुलजी का पठन–पाठन अलग अलग जगहों पर हुआ। राहुलजी को लगता था कि औपचारिक पढ़ाई का रास्ता बहुत धीमा रास्ता है। इस रास्ते पर चलकर तो चुटकी भर ज्ञान के लिए वर्षो की प्रतिक्षा करनी पड़ेगी। राहुलजी में यह धीरज नहीं है। वे तो कम समय में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहते थे। आगरा के आर्य मुसाफिर विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हुए राहुलजी को एक नई पहचान मिली। इस ज्ञान से प्रभावित होकर 1929–30ई0 में राहुलजी ने तिब्बत के दुगर्म स्थलों की यात्रा किया। वहॉ सवा वर्ष रहकर अनेकों दुलर्भ पुस्तकों की खोज की तथा अपने आपको तिब्बती सिद्ध करने के लिए नया नाम दिये खुन्नू छेवड़। वहॉ से राहुलजी इक्कीस खच्चरों पर ग्रंथराशि जमा करके लाये और उन पुस्तकों को अध्ययनार्थ कोलंबो ले गये, फिर उसी दुर्लभ ग्रंथों को अपने साथ लाए और उनमें से कुछ पुस्तकें आज भी विहार रिसर्च सोसाईट संग्रहालय में रखी हुई हैं। अतः राहुलजी को जहॉ भी ज्ञान का रास्ता दिखाई देता था, बेझिझक उस रास्ता को अपनाते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ते रहे। राहुलजी का बाल्यकाल गॉव में बीता ,गॉव के संस्कार ,रीति–रिवाज की छाप उनके जीवन पर पड़ी। गाँव में प्रचलित धर्म को सहर्ष स्वीकार किया पर उनका मौलिक चिंतन बुद्ध के बचन –"बेड़े की भाति मैंने तुम्हें धर्म का उपदेश किया है ,वह पार उतरने के लिए है ,शिर पर ढ़ोये–ढ़ोये फिरने के लिए नहीं।'8 'से जुड़ा रहा ,अतःजन्म से सनातनी राहुलजी वेद अध्ययन

हेतु काशी गये। वैष्णव सहिष्णुता अच्छी लगी तो रामउदार साधु बनकर परसा मठ में रहे फिर नाव की तरह साधवी जीवन का चोला उतार फेंका और आर्यसमाजी बन गये। मौलवी महेशप्रसाद के बारे में राहुलजी लिखते है–आगरा में भाई साहब के सम्पर्क में आने पर मालूम हुआ,जैसे आदमी अँधेरी कोठरी से निकालकर सूरज की रोशनी में रख दिया जावे, जैसे दम घुटती काली कोठरी से निकाल शीतल मन्द सुगन्ध–वायु परिचालित बाग में ला रखा जाये। अब मुझे मालूम होने लगा, दुनिया में ऐसे भी काम है, जिनके लिए जीवन की आवश्यकता है, ऐसे भी आदर्श है, जिनके लिए मत्यु मधुरतम वस्तु है।11। किन्तु जब उन्होंने देखा कि आर्य समाज भी कठमुल्लापन से मुक्त नहीं है तो उसे भी छोड़ दिया। आगे चलकर बुद्ध के विचारों को स्वीकार कर राहुल सांकृत्यायन के नाम से बौद्ध बन गये। राहुलजी ने हमेशा बुद्धि को अपना पथप्रदर्शक बनाया । एक दिन बड़ी सहजता से बौद्ध धर्म का चीवर भी उतार दिया और मार्क्सवादी बन गये। इन सारे विचारों के बदलाव के पीछे राहुलजी का अपना आत्मचिंतन है। इतना ही नहीं उस समय के समाज में फैले हुए जाति–पाँति की भावना तथा ऊँच–नीच का भेद, नारी के साथ दुर्व्यवहार ने राहुलजी की आत्मा को बेचैन कर दिया। इस तरह शोषण पर टिके समाज की क्षय की कामना ही नहीं बल्कि इसमें बदलाव लाने के लिए हर तरह से संघर्ष भी किया। राहुल एक व्यक्ति का नाम नहीं, विचारधारा का नाम है जो केवल सिद्वान्त की बात नहीं करता बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उसे कियात्मक रुप देने में जान की बाजी भी लगा देता है। राजनीति के क्षेत्र में राहुलजी ने जब अपना पॉव रखा तो गॉधीजी के इस दावा से कि'साल भर में स्वराज'मिल जाएगा, अतिरंजित लगा था।डा0राजेन्द्र प्रसाद के बारे में राहुलजी ने लिखा है–''राजेन्द्र बाबू के बारे में भी यह कहना पड़ेगा

कि वे अपने से मतभेद रखने वालों की बातें भी बराबर ध्यान से सुनते और जहॉ तक हो सके,मतभेद को मिटाने की कोशिश करतें हैं।यदि किसी बात में दोनों की राय में फर्क हो तो भी उसमें कड़वाहट आने नहीं देना चाहते। जनता को जागरुक करने के लिए राहुलजी अन्य नेताओं से अलग हट कर हिन्दी और भोजपुरी भाषा में भाषण देते थे क्योकि उन्हें विश्वास था कि मातृभाषा से लोगों का दिल आसानी से जीता जा सकता है। राहुलजी ने अपने जीवनकाल में अनेक भाषाओं के अध्ययन किया पर जिस भूमि में राहुलजी का जन्म हुआ था, उस भूमि के भाषा को विकासित और समृद्ध करने में अन्तकाल तक लगे रहे। राहुलजी ने आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो इसके लिए अथक प्रयास ही नहीं किया बल्कि इसका विरोध करने वालों से सख्त नफरता भी रखी। राहुलजी का अपना व्यक्ति चिंतन कठमुल्लेपन का कायल नहीं था। अपनी स्वतन्त्र तार्किक दृष्टि के सामने किसी भी पंथ, किसी भी नीति या मत के आगे झुकते नहीं थे। राहुलजी में आत्मनियंत्रण, अनुशासन, अन्तर्मुखीनता, सहनशीलता, बदली परिस्थितियों के साथ अपने आपको मना लेने की क्षमता, निष्ठा, कठिन परिश्रम करने की क्षमता, अविवादित बने रहना, समय का पाबंद एवं सरलता व सहजता ही उनकी व्यक्ति चिंतन का पहचान है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष को निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा रहा है :–

1) हिन्दी में आत्मकथा लेखन आधुनिक युग का देन है। बीसवीं सदी के दौर में राहुलजी द्वारा लिखित आत्मकथा साहित्य ' मेरी जीवन यात्रा ' पॉंच खण्डों में प्रकाशित है। यह आत्मकथा राहुलजी की जीवनी न होकर जीवन यात्रा है। उनकी यह जीवन यात्रा वैष्णव केदार के साम्यवादी राहुल सांकृत्यायन बनने की यात्रा है।

यह आत्मकथा साहित्य एक ऐसे दर्पण की तरह है जिसमें आत्मकथा के सभी गुण समाहित है। इस आत्मकथा का आधार रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में राहुलजी के जीवन के समस्त वैचारिक आयामों को प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट है कि इस आत्मकथा के अभाव में राहुलजी के वैचारिक विकास को उदधाटित करना असंभव था।

2) प्रस्तुत शोध अध्ययन राहुलजी की आत्मकथा' मेरी जीवन यात्रा' पर केन्द्रित है, जिसके अन्तर्गत राहुलजी के बाल्यकाल से लेकर अन्तिम समय तक के जीवन में घटित घटनाओं को ध्यान में रखते हुए दार्शनिक विचारों के विकास को प्रस्तुत किया गया है। राहुलजी के जीवन के प्रमुखतः चार मोड़ है :वैरागी, आर्यसमाजी, बौद्ध और मार्क्सवादी। बचपन में राहुलजी ने सामाजिक रीति–रिवाज से ऊब कर वैराग्य को अपने जीवन का संबल बनाया। इस दौरान साधुओं के आचार व्यवहार, ,कार्यकलाप एवं बाह्याड़म्बर को देखा, जिससे रूढ़िवादी, संकीर्ण, साम्प्रदायिक ,सनातनी जीवन–शैली को छोड़कर राहुलजी आर्यसमाज की तरफ बढ़ें। आर्यसमाज में मौजूद ईश्वर की सर्वशक्तिमान सत्ता के वे कायल नहीं रह सके और बुद्ध के मूल सिद्धांतों यथा ईश्वर को नहीं मानना, आत्मा को नित्य नहीं मानना, किसी अन्य को स्वतः प्रमाण नहीं मानना और जीवन प्रवाह को इसी शरीर तक परिमित मानना ने राहुलजी को विशेष रुप से प्रभावित किया। यहाँ से वे पूर्ण रुप से अनीश्वरवादी हो जाते हैं। कुछ दिनों के बाद बौद्ध धर्म में व्यापत कमियों को भी उन्होंने अपनी आँखों से देखा। ऐसी स्थिति में मनुष्य में अन्तर्निहित शक्ति का विकास संभव नहीं। इन्हीं मन्थनों में उलझे राहुलजी के मन और बुद्धि पर 1917 ई0 की रूसी क्रांति का प्रभाव पड़ा और

धीरे–धीरे इस धर्म से भी उन्होंने अपना मुँह मोड़ लिया और मार्क्सवादी बन गए। राहुलजी ने मार्क्स के दर्शन के प्रकाश में पाया कि मनुष्य के दु:खों का कारण नभ में नहीं, धरती पर है। इसी दर्शन में राहुलजी को सत्य का आभास हुआ। राहुलजी के जीवन में यह जो वैचारिक परिवर्तन हुआ, यह स्वयं राहुलजी के तर्कबुद्धि का परिणाम है।

(3) राहुलजी की जीवन यात्रा जैसे–जैसे आगे बढ़ी उसी तरह राजनीतिक विचारों का विकास भी होता रहा। सत्य की खोज के प्रति तीव्र आग्रह, अदम्य साहस और विद्रोह, देश प्रेम, अनुभव की व्यापक, राजनीति के प्रति विशेष अभिरूचि राहुलजी के व्यक्तित्व की विशेषता थी। जीवन की कोई भी आस्था और विचार राहुलजी को बाँध कर नहीं रख सका। बचपन से ही राहुल की प्रकृति में एक मुक्त दृष्टि देखी जाती है, जिसके कारण किसानों, दलितों, शोषितों के अधिकार के लिए पूँजीवाद से सीधा टक्कर लेते हैं। अपने उदेश्य को पाने के लिए उन्होंने जगह–जगह का भ्रमण किया, विश्व के इतिहास, समाज, दर्शन और राजनीति को गहराई से समझा। जिसके आलोक में राहुलजी को वैज्ञानिक दृष्टि मिली और इससे प्रभावित होकर किसान आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन में एक जुझारू नेता के रूप में अपना परिचय दिया है।

(4) राहुलजी एक विश्वयात्री के रूप में जाने जाते हैं। इस यात्रा के दौरान राहुलजी के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विकास समयानुसार होता रहा। राहुलजी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक थे। राहुलजी द्वारा लिखित 'प्रगतिशीलता का प्रश्न', 'प्रगतिशील लेखक' एवं 'आज का साहित्यकार' आदि लेख

इसके प्रमाण हैं। इस लेख में जहाँ एक ओर उनकी प्रगतिवादी विचारधारा परिलक्षित होती है तो दूसरी ओर कई स्थानों पर वे एक समीक्षक के रूप में भी दिखाई देते हैं। राहुलजी ने भाषा संबंधी विवाद पर मौलिक चिंतन किया है और हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू, पाली, संस्कृत भाषाओं को जन भाषा के निकट लाने और उसे जन जीवन के मेल में रखने के हिमायती थे। उन्होंने किसी भी साहित्यिक भाषा को लोक भाषा से घनिष्ठ संबंध स्थापित करने पर बल दिया है। राहुलजी ने तिब्बत, श्रीलंका, नेपाल ,जापान ,कोरिया, मंचूरिया, सोवियत रुस, ईरान, अफगानिस्ता आदि एशियाई देशों का भ्रमण किया। राहुलजी ने एशिया भ्रमण द्वारा अपनी मात्र निजी जिज्ञासा को ही शांत नहीं किया, वरन् उन्होंने अनेक भूले बिसरे ऐतिहासिक तथ्यों का उद्धार कर उन्हें संसार के सामने रखा है। राहुलजी की एशिया–यात्रा सिर्फ यात्रा मात्र ही नहीं बल्कि यह उनके विचार की यात्रा थी। धर्म, संस्कृति, रीति रिवाज और समाज को निकट से जानने के लिए विभिन्न देशों के यात्रा करने के पश्यात् इन देशों की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों को संग्रहित कर 'मध्य एशिया का इतिहास' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उन्होंने एशिया वालों की समूची जीवन पद्धति का वर्णन किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में लोक संस्कृति, भाषा एक दूसरे के साथ कैसे संबंधित है? राहुलजी की इस वैचारिकता को प्रस्तुत शोध अध्ययन में दिखाया गया है।

(5) प्रस्तुत शोध अध्ययन में राहुलजी के वैचारिक आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन को क्रमागत रूप से प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है। राहुलजी ने विभिन्न दार्शनिक वीथियों–राजमार्गो से गुजरते हुए विश्व के सभी दर्शन का अध्ययन

किया। वैचारिक स्तर पर सक्रिय साम्यवादिता के धरातल तक आते–आते उनका जीवन, संस्कारी सनातनी प्रवाह, आर्यसामाजिक वैदान्तिक दृष्टिकोण एवं बौद्ध चिन्तनप्रक्रिया के पड़ावों से गुजर चुका था और मार्क्सवाद पड़ाव पर ही राहुलजी को सत्य का अभास हुआ। राजनीति के क्षेत्र में राहुलजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिए और साम्यवाद से प्रभावित होकर किसान आन्दोलन से जुड़े।

(6)–राहुलजी का सम्पूर्ण जीवन चिंतन का जीवन है। इनके व्यक्ति चिंतन अपने आप में अनूठा है। राहुलजी दूसरे के बनाए हुए पथ पर चलने वाले मानव नहीं थे, उन्होंने जैसा अनुभव किया उसे तत्काल अपने आचरण में ढ़ाला। उन्होंने अपनी तार्किक प्रज्ञा को कभी कुन्द नहीं होने दिया। एक गाँव का बालक व्यक्ति चिंतन के द्वारा ही महामानव तक पहुँच पाया है। राहुलजी अपने जीवन काल में अनेकों व्यक्तियों के संसर्ग में रहे थे। राहुलजी ने उन व्यक्तियों के व्यवहार एवं स्वभाव पर अपना स्पष्ट विचार प्रस्तुत किया है जो उनकी व्यक्ति चिंतन को उजागर करता है।

निसन्देह : प्रस्तुत शोध अध्ययन राहुलजी का वैचारिक विकास के साथ आत्मकथा लेखन और आत्मकथा लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्य और भाषा का विकास को समझने में सहायक सिद्ध होगा। इस तरह यह शोध अध्ययन पाठकों में वैज्ञानिक दृष्टि व समझ का विकास करता है तथा राहुलजी की भाषा दृष्टि, साहित्य के प्रति दृष्टि, मानवीय दृष्टि, उनकी संवेदनशीलता उनकी देशभक्ति और विश्व–दृष्टि को प्रतिबिम्बित करता है।

आधार ग्रंथ एवं सहायक सन्दर्भ–ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) मूल आधार ग्रंथ

1.सांकृत्यायन राहुल : ' बचपन की स्मृतियाँ ' किताब महल, इलाहाबाद 1955

2.सांकृत्यायन राहुल : 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–1, आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता, 1944

3.सांकृत्यायन राहुल : 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–2, किताब महल, इलाहाबाद, दिल्ली, 1948

4.सांकृत्यायन राहुल : 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968

5.सांकृत्यायन राहुल : 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–4, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968

6.सांकृत्यायन राहुल : 'मेरी जीवन यात्रा' भाग–5 , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968

ब) राहुलजी द्वारा रचित अन्य प्रमुख सहायक ग्रंथ

1. सांकृत्यायन राहुल : ' अतीत से वर्तमान ' विद्यामंदिर प्रेस प्रा0 लि0 वाराणसी, 1958
2. सांकृत्यायन राहुल : ' जिनका मैं कृतज्ञ ' किताब महल इलाहाबाद, 1956
3. सांकृत्यायन राहुल : ' नये भारत के नये नेता ' राहुल पुस्तक प्रतिष्ठान पटना, 1943
4. सांकृत्यायन राहुल : ' मेरे असयोग के साथी ' किताब महल, इलाहाबाद, 1956

स) अन्य संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सांकृत्यायन राहुल : 'काल मार्क्स' किताब महल, इलाहाबाद, 1956
2. सांकृत्यायन राहुल : 'बौद्ध दर्शन' किताब महल इलाहाबाद, 1942
3. सांकृत्यायन राहुल : 'बौद्ध संस्कृति' आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता, 1952
4. सांकृत्यायन राहुल : 'आज की राजनीति' आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता, 1949
5. सांकृत्यायन राहुल : 'आज की समस्याएँ' किताब महल, इलाहाबाद, 1944

6. सांकृत्यायन राहुल : 'कम्युनिष्ट क्या चाहते हैं?' राहुल प्रकाशन, मसूरी, 1953

7. सांकृत्यायन राहुल : 'क्या करें' किताब महल, प्रयाग, 1937

8. सांकृत्यायन राहुल : 'तुम्हारी क्षय' किताब महल, इलाहाबाद, 1959

9. सांकृत्यायन राहुल : 'दिमागी गुलामी' किताब महल, इलाहाबाद, 1937

10. सांकृत्यायन राहुल : 'भागो नहीं, दुनिया को बदलो' किताब महल, इलाहाबाद, 1944

11. सांकृत्यायन राहुल : 'राम राज्य और मार्क्सवाद' पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस,नई दिल्ली, 1956

12. सांकृत्यायन राहुल : 'साम्यवाद ही क्यों?' किताब महल, इलाहाबाद, 1944

13. सांकृत्यायन राहुल : 'दर्शन दिग्दर्शन' किताब महल, इलाहाबाद, 1942

14. सांकृत्यायन राहुल : 'मानव की कहानी' राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1968

15. सांकृत्यायन राहुल : 'विश्व की रूपरेखा' किताब महल इलाहाबाद, 1942

16. सांकृत्यायन राहुल : 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता 1942

17. सांकृत्यायन राहुल : 'दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1950

18. सांकृत्यायन राहुल : 'राहुल निबंधावली ' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1970

19. सांकृत्यायन राहुल : 'साहित्य निबंधावली' किताब महल, इलाहाबाद, 1961

20. सांकृत्यायन राहुल : ' हिन्दी काव्यधारा ' किताब महल, इलाहाबाद 1945

21. सांकृत्यायन राहुलः' मध्य एशिया का इतिहास'(दो भाग)बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना 1952

22. कौसल्यायन,भदन्त आनन्द,'राहुल सांकृत्यायन ' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1967

23. सांकृत्यायन कमला, ' महामानव महापंडित' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994

24. सांकृत्यायन कमला, 'राहुल वाङ्मय' खण्ड–1एवं 2, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 1994

25.सिंह अवधेश्वर प्रसाद(सम्पादित)'राहुल जी का अपराध'अमवारी सत्याग्रह,हिन्दी कुटिया पटना, 1939

26. आंनद खेलचंद, ' कथाकार राहुल सांकृत्यायन ' शारदा प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली,1973

27. आंनद खेलचंद, ' महापंडित राहुल सांकृत्यायन का सर्जनात्मक साहित्य ' शारदा प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली, 1973

28. उर्मिलेश, ' राहुल सांकृत्यायनः सृजन और संघर्ष ', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994

29. तिवारी अमरनाथ,' महापंडित राहुल सांकृत्यायन' राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद 1993

30. धाम सुदेश, ' राहुल सांकृत्यायन का सर्जनात्मक साहित्य ' निर्माण प्रकाशन, दिल्ली,1994

31. पाण्डेय गोविन्दचन्द्र, ' बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास ' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनऊ, 1990

32. विपिनचन्द्र सम्पादित, ' भारत का स्वतंत्रता संघर्ष ', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990

33. माचवे प्रभाकर, ' राहुल सांकृत्यायन ', राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, 1993

34. मुले गुणाकर, ' महापंडित राहुल सांकृत्यायन : जीवन और कृतित्व ' नेशनल बुक ट्रस्ट,नई दिल्ली, 1993

35. मुले गुणाकर, ' राहुल चिंतन ' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994

36. मुले गुणाकर, ' स्वयंभू महापंडित' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

37. शर्मा रामशरण ' मुंशी ' (सम्पादित) ' राहुल स्मृति ' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1988

38. शर्मा, विष्णुचन्द्र, ' राहुल का भारत ' साहित्यवाणी, इलाहाबाद 1995

39. शांडिल्य, राजेश्व (सम्पादित) राहुल सांकृत्यायनः ' व्यक्तित्व एवं कृतित्व ' अलका प्रकाशन, कानपुर, 1995

40. शुक्ल, रामलखन (सम्पादित), ' आधुनिक भारत का इतिहास ' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 1993

41. सरस्वती, स्वामी सहजानंद, ' मेरा जीवन संधर्ष ' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली

42. हरित, डी. पी. ' महामानव ' हरित प्रकाशन नई दिल्ली

43. टी. ए. जैक्सन, ' द लाजिक आफ माक्सिजर्म '

44. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ' हिन्दी साहित्य का इतिहास '

45. तिवारी डॉ. रामचन्द्र, ' हिन्दी गद्य साहित्य ' विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1992

46. चट्टोपाध्याय, डॉ. आलोक, ' राहुल इनसर्च आफ लोस्ट ट्रेजर्स आफ इंडिया महापंडित राहुल सांकृत्यायन वर्थ सेंचुरी बों–बौद्ध धर्माकार, कलकत्ता,

47. वर्मा धीरेन्द्र ' हिन्दी साहित्य कोश' भाग–1

48. सहगल, जनक दुलारी, ' राहुलजी का जीवनी यात्रा साहित्य ' चिल्ड्रेन बुक सोसाइटी, महरौली, नई दिल्ली 1973

49. सिंह कन्हैया, ' राहुल सांकृत्यायन ' अतुल प्रकाशन, कानपुर 1994

50. सिंह, वीरेन्द्र, ' महापंडित राहुल समग्र मूल्यांकन ' पंचशील प्रकाशन, जयपुर,1995

51. भट्टाचार्य, डॉ0 अभिजीत , ' महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया', आनंद प्रकाशन, कोलकाता, 2005,

52. सिंह डॉ कैलाश देवी,'राहुल सांकृत्यायन और प्रगतिशील साहित्य' पांडुलिपि प्रकाशन 2000

53. उपाध्याय,नागेन्द्रनाथ,'तांत्रिक बौद्ध साधना और साहित्य ' नागरी प्रचारिणी सभा,काशी,1958

54. शर्मा, श्रीनिवास (सम्पादित) ' राहुलः मंथन एवं चिन्तन ', जनसंचार, कोलकता,1994

55. डॉ0 हरिमोहन, ' साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार ' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ0 सं0 245

56. भारद्वाज, डॉ0 भगवतशरण,'हिन्दी जीवनी साहित्य:सिद्धान्त और अध्ययन', इलाहाबाद ,

द) पत्र पत्रिकाएँ

1. ' आजकल ', मासिक, पब्लिकेशन डिवीजन, दिल्ली, मार्च 1964, राहुल विशेषंक, 1993

2. ' आलोचना ' त्रैमासिक, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, जुलाई 1952

जनवरी– 1954, जुलाई– 1954, अक्टूबर– 1954, दिसम्बर–1966, अक्टूबर–1967

3. ' वसुधा ' मध्यप्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ, रीवा, अनियतकालिन अंक–26

(राहुल सांकृत्यायन जन्मशती अंक) अप्रैल – जून 1994

4. ' सम्मेलन–पत्रिका ', .त्रैमासिक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, भाग–40, संख्या–4

संवत्– 2011, भाग– 41, संख्या–4, संवत्–2012, भाग–43, संख्या–1,3

संवत्– 2013, भाग– 51, संख्या–1, भाग–52, संख्या–1,2, भाग–76

संख्या–3,4 (महापंडित राहुल सांकृत्यायन जन्मशति अंक), 1993

5. ' सरस्वती ', मासिक, इंडियन प्रेस इलाहाबाद, फरवरी 1964, दिसम्बर 1966

6. ' साम्य ' मध्यप्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ, अम्बिकापुर, अंक– 21

(राहुल सांकृत्यायन अंक),नवम्बर 1994

7. अभिनव कदम–1, संयुक्तांक 16–17, दिसम्बर 2006–नवम्बर 2007, मऊनाथ भंजन, मऊ (उ0 प्र0)

8. अभिनव कदम–2, संयुक्तांक 18–19, दिसम्बर 2007–नवम्बर 2008, मऊनाथ भंजन, मऊ (उ0 प्र0)

ASSAM UNIVERSITY LIBRARY
SILCHAR.
TH 1404
12.01.2015